RNI-UPBIL/2011/38102

ISSN-2231-5837

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

(कला–मानविकी–समाजविज्ञान–जनसंचार–विधि–वाणिज्य–विज्ञान, वैचारिकी की अन्तर्राष्ट्रीय द्विमासिक शोध पत्रिका)

Volume -12: Issue - 54 July - Aug. 2023 Ghaziabad

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

Journal Impact Factor No. : 7.841

Editor
Dr. RAJ NARAYAN SHUKHLA

Guest Editor
Dr. Dhrub Kumar Singh

Editor in Chief
Dr. HARI SHARAN VERMA

Asstt. Editor
Dr. MUKTA SONI

Sub Editor
Dr. PUSHPA
Dr. BEENA PANDEY (SHUKLA)

Art Editor
(MS) MANISHA VERMA

Managing Editor
Dr. SANGEETA VERMA

Legal Advisor
Dr. JASWANT SAINI
SHRI BHAGWAN VERMA

Joint Editor
Dr. PRIYANKA SINGH
Dr. SUBHASH SAINI

Office Assistant
JITENDER GIRDHAR

Computer Operator
MS. NEHA VERMA

- The responsibility of the originality of the articles/papers shall be of the author.
- The editor does not owe any kind of responsibility in this regard

Dr. Dhrub Kumar Singh
Guest Editor

Dr. Hari Sharan Verma
D.Litt
Editor in Chief

Dr. Raj Narayan Shukhla
Editor

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

मानविकी शोध पीठ प्रारम्भ सोसायटी, गाज़ियाबाद द्वारा संचालित

LIFE MEMBERS OF INDIAN JOURNAL OF SOCIAL CONCERNS

1. **Dr. Praveen Kumar Verma**
   Associate Professor, Hindi Department, GGD Sanatan Dharam Post Graduate College, Palwal.

2. **Smt. Veena Pandey (Shukla)**
   Hindi Teacher, Jawahar Navodya Vidyalya, Dhoom Dadri, Distt. Gautambudhnagar - 203207 (U.P.)

3. **Dr. Suman**
   H.No. 1001, Radha Swami Colony, Rohtak Road, Bhiwani (Haryana)

4. **Principal**
   Sat Jinda Kalyana College, Kalanaur (Rohtak, Haryana) 124113

5. **Dr. Subhash Chand Saini** (Hindi Department, Dyal Singh College, Karnal, Haryana

6. **Dr. Vimla Devi,** Associat Professor (History), Swami Vivekanand Govt. (PG) College, Lohaghat, Champawat (Uttrakhand)

7. **Princepal,** Associat Professor (Hindi), Aggarwal College, Ballabhgarh (Haryana)

8. **Dr. Dinesh Mani Tirpathi (Principal)** L-P=-K Inter College sardar Nagar, Basdila Gorkhpur

9. **Dr. Govind Prakash Acharya** F--63, Chandra Vardai Nagar, UIT, Colony, Shaheed Bhagat Singh Marg, OppositeRamganj Thana, Taragarh Road, Ajmer (Rajasthan) Pincode--305003.

10. **Amardeep Singh** Mcf C -21 Bhagat singh colonyBallabgarh121004, Mob. 9873814066

प्रकाशक : डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)
दूरभाष : 9910777969
E-mail : *harisharanverma1@gmail.com*
WWW.IJSCJOURNAL.COM

सहयोग राशि (भारत में)

(व्यक्तिगत)	(आजीवन 5100 रुपये)
(संस्थागत)	(आजीवन 7100 रुपये)

कृपया सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट से ही भेजें।

बैंक ड्राफ्ट, संपादक "इण्डियन जर्नल ऑफ सोशन कन्सर्न्स" के पक्ष में देय होगा। आजीवन सदस्यता केवल दस वर्षों के लिए मान्य होगी। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो जाता है तो आजीवन सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

संपादकीय कार्यालय :

1. **डॉ० हरिशरण वर्मा, प्रधान सम्पादक**
F-120, सेक्टर–10, DLF, फरीदाबाद (हरियाणा)
harisharanverma1@gmail.com 09355676460
WWW.IJSCJOURNAL.COM

2. **डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक**
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

क्षेत्रीय सम्पादक

1. डॉ० वाई.आर. शर्मा, A-24, रेजिडेंसल कैम्पस, न्यू कैम्पस, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू–180001, फोन : 09419145967
2. डॉ0 सलमा असलम, ओल्ड टाउन बारामुला, कश्मीर पिन – 193101, मौ0 9682162934
3. डॉ0 आरती लोकेश P.o.Box 99846,Dubai,UAE 97150-4270752
4. श्री मोहनलाल, 11 अशोक विहार, संजय नगर, पो. इज्जत नगर बरेली (उ०प्र०) फोन : 09456045552
5. श्री जितेन्द्र गिरधर, कार्यालय सहायक 105/26 जवाहर नगर,कॉपरेटिव बैंक के पीछे, रोहतक 09896126686
6. डॉ0 विमला देवी, सहायक प्रोफेसर (इतिहास) स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय लोहाघाट चंपावत (उत्तराखण्ड)–262524 – 9411900411
7. डॉ0 प्रिया कपूर, सहायक प्रोफेसर, डी0 ए0 वी शताब्दी कालेज, फरीदाबाद मौ0 9711196954
8. डॉ0 किरण मिश्रा, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी, राम गुलाम राय पी0 जी0 कालेज, देवरिया गोरखपुर – 273001 मौ0 :7007018819
9. डॉ0 ऊषा रानी, हिन्दी – विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला – 5
10. विमला टोप्पो, एस0 आर0 इंटरप्राइसेस म्युनिसिपल काम्पलेक्स सोप न0 4, डेरी फार्म, पोर्ट बलेयर, पी0 ओ0 जंगली घाट – 744103 साउथ अंडमान
11. डॉ0 राजपाल, सहायक प्रो0 राजकिय स्थानकौत्तर महाविद्यालय, हिसार

संरक्षक मण्डल :

1. **प्रो0 डॉ0 चकधार त्रिपाठी कुलपति,** उड़ीसा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरोपुट, 763004, चलभाषा: 9437568809
2. **डॉ0 दिनेश मणी त्रिपाठी**, प्रधानाचार्य एन0 पी0 के0 आई कालेज, सरदार नगर बसडीला (गोरखपुर) उ0प्र0
3. **डॉ० राजेन्द्र सिंह,** (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय राहतक
4. **डॉ० रमेशचन्द लवानिया,** (पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद
5. **डॉ० वाई.आर.शर्मा,** (राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू)
6. **डॉ0 सुंधांशु कुमार शुक्ल** चेयर हिन्दी, आई. सी. सी. वार्सा विश्वविद्यालय, वार्सा (पोलैन्ड) मौ0 48579125129
7. **डॉ0 तपन कुमार शण्डिल्य, कुलपति,** डॉ0 श्याम प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय राँची, (झारखण्ड) 9431049871
8. **डॉ0 जंगबहादुर पाण्डेय** (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) रांची विश्वविद्यालय, रांची – 834008
फोन : 09431595318
9. **सुदेश रावत** प्रांचार्या एस. एन. आर. जयराम महिला कॉलेज, लोहार माजरा, कुरूक्षेत्र हरियाणा 36119 (सेठ नारंग राय लोहिया जय राम महिला कॉलेज)

परामर्शदात्री समिति :

1. **डॉ० नरेश मिश्रा** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
2. **डॉ० सुधेश** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)
3. **डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल** (पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर)
4. **डॉ० राजकुमारी सिंह,** प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपूत मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 9760187147
5. **डॉ० माया मलिक,**पूर्वप्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
6. **डॉ० ममता सिहल,** (एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा अंग्रेजी विभाग) जे०वी० जैन कॉलेज सहारनपुर
7. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक

संपादकीय विशेषज्ञ समिति :

हिन्दी विभाग:

1. **डॉ० राजेश पाण्डे** (डी.वी. कॉलेज, उरई, जिला जालौन, उ०प्र०)
2. **डॉ0 अनिता, सहायक प्रोफेसर**, (हिन्दी), श्री अरबिन्दो कालिज दिल्ली (सांध्य) मौ0 :8595718895
3. **डॉ० सुशील कुमार शर्मा** (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग, मेघालय)
4. **डॉ० शशि मंगला,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
5. **डॉ० के०डी० शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
7. **मुकेश चन्द्र गुप्ता** (हिन्दी विभाग, एम.एच.पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद)
8. **डॉ० गीता पाण्डेय** (रीडर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एस.डी.

9. **डॉ0 प्रवीण कुमार वर्मा** (सह प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल
10. **डॉ0 सुधा चौहान,** अध्यक्षा हिन्दी विभाग, वैश्य कालिज, भिवानी
11. **डॉ० रूबी,** (सीनियर सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग कश्मीर
12. **डॉ0 सुमन राठी,** सहायक प्रो0 हिन्दी विभाग, मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
13. **डॉ0 सुधा कुमारी** (हिन्दी विभाग) एन0जी0एफ0 डिग्री कालिज, उडदू, अध्ययन केन्द्र मथूरा रोड, पलवल 982719456
14. **डॉ० एम. के. कलशेट्टी,** हिन्दी विभाग, श्री माधवराव पाटिल महाविद्यालय, मुरूम तह० अमरगा, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)–413605
15. **डॉ० मनोज पंड्या,** व्याख्याता हिन्दी विभाग, श्री गोविन्द गुरु, राजस्थान महाविद्यालय, बांसवाड़ा–327001, मो० 09414308404
16. **डॉ. कृष्णा जून,** प्रो० हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
17. **डॉ. विपिन गुप्ता,** सहायक प्रोफेसर, वैश्य कॉलेज भिवानी
18. **डॉ० सीता लक्ष्मी,** पूर्व प्रो० एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम, आन्ध्रप्रदेश
19. **डॉ० जाहिदा जबीन,** (प्रो0 एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर–६)
20. **डॉ० टी०डी० दिनकर,** (एसो० प्रो० एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, अग्रवाल कॉलेज, बल्लभगढ़)
21. **डॉ० सुभाष सैनी,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग दयालसिंह कॉलेज, करनाल, हरियाणा
22. **डॉ० उर्विजा शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग शम्भु दयाल स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजियाबाद
23. **डॉ० कामना कौशिक,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग एम.के. स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, सिरसा 09896796006
24. **डॉ० मधुकान्त,** (वरिष्ठ साहित्यकार) 211- L मॉडल टाऊन, रोहतक
25. **डॉ0 कंचन पुरी, विभागध्यक्ष,** रघुनाथ गर्ल्स पी0 जी0 कालेज मेरठ
26. **डॉ0 प्रवेश कुमारी ,** सहायक प्रो0 हिन्दी बाबा मस्तराथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
27. **डॉ0 राजपाल ,** सहायक प्रो0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार
28. **डॉ0 प्रवेश कुमारी ,** सहायक प्रो0 टिकाराम कन्या कॉलेज, सोनीपत, हरियाणा
29. **प्रो. प्रणव शास्त्री,** प्रोफेसर एवं अध्यक्ष–हिन्दी विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत – 262 001 उ. प्र. मो.98379 60530 drpranav&pbt23@rediffmail-com
30. **प्रो. राखी उपाध्याय,** प्रोफेसर एवं अध्यक्ष – हिन्दी विभाग, डी. ए .वी. कॉलेज, देहरादून – 248 001 (उत्तराखंड) मो. 94111 90099 drrakhi-418@gmail-com
31. **डॉ0 सुनीता जसवाल,** असिस्टेंट प्रोफेसर – हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला (हिमाचल प्रदेश) मो.70186 21542

अंग्रेजी विभाग:

1. **डॉ. ममता सिहल, अध्यक्षा,** अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन कॉलिज, सहारनपुर, उ.प्र.
2. **डॉ. रणदीप राणा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ. जयबीर सिंह हुड्डा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
4. **डॉ० रविन्द्र कुमार,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
5. **डॉ. अनिल वर्मा** (पूर्व रीडर, अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर)
6. **डॉ0 जे. के. शर्मा,** प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
8. **डॉ. पी.के. शर्मा,** (प्रो., अंग्रेजी–विभाग, राजकीय के.आर.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर)
9. **डॉ. गीता रानी शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर) गो.ग.दत्त सनातन धर्म कॉलेज, पलवल
10. **डॉ. किरण शर्मा,** (एसोसिएट प्रोफेसर) राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय रोहतक

वाणिज्य विभाग:

1. **डॉ० नवीन कुमार गर्ग** (वाणिज्य विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० ए.के. जैन,** पूर्व रीडर (वाणिज्य विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर)
3. **डॉ० दिनेश जून,** एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फरीदाबाद
4. **डॉ० एम.एल. गुप्ता,** (पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य एवं व्यवसायिक प्रशासन संकाय, एस.एस.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़ एवं संयोजक–शोध उपाधि समिति एवं संयोजक बोर्ड ऑफ स्टीडिज चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
5. **डॉ० वजीर सिंह नेहरा,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
6. **डॉ० संजीव कुमार,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
7. **डॉ. गीता गुप्ता,** (सहायक प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक)
7. **डॉ. नरेन्द्रपाल सिंह,** (एसोसिएट प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद, उ.प्र.)

राजनीति शास्त्र विभाग:

1. **साकेत सिसोदिया,** (राजनीति शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
2. **डॉ० रोचना मित्तल** (रीडर एवं अध्यक्षा, राजनीति शास्त्र–विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
3. **डॉ० कौशल गुप्ता,** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, देशबन्धु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **Mob.: 09810938437**
4. **डॉ०पी.के. वार्ष्णेय,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, जे.वी.जैन कॉलेज, सहारनुपुर
5. **डॉ० सुदीप कुमार,** सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र) **Mob.: 9416293686**
6. **डॉ० वाई०आर० शर्मा,** एसो० प्रो०, राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू (कश्मीर)
7. **डॉ. रेनू राणा,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, पं. नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक 124001
8. **डॉ. ममता देवी,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक शास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

इतिहास विभाग:

1. **डॉ० भूकन सिंह** (प्रवक्ता, इतिहास विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० मनीष सिन्हा,** पी.जी. विभाग, इतिहास, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार–824231
3. **डॉ० राजीव जून,** सहायक प्रो० इतिहास, सी.आर इन्स्टीट्यूट ऑफ ला, रोहतक
4. **डॉ० मीनाक्षी** (सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग) सी.आर. किसान कॉलेज, जीन्द

भूगोल विभाग:

1. **डॉ० पी.के शर्मा,** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, भूगोल विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर
2. **रश्मि गोयल** (भूगोल विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
3. **डॉ० भूपेन्द्र सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय पी.जी. कॉलेज, हिसार
4. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक
5. **डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा**, एसोसिएट प्रोफेसर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० उमेन्द्र मलिक,** एसिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.द.वि. , रोहतक
2. **डॉ० संदीप कुमार,** सहायक प्रो० शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्लीएसोसिएट
3. **डॉ० तपन कुमार बसन्तिया,** एसोसिएट प्रोफेस, सैंटर फॉर एजुकेशन, सैंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ विहार, गया कैम्या, विनोभा नगर, वार्ड नं. **29**, **Behind ANMCH** मगध कालोनी, गया–**823001**बिहार**Mob.: 09435724964**
4. **डॉ० (प्रो०) अनामिका शर्मा,** प्राचार्या, एम.आर. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, फरीदाबाद
5. **डॉ० मनोज रानी,** सहायक प्रोफेसर (अंग्रेजी) एम.एल.आर.एस. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, चरखी दादरी (भिवानी)
6. **डॉ० अनीता ढाका,** (प्राचार्या, आर.जी.सी.ई. कॉलेज, ग्रेटर, नोएडा।)
7. **डॉ० ममता देवी,** (सहा. प्रो. बी.आई.एम.टी. कॉलेज कमालपुर गढ़ रोड़, मेरठ)

गृह विज्ञान

1. **डॉ0 श्रीमती पंकज शर्मा,** (सहायक प्राफेसर), गृह विज्ञान (प्रसार शिक्षा) राजकिय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रोहतक

शारीरिक शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० सरिता चौधरी,** सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला कैंट, हरियाणा
2. **डॉ० वरुण मलिक,** सहायक प्रोफेसर, म.द.वि., रोहतक
3. **डॉ० सुनील डबास,** (पद्मश्री व द्रोणाचार्य अवार्ड) HOD in physical education"DGC Gurugram

समाज शास्त्र विभाग:

1. **प्रवीण कुमार** (समाजशास्त्र विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० कमलेश भारद्वाज,** समाज शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद

मनोविज्ञान विभाग:

1. **डॉ० चन्द्रशेखर,** सहायक प्रोफेसर साईक्लोजी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
2. **डॉ. रश्मि रावत,** (मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, देहरादून)
3. **अनिल कुमार लाल** (प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)

अर्थशास्त्र विभाग:

1. **डॉ० जसवीर सिंह** (पूर्व रीडर अर्थशास्त्र विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मवाना)
2. **डॉ० सुशील कुमार** (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
3. **डॉ० अखिलेश मिश्रा** (प्राध्यापक, अर्थशास्त्र–विभाग, एस.डी.पी.जी. कॉलेज, गाजियाबाद)
4. **डॉ० सत्यवीर सिंह सैनी,** एसो०प्रो० (अर्थ०वि०, गो०ग० सनातन धर्म पी०जी० कॉलेज, पलवल)

विधि विभाग:

1. **डॉ० नरेश कुमार,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
2. **डॉ० विमल जोशी,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर, सोनीपत)
3. **डॉ० जसवन्त सैनी,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. **डॉ० वेदपाल देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
5. **डॉ. अशोक कुमार शर्मा,** एसो. प्रोफेसर, विधि विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
6. **डॉ. राजेश हुड्डा,** सहायक प्रो०, विधि विभाग, बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, सोनीपत
7. **डॉ० सत्यपाल सिंह,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
8. **डॉ० सोनू,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
9. **डॉ० अर्चना वशिष्ठ,** (सहायक प्रोफेसर, के०आर० मंगलम विश्वविद्यालय, सोहना रोड, गुरुग्राम)
10. **डॉ० आनन्द सिंह देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, सी०आर० कॉलेज ऑफ लॉ रोहतक)
11. **अनसुईया यादव,** (सहायक प्रोफेसर, विधि विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा)

गणित विभाग:

1. **डॉ० विनोद कुमार,** रीडर एवं अध्यक्ष गणित विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
2. **डॉ० विरेश शर्मा,** लेक्चरार गणित विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ
3. **डॉ0 सलौनी श्रीवास्तव** सहायक प्रो0, गणित विभाग आर0 बी0 एस0 कालेज आगरा
4. **Dr. Dhrub Kumar Singh.**HOD, Department of Mathematics, YBN University, Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Jharkhand, India. Pin-834010
5. **डॉ रश्मि मिश्रा** प्रोफेसर (एप्लाइड साइंस एंड हमनीटीएस), मैथमेटिक्स गनेशी लाल बजाज इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट ग्रेटर नॉएडा

कम्प्यूटर विभाग:

1. **प्रो० एस.एस. भाटिया** (अध्यक्ष, स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स एण्ड कम्प्यूटर एप्लीकेशन, थापर विवि, पटियाला)
2. **सर्वजीत सिंह भाटिया** (प्रवक्ता, कम्प्यूटर साईंस, खालसा कॉलेज, पटियाला)
3. **डॉ० बालकिशन सिंहल,** सहायक प्रोफेसर, कम्पयूटर विभाग, म०द०विश्वविद्यालय, रोहतक

संस्कृत विभाग:

1. **डॉ० रामकरण भारद्वाज** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद (गाजियाबाद)
2. **डॉ० सुनीता सैनी,**एसो० प्रोफेसर संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ० सुमन,** (सहायक प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग, आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी ।)
4. **डॉ0 दिनेश मणि त्रिपाठी {प्रधानाचार्य}** एल ०पी ०के ०इंटर कॉलेज सरदार नगर बसडिला {गोरखपुर}
5. **डॉ0 दानपति तिवारी,** प्रोफेसर, एवं अध्यक्ष, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश
6. **डॉ0 दिनेशचन्द्र शुक्ल,** सहायक प्रोफेसर, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग:

1. **डॉ० आर०एस० सिवाच,** प्रो० एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, म०द०वि०, रोहतक

दृश्यकला विभाग:

1. **डॉ० सुषमा सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग, म०द० विश्वविद्यालय, रोहतक

पंजाबी विभाग:

1. **डॉ० सिमरजीत कौर,** सहायक प्रो० (पंजाबी), ईश्वरजोत डिग्री कालेज, पेहवा (कुरूक्षेत्र)

संगीत विभाग:

1. **डॉ० संध्या रानी,** अध्यक्षा, संगीत विभाग, यूआरएलए, राजकीय पीजी कॉलेज, बरेली
2. **डॉ० हुकमचन्द,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा डीन, संगीत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा
3. **डॉ. अनीता शर्मा,** (संगीत–गायन प्राध्यापिका, जयराम महिला महाविद्यालय लोहारमाजरा (कुरुक्षेत्र)
4. **डॉ. वन्दना जोशी,** (सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा)

पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग:

1. **डॉ० सरोजनी नंदल,** प्रोफेसर (पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

उर्दू विभाग:

1. **डॉ० मो. नूरूल हक,** (एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, उर्दू, बरेली कॉलेज, बरेली)

कृषि विभाग

1. **डॉ0 गोविन्द प्रकाश आचार्य** सह–आचार्य (कृषि–प्रसार) श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा राजस्थान मो. 9460545836

An update on UGC - List Journals

The UGC List of Journals is a dynamic list which is revised periodically. Initially the list contained only journals included in Scopus, Web of Science and Indian Citation Index. The list was expanded to include recommendations from the academic community. The UGC portal wasa opended twice in 2017 to universities to upload their recommendations based on filtering criteria available at https://www.ugc.ac.in/journallist/methodology.pdf. The UGC approved list of Journals is considered for recruitment, promotion and career advancement not only in universities and colloges but also other institutions of higher education in India. As such, it is the responsibillity of UGC to curate its list of approved journals and to ensure the it contains only high-quality journals.

To this end, the Standing Committee on Notification on Journals removed many poor quality/predatory/questionable journals from the list between 25th May 2017 and 19th Septemeber 2017. This is an ongoing process and since then the Committee has screened all the journals recommended by universities and also those listed in the ICI, which were re-evaluated and rescored on filtering criteria defined by the Standing Committee. Based on careful and analysis, 4,305 journals were removed from the current UGC-Approved list of Journals on 2nd May, 2018 because of poor quality/incorrect or insufficient information/false claims.

The Standing Committee reiterates that removal/non-inciusion of a journal does not necessarily indicate that it is of poor quality, but it may also be due to non-availability of information such as details of editorial board, indexing information, year of its commencement, frequency and regularity of its publication schedule, etc. It may be noted that a dedicated web site for journals is once of the primary criteria for inclusion of journals. The websites should provide full postal addresses, e-mail addresses of chief editor and editors, and at least some of these addresses ought to be verifiable official addresses. Some of the established journals recommended by universities that did not have didicated websites, or websites that have not been updated, might have bee dropped from the approved list as of now. However, they may be considered for re-inclusion once they fulfil these basic criteria and are re-recommended by universities.

The UGC's Standing Committee on Notification on Journals has also decided that the recommendation portal will be opened once every year for universites to recommend journals. However, from this year onwards, every recommendation submitted by the universities will be reviewed under the supervision of Standing Committee on Notification of Journals to ascertain that only good-quality journals, with correct publication details, are included in the UGC approved list.

The UGC would also like to clarity that 4,305 journals which have been removed on 2nd May, 2018 were UGC-approved journals till that date and, as such, articles published/accepted in them prior to 2nd May 2018 by applicants for recruitment/promotion may be considered and given points accordingly by universities.

The academic community will appreciate that in its endeavour to curate its list of approved journals, UGC will enrich it with high-quality, peer-reviewed journals. Such a dynamic list is to the benefit of all.

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
1.	विश्व शांति के लिए भारत द्वारा किए गए निशस्त्रीकरण के प्रयास और आण्विक नीति	डॉ0 रेनू राना	11–15
2.	महिला सशक्तिकरण	मधु सिंगला	16–18
3.	Gender Inequality in Mahesh Dattani's Play "Tara": A Critical Analysis	Pragini, Dr. Raja Ram	19–21
4.	**वैष्णव धर्म की विश्वव्यापकता**	डॉ0 सुनीता शर्मा	22–24
5.	Scientific Use Of Ornaments And Tradition In Indian Culture	Shamsher Singh, Dr Raja Ram	25–30
6.	भारत का विभाजन और साम्प्रदायिकता	सतीश देशवाल	31–34
7.	Gotra System Is Helpful To Make A Man Monogamous	Shamsher Singh, Dr Raja Ram	35–37
8.	गर्भपात का अधिकार और भारतीय महिलाएं	डॉ0 रेणुका पोद्दार	38–42
9.	आपका बंटी में शकुन की नियति	स्निग्ध सिंह	43–44
10.	विदेष नीति के संकल्पनात्मक और तात्विक मूलाधार	प्रताप सिंह, डॉ0 वेदपाल सिंह	45–48
11.	हिंदी कथा साहित्य में किन्नर समुदाय : एक अध्ययन	डॉ0 नरेश कुमारी	49–54
12.	**परिवर्तनशील विश्व परिदृष्य और विदेश नीति**	प्रताप सिंह, डॉ0 वेदपाल सिंह	55–57
13.	**वर्तमान भारतीय समाज में महिलाओं की चुनौतियां और संघर्ष**	डॉ0 भुपेन्द्र कौर	58–59
14.	भारतीय इतिहास में बहुलवाद	Dr. Rekha Tyagi	60–63
15.	देवपरम्परा में संगीत सम्बन्धी शास्त्रोक्त वर्णन– हिमाचल प्रदेश के सन्दर्भ में	डॉ० संतोष कुमार	64–66
16.	हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना–प्रक्रिया	नम्रता कुमारी	67–69
17.	उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी में वृद्ध समस्याएँ	डॉ0 वर्षा शालिनी कुल्लू	70–72
18.	अमृतलाल नागर के उपन्यास ''नाच्यौ बहुत गोपाल'' में दलित–समस्या	आशा रानी केरकेट्टा	73–74
19.	पाश्चात्य शिक्षा का भारतीय साहित्य पर प्रभाव महिलाओं का योगदान	सुवाति	75–77
20.	दलित विमर्श के नए आयाम	डॉ0 बुद्धप्रिय सिद्धार्थ	78–80
21.	प्रधानमन्त्री के रुप में राजीव गाँधी को लोकसभा में प्रचण्ड बहुमत प्राप्ति की समीक्षाँ	डॉ0 जुल्फिकार अली	81–83
22.	मानवाधिकार को प्रभावित करता पर्यावरणीय प्रदूषण भारत के सन्दर्भ में :	डॉ0 जिलेदार, डॉ0 आशुतोष	84–86
23.	अथर्ववेद और लोककल्याण	दीपमाला	87–88
24.	जनजातीय जीवन और नगरीकरण	करम सिंह मुण्डा	89–91
25.	मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा–साहित्य में नारी के विविध रूप	पिंकी देवी, डॉ० कूष्णा जून	92–95
26.	घाड़ क्षेत्र की तहसील बेहट में बाढ़ एंव भूमिक्षरण की समस्या एवं समाधान.	डॉ0 राजेन्द्र कुमार	96–98
27.	भारत चीन सीमा सम्बन्धः–एक अवलोकन	Dr. Bharat Samrat	99–100
28	डॉ शीलधर प्रसाद सिंह : बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी	शिल्पा बाड़ा	101–103
29.	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार	रेनू कुन्डू	104–106
30.	भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और संवहन में भारतीय भाषाओं की भूमिका	शकुन्तला बेसरा	107–108
31.	घरेलू एवं कामकाजी शिक्षित महिलाओं के आत्म सम्मान एवं समायोजन से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन	नीतू सिंह, डॉ0 सतीष चन्द्र गोयल	109–113
32.	'जूठन' में चित्रित 'यथार्थ'	बूटा सिंह	114–116
33.	इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों की हिन्दी कहानियों में नारी चित्रण स्त्री जीवन : तनाव, अलगाव और दबाव	रेनू	117–119
34.	अमृत लाल नागर कृत' नाच्यौ बहुत गोपाल' में काम–वासना की समस्याएँ	राम ईश्वर कुमार	120–122
35.	भारत चीन सीमा विवादः –तिब्बत अध्याय	Dr. Bharat Ratnam	123–124
36.	पानीपत नगर में ठोस अपशिष्ट के कारणों एवं प्रभावों का एक अध्ययन	डॉ.संदीप कुमार यादव, नीलम कुमारी	125–128
37.	जिन्दगी 50–50 : अभिव्यक्त किन्नर जीवन	प्रीति नागर, डॉ. मिंतु,	129–131
38.	भारतीय चित्रकला में आलेखन की अभिव्यंजना	डॉ0 बीना दीक्षित प्रोफेसर	132–134
39.	Impact of Yoga Practice on Alcohol Dependent Patients	Mr. Vikas Kumar, Dr. Shalini Kumari	135–137
40.	Significance Of Life Skills Education In Overall Developemnt of Adolescents	Shakuntala Devi	138–140
41.	'Accelerating Digital Transformation with Reference to Banking Sector in India	Ms Gargi Sharma	141–144
42.	The First Fundamental Source of Law And Order of The World: The Vedas	P.L. Gautam	145–148
43.	Title:Custodial Violence in India: A Critical Examination through the Lens of Human Rights	Dr. Pawan Kumar, Ms. Samriti	149–151
44.	Stabilty of Fluid Flows	Dr. Sandeep Kumar Singh	152–153
45.	Theme of Familial Relationship in Shashi Deshpande's Novel- The Binding vine.	Dr. Nirmal Boora	154–157

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
46.	The Study of Impact of Graduate Incentive Scheme for Girls in Higher Education in Bihar : A Case Study of Naubatpur Block Patna Disctrict	Ankit Kumar	158—161
47.	The Foreign Relations of India With Countries That Were Seen As Hostile	Shivank	162—164
48.	India - a rising power in the changing global order	Manjari	165—170
49.	Financing Pattern of Micro Small And Medium Enterprises In India	Ajay Kumar	171—173
50.	Galsworthy's Contribution To Modern British Drama	Sahil Patil	174—176
51.	An Exploratory Study of Consumer Behavior In Indian Perspective	Ajay Kumar	177—179
52.	Ruskin Bond's Contribution To Children's Literature: A Critical Analysis	Dr. Poonam Mor, Dr. Sonam Kamboj	180—182
53.	The Concept of Philosophy and Spirituality in A River Sutra by Gita Mehta	Prof (Dr.)Punitajha, Archana	183—186
54.	An Inventory Model For Degrading Goods That Takes Inflation Into Account And Has Demand And Shortages That Are Time- And Price-dependent	Jyoti, Dr. Dhrub Kumar Singh	187—191
55.	Exploring Patriarchy in Vikram Seth's a Suitable Boy: A Sociological Analysis	Poonam	192—195
56.	For Deteriorating items in a Supply Chain System with price Dependent Demand and no Backorders, a Fuzzy Inventory Model	Jyoti, Dr. Dhrub Kumar Singh	196—199
57.	"Cyber Security and Financial Stability: The Role of G20 in Strengthening Financial Resilience Against Cyber Threats"	Rashmi	200—204
58.	Digital Financial Inclusion: Benefits and Challenges in India	Surbhi Jain	205—208

Editorial

Dr. Dhrub Kumar Singh.
HOD, Department of Mathematics,
YBN University, Rajaulatu, Namkum,
Ranchi, Jharkhand, India. Pin-834010

It has been found that Mathematics education as a research field experienced significant growth in the last decades. None the less, we still experience the same problems over andover. The continuous problem with transition from primary to secondary educationand from secondary to tertiary education is ever present. It seems that mathematics teachersof each educational cycle have rather different expectations of the knowledge a studentshould bring from one cycle to another. The mathematics learning process isconnected with doing mathematics and processes such as investigating, reflecting,reasoning, giving arguments, finding connections, etc. The research in mathematics

education has been emphasizing this aspect of learning mathematics for more thantwenty years. However, many teachers and learners focus on imitating procedures.What causes this discrepancy between the research and practice? The findings inmathematics education showed that the teacher had a significant role on students'achievements. Moreover, the way they conceived mathematics reflected on thelearners. If the teachers saw it as a set of procedures and algorithms, they would

transfer this conception of mathematics onto their students. On the other hand, ifthey saw it as collections of ideas, their students would have the same conceptionof mathematics. The student's attitudes towards mathematics also influenced themlearning process. This shows that attitudes and beliefs in teaching and learningmathematics has significant impact on the outcomes in the classroom. That iswhy they are considered to be hidden variables in mathematics education, which cannot be omitted from the didactical triangle mathematics – teacher – students.

In the primary and secondary education, mathematics is a compulsory subjectin schools, but moving to the tertiary education, we find mathematics as the keycomponent of many natural and technical sciences. Mathematics is the heart ofSTEM. It is important for those who will continue their profession in that direction.Moreover, a strong interaction between mathematics and technology is presentdevelopments in technology stimulate mathematics and developments in mathematicsoften enhance innovations in technologybut mathematics inthe form of statistics appears in humanities and social sciences. Therefore, it seemsthat mathematics is the core science and the key feature of a successful individual.This is also supported by the definition of mathematical literacy in PISA, wherethe role of mathematics is described as a part of an individual's current and futureprivate life, professional life and social life with peers and relatives.

Considering the rapid progress of technology in the world of today, we facenew challenges. Living in the age of digital technologies, we feel obligated to incorporatethem into our lives but also in the other areas specially in schools and higher education.This issue raises many still unanswered questions. Could technology improve usteaching and learning of mathematics? Should we use it constantly or occasionally?How can this technology be used efficiently? Do we design tasks in a similarmanner with this technology as it was the case with pencil and paper technique?

Modern technology and its use in mathematics education has been examined invarious studies for several decades. The findings of those studies showed benefitsof the proper use of technology. Spreadsheets and dynamic software environmentsenable faster collecting of the specific cases of mathematical phenomena – values,variables, functions, shapes, locations along a graph, or the properties of geometricconstructions. This provides the opportunities for learners to consider collection of cases rather than individual instances. But there is a warning also against jumping to conclusion that technology forcesautomatic generalization in mathematics; this depends on the learner, similarlyas it is the case with the

classic environments. Digital technology can speed upthe learning process, but sometimes educators want to slow this process down.They notice that the amount of information is overwhelming for the learner. Atother times, technology narrows our focus too much, or not enough. Therefore, this brings us to the conclusion that the use of technology hasits advantages and disadvantages which teachers should be aware of.

Therefore, it is being addressed by me these issues and some other throughthese lines. Some viewsopened new questions for research, some showed examples of good practice andothers provided more information for the earlier findings.

All views portray the complex role of mathematics education: mathematics education is a science butalso a profession. Research in mathematics education is needed to investigate variousphenomena, but the research has also the responsibility to inform practitionersof its findings.Mathematics teachers are a critical component in this process.Their collaboration with the researchers is necessary to achieve the shift from thetraditional to contemporary teaching mathematics. This process is neither easy norrapid. But we must be persistent in our efforts, because mathematics is inseparablefrom our everyday life.

Expectation of developing countries from researchers in the different subjects in general and areas of diversities: -Governments of low-income countries and international development donors are increasing their funding for research at least in part on the assumption that research has positive impacts on socioeconomic development. Four pathways are commonly cited to describe how research will contribute to development:

1. Investment in research will drive economic growth.
2. Investment in research will increase human capital.
3. Investment in research will lead to the development of pro-poor products and technologies.
4. Investment in research will provide evidence to inform policies and practice

This facets examines the evidence base related to each of these four pathways. It demonstrates that research does make important and significant contributions to socioeconomic development but that some commonly held assumptions about how research leads to change are not backed up by the evidence. Brief summaries of the findings relating to each path are given below.

Economic growth: Contrary to popular belief, there is little evidence that public investment in research was a major contributor to the 'Asian development miracle'. Furthermore, the evidence suggests that the potential for research and innovation to contribute to technology-transfer fueled growth in low-income countries tends to be overestimated.

Human capital: There is a great need for the skills which can be developed through involvement in research in low-income countries. Such skills can be built through higher education, although it is unclear whether involvement of higher education institutions in research contributes to teaching standards. In addition, skills can be built by capacity building programmes. However, many such schemes in the past have had mixed impact.

Products and technologies: Many inventions have had positive impacts on the poor. Public-private partnerships have been particularly successful in funding and incentivising the development of new products and technologies. Some products and technologies have less impact than intended due to a mismatch between the product and actual need.

Evidence-informed policy and programmes: There are two major ways in which research can inform decision makers: it can inform decisions on specific interventions and it can inform decision makers' general understanding of the context. There are numerous examples of both types of influence. However, the evidence also reveals that there are significant gaps in the capacity, incentives and systems necessary to ensure that research is systematically used in decision making. There are other reasons also which reveals directly the economic impacts of research investments and suggest that research leads to positive economic returns.

So, we must presume that the outcome of the research work in any subject concerned should be to protect human values as well as it must ethically be reflexive enough as a benevolent work and a unique and great contribution towards the society and country as a whole.

Email Address: - dhrubkumarsingh3@gmail.com
Mobile No.-7992274397.

A brief Introduction

Dr. Dhrub Kumar Singh

"Education is the manifestation of perfection already existing inman."
- Swami Vivekananda.

Education

2020	Ph.D, Mathematics, University. P. G Department of Mathematics. Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India.
2014	M.Phil. (Mathematics.), University. P. G Department of Mathematics. Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India.
	1994 PGDCA, BIT, Mesera, Ranchi, India
1991	M.Sc.(Mathematics.), University. P. G Department of Mathematics. Ranchi University, Ranchi, India.
1984	B.Sc., Mathematics(Hons), Gossener College, Ranchi-834001, Jharkhand, India.
1981	Inter Science, J. N College Dhurwa, Ranchi-834004, Jharkhand, India.
1979	Matriculation, HEC Hr. Sec., School, Ranchi-634004, Jharkhand India.

Experience

Research

2014-2016	**Independent Research, Ranchi, India.**
2017-2021	PhD, University. P. G Department of Mathematics. Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India. Thesis: "Mathematical models for deteriorating inventory items under trade credit and inventory level dependent demand rate. Supervised by Associate Prof.(Dr.) Sahdeo Mahto.
2021-till Date	**Independent Research.** Broad Area: OR & Mathematical Modeling of deteriorating inventory items when demand rate is dependent on Stocks, Price and Time.

Teaching

Sep. 2022 -till date	**Assistant Professor**, Department of Mathematics, School of Science, YBN University, Raja Ulatu, Namkum , Ranchi-834010, Jahrkhand, India. Teaching: Under Graduate and Post Graduate Students and supervising Ph. D Scholars in Mathematics.
0ct.2014 -Sep.2022	**Assistant Professor,** Department of Mathematics, RTCIT, Anandi, Oremanjhi, Ranchi, Jharkhand, India. Teaching: Under Graduate Teaching: Undergraduate Students: Engineering Mathematics-I, II, III, O.R & STATISTICS, some papers of Computer Science Viz., Automata Theory, Computational Mathematics. Discrete Mathematics, Numerical Methods using programming in FORTRAN 77
Nov..2013 – Oct.2014	Assistant Professor, Department of Mathematics, NETGI College of Engineering, Ratu, Ranchi, Jharkhand. Teaching: Under Graduate Teaching: Undergraduate Students: Engineering Mathematics-I, II, III, Discrete Mathematics, Numerical Methods with programming in FORTRAN 77 and C++.
Sep 2004 – oct.2013	Assistant Professor, Department of Mathematics, CIT, Tatisilwai, Ranchi, Jharkhand.

Teaching: Undergraduate Students: Engineering Mathematics-I, II, III, O.R & STATISTICS, some papers of Computer Science Viz., Automata Theory, Computational Mathematics. Discrete Mathematics, Numerical Methods with programming in FORTRAN 77 and C++.Also teaching Costing, Budgeting and Taxation and some other papers of Management.

Nov1998 -Aug.2004 **Visiting Lecturer,** BITT, Ranchi, Jharkhnd.
Teaching: Applied Maths. & Some Papers of Comp. Sc. and Applications. to under graduate students.

Professional Activities

Guest faculty, CIT, Tatisilway, Ranchi, Jharkhand India.
Teaching: Mathematics and some paper of Computer science.

Members of Professional Bodies

A member of ORSI.

Computer skills

Mathematica, Matlab, Latex Programming Languages C, C++

Project undertaken

Minor Research Project (MRP) sponsored by University Grant Commission (UGC/DST), Applied for

PhD scholars supervised/supervising

Guiding three research scholars for the previous session, currently under YBN University, Raja Ulatu, Namkum, Ranchi-10 and for the next session 2021 onwards supervising further four research scholar of the same University.

Conferences/Seminars /Symposium/Workshops: -

(1) Co-ordinated as a Resource-Person in Computer Training Programme for 10 days organized by K.V. Hinoo, Ranchi-2 from 07-09-2001 to 16-09-2001 for the Teachers and Officers of K.V. Sangathan, Patna Region.

(2.) Participated and Presented paper in the National Seminar at C.I.T., Tatisilwai, Ranchi on Micro/ Nano Manufacturing (Sponsored by AICTE New Delhi) organized by Cambridge Institute of Technology, Tatisilwai, Ranchi on 6th and 7th of December,'2008. The Title of the paper was "Quantum Computing comes closure- a mathematical approach."

(3) Prepared and submitted two Technical papers in the National Seminar on "Academic Institutes – Industries Interaction" jointly organized by C.I.T. Tatisilwai, Ranchi and the Institutes of Engineers India), Jharkhand State Centre, Ranchi on 24th& 25th Srpt.,'2011 at Engineers Bhawan, Nepal House, Doranda, Ranchi-2. The Titles of the papers were:

(i) "A perspective view: peer to peer growth of Academic Institutions and Industrial sector (Exploring the broken links and their consequences)".

(ii) "Industry and Academia—a Joint Venture".

(4.) Participated and Presented paper in the National Conference on "Mathematical and Statistical Modeling in Innovative areas" held on Oct. 19th and 20th of Oct.,'2011 at B.I.T., Mesera, Ranchi. The Title of the paper was: "Coupled System of Non-Linear diffusion reaction Problem".

(5.) Participated in the AICTE sponsored Staff Development Programme on "Environmental Management "at S. N. Sinha Institute of Management, Dhurwa, Ranchi-4 held between 27th July,' to 13th Aug.,'2009.

(6.) Participated and Presented paper in the National Conference on "Recent Trends in Computations and Mathematical Analysis in Engineering and Sciences-

2015 (CRCMAS-2015)" held on20st& 21stof Nov.,'2015 at G. P. Silli, Ranchi, Jharkhand organized by Govt. Polytechnic Silli, Ranchi, Jharkhand. The Title of the paper was: "Mathematical Model for Deteriorating Inventory Items under Trade Credit and Inventory Level Dependent Demand Rate". This paper was published in the E-Publication of International Science Congress Association (ISCA), ISBN: 978-93-84659-04-2 at CRCMAS 2015.

(7.) Participated and Presented paper in the National Seminar on" Combinatorial and Enumerative Mathematics" held on 14th Dec.,'2015 in the Arya Bhatta Auditorium, Basic Science Building, Morabadi Campus, Ranchi University, Ranchi. The Title of the paper was: "Pricing and Ordering Policies for a deterministic EOQ Model for Deteriorating Inventory Items Under Delay in Payments and Stock Dependent Demand Rate". This paper has been published in the Ranchi University Journal of Science and Technology (RUJOST) Vol. 4, No.2. Jan 2017, ISSN: 2319-4227 (page: 87-92).

(8.) Attended and participated in the National Workshop on "Impacts of LATEX and MATLAB in Engineering & Research" sponsored by Jharkhand Council of Science and Technology (JCST) held on 9th to 11th Nov.,'2017at Govt. Polytechnic, Silli, Ranchi-835102, Jharkhand.

(9) Attended in the Model National Seminar on "Exploration of inroads to good Mathematics" held on 29th Jan. & 5ht Feb.,'2017, organized by Gossener College, Ranchi, with the support of Jharkhand Society of Mathematical Sciences, Ranchi.

(10.) Participated and Presented paper in the International Conference on "Energy, Materials, and Information Technology (ICEMIT-2017}" held on 23rd and 24th of Dec.,'2017 at Amity University, Ranchi, Jharkhand. The Title of the paper was: "An Economic Lot Size Model for Deteriorating Inventory Items Under a Reduced Deterioration in Stock and Time Dependent Demand Rate".

(11.) Participated and presented a research paper entitled "A deterministic inventory model for deteriorating items to find optimal ordering policies under two-parameter Weibull distribution rate of deterioration and two-staged interest payable credit criterions with quadratic demand rate", in the National Conference held on 17-18 February, '2018 at Government Polytechnic, Ranchi on Mathematical Modelling in Science & Technology" sponsored by Jharkhand Council on Science & Technology, Ranchi.

(12.) Presented research paper on the topic entitled " Inventory model with price sensitive demand rate, shortages and two-parameters Weibull distribution deterioration rate", in the International Conference on Emerging Technologies, Systems & Applications held on 21st. and 22nd. April,'2018 at Jharkhand Rai University, Ranchi, in association with Deptt. of Industry, Govt. of Jharkhand.

(13.) Presented research paper on the topic entitled " A deterministic inventory model for deteriorating products with shortages and price dependent demand rate", in the International Conference on 7th–online International conference on Ancient Mathematics and sciences for Computing (amsco2k22), which was held at the nodal center BIT Mesra , Jaipur Campus, Malviya Industrial Area, Jaipur, Rajasthan , India on date 23rd and 24th of Dec.,2022.

Seminars/Conferences/ Workshops organized as a Convener

1. Organized a Two Days National conference on Mathematical and Statistical Modeling in Innovative Areas MASTMIA-2023 (Hybrid Mode) on 3rd -5th February, 2023.at RTC Institute of Technology.
2. Organized an One day International webinar on Balancing and Related Sequences (Number Theory) on 09-09-2023 in the Department of Mathematics, School of Science, YBN University, RajaUlatu, Namkum, Ranchi-834010, Jharkhand, India.

.

Other Interests

I also enjoy travel, listening and singing soft music and reading books.

Publications: Published Papers 2023

2017

- Dhrub Kumar Singh' and Sahdeo Mahto "Pricing and Ordering Policies for a Deterministic Inventory Model for Deteriorating Items when the Demand is Stock-dependent and the Supplier Offers Trade Credit with Delay in Payments". Ranchi University Journal of Science and Technology Vol. 4, No. 2, January 2017, ISSN: 2319-422/

2018

- D.K.Singh, K.Prasad and S.Mahto "An Inventory Model for Non-instantaneous and Controlled Deterioration Rate with Stock and Time Dependent Consumption Rate". Journal of Computer and Mathematical Sciences, Vol.9(7), 715-721 July 2018. ISSN 0976-5727 (Print)ISSN 2319-8133 (Online) (An International Research Journal), www.compmath-journal.org .

-Dhrub Kumar Singh and Sahdeo Mahto "An Inventory Model for Decaying Items under Certain Type of Trade-credits Criterion Following Quadratic Demand and Weibull Distribution Deterioration Rate". Journal of Computer and Mathematical Sciences, Vol.9(8), 1072-1079 August 2018ISSN 0976-5727 (Print) ISSN 2319-8133 (Online) (An International Research Journal), www.compmath-journal.org.

Book Chapter-

2019

- D. K. Singh, K. Prasad and S. Mahto "An Econonmic Lot-Size Inventory Model for Deteriorating Items with Time-Sensitive Consumption and Reduced Deterioration Rate". Springer Nature Singapore Pte Lid. 2019 J. Chattopadhyay et al. (eds.). Innovations in Soft Computing and Information Technology, https://doi.org/10.1007/978-981-13-3185-5_19.

Reviewer of the Paper

2019 Requested by,

Optimization Letters M Gmail OPTL-D-19-0002 on Thu Mar 2B., 2010 at 6:09 PM, Associate Editor Optimization Letters. The paper entitled "Economic Lot Sizing Problem with Inventory Dependent Demand".

Paper under publications

2023 - D. K. Singh, A deterministic inventory model for deteriorating products with shortages and price dependent demand rate. (To be Published by AMSCO2k22 in some Journal of International repute.)

Extra and Co-Curricular

Activities: -

1. Attended Evening classes for one year course of ICWAI (Inter) conducted by the Ranchi Chapter of Costs and Works Accountant of India, Darbhanga House, CCL, Ranchi at JVM Doranda during the year 1991.
2. Possessing Good knowledge of Engineering Drawings.
3. Participated in NCC Senior wing (Army) at college level in 1981 and attended Camp at Kanke, Ranchi.
4. Passed Junior Air wing 'C' Certificate at School level in 1979.
5. Participated in various School/ College level events.
6. Regularly took participation in Extempore and Debate Competition.

• YBN University,Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Jharkhand, Pin-834010, India

• *dhrubkumarsingh3@gmail.com*

✍T *+91 7992274397*

1

विश्व शांति के लिए भारत द्वारा किए गए निशस्त्रीकरण के प्रयास और आण्विक नीति

डॉ0 रेनू राना

सारांश

भारत की विदेश नीति के आधारभूत उद्देश्य सरल और स्पष्ट हैं भारत सरकार के एक प्रकाशन ष्स्वतंत्र भारत के बढ़ते कदम के अनुसार उद्देश्यों में स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। विश्व शांति के प्रति भारतीय गंभीरता को प्रदर्शित करते हुए 3 अप्रैल 1948 को नेहरू जी ने अमेरिकी जनता को अपने रेडियो संबोधन में कहा कि भारत में पिछले 25 वर्षों में महात्मा गांधी ने न केवल देश के लिए अपितु विश्व शांति के लिए भी अपना योगदान दिया है उन्होंने हमें यह सिखाया कि अहिंसा के द्वारा न केवल अत्याचार का विरोध संभव है बल्कि से अंतरराष्ट्रीय झगड़ों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए भी एक सकारात्मक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

१) नवंबर 1948 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने निशस्त्रीकरण की दिशा में अमेरिका द्वारा प्रस्तुत वर्क प्लान को उचित ठहराया लेकिन इसके बाद भी उन्होंने यह कहा कि भारत इस योजना के उस हिस्से से सहमत नहीं है जिसमें विश्व भर में फैली हुई कचची या असंवर्धित परमाणु सामग्री को अंतर्राष्ट्रीय प्राधिकार में लिया जाएगा। भारत में वर्क प्लान के प्रति अपनी पूर्ण सहमति इसलिए कभी नहीं जताई क्योंकि यह शीत युद्ध के प्रमुख गुट के नेता अमेरिका द्वारा प्रस्तावित थी और भारत द्वारा इसमें पूरी तरह शामिल होना दूसरे सोवियत संघ को नाराज करना था। भारत के इस इरादे को स्पष्ट करते हुए सितंबर 1948 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में इंदिरा गांधी ने कहा कि भारत विश्व के किसी भी सैन्य अच्छा को मान्यता न देकर विश्व शांति की स्थापना में अपना योगदान देना चाहता है, क्योंकि यदि संपूर्ण विश्व दो विरोधी गुटों में विभाजित हो जाएगा तो भविष्य में एक संग्राम अनिवार्य हो जाएगा।

२) 1953 तक विश्व सामरिक परिदृष्य में स्थितियां कुछ अनुकूल हुई तभी निशस्त्रीकरण आयोग में भारतीय प्रतिनिधि कृष्ण मेनन ने छोटी शक्तियों के विश्व शांति में महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इन छोटी शक्तियों को शीत युद्ध में किसी एक गुट के साथ शामिल होने के स्थान पर दोनों विरोधी गुटों को आपस में करीब लाने के लिए एक स्वतंत्र व तटस्थ राज्य की भूमिका निभानी चाहिए इस वर्ष अक्टूबर में श्रीमान ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में सुझाव दिया कि निशस्त्रीकरण के आयोग के सदस्यों को श्रम को एक व्यक्तिगत उप समिति के रूप में गठित करना चाहिए जिससे कि वे अंतरराष्ट्रीय तनाव व प्रचार से मुक्त होकर निशस्त्रीकरण के लिए उपयोगी चर्चा कर सकें। इस सुझाव को तत्काल ही अमेरिका और सोवियत संघ ने स्वीकारोक्ति प्रदान कर दी।

३) 1953 के पश्चात भारतीय आण्विक नीति में दो प्रमुख विशेषताएं देखने को मिलती है।

क) अंतरराष्ट्रीय निशस्त्रीकरण वार्ताओं में विस्तृत प्रतिनिधित्व प्राप्त करने की मांग।

ख) आणविक परीक्षण पर रोक लगाने हेतु प्रस्ताव सहित अन्य गंभीर प्रयास करना।

आणविक परीक्षण प्रतिबंध। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही भारत निशस्त्रीकरण पूर्ण परमाणु निशस्त्रीकरण और परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग का समर्थक रहा है। भारत परमाणु हथियारों और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय हितों के विरुद्ध तथा अंतरराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा के लिए खतरा मानता है। विश्व में परमाणु परीक्षणों पर रोक और पूर्ण परमाणु निशस्त्रीकरण के लिए आवाज उठाने वालों में भारत प्रथम देश था आणविक शास्त्रों के परीक्षण एवं प्रतिबंध की उस समय विश्वव्यापी मांग बढ़ गई जब 1954 में अमेरिका के हाइड्रोजन बम के परीक्षण के दौरान बाहर आई रेडियोधर्मी किरणों से श्फुकरमो मारियोश नामक एक जापानी नौका ध्वस्त हो गई! 1954 में नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव को एक पत्र भेजा और मांग की की हाइड्रोजन बम जैसे विध्वंस हथियारों पर रोक लगा दी जाए नेहरू के इस मांग के पश्चात एशिया और अफ्रीका के अनेक नव स्वाधीन देश से यह मांग उठने लगी इससे निश्चित रूप से नेहरू तृतीय विश्व के नव स्वाधीन राष्ट्रों के नेता के रूप में उभर कर सामने आए। इसके पश्चात अप्रैल 1955 में बोर्डिंग में एशियाई व अफ्रीका देशों का 1 सम्मेलन हुआ जिसमें सभी राष्ट्रों ने एक स्वर में आणविक शास्त्रों के निषेध व परीक्षणों पर रोक लगाने की मांग की। जब 1957 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन में आणविक शास्त्रों के परीक्षण पर तत्काल रोक लगाने के भारतीय प्रस्ताव को कुल 82 मतों में से 48 मत प्राप्त हुए हैं इससे एशिया और अफ्रीका के देशों के अलावा साम्यवादी गुट भी शामिल थे जबकि अमेरिका के नेतृत्व में नाटो के उपदेशों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। हालांकि भारत और भारत द्वारा बनाए गए एफ्रो एशियाई देशों के संयुक्त दबाव के फल स्वरुप 1963 में आंशिक परीक्षण प्रतिबंध संधि पर हस्ताक्षर कर दिए गए लेकिन निश्चित रूप से यह मानना होगा कि निशस्त्रीकरण की दिशा में किए जाने वाले भारतीय प्रयास बहुत हद तक बेकार सिद्ध हुए क्योंकि भारत के लाख जाने और प्रयास करने के बाद भी विश्व की दोनों महाशक्तियां पूर्ण निशस्त्रीकरण के लिए कभी सहमत नहीं हुई। इस प्रकार नेहरू का यह प्रयास भी विफल हो गया कि शस्त्र स्पर्धा में झोंका जाने वाला धन विकासशील राष्ट्रों की उन्नति के लिए जुटाया जा सके आर्मी परीक्षण प्रतिबंध के भारतीय प्रयास भी असफल सिद्ध हुए क्योंकि फ्रांस और चीन इसमें भी शामिल नहीं हुए और इस संधि के प्रावधानों के अंतर्गत भूमि के अंदर किए जाने वाले परीक्षणों पर प्रतिबंध नहीं लगाया जा सका। भारतीय प्रयासों की सफलता का सबसे बड़ा कारण शीत युद्ध के दौरान पैदा हुआ विश्वास और महा शक्तियों के द्वारा एक दूसरे पर किया जाने वाला संध्या था और इसी कारण वे भविष्य के किसी परमाणु युद्ध के लिए अधिकतम षद्वितीय मारक क्षमताष का विकास कर लेना चाहते थे । इसके अतिरिक्त 1956 के बाद से

सोवियत संघ ने एशिया व अफ्रीका के देशों के प्रयासों को अपना समर्थन देना शुरू किया जिसका अनुसरण बाद में अमेरिका और ब्रिटेन ने भी किया तृतीय विश्व के इन देशों को विश्व शांति और आणविक निशस्त्रीकरण के लिए दोनों महा शक्तियों से मिलने वाला समर्थन विश्व शांति में प्रतिद्वंद्विता के कारण प्रदान हो सका था और वास्तव में इसी कारण ही 1963 में ष्आंशिक परीक्षण प्रतिबंध संधिष् पर हस्ताक्षर हो सके । 1962 में चीन के साथ युद्ध की स्थिति मंस भारतीय सेना और उनके अस्त्र–शस्त्र, गुप्तचर स्थिति, परीक्षण आदि की दुर्बलता जगजाहिर कर दी यहां तक कि 1965 में भारत–पाक युद्ध में भारतीय वायु सेना, पाक वायु सेना पर वायु प्रभुत्व नहीं प्राप्त कर सकी थी इस प्रकार भारतीय सुरक्षा सेनाओं की क्षमता संदिग्ध हो चुकी थी। 1962 के बाद भारतीय नीति के दो प्रमुख परिवर्तन सामने आए।

१) शांतिपूर्ण सह अस्तित्व और गुटनिरपेक्षता की नीति पर अमल करने के बावजूद भी भारतीय विदेश नीति को व्यवहारिक बनाया जाए इसमें शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति सोवियत संघ के साथ रखी जाए चीन या पाकिस्तान के साथ।

२) यद्यपि शांति की खोज भारतीय विदेश नीति की मुख्य धारा होगी लेकिन भारतीय विदेश नीति को यह सत्य स्वीकार करना चाहिए की शांति प्राप्त करने के लिए एक शक्तिशाली सेवा का होना अनिवार्य है। भारत और चीन के मध्य सीमा विवाद लंबे समय तक चलता रहा है। 1949 में चीन मैं मैं साम्यवादी शासन के आने के बाद विशेष रूप से 1950 में बफर स्टेट के रूप में तिब्बत पर चीनी आधिपत्य के बाद दोनों देशों के संबंध बिगड़ना शुरू हुई लेकिन दोनों देशों के बीच झगड़ा पहली बार 1958 में सार्वजनिक हुए जब चीन में पार्क द्वारा अधिग्रहित भारतीय कश्मीरी अक्साई चीन को पाकिस्तान से लेकर उसे एक सड़क से जोड़ लिया इसके बाद 1958 से दोनों के मध्य लद्दाख और नफा में छुटपुट सैनिक मुठभेड़ होती रही 22 जुलाई 1962 को लद्दाख में भारतीय और चीनी सेनन के बीच संघर्ष की शुरुआत हुई जो अक्टूबर में बड़े पैमाने पर पहुंच गए इस युद्ध में भारतीय सेनन को बुरी तरह पराजित करने के बाद 29 नवंबर 1962 को चीन ने एक तरफ युद्ध विराम घोषित कर दिया 1963 में यह अफवाह फैली कि शीघ्र ही चीनी सरकार परमाणु बम का परीक्षण करने जा रही है इस अफवाह से जो की 1964 में सही सिद्ध हुए ने पहली बार भारतीय संसद में इस बहस को जन्म दिया कि भारत को बम बनाने की तैयारी शुरू करनी चाहिए। 16 अक्टूबर 1964 को चीनी आणविक परीक्षण ने दंग कर दिया जवाहरलाल नेहरू के उत्तराधिकारी लाल बहादुर शास्त्री ने इस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि चीनी विस्फोट विश्व शांति की स्थापना के प्रयासों के लिए एक खतरे के समान है। लेकिन 19 अक्टूबर को एक रेडियो सम्मेलन संबोधन में उन्होंने भारतीय बम की संभावना से इनकार करते हुए कहा कि भारत सरकार चीनी उदाहरण से प्रेरणा लेते हुए बम का विकास करने या उसका परीक्षण करने के पक्ष में नहीं है इस प्रकार शास्त्री जी ने यह स्पष्ट किया कि भारत सरकार आण्विक नीति के संदर्भ में अपनी नीति में कोई परिवर्तन नहीं करने जा रही है उन्होंने देश की जनता को भरोसा दिलाया कि उन्हें शांति में अपनी आस्था रखनी चाहिए। 1947 से 1964 के समय का भारत अमेरिका संबंधों का इतिहास दो समानांतर दिशाओं की उपस्थिति के कारण काफी मनोरंजक रहा गहरी तथा स्नेह पूर्ण मित्रता तथा सहयोग बढ़ाने की शिक्षा की पूर्ति करने हेतु वास्तविक सार्थक प्रयत्नों में असफलता। विश्व में दो बड़े लोकतंत्र के देशों के रूप में प्रक्रिया द्वारा शांति स्वतंत्रता एवं विकास के आदर्शों की प्रतिबद्धता तथा सुदृढ़ पारस्परिक सांस्कृतिक संपर्क तथा एक दूसरे के महत्व को पहचानते हुए भारत तथा अमेरिका दोनों की मित्रता तथा सहयोग कायम करने की इच्छा रखते हैं तथापि विदेश नीति परिप्रेक्ष्यों तथा कुछ मुख्य अंतरराष्ट्रीय समस्याओं तथा विश्व में मतभेदों ने इस इच्छा को मूर्त रूप नहीं लेने दिया परिणाम स्वरूप भारत अमेरिकी संबंधों में त्रिपुंड तो रहे किंतु इनमें गरिमा नहीं बन सके इसी कारण मित्रता की तीव्र इच्छा होने के बावजूद दुर्भाग्य से भारत तथा अमेरिका के बीच द्विपक्षीय संबंध अधिक संदेहास्पद तनाव तथा गलतफहमी की वातावरण में संचालित हुए हैं नेहरू युग भारतीय विदेश नीति के निर्माण का उषाकाल था नेहरू श्रम अपने विदेश मंत्री थे तथा स्वतंत्रता के बाद वे तत्काल ही भारत की विदेश नीति के निर्माण में तथा दूसरे देशों के विशेषता या महा शक्तियों के साथ संबंध कायम करने में जुट गए। सन 1949 में भारत तथा अमेरिका के संबंधों के नए सिरे से शुरू करने के लिए दो साहसिक पर्यटन किए गए जुलाई 1947 में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित को अमेरिका में राजदूत बनाकर भेजा गया तथा अक्टूबर 1949 में श्री नेहरू ने भारत के लिए अमेरिका मैत्री सहयोग तथा सहायता प्राप्त करने के लिए अमेरिका की यात्रा की इस समय तक अमेरिका भी भारत के साथ संबंध विकसित करने के प्रति सचेत हो गया था क्योंकि चीन एक बड़े साम्यवादी देश के रूप में उभर कर सामने आ गया था नेहरू ने अमेरिका को समझने का कड़ा प्रयत्न किया कि भारत को अमेरिका की सहायता की आवश्यकता है परंतु अमेरिका की सरकार ने कोई विशेष प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। 1949 ईस्वी में अमेरिका तथा भारत के बीच कोई समझौता न होने के निम्न मुख्य कारण थे। १) पारस्परिक सम्मान तथा समय की कमी।

२) दोनों ओर से एक दूसरे से अत्यधिक आशाएं ऐसी आशाएं जो गलत धारणाओं पर आधारित थी।

३) अमेरिका द्वारा यह आशा कि भारत अमेरिका की नीति को स्वीकार करेगा।

४) भारत की गुटनिरपेक्षता और विदेश संबंधों में स्वतंत्रता की नीति।

५) भारत द्वारा अमेरिका के लोकतंत्र को शिरोमणि माना तथा उसे यह आशा करना कि अमेरिका लोकतांत्रिक भारत को सहायता देने के लिए आसानी से राजी हो जाएगा।

६) अमेरिका का यह सोचना कि भारत बड़ा कमजोर तथा पिछड़ा हुआ देश है, जिसे आर्थिक साधनों की अत्यधिक आवश्यकता है।

सन 1948 में कश्मीर की समस्या ने भारत अमेरिका संबंधों

में सर्वप्रथम तनाव पैदा किया संयुक्त राष्ट्र संघ में माउंटबेटन तथा ब्रिटिश तथा अमेरिकी प्रतिनिधियों के प्रभाव के कारण ही भारत ने कश्मीरी समस्या को संयुक्त राष्ट्र संघ में पेश करने का निर्णय किया था तथापि संयुक्त राष्ट्र संघ में कश्मीर पर बहस के दौरान अमेरिका तथा अन्य देशों के विचार पाकिस्तान के ही पक्ष में रहे वास्तव में अमेरिका ने यह सोचना आरंभ कर दिया था कि शायद पाकिस्तान अमेरिका की सुरक्षा संधिया को स्वीकार कर लेगा सन 1949 में जब चिन्मवों के नेतृत्व में एक साम्यवादी देश के रूप में उभर कर सामने आया तो भारत ने चीन के लिए अपने संबंधों के महत्व को समझते हुए दिसंबर 1949 में इसको पूर्ण मान्यता देने का निश्चय किया भारत के इस निर्णय पर अमेरिका ने है प्रसन्नता तथा कड़ा विरोध प्रकट किया क्योंकि वह समझता था कि ऐसा निर्णय साम्यवाद के नियंत्रण की अमेरिका की नीति के विरुद्ध था अमेरिका ने यह महसूस किया कि भारत का यह निर्णय अमेरिका के विरुद्ध रस की सहायता करेगा तथा इस प्रकार विश्व के विभिन्न भागों में साम्यवाद के बढ़ते तनाव को और अधिक बल मिलेगा। इसके अतिरिक्त जून 1951 अमेरिका ने जापान के साथ शांति संधि करने के लिए सान फ्रांसिस्को में सम्मेलन बुलाया उसमें भारत में भाग लेने से इनकार कर दिया भारत ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह यह महसूस करता था कि अमेरिका जापान को पश्चिमी सुरक्षा व्यवस्था में शामिल करने का प्रयत्न कर रहा है भारत के इस निर्णय का अमेरिका ने फिर कड़ा विरोध किया तथा इसका अर्थ यह नहीं कि 1949– 1952 के बीच के समय में अमेरिका तथा भारत किसी भी प्रकार का सहयोग करने में असफल रहे। सन 1951 में भारत ने अमेरिका से आर्थिक सहायता तथा खाद्य सहायता मांगी अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रू मैंने तुरंत कार्रवाई की तथा अमेरिका ने भारत को बहुमूल्य खाद्य सहायता तथा आर्थिक सहायता प्रदान की। अप्रैल 1954 में अमेरिका ने पाकिस्तान के साथ संधि संबंध कायम किया पाकिस्तान सीटों में शामिल हो गया तथा उसने अमेरिका से भारी पत्र में सैनिक सहायता लेना शुरू कर दिया इसका भारत ने कड़ा विरोध किया क्योंकि वह उसे एशिया में शीत युद्ध का विस्तार समझता था स्टालिन के बाद के काल में रूस के साथ भारत के मैत्रीपूर्ण संबंधों का प्रारंभ भी अमेरिका को अच्छा नहीं लगा सन 1955 में नेहरू की रूस यात्रा तथा उसके बाद रूसी नेता खुशचेव तथा बुल्गानिन की भारत यात्रा तथा रूसी भारतीय भाई–भाई के नारे ने एक बार फिर अमेरिका को नाराज कर दिया 1956 ईस्वी में भारत ने स्वेज संकट समस्या पर अमेरिका के परिपक्व निर्णय की भूरी भूरी प्रशंसा की तथा इससे दोनों के संबंधों में कुछ सुधार हुआ तथापि हंगरी में रूस के हस्तक्षेप की आलोचना करने से भारत का इंकार तथा मध्य पूर्व में लेबनान में अमेरिकी संलिप्तता का भारत द्वारा विरोध इन सब का पूरा प्रभाव पड़ा। 1959 ईस्वी में अमेरिका के राष्ट्रपति आइजनहावर ने भारत यात्रा की इस यात्रा से दोनों देशों के संबंधों में सुधार की एक नई आशा का संचार हुआ। सन 1950 में अमेरिका के राष्ट्रपति मिस्टर जेएफ केनेडी भारत अमेरिका मैत्री के जाने–माने समर्थक थे तथा सीनेटर के रूप में उन्होंने भारत के साथ गहरी मित्रता का समर्थन किया था। कैनेडी के प्रशासन के दौरान 1962 में जब भारत चीन के आक्रमण का शिकार हुआ तथा परिणाम स्वरुप उसे अमेरिका की सैनिक तथा आर्थिक सहायता की आवश्यकता पड़ी तब अमेरिका ने तुरंत ही छोटे शास्त्र भारत भेजने शुरू कर दिए तथा भारत के आकाश की सुरक्षा के लिए उसे अमेरिकी हवाई सेवा द्वारा सुरक्षा का आश्वासन दिया। अमेरिका की सहायता से भारतवासी केनेडी के आभारी होगे तथापि इस अवसर पर भारत ने गुटनिरपेक्षता को छोड़ने से इंकार कर दिया। 1947 से लेकर 1964 तक भारत तथा अमेरिका के संबंधों के विवरण से तनाव का स्पष्ट वर्णन मिलता है किंतु इसका अर्थ कदापि नहीं कि नेहरू युग में दोनों देशों के बीच सहयोग नहीं था 1950 के प्रारंभिक वर्षों में भारत तथा अमेरिका के बीच आर्थिक संबंध महत्वपूर्ण ढंग से विकसित हुए नेहरू युग में अमेरिका में भारत को बहुमूल्य आर्थिक एवं खाद्यान्न सहायता प्रदान की अमेरिका के राजदूत सोचता उसने अमेरिका तथा भारत के बीच आर्थिक संबंधों के विकास को अच्छी दिशा दी तथा उनके परिजनों के परिणाम स्वरुप ही अमेरिका ने भारत को आर्थिक एवं खाद्यान्न सहायता देना शुरू किया 1953 में अमेरिका की सहायता तथा समर्थन से भारत सहायता क्लब की स्थापना की गई इस क्लब के अन्य सदस्यों के साथ अमेरिका ने भी भारत की आर्थिक योजनाओं को सफल बनाने के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त करने वाला मुख्य देश बन गया।

पहला परमाणु परीक्षण मई 1974 तथा उस पर अमेरिका का दृष्टिकोण भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के काल में मई 1974 में किया था इस परमाणु परीक्षण के साथ ही भारत परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्रों की संख्या में बढ़ोतरी करके परमाणु क्लब का छठा सदस्य बन गया। 50 के दशक में प्रारंभिक अध्ययन बीआरसी में किए गए और प्रोटोनियम तथा अन्य बम घटकों के उत्पादन में विकसित करने की योजना थी 1964 में चीनी परमाणु परीक्षण से भारत में अपने आप को कमतर महसूस किया जब विक्रम साराभाई इसके प्रमुख बन गए और 1965 में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने इस में कम रुचि दिखाई तो परमाणु योजना का संकरण धीमा हो गया बाद में जब इंदिरा गांधी 1966 में प्रधानमंत्री बनी वह भौतिक विज्ञानी राजा रमना के प्रयासों में शामिल होने पर परमाणु कार्यक्रम समिति किया गया चीन के द्वारा परमाणु परीक्षण करने के कारण अंत में 1967 में परमाणु हथियारों के निर्माण और भारत को निर्णय लेना पड़ा 1974 में अपना पहला परमाणु परीक्षण मुस्कुराते बुद्ध आयोजित किया। जुलाई 1971 में चीन के दौरे के बाद किसिंजर ने वाशिंगटन स्थित भारतीय राजदूत झांसी कहा कि अगर बांग्लादेश के मुद्दे पर भारत पाकिस्तान युद्ध हुआ और चीन को पाकिस्तान की तरफ से हस्तक्षेप करना पड़ा तो अमेरिका भारत को समर्थन देने की स्थिति में नहीं होगा स्पष्ट तौर पर यह धमकी देने का प्रयास था ताकि भारत को उसके राष्ट्रीय हितों और सुरक्षा की रक्षा की कार्यवाही करने से रोका जा सके और इस परोक्ष धमकी की सूचना भी थी कि नाभिकीय हथियार संपन्न

चीन पाकिस्तान के समर्थन में हस्तक्षेप कर सकता है। इस धमकी में श्रीमती इंदिरा गांधी को भारत सोवियत संघ पर हस्ताक्षर करने पर मजबूर कर दिया भारतीय शोभित संधि भारत के लिए एक अवस्थी इस मैत्री संधि ने न सिर्फ चीनी हस्तक्षेप के खिलाफ कवच का काम किया बल्कि जब इंटरप्राइज मिशन भेजा गया तो वह अमेरिका के खिलाफ भी कवच बन गई 1980 के चुनाव में इंदिरा गांधी की वापसी को चिन्हित किया और परमाणु कार्यक्रम की गतिशीलता में तेजी आ गई सरकार की ओर से अन्य कोई परमाणु परीक्षण करने से इनकार किया जाता रहा प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देखा कि पाकिस्तान ने अपने परमाणु कार्यक्रम को जारी रखा है तो परमाणु कार्यक्रम को आगे बढ़ाना जारी रखा गया।

परमाणु शक्ति तथा अंतरिक्ष एवं प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम

1980 के दशक से पक्षपात रोकी विकास के कारण भारत की परमाणु नीति में प्रमुख परिवर्तन आया 1970 के दशक में परमाणु अप्रसार संधि द्वारा परमाणु परीक्षणों के प्रति महा शक्तियों द्वारा कठोर रूप अपने के कारण गैर परमाणु राष्ट्रों के सीधे प्रक्षेप पत्रों के माध्यम से अपनी सुरक्षा पर बोल दिया भारत में होमी भाभा व विक्रम साराभाई जैसे वैज्ञानिकों के निर्देशन में परमाणु ऊर्जा में शोध कार्यक्रम प्रारंभ से ही आणविक ऊर्जा विभाग की प्रमुख प्राथमिकता रही है बाद में अंतरिक्ष कार्यक्रम की एक स्वतंत्र विभाग के रूप में कार्य करने लगा 1962 में भारतीय राष्ट्रीय शोध समिति की स्थापना की गई 1972 में इसे स्वतंत्र विभाग बना दिया गया भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के दो मुख्य उद्देश्य है।

१) किसी भी राष्ट्र को कोई दूसरा राष्ट्र आधुनिकतम तकनीकी ज्ञान से वंचित नहीं करेगा तथा दूसरा विकासशील देशों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अति आधुनिकतम तकनीकी ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए।

परमाणु अप्रसार संबंधित अंतरराष्ट्रीय स्तर का प्रयास

भारत की परमाणु नीति का अंतरराष्ट्रीय परमाणु अप्रसार संबंधित संस्थाओं से गहन संबंध रहा है इस संदर्भ में परमाणु शस्त्रों पर निषेध का भारत हमेशा पक्षधर रहा है इसलिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परमाणु प्रसार को रोकने के लिए किए गए प्रयासों में भारत ने हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है भारत में हमेशा विश्वास है कि परमाणु हथियारों सहित विश्व एवं भारत के हितों और भूमंडलीय सुरक्षा में अभिवृद्धि करेगा इसलिए भारत परमाणु निशस्त्रीकरण को प्रथम प्रयास के रूप में सर्वोच्च प्राथमिकता देने की निरंतर वकालत करता रहा है भारत ने 1948 में परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण सहयोग एवं हथियारों में परमाणु हथियारों समाप्ति के लिए आवान किया पर रोक लगाने की आवाज उठाने वाला पहला देश था जिसने संयुक्त राष्ट्र महासभा में परमाणु परीक्षण पर रोक लगाने हेतु औपचारिक प्रस्ताव रखा।

वैश्विक परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन अप्रैल 2010

अमेरिका वाशिंगटन में 12रू00 13 अप्रैल 2010 को दूसरे विश्वयुद्ध एवं संयुक्त राष्ट्र के गठन के बाद हुए सम्मेलन की याद को ताजा करने वाले वैश्विक परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ इस सम्मेलन में परमाणु प्रतिष्ठानों की सुरक्षा को मजबूत बनाने के उपायों पर चर्चा की गई सम्मेलन के 47 देशों के नेताओं ने दुनिया को परमाणु हथियारों से मुक्त करने के उद्देश्य से आहत इस सम्मेलन को दुनिया भर से नैतिक समर्थन मिला इस सम्मेलन में भारत का नेतृत्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने किया चीन रूस फ्रांस जर्मनी सहित चार महा शक्तियों द्वारा इसका समर्थन करना पहले चरण में ओबामा के लिए सफलता के लिए समान है फिर भी इजरायल उत्तरी कोरिया जैसे देश सिरदर्द बन रहे हैं वही भारत और पाकिस्तान कह चुके हैं कि वे ईरान पर प्रतिबंध लगाने के इच्छुक नहीं है अमेरिका की परमाणु नीति से ज्यादा सहमत नजर नहीं आ रहे हैं परमाणु हथियार मुक्त दुनिया एक रोचक कल्पना है फिर भी इसका क्रियान्वयन मुश्किल है सिर्फ अमेरिका और रूस के पास आज भी 20,000 से अधिक परमाणु हथियार हैं यह दोनों परमाणु हथियारों अधिकता को कम करने के लिए सहमत हुए हैं लेकिन समूचे विश्व में इस प्रकार के सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए बड़े प्रयास करने होंगे।

परमाणु सुरक्षा सम्मेलन मार्च, 2012

यह शिखर सम्मेलन बराक ओबामा की पहल पर हुआ ओबामा चाहते हैं कि 4 साल के भीतर विश्व की सभी संवेदनशील परमाणु सामग्री की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। अमेरिका के पास अत्यधिक समृद्धि यूरेनियम और प्लूटोनियम विश्व का तेरा सबसे बड़ा स्टॉक है। उसे अपने बम ग्रेड सामग्री की सुरक्षा के लिए ऐसे कदम उठाने होंगे जिससे दूसरे देश भी इससे प्रेरित हो।

भारत अस्त्र संपन्न राष्ट्र के रूप में 1958 से आज तक

11:00 13 मई 1958 को भारत ने क्रमशः 3 व दो परमाणु परीक्षण करके अपने आपको परमाणु शक्ति के संदर्भ में प्रवेश द्वार पर खड़े राष्ट्र की श्रेणी से निकालकर परमाणु अस्त्र संपन्न राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा कर दिया है। इनमें 45 किलो टर्न एक फ्यूजन परमाणु उपकरण शामिल था इसे आमतौर पर हाइड्रोजन बम के नाम से जाना जाता है 11 मई को हुए परमाणु परीक्षण में 15 किलो टन का विखंडन उपकरण और 0.2 किलो टन का सहायक उपकरण शामिल था परमाणु परीक्षण के बाद जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित प्रमुख देशों द्वारा भारत के खिलाफ विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम की अगुवाई में यह मिशन कुछ इस तरह से अंजाम दिया गया कि अमेरिका सहित पूरी दुनिया को इसकी भनक तक नहीं लगी भारत ने सीआईए और उसके सेटेलाइट ओ को चकमा देते हुए परीक्षण कर दिया 10 मई की रात को योजना के अंतिम रूप देते हुए ऑपरेशन को ष्ऑपरेशन शक्तिष् का नाम दिया गया । भारत ने 1980 के दशक से चल रही अपनी परमाणु नीति में विकल्प खुले रखने की परिस्थिति को छोड़कर इसका वास्तविक उपयोग कर लिया है भारत की परमाणु नीति नई परमाणु नीति का आकलन निम्न शिरषकों के अंतर्गत किया जा सकता है।

१) परमाणु सिद्धांत

२) परमाणु वचनबद्ध बताएं

३) परमाणु परीक्षण एवं परिणाम

४) परीक्षण क्यों

५) भारत की भविष्य के लिए चिंताएं

भारत अमेरिका परमाणु समझौता तथा उसकी उपयोगिता

भारत अमेरिका परमाणु समझौता 18 जुलाई 2006 भारत और अमेरिका के बीच हुआ परमाणु समझौता है भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने समझौते पर हस्ताक्षर किए 18 जुलाई 2005 को वाशिंगटन में मनमोहन सिंह और अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने साझा बयान जारी कर इस परमाणु करार की घोषणा की थी मार्च 2006 में जॉर्ज बुश भारत की यात्रा पर आए तो सैनिक और असैनिक परमाणु रिएक्टरों को अलग करने पर भी सहमति बनी इसके बाद अमेरिकी संसद ने हाइड एक्ट पारित किया लेकिन करार को असली जामा पहनने से संबंधित 123 समझौते पर काफी अरसे से सहमति नहीं बन पाई 18 जुलाई 2006 को इसे अंतिम रूप दिया गया समझौते के बाद राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने कहा कि यह समझौता भारत के साथ जो विश्व का एक महत्वपूर्ण नेता है हमारी गहरी भागीदारी में निरंतर जारी प्रगति की दिशा में एक और कदम है।

असहमति के मुद्दे दो बड़े मुद्दे थे जिन पर दोनों देशों में सहमति नहीं बन पाई थी भारत की मांग थी कि भविष्य में अगर यह परमाणु परीक्षण करता है तो उसका इस समझौते पर कोई असर न पड़े इसलिए अमेरिकी कानून में बदलाव की जरूरत पड़ती है और अमेरिका इसके लिए तैयार नहीं था इसके अलावा भारत परमाणु संयंत्रों के इस्तेमाल हुए इंदन पर पूरा हक चाहता था यानी कि बिजली पैदा करने के बाद इंधन का क्या इस्तेमाल होता है जय भारत तय करना चाहता था 18 जुलाई 2006 को इसे अंतिम रूप दिया गया।

समझौते की विशेषताएं

१)यह समझौता ऐसे दो देशों के बीच है जिनके पास उन्नत परमाणु प्रौद्योगिकी और दोनों पक्षधरों के समाज हित और फायदे होंगे।

२) इस समझौते का उद्देश्य भारत और अमेरिका के बीच पूर्ण सैनिक परमाणु ऊर्जा सहयोग में समर्थन देना है।

३) इस समझौते में 2 मार्च 2006 के आपूर्ति आश्वासन और सुधारात्मक उपायों के प्रावधान का पूर्ण समावेश है।

४)यह समझौता परमाणु व्यापार परमाणु सामग्री उपकरणों के लिए पुर्जा और संबंधित प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण तथा परमाणु ईंधन चक्र क्रियाकलापों में सहयोग का प्रावधान करता है।

५) यह समझौता हस्तांतरित सामग्री और उपकरणों के लिये ८।म। रक्षा उपायों के अनुप्रयोग का प्रावधान करता है।

६) समझौता परमाणु सामग्री के पुनर साधन परमाणु सामग्री और उसके उत्पाद दोनों के हस्तांतरण के लिए पूर्व सहमति प्रदान करता है इसे लागू करने के लिए भारत आरक्षित परमाणु सामग्री को पुनः संशोधित करने के लिए राष्ट्रीय पुनरुत्थान सुविधा की स्थापना करेगा और पक्ष कार 1 वर्ष के अंदर व्यवस्था और प्रक्रिया पर सहमत होंगे।

निष्कर्षः

प्रत्येक विषय के दो पहलू होते हैं सकारात्मक और नकारात्मक भारत अमेरिका परमाणु समझौता क्यों आवश्यक है ? और इस कोई उपयोगिता क्या है इस इस प्रकार समझा जा सकता है–इस समझौते से परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग का रास्ता खुलेगा परमाणु समझौते से भारत पर से न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप से पाबंदियां हटा देगा जिसकी वजह से भारत को वह तकनीक नहीं मिल पाती जिसका दोहरा उपयोग हो सकता है इसे नियंत्रित तकनीक भी कहा जाता है और विश्व की प्रमुख शक्ति बनने हेतु परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना जरूरी है इस समझौते से ऊर्जा के विभिन्न प्रकार के विकल्प खुलेंगे परमाणु ऊर्जा से चिकित्सा के क्षेत्र में तेजी से विकास होगा समझौता लागू हो जाने से भारत की ऊर्जा की जरूरतें पूरी हो सकेंगे सॉफ्टवेयर कंपनियों को यह विकसित तकनीकी हासिल हो पाएगी और महत्वपूर्ण बात यह है कि वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर ने भारत को हर स्तर पर चुनौती का सामना करना पड़ रहा है इसके लिए भारत को अत्यधिक ऊर्जा की आवश्यकता है जिसकी पूर्ति के लिए भारत को अमेरिका सहित परमाणु आपूर्ति करता देश के साथ बेहतर लाल मेल रखना जरूरी है नकारात्मक पहलू में यह है कि भारत पर परोक्ष रूप से एनपीटी पर हस्ताक्षर करवाने की संभावना हो सकती है और अमेरिका का मूल लक्ष्य परमाणु समझौते की आड़ में पक्षपात पूर्ण प्रतिबंधात्मक अंतरराष्ट्रीय ढांचे में भारत को घसीटना है इससे भारत की गुटनिरपेक्ष तथा सशक्त राष्ट्र की छवि को नुकसान होगा भविष्य में परमाणु परीक्षण न कर पाने से भारत के परमाणु हथियारों के विकास कार्यक्रमों को नुकसान होने की संभावना हो सकती है और भारत दूसरे देशों पर निर्भर रह सकता है भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता और तटस्थ था कि रही है अमेरिकी का के साथ ही समझौते के बाद भारत की गुटनिरपेक्षता नीति के औचित्य पर सवाल खड़ा हो सकता है।

संदर्भ सूची

१)विदेश मंत्रालय भारत सरकार रिपोर्ट नई दिल्ली।

२)हरीश कुमार खत्री भारत की विदेश नीति कैलाश पुस्तक भोपाल मध्य प्रदेश

३) ओमप्रकाश तिवारी राष्ट्रीय सुरक्षा ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली।

४) राममूर्ति मीणा भारत अमेरिका संबंध एबीडी प्रकाशन जयपुर।

५) एसके कपूर अंतर्राष्ट्रीय विधि सेंट्रल लॉ एजेंसी प्रकाशन इलाहाबाद।

६) आर एस यादव ष्भारतीय विदेश नीतिष किताब महल पब्लिकेशन नई दिल्ली।

डॉ0 रेनू राना

एसोसिएट प्रोफेस,

विभागाअध्यक्ष, राजनीति शास्त्र विभाग,

पंडित नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक

फोन नंबर–9416692888

2

महिला सशक्तिकरण

मधु सिंगला

सारांशः–

अटल सत्य यही है कि महिलाएं न जाने कितने ही रूपों में धरा की भांति अनेक कष्टों को सहन करते हुए भी समाज को,परिवार को सुदृढ़ नींव प्रदान करती है ।एक शिक्षित नारी पूरे परिवार को शिक्षित करने में सक्षम है। वैज्ञानिक युग में आवश्यकता है कि स्त्री के महत्व को समझा जाए,स्वयं स्त्री भी अपने प्रति जागरूक रहे क्योंकि समाज मे दूषित प्रवृत्ति का एक वर्ग नारी को आज भी कमजोर ही समझता है जो उसके स्वयं कमजोर होने का प्रमाण है। अपने देश,समाज और परिवार के प्रति समर्पित भाव के लिए शक्तिवान होना परमावश्यक है। अतः सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों की जानकारी, दिए गए अधिकारों का उपयोग और कर्तव्यों के पालन द्वारा ही नारी सशक्तिकरण के प्रयास सार्थक सिद्ध होंगे।

'जय हिंद जय भारत'

सशक्तिकरण अर्थात शक्ति संपन्न। शारीरिक मानसिक, आर्थिक, सामाजिक रूप से शक्ति संपन्न होना सशक्तिकरण कहलाता है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि व्यक्ति का सत्ता के अधिकार से परिपूर्ण होना सशक्तिकरण है। सशक्तिकरण का क्षेत्र केवल कार्यालय और घर तक सीमित नहीं हैं अपितु इससे अभिप्राय संसाधनों पर अधिकार से भी है।

सशक्तिकरण– ''शक्ति अथवा सत्ता का अधिकार'' ।

सशक्तिकरण ऐसी विकासात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शक्तिहीन व्यक्ति जीवन के परिस्थितियों को नियंत्रित करने में सक्षम हो जाता है।

स्त्री और पुरुष दोनों ही समाज के अभिन्न अंग, अनिवार्य शर्त और एक दूसरे के पूरक हैं स्वयं प्रकृति है, और किन्ही मायनों में सृष्टि का आधार भी । इसे समय की विडंबना कहा जा सकता है कि समाज में नारी को वह पद, वह स्तर, वह प्रतिष्ठा, वह मुकाम दिया ही नहीं गया जिसकी वास्तव में वह हकदार है। पूर्व वैदिक काल में स्त्री की स्थिति काफी अच्छी थी। समय परिवर्तन के अनुसार नारी की स्थिति बद से बदतर होने लगी और कह सकते हैं कि तभी से नैतिक मूल्यों में गिरावट और देश के विकास का मार्ग अवरुद्ध हो गया।

वैदिक काल में नारी की स्थितिः–

पूर्व वैदिक काल में नारी को साक्षात देवी रूप में माना जाता था। उसे पुरुष के समान शिक्षा,धर्म,राजनीति,आर्थिक, सामाजिक सभी अधिकार प्राप्त थे। प्राचीन भारतीय संस्कृति स्त्री और श्री को समान माना गया और उसे भारतीय संस्कृति का प्रतीक भी।

''यजुर्वेद स्त्री को गृहस्थ को नियम में रखने वाली एवं तेज से प्रकाशमयी के विशेषण से विभूषित करता है

हे स्त्री!तू समस्त गृहस्थों को नियम में रखने वाली तेज से प्रकाशमयी, नियमकारिणी है। नियम व्यवस्थाकारिणी है, प्रजा को धारण करने वाली स्थिर है। तुझे संपदा की वृद्धि के लिए, तुमको पराक्रम की प्राप्ति के लिए,तुमको ऐश्वर्या की वृद्धि के लिए, तुमको पुष्टि के लिए मैं ग्रहण करता हूं।''[1]

मध्यकालः– 11वीं से 18 वीं शताब्दी तक

मध्य काल का समय नारी शक्ति के दृष्टिकोण से काला काल' कहा जा सकता है। हिंदू राजाओं के आपसी मतभेदों, फूटों का लाभ मुस्लिम संप्रदाय ने उठाया और धीरे–धीरे अपना अधिपत्य, अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। मुख्य रूप से नारी के पतन की शुरुआत यहीं से हुई।

''मध्ययुगीन समाज में हिंदू नारी की स्थिति बड़ी दयनीय और शोचनीय थी। भारत में मुसलमानों के आक्रमण के कारण उनकी दशा निरंतर ह्रास की ओर अग्रसर होती गई। हिंदू समाज में नारी जीवनपर्यंत पुरुष वर्ग के अधीन और आश्रित रही। पुत्री के रूप में वह पिता के नियंत्रण में रही और विवाह के बाद उसे पति के आदेशों का पालन करना पड़ता था। वृद्धावस्था में यदि वह विधवा हो जाती थी तो उसे पुत्रों के अधीन रहना पड़ता था।''[2]

आधुनिक कालः– 1900 से अब तक

शाश्वत सत्य है कि परिवर्तन सृष्टि का नियम है। स्त्रियों की स्थिति में सुधार 19वीं सदी के पूर्वार्ध से होने लगा था। 1900 तक आते–आते नारी की स्थिति में बड़े बदलाव आए। रीतिकाल तक भी जहां नारी की माँसलता का ही अश्लील चित्रण होता था, वहीं अब आधुनिक साहित्यकारों ने नारी के प्रति कोमल और निर्मल भावों की अभिव्यक्ति करी । आधुनिक काल के साहित्यकारों ने नारी को समर्पण, लज्जा, संयम, धैर्य, सहनशीलता, सौम्यता का प्रतीक माना द्य आधुनिक हिंदी साहित्य के अग्रदूत भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 1874 से 1877 तक प्रथम स्त्री केंद्रित पत्रिका 'बालबोधिनी' का संपादन किया । भारतेंदु 'बालबोधिनी' में लिखते यदि आप मेरी बचकानी हकलाहट पर ध्यान देंगी तब मैं सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करूंगा कि मेरे हिंदुस्तान की महिलाएं साक्षर हो जाएं और अपने पुरुष की किस्मत के बराबर की भागीदार बने।''

कलम सभ्यता और संस्कृति की प्रतीक है। अतः आधुनिक काल के सैकड़ों साहित्यकारों ने नारी की शक्ति को श्रेष्ठ माना और देश भर में अपने साहित्य के जरिए स्त्री के प्रेम, दृढ़– निश्चयी, परिश्रमी इत्यादि गुणों का बखान किया। नाटक शिरोमणि जयशंकर प्रसाद लिखते हैं

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो

जीवन के सुंदर समतल में।''[3]

जयशंकर प्रसाद के प्रत्येक नाटक में नारी पात्र सशक्तता की परिचायक है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद गोदान' में लिखते **''स्त्री पृथ्वी की भांति धैर्यवान है, शक्ति संपन्न है, सहिष्णु है। पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है। नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं। तो वह कुलटा हो जाती है।''[4]**

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकताः–

19वीं सदी के मध्य काल से 21वीं सदी तक आते–आते नारी की स्थिति में सकारात्मक सुधार हुए स्वतंत्रता संग्राम में भी नारी की भूमिका काफी सशक्त रही थी । चाहे सुचेता कृपलानी के रूप में, चाहे सरोजनी नायडू या महादेवी वर्मा इत्यादि सभी क्षेत्रों में नारी अपनी सशक्तता का परिचय देने लगी। विश्व भर में अपनी शक्ति का लोहा मनवाने में विशेष रूप से भारत जिस प्रकार से गुलामी की जंजीरों में झगड़ा हुआ था महिलाओं की सशक्त भागीदारी ने यह सिद्ध कर दिया कि वे पुरुष से किसी भी प्रकार से पीछे नहीं है। स्त्री को पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चलने दिया जाये तो भारत विकासशील देश नहीं अपितु विकसित देश की श्रेणी में होगा । अतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार ने महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक कार्य अथवा ठोस कदम उठाए। संविधान की प्रस्तावना के अनुसार स्त्री– पुरुष को प्रत्येक क्षेत्र में समान अधिकार हैं। हालांकि भारतीय पुरुष प्रधान समाज ने नारी को बराबरी का दर्जा कम ही दिया परंतु महिलाओं ने शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, प्रशासनिक और खेलकूद जैसे क्षेत्रों में नई उपलब्धियां हासिल की, नए आयाम, नई मिसालें कायम की। नारी शिक्षिका, वैज्ञानिक, पायलट, डॉक्टर, इंजीनियर, तकनीशियन, सेना, पत्रकारिता आदि सभी क्षेत्रों में सफलता का परचम लहरा रही है। इसके ज्वलंत उदाहरण भूतपूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, भूतपूर्व दिल्ली मुख्यमंत्री शीला दीक्षित, वर्तमान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, विज्ञान के क्षेत्र में कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, खेलकूद के क्षेत्र में पीवी सिंधु, सायना से एक यूपीएससी की परीक्षा को पास करने वाली प्रथम, द्वितीय रैंक प्राप्त करने वाली भी रियां ही हैं। आंकड़ों के अनुसार 21वीं सदी में 50ः से ज्यादा महिलाएं डॉक्टरी की परीक्षा उतीर्ण करती हैं 21ः महिलाएं सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में उच्च स्थान पर हैं, लड़ाकू विमान से लेकर पंच सितारा होटल में प्रबंध कार्य तक में महिलाएं दक्षता से कार्य कर रही हैं। महिलाओं के अथक प्रयासों और सराहनीय सहनशीलता के बावजूद महिलाएं आज भी सुरक्षित नहीं है। जैसे–जैसे नारी की गति ने प्रगति पाई है वैसे–वैसे नारी असुरक्षित होती जा रही है। विशेष रुप से बात महानगरों की जाए तो उनकी स्थिति शोचनीय है। सार्वजनिक स्थलों से लेकर परिवार तक मैं आज भी स्त्री सुरक्षित नहीं है। मध्यमवर्ग हो, निम्न वर्ग हो या उच्च वर्ग । यहाँ तक कि कोई व्यवसाय हो या नौकरी, नारी आज भी शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित की जाती है । कह सकते हैं कि हां... भारत आज भी कहीं ना कहीं मानसिक गुलामी का शिकार है। स्त्री पुरुष के वेतन में आज भी अंतर रखा जाता है। पदोन्नति के अवसर भी कम मिलते हैं और साथ ही अक्सर देखा जाता है कि उनका शारीरिक शोषण भी इसलिए ही किया जाता है। बलात्कार जैसे अमानुषिक कुकृत्यों की दर भी दिन– प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। बलात्कार करने वाला पुरुष वर्ग एक ऐसा वर्ग है जिसे मानसिक विकृतियों का शिकार कह सकते हैं। यौन उत्पीड़न जैसी घटनाएं प्रत्येक आयु प्रत्येक वर्ग की महिलाओं को, लड़कियों को सहनी पड़ रही है। यह एक चिंताजनक और विचारणीय प्रश्न है कि प्रत्येक क्षेत्र में जब नारी इतनी सशक्त हो रही है तो आज भी वह इतनी शोषित क्यों है????अपराधिक आंकड़े क्यों दिन पर दिन बढ़ते जा रहे हैं?????जबकि इस दिशा में सरकार द्वारा अनेक कानून भी बनाए गए हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व नारी की स्थिति देखी जाए या स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की, नारी की स्थिति में अंतर जरूर है लेकिन हिंसात्मक स्तर पर देखा जाए तो नारी की स्थिति आधुनिक समय में भी दयनीय है। भारत सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए अनेक प्रकार के कानून और उन्हें विशेष प्रकार के अधिकार दिए हैं आवश्यकता इस बात की है कि महिलाएं अधिक से अधिक शिक्षित हो जिससे कि वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत रहें आज भी ग्रामीण इलाकों में जहां पर साक्षरता की दर कम है वहां की महिलाएं आज भी शोषण का शिकार हो रही हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तावना के अंतर्गत महिलाओं की सुरक्षा हेतु कुछ अधिनियम बनाए गए हैं जो इस प्रकार हैंः–

1. न्यूनतम मजदूरी अधिनियम (1948)

इस अधिनियम के अंतर्गत पुरुष और महिला को मिलने वाले न्यूनतम पारिश्रमिक में कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा । अर्थात किसी भी कार्य के लिए उनका जो न्यूनतम पारिश्रमिक तय किया गया है उसमें कोई भी कटौती नहीं की जाएगी।

2. कारखाना अधिनियम (1948) एवं खान अधिनियम (1952)

इन अधिनियमों के अनुसार महिलाओं को शाम 7:00 बजे से लेकर सुबह 6:00 बजे तक काम पर नहीं बुलाया जाएगा और काम के दौरान उनके सुरक्षा और कल्याण के लिए सभी इंतजाम को और सुविधाओं को ध्यान में रखा जाएगा।

3. हिंदू विवाह अधिनियम (1955)

इस अधिनियम में विवाह और तलाक के लिए पति–पत्नी के अधिकार समान होंगे।

4. हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम (1956)

इसके तहत प्रत्येक महिला का अपने पिता के संपत्ति पर उतना ही अधिकार होगा जितना कि एक पुरुष का अर्थात पिता की संपत्ति में बेटी उतनी ही भागीदार होगी जितना बेटा। वह अपनी

इच्छा अनुसार अपना हक मांग सकती है।

5. अनैतिक देह व्यापार बचाव अधिनियम (1956)

इस अधिनियम के द्वारा महिलाओं व लड़कियों के यौन शोषण (वेश्यावृत्ति) के लिए उनको बेचना अर्थात इस प्रकार की तस्करी को रोका जाएगा।

6. दहेज निषेध अधिनियम (1961)

इसमें दहेज संबंधी प्रावधान है कि विवाह पूर्व या विवाह के पश्चात दहेज लेना या मांगना दंडनीय अपराध होगा।

7. मातृत्व लाभ अधिनियम (1961)

इस अधिनियम के तहत गर्भवती महिला को नौकरी से निकालना अपराध होगा और गर्भावस्था के दौरान बालक के जन्म से पूर्व 13 सप्ताह और जन्म के पश्चात 13 सप्ताह तक का समय वैतनिक अवकाश होगा।

8.गर्भावस्था अधिनियम (1971)

इसके द्वारा सामान्य परिस्थितियों में महिला 20 सप्ताह के गर्भ को गिरा सकती। स्थिति में अंतर जरूर है लेकिन हिंसात्मक स्तर पर देखा जाए तो नारी की स्थिति आधुनिक समय में भी दयनीय है। भारत सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए अनेक प्रकार के कानून और उन्हें विशेष प्रकार के अधिकार दिए हैं आवश्यकता इस बात की है कि महिलाएं अधिक से अधिक शिक्षित हो जिससे कि वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत रहें आज भी ग्रामीण इलाकों में जहां पर साक्षरता की दर कम है वहां की महिलाएं आज भी शोषण का शिकार हो रही हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तावना के अंतर्गत महिलाओं की सुरक्षा हेतु कुछ अधिनियम बनाए गए हैं जो इस प्रकार हैं:–

9. समान पारिश्रमिक अधिनम में कहा गया है कि किसी भी प्रकार के शैक्षणिक या नौकरी सम्बन्धी दाखिले कार्य में लिंग भेदभाव नहीं किया जाएगा। साथ ही समान कार्य के लिए वेतन भी समान रूप से ही दिया जाएगा उसमें किसी प्रकार का लिंग भेदभाव नहीं किया जा सकता।

10. महिलाओं का अश्लील प्रतिनिधित्व (प्रतिषेध) अधिनियम (1986)

इस अधिनियम के तहत महिलाओं को विज्ञापनों, किसी लेखन, चित्रकारी या किसी अन्य तरीके से अश्लील या अभद प्रदर्शन करवाने को प्रतिबंधित किया गया है।

11. सती रोकथाम अधिनियम (1987)

यह अधिनियम पति की मृत्यु के पश्चात जबरदस्ती पत्नी के चिता में जलने को कहने के लिए दंडनीय अपराध मानता है। देश के किसी भी भाग में ऐसा करना दंडनीय होगा। (सती प्रथा का विरोध ब्रिटिश काल से था परंतु इसके बावजूद भी देश के अन्य क्षेत्रों एवं जातियों में स्त्रियों को पति की मृत्यु के पश्चात उनके साथ चिता में जलने को बाध्य किया जाता था ।

12. राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम (1990)

भारतीय सरकार द्वारा इस आयोग का गठन महिलाओं के संवैधानिक और कानूनी अधिकारों के साथ–साथ उनकी अन्य प्रकार से सुरक्षा के उपायों से संबंधित मामलों का अध्ययन और देख–रेख के लिए किया गया था।

13. घरेलू हिंसा अधिनियम (2005)

इस अधिनियम के अंतर्गत महिलाओं को शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, यौन और मासिक किसी भी प्रकार की हिंसा से संरक्षण का प्रावधान किया गया है। इसमें वे महिलाएं भी शामिल हैं जो इस प्रकार के दुर्व्यवहार की शिकार हो चुकी हैं या अमुक व्यक्ति के साथ रहती हैं।

14.कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम निषेध और निवारण) अधिनियम (2013)

यह अधिनियम किसी भी प्रकार के छोटे–बड़े, सरकारी या निजी, संगठित असंगठित क्षेत्रों में महिलाओं को यौन उत्पीड़न से सुरक्षा प्रदान करता है। अन्य कानूनः– संविधान में इन अधिनियमों के अतिरिक्त महिलाओं की सुरक्षा के लिए कुछ अन्य अधिकारऔर सुरक्षा उपाय शामिल हैं जो इस प्रकार हैं:–

1. कानूनी चिकित्सक महिला अधिनियम (1923)
2.. भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम (1925)
3. कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम (1948)
4. बागान श्रम अधिनियम (1951)
5. बंधुआ श्रम प्रणाली (उन्मूलन) अधिनियम (1976)

इस प्रकार से विभिन्न अपराधों, गंभीर मामलों के लिए सरकारी व गैर सरकारी अनेक संगठनोंके द्वारा महिलाओं बालिकाओं बच्चों की सुरक्षा के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. सोती वीरेंद्र चंद्र,भारतीय संस्कृति में स्त्रियों की स्थिति, डी.के प्रिंट वर्ल्ड प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ संख्या– 5
2. झारखंड चौबे, डॉ०कन्हैया लाल श्रीवास्तव, मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, हिंदी ग्रंथ अकादमी,उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण,1979 पृष्ठ संख्या –59
3. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, प्रकाशक मयूर पेपरबैक, संस्करण–2001,पृष्ठ संख्या– 38
4. मुंशी प्रेमचंद,गोदान, अनीता प्रकाशन, अंक–13, पृष्ठ संख्या –123

हिंदी प्रवक्ता–

मधु सिंगला

अग्रवाल महाविद्यालय,

बल्लभगढ़

शोधार्थी पी–एच–डी– हिंदी

सिघानिया विश्वविद्यालय

झुनझन (राजस्थान)

3

Gender Inequality in Mahesh Dattani's Play "Tara": A Critical Analysis

Pragini, Dr. Raja Ram

Abstract

This paper explores the theme of gender inequality in Mahesh Dattani's play "Tara." The play's portrayal of the struggles faced by female characters against patriarchal norms is analyzed through a feminist lens, highlighting the ways in which societal constraints impact their empowerment and identity. This research paper critically analyzes the theme of gender inequality in Mahesh Dattani's play "Tara." The play explores the complexities of relationships, power dynamics, and societal norms, revealing how gender inequality perpetuates through various characters and their interactions. This paper examines the portrayal of gender roles, social expectations, and the effects of patriarchy on characters' lives, highlighting Dattani's commentary on the subject. Drawing upon textual evidence and relevant literary criticism, the paper aims to provide an in-depth understanding of how "Tara" addresses gender inequality in contemporary society.

Keywords: Gender inequality, patriarchy, feminism, social norms, empowerment, identity

Introduction

This research paper seeks to undertake a comprehensive analysis of the themes, characters, and cultural nuances within "Tara," in order to unravel the playwright's exploration of gender inequality. Mahesh Dattani, a prominent Indian playwright, often tackles socio-cultural issues in his works. "Tara," one of his notable plays, delves into the theme of gender inequality, shedding light on the disparities between men and women in a changing Indian society. "Through intricate character relationships and conflicts, Dattani examines the multifaceted nature of gender inequality and its far-reaching consequences" (Chakravarti). Mahesh Dattani, an eminent Indian playwright, has consistently used his plays as a medium to mirror the complexities of societal norms and values. One of his notable works, "Tara," delves into the intricate web of gender inequality, shedding light on the multifaceted challenges faced by women in a patriarchal society. Set against the backdrop of urban India, "Tara" presents a thought-provoking narrative that invites readers and audiences to critically examine the deep-seated gender disparities prevalent in contemporary society.

This critical analysis examines how Dattani uses symbolism, character dynamics, and narrative structure to highlight the stifling effects of social tradition and the quest for individual freedom. The play delves into the complexities of relationships, identity and social norms in a conservative Indian environment. Through the characters' interactions and conflicts, Dattani highlights the conflict between tradition and modernity, gender roles and the suppression of individuality. Mahesh Dattani's "Tara" presents a poignant critique of social conventions and their impact on individual lives. Through the characters of Tara, Chandan and Karan, Dattani explores the tension between traditional values and individual aspirations. The play's use of symbolism and narrative structure adds to its thematic depth, highlighting the internal and external conflicts faced by those who challenge the status quo. "Tara" is an evocative portrayal of the search for individual freedom within the constraints of a society bound by its traditions" (Duitt). Mahesh Dattani's play "Tara" presents an in-depth exploration of the impact of social conventions on individual lives, highlighting the complex interrelationship between individual desires and social norms. Set against the backdrop of urban India, the drama traces the lives of its central characters, Tara, Chandan and Karan, as they navigate a complex maze of traditional values and their aspirations. Mahesh Dattani's play "Tara" delves into the complex web of social conventions and their impact on individual lives. Set against the conservative backdrop of urban India, the play explores themes of identity, relationships and social norms. Through the characters of Tara, Chandan and Karan, Dattani explores the clash between traditional values and personal desires, and highlights the struggles of those who challenge established norms.

Research Methodology

This research employs a qualitative approach, specifically focusing on textual analysis. The primary source of data is Mahesh Dattani's play "Tara." The analysis involves a close reading of the play's dialogues, character interactions, and thematic elements related to gender roles and inequality. Secondary sources such as scholarly articles, literary critiques, and interviews with the playwright may be consulted to provide additional context and insights. The qualitative findings will be interpreted through a feminist lens, allowing for a comprehensive exploration of the gender dynamics presented in the play. Through this methodology, the research aims to uncover the nuanced ways in which "Tara" addresses and critiques gender inequality while contributing to broader discussions about feminism, society, and literature.

Discussion

Gender inequality has been a persistent issue in societies

worldwide, permeating various aspects of life, including literature. Mahesh Dattani's play "Tara" delves into the complexities of gender dynamics, highlighting the unequal power structures and societal norms that impact individual' lives. This critical analysis aims to explore the representation of gender inequality in the play and its implications.

"Tara" portrays the lives of two women, Dipti and Tara, who are bound by societal expectations and patriarchal norms. The characters' experiences reveal the subtle and overt ways in which gender inequality manifests. The play exposes the conventional roles assigned to women, such as Dipti's role as a wife and Tara's as a mistress. These roles restrict their autonomy and reinforce the idea of women as subservient to men. Dipti's economic dependence on her husband, as well as Tara's dependence on her lover, underscores how financial reliance can perpetuate gender inequality. Their lack of financial agency limits their choices and perpetuates power imbalances. Both Dipti and Tara grapple with societal expectations that dictate their behavior. Dipti is expected to be the ideal wife, while Tara's status as a mistress subjects her to judgment and marginalization.

The play also delves into beauty standards and body image, revealing how women are often objectified and valued primarily for their physical appearance. Tara's obsession with her looks exemplifies the pressure women face to conform to such standards. The power dynamics between male and female characters are evident through dialogues and interactions. Dipti's husband's authoritative behavior and Tara's lover's manipulation highlight the control that men exert over these women. 'The portrayal of gender inequality in "Tara" sparks important discussions about societal norms and their consequences" (Anty).

The play showcases how individuals often replicate the gender norms they have internalized, perpetuating inequality across generations. Dipti's acceptance of her husband's behavior and Tara's resignation to her role as a mistress exemplify this cycle. "Intersectionality of gender with other factors like class and sexuality is also apparent" (Buttler). Tara's lower socio-economic status further exacerbates her vulnerability, illustrating the interconnected nature of inequalities. Despite the oppression they face, both Dipti and Tara exhibit agency in different ways. Dipti's awakening to her mistreatment and Tara's eventual rejection of her role demonstrate that women can resist and challenge their circumstances. Dattani's play invites audiences to reflect on the need for societal change. By portraying the harmful consequences of gender inequality, the play encourages conversations about breaking down these systems.

The play astutely examines the predefined roles and expectations assigned to women, as evident through the character of Tara. Tara is a quintessential homemaker, depicted as the obedient and submissive wife, who dedicates her life to catering to the needs and desires of her husband and son. "Her limited agency is a reflection of the society's emphasis on a woman's domestic role, relegating her aspirations and ambitions to the background" (Mahesh). Dattani challenges these roles by juxtaposing Tara with her ambitious friend Chandan, highlighting the stark difference between societal expectations and personal desires.

Dattani, through the character of Tara, highlights the suppression of female identity and voice. Tara's lack of self-expression and her perpetual self-sacrifice underscore the myriad ways in which women are compelled to surrender their individuality for the sake of conformity. The playwright masterfully employs dialogue and symbolism to portray Tara's inner turmoil, effectively shedding light on the silent struggles faced by numerous women. While "Tara" presents a bleak portrayal of gender inequality, it also presents a paradoxical view of empowerment. Tara's eventual defiance and revelation of a hidden secret emphasize that even within a constrained existence; women can possess immense inner strength and resilience. This complex portrayal aligns with Dattani's intent to not only expose the injustice but also to inspire contemplation on the transformative potential that lies within marginalized individuals.

The play's narrative resonates deeply with Indian society's struggle to balance tradition and modernity. "The tensions between these two conflicting forces are encapsulated within the characters' interactions and dilemmas" (Dattani). The characters' dialogues, attitudes, and actions collectively contribute to the broader discourse on societal expectations and gender dynamics in a rapidly evolving India. "Tara" stands as a testament to Mahesh Dattani's mastery in weaving societal critique into dramatic art. The play's exploration of gender inequality invites readers and audiences to confront uncomfortable truths and ponder over the pervasive issues plaguing contemporary society. Through its nuanced characters and compelling narrative, "Tara" urges us to challenge established norms and strive for a more inclusive and equitable world. This research paper will further delve into the layers of "Tara," unraveling its themes, character dynamics, and cultural implications to provide a comprehensive analysis of gender inequality within the play.

The play presents a vivid portrayal of traditional gender roles and societal norms that restrict the autonomy of

women. The character of Tara embodies the struggle against these norms as she grapples with her identity and desires. Tara's dilemma serves as a reflection of many women who find themselves trapped in predefined roles, leading to internal conflicts and suppressed aspirations. Dattani skillfully unveils the workings of patriarchy through the interactions between characters. The character of Chandan, Tara's husband, embodies patriarchal attitudes, using his power to control and dominate. His actions and beliefs contribute to the perpetuation of gender inequality, which is evident in his treatment of Tara and his disregard for her feelings and aspirations.

The play underscores how gender inequality affects characters' lives, leading to emotional turmoil and unfulfilled potentials. Tara's emotional journey and her quest for self-discovery highlight the toll that societal norms take on individuals. The character of Deepti, Tara's friend, represents another facet of this struggle as she navigates the complexities of being a woman in a society that often dismisses her voice. "Tara" also portrays instances of rebellion and liberation against gender inequality. The character of Kusum, Tara's mother, challenges conventional norms through her assertiveness and unconventional choices. Kusum's character exemplifies the changing landscape of women's roles in Indian society and serves as a source of inspiration for Tara.

Conclusion

The play presents a vivid portrayal of traditional gender roles and societal norms that restrict the autonomy of women. The character of Tara embodies the struggle against these norms as she grapples with her identity and desires. Mahesh Dattani's "Tara" serves as a powerful commentary on gender inequality, exposing the multi-faceted nature of the issue and its pervasive influence on individuals' lives. Through the characters of Dipti and Tara, the play highlights the complexities of traditional gender roles, economic dependence, and societal expectations. This critical analysis has provided insights into the play's portrayal of gender inequality and its implications for society, encouraging discussions about the need for change and equality. Mahesh Dattani's play "Tara" serves as a thought-provoking exploration of gender inequality in contemporary Indian society. Through complex characters and their interactions, Dattani illuminates the challenges faced by women and the repercussions of patriarchal norms. The play underscores the importance of challenging traditional gender roles, promoting autonomy, and striving for gender equality. "Tara" remains a relevant and powerful commentary on the enduring struggle against gender inequality.

References

- Chakravarti, U. (2003). Gendering caste through a feminist lens. Economic and Political Weekly.
- Dutt, S. (2012). Women in Mahesh Dattani's plays: A portrayal of aspirations and conflicts. Research Journal of English Language and Literature.
- Anty, C. T. (1988). Under Western Eyes: Feminist Scholarship and Colonial Discourses. Feminist Review.
- Butler, J. (1990). Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity.
- Dattani, M. (1990). Tara and Other Plays. Penguin Books.
- Dattani, M. (1995). Collected Plays. Penguin Books.

Pragini

PhD Research Scholar Department of English Om Sterling Global University, Hisar (Haryana)

Dr. Raja Ram

Assistant Professor Department of English Om Sterling Global University, Hisar (Haryana)

Pragini

Father's Name: Sh. Shyam Sunder Arora

Address: Manohar Colony- Patel Nagar (Hisar)

Mob. – 89012-15614

Pin Code- 125001

4

वैष्णव धर्म की विश्वव्यापकता

डॉ0 सुनीता शर्मा

वैष्णव शब्द 'विष्णु' से बना है। विष्णु का अर्थ 'व्यापकाति विष्णु' अर्थात् जो जड़ चेतन एवं प्रत्येक अवयव में व्यापक है वही विष्णु है और 'विश्णौ इति वैश्णवः' अर्थात जो विष्णु से सम्बन्धित हैं जो जड़–चेतन चराचरा जगत् में अपने ईश्वर अर्थात् आराध्य को देखता है वही वैश्णव है। 'वैष्णव' शब्द साम्प्रदायिक दृष्टि से महाभारत के अठारहवें पर्व में प्रस्तुत हुआ है जहाँ पर कहा गया है :

अष्टादश पुराणानां श्रवणाद्यत्फलं भवेत।
तत्फलं समवाप्नोति वैश्णवो नात्र संशय।।[1]

अर्थात् इसमें संदेह नहीं कि अठारह पुराणों के श्रवण का जो फल होता है उसे मनुष्य केवल वैश्णव होकर ही प्राप्त कर लेता है। धर्म से अभिप्राय है– 'धारणाद धर्म' अर्थात् जो धारण करने योग्य है और जो हमें सब तरह के विनाश और अद्योगति से बचाकर उन्नति की ओर ले जाता है। इस प्रकार वैष्णव धर्म उस धर्म को कहा गया है जो सर्वव्यापक है तथा जो मनुष्यों का आध्यात्मिक विकास करते हुए उन्नति की ओर ले जाए। जिस धर्म में विष्णु को परम उपासक माना गया है, उसी को वैष्णव धर्म की संज्ञा दी गई है। वैष्णव धर्म चार सम्प्रदायों से निर्मित हुआ है। इनके मूल प्रवर्तक भगवान विष्णु है; इसलिए ये सभी वैश्णव सम्प्रदाय कहे जाते हैं। विश्णुभक्त श्री या महालक्ष्मी द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय श्री सम्प्रदाय के नाम से, विश्णु भक्त रूद्र द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय रूद्र सम्प्रदाय, विश्णु भक्त ब्रह्म द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय ब्रह्म सम्प्रदाय और विश्णु–भक्त चतुःसन (सनक, सनन्दन, संतकुमार, सनातन) अथवा परमहंसों द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय हंस सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जबकि भंडार कार के अनुसार नवीन वैश्णव धर्म का संघटन वस्तुतः चार धार्मिक विचारधाराओं का परिणाम है। इनमें से प्रथम के मूलस्त्रोत वैदिक देवता विश्णु थे, दूसरी के दार्शनिक देवता नारायण थे, तीसरी के ऐतिहासिक देवता वासुदेव थे और चौथी के आभीर देवता बालगोपाल थे और इन चारों की कथाओं की परम्पराओं ने इसके निर्माण में कुछ न कुछ सहायता प्रदान की।

यह चारों सम्प्रदाय पंचरात्र सिद्धान्त के अनुकर्त्ता है। श्री सम्प्रदाय का दार्शनिक सिद्धान्त 'विशिष्टाद्वैतवाद' है रामानुजाचार्य इसके प्रधान प्रचारक थे। रूद्र सम्प्रदाय का दार्शनिक सिद्धांत 'शुद्धाद्वैतवाद' है विष्णु स्वामी इसके प्रधान प्रचारक थे परवर्ती काल में वल्लभाचार्य ने भी इस मत का प्रचार किया। ब्रह्म सम्प्रदाय का दार्शनिक सिद्धांत है 'द्वैतवाद' मध्वाचार्य इस मत के प्रमुख प्रचारक थे जबकि हंस सम्प्रदाय का दार्शनिक सिद्धांत है 'द्वैताद्वैतवाद' और निम्बार्काचार्य इसके मुख्य प्रचारक थे। इन सम्प्रदायों में एक ईश्वर की सर्वव्यापकता गुणगान किया गया है जो कि विश्व के सभी धर्मो में समान रूप से देखने में मिलता है। इस्लाम धर्म में कहा गया है कि खुदा ज़र्रे–ज़र्रे में है और जो उसे ज़र्रे–ज़र्रे में देखे वही सच्चा मुसलमान है। ईसाई धर्म में ईश्वर को omine Present कहा गया है जिसका अर्थ है कि ईश्वर हर स्थान पर है। जबकि सिक्ख धर्म भी इसी भाव को सामने रखते हुए कालप्रभु को ''ñ औंकार सतिनामु कर्त्ता पुरखु निरभऊ निरवैर'' का संदेश देता है।

उस अव्यय ईश्वर को यदि वर्ण रचना के आधार पर देखा जाए तो भी उसकी सत्ता अग्रिम है।

वर्णमाला का पहला अक्षर 'अ' से आरम्भ होता है अंग्रेजी के Alphabet 'A' से आरम्भ होते हैं जो 'अ' की ही ध्वनि देते हैं।

ग्रीक में पहला वर्ण 'अल्फा' है जबकि अरबी में 'अलिफ' है शब्द संरचना के आधार पर देखा जाए तो अल्फा और अलिफ में 'अ' शब्द है।

इस्लाम में 'अल्ला' अ से ही बना है जो ईश्वर की व्यापकता का परिचय देता है।

सनातन संस्कृति में 'ऊँ' बीजमंत्र है। ऊँ की संरचना अ+उ+म् से हुई है इसमें भी पहला वर्ण 'अ' ही है।

वैष्णव धर्म की महत्ता इसे विश्वव्यापकता के स्तर पर ला खड़ा करती है। सर्वव्यापकता इस धर्म का मूल है और वैष्णव तो यह भाव मानते हैं :

माता कमला पिता जर्नादन
बान्धवा विश्णु भक्ताश्च
वासुदेव कुटुम्बकम्

परम वैश्णवों का यह विचार है कि लक्ष्मी नारायण सारे विश्व के माता पिता हैं। हम सब उनकी संतान है अतः हम सब भाई–भाई हैं। वैश्णव धर्म की इस सर्वव्यापकता का गुणगान तो वैश्णव भक्तों ने स्थान–स्थान पर किया है। राजस्थान में मीरा कहती है–मेरो तो

गिरिधिर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।

उत्तरप्रदेश में सूरदास कहते हैः 'नंदनंदन गोपाल मेरो है' गुजरात में नरसी मेहता भी इसी भाव की पुष्टि करते हुए कहते हैं : 'सांवल शाह को सब जगह देखा।' महाराष्ट्र में संत नामदेव, तुक्काराम, संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ आदि भी तो अपने 'विटठ्ल' को हर स्थान पर पाते हैं। दक्षिण के आलवारों और आचार्यों जगत् गुरू रामनुजाचार्य, रामानंद तथा गोदाम्बा ने 'श्रीमन् नारायण' को सर्वत्र

देखा और उन्हीं के प्रेम में सरावोर रहकर सारे संसार को ईश्वर भक्ति का संदेश दिया। पारसी आहुरा मिर्जा के प्रकाश को सब जगह देखते हैं यह प्रकाश ईश्वर का नही तो किसका है ? धर्म ग्रंथों में भी ईश्वर की सर्वव्यापकता का वर्णन किया गया है। तुलसी को सारा संसार 'सियाराममय' दिखाई देता है और वे कहते हैं :

''सिया राममय सब जग जानी
करूं प्रणाम जोरि जुग पाणि।।''

इस प्रकार वैश्णव धर्म की सर्वव्यापकता का भाव विश्व के सभी धर्मो में मिलता है।

उदार दृष्टि वैश्णव धर्म का अभिन्न अंग है। औदार्य से मंडित यह धर्म वर्णाश्रम पर पूर्ण आस्था रखते हुए भी भक्ति एवं उपासना के क्षेत्र में सभी का समान अधिकार मानता है। वास्तव में वैश्णव धर्म भक्ति प्रधान है और भक्ति का संबंध मानव हृदय की एकता तो सर्वदा ही व्याख्यायित की गई है। अतः वैश्णव धर्म किसी भी मानव को भागवत्प्रेम से वंचित न रखकर सबको समान अधिकार देता है। भक्ति के साधन में भक्त की जाति–पाति और कुल का कोई भेदभाव नहीं है। अनेक भक्त समाज के निम्न श्रेणी के हुए हैं और अपनी साधना और सिद्धि से परम पूजनीय हो गये हैं। न केवल भारतीय जहां तक कि विदेश से आने वाली अनेक जातियां भारत में आकर जब वैश्णव धर्म में प्रवृत्त हो गई तो वे लोग अपने आप को परम् भागवत् कहलाने लगीं। जैसे 'हेलियोडोरस' नामक ग्रीक शासक का यवन जब दूत बनकर विदिशामंडल के राजा 'काशीपुत्र भागभद्र' के दरबार आया तो वैश्णव धर्म से प्रभावित होकर उसकी उदारता के कारण वह उसमें दीक्षित हो जाता है और 'भागवत' की उपाधि धारण करता है। इस बात की पुष्टि बेसनगर का शिलालेख करता है। श्रीमद् भागवत पुराण के अनुसार हूण, आंध्र, पुलिंद, पुल्कस, आभीर, यवन, खस आदि जातियों ने भी विश्णु का आश्रय ग्रहण करके शुद्धि प्राप्त की। इस धर्म की उदारता से प्रभावित होकर ही भारत में आने वाले अनेक अंग्रेज लोग श्री वैश्णव धर्म को अपनाकर सदैव यही के होकर रहते हैं। यही नहीं विश्व के किसी भी कोने में चले जाए श्री वैश्णव भक्त वहीं आपको मिलेगें।

अहिंसा वैष्णव धर्म की महत्ता का अमोघ शास्त्र है। भारतवर्श में सर्वप्रथम अहिंसा का शंखनाद इसी धर्म ने फूंका था। इसी से अहिंसा के तत्व का अनुकरण कर जैन तथा बौद्धधर्मों ने ख्याति प्राप्त की आगे चलकर महात्मा गांधी ने इसे अपना कर राश्ट्र का प्रतिनिधित्व किया। वैदिक धर्म से प्रभावित होते हुए भी इस धर्म ने हिंसाप्रधान यज्ञों का विरोध किया। अतः आधुनिक भारतीय समाज में पवित्रता का जो वायुमंडल उपलब्ध होता है अतः शौच और बाह्य शौच के जो उदाहरण मिलते हैं। इसका श्रेय श्री वैश्णव धर्म को ही जाता है। यही से 'अहिंसा परमोधर्मः' का जयघोश जन्म लेकर विश्व में गूंजने लगा।

वैश्णव धर्म ने विश्व में कलात्मक अभिव्यक्ति को भी विकसित किया। मनोहरत्व तथा मंगल–संपन्नता का जहां भी योग होता है वही कला का अपना रूप है। इस धर्म की कलात्मक अभिव्यक्ति के कारण ही मूर्तिकला, चित्रकला स्थापत्य कला को अर्थवत्ता प्राप्त हुई। इसके प्रभावस्वरूप ही विश्णु के नाना रूपों की तथा उनके विभिन्न अवतारों की मूर्तियाँ इतनी मधुरिमा के साथ प्रस्तुत हुई कि कला का पारखी उन्हें देखकर आत्मविस्मृत हो जाता है। आज विश्व के किसी भी देश में मूर्तिकला का जो विकास मिलता है वह वैश्णव धर्म का प्रभाव है। इसी के प्रभाव से ही चित्रकला को भी उसके नवीन अर्थ प्राप्त हुए। अनेक चित्रशैलियां विष्णु धर्म के प्रभाव से अस्तित्व में आई जैसे–राजपूत कलम, काँगडा कलम और पहाड़ी कलम आदि। इसी के अंतर्गत शब्द चित्र भी साहित्यिक रूप में हमारे सम्मुख आते हैं।

भक्ति भावना का पूर्ण विकास वैष्णव धर्म की महत्व–पूर्ण विशिष्टता है। भक्ति साधन में लोकलिप्त मन को ऐहिक संबंधों को छोड़ना अपितु उन्हें केवल ईश्वर की ओर मोड़ना होता है। वैश्णव धर्म में इन साधनों पर विचार किया गया है। भक्ति का जितना प्रामाणिक विवरण वैष्णव ग्रंथकारों ने किया है उतना किसी अन्य धर्माबलंभी ने नहीं किया। वैष्णवों ने भक्ति को भावदशा से उठाकर केवल रसदशा तक ही नहीं पहुँचाया अपितु सब रसों में श्रेश्ठ भक्ति रस माना है। भक्ति के अंतर्गत माधुर्य भाव की भक्ति का अवसर वैश्णवजनों को रसिक शिरोमणि श्रीकृष्ण की उपासना से प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त वैश्णव धर्म ने नाम स्मरण रूपी भक्ति का प्रचलन किया जिसका प्रभाव प्रयत्क्षता एवं परोक्षता विश्व के सभी धर्मो में पाया जाता है। इसी से प्रभावित होकर सिक्ख धर्म में 'ñ ओंकार', निगुर्ण की 'नाम स्मरण' की भावना, ईसाई धर्म में 'प्रार्थनाओं' एवं मुस्लिम धर्म में 'नमाज' का समावेश हुआ। वैश्णव मत में भक्ति के साथ–साथ प्रपत्ति का गौरव भी माना जाता है। ''प्रवत्ति से अभिप्राय है अपने को भगवान की शरण में समर्पित कर उन्हीं की दया मात्र पर पूर्ण भरोसा करना। वैश्णव धर्म में इसे 'वाड कड़ाई' कहलाया जिसके अनुसार भक्त तथा भगवान का संबंध किसी बंदरी की छाती से चिपके हुए बच्चे तथा उस बंदरी का सा होना चाहिए।'' प्रपत्ति में भगवान ही उपेय हैं तथा उपाय भी वे ही हैं। भक्त को केवल उनकी शरण जाने की आवश्यकता मात्र रहती है। शरणापन्न होते ही भगवान अपनी निर्मल दया के प्रभाव से उसका उद्धार कर देते हैं। भक्त के लिए तद् अतिरिक्त कोई कार्य नहीं रहता। वैश्णव धर्म की भक्ति के अंतर्गत विश्वास, श्रद्धा, दैन्य, अकिंचनता और उपास्य ईश्वर की महता तथा उसकी भक्तवत्सलता आदि आलम्बन तत्व पाये जाते हैं जो विश्व के धर्मों को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं।

अवतारवाद : वैष्णव धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों में अनेक अवतारों की विशद चर्चा मिलती है। इन अवतारों में दस अवतारों का वर्णन प्रायः कई प्रसंगों में मिलता है। विश्व के प्रायः सभी धर्म वैश्णव मत की इस अवतार भावना से ही विकसित हुए हैं। ईसाई धर्म में ईसा मसीह तथा मुस्लिम धर्म में पैगम्बर तथा सिक्ख धर्म में दस गुरुओं का अविर्भाव इसी से प्रभावित माने गये हैं। स्वयं वैष्णव मत में विष्णु, कष्ण, नृसिंह, वामन एवं रामावतार बड़े चर्चित रहे हैं अन्य धर्मों ने भी इसी अवतार भावना को लेकर अपनी कल्पना को विकसित किया है।

क्षमाशीलता का भाव वैष्णव धर्म का अभिन्न अंग है। क्षमाशीलता न केवल इस धर्म को विशिष्टता प्रदान करती है अपितु वैष्णव धर्म के इस भाव से विश्व के बड़े–बड़े संत महात्मा भी प्रभावित हुए हैं। वैष्णव धर्म में हर जीव के प्रति प्रेम झलकता है। वैष्णव दूसरे के दुःख–दर्द को अपना मानता है। कहा भी गया है :

''वैश्णव जन तो तिने कहिए, जो पीर पराई जाने रे।''

राश्ट्रपिता महात्मा गांधी का यह सर्वप्रिय गान था हर प्रार्थना के बाद वे इसी को गाते थे। इस संदर्भ में परम वैश्णव संत एकनाथ के जीवन से एक उदाहरण दृष्टव्य है। वे हर भली–बुरी बात को ईश्वर की इच्छा का परिणाम मानते थे। अपने नित्यकर्म हेतु वे प्रतिदिन चन्द्रभागा नदी में स्नान करने जाते थे। वहां एक यवन रहता था वह स्नानार्थी हिंदुओं को बहुत तंग करता था। लोग जब स्नान करके आते तो उन पर थूक देता। लोग उससे बहुत चिढ़ जाते। विशेशतः जब एकनाथ जी महाराज स्नान करके लौटते, वह ऊपर से थूक की पिचकारी छोड़ता। कभी–कभी उन्हें चार–पाँच बार स्नान करना पड़ता था। पर उनकी शान्ति ऐसी थी कि वे परम प्रसन्न होकर मां गंगा में स्नान करते और अपना अहो भाग्य समझते। एक दिन वह उनकी क्षमाशीलता भंग करने के लिए मार्ग में एक पेड़ के नीचे 108 पान लगाकर बैठ गया। जैसे ही संत एकनाथ स्नान करके बाहर निकले उसने थूक की पिचकारी उन पर छोड़ दी। संत जी इसे प्रभू कृपा समझ कर पुनः स्नान करने चले गये। इस प्रकार उस यवन ने क्रोध में आकर एक सौ आठ बार उन पर थूक छोड़ा और संत एकनाथ उसी सहज भाव से बार–बार स्नान करते गये। यवन तो क्रोध से भर गया पर संत जी की शान्ति भंग न हो सकी। अंततः वह यवन थक गया और लज्जित होकर महाराज के विलक्षण महात्मापन की स्तुति करने लगा। वह उनके चरणों में गिरकर पूछने लगा कि मैंने इतनी बार आप पर थूका पर आपको तो लेशमात्र भी क्रोध नहीं आया आपकी क्षमाशीलता तो महान है। तब संत जी कहने लगे, ''आज तेरी कृपा से ही मैंने मां गंगा के अंक में 108 स्नान किए हैं। उस यवन को समझाते हुए संत एकनाथ कहने लगे :

''महजद में अल्ला खड़ा, बाकी जगह क्या खाली पड़ा।
एके जर्नादनी अनुभव, मीका जहां देखा तहां राम सरीखा।।''

इस प्रकार क्षमाशीलता, पर दुःखकातरता, सहिश्णुता आदि के भाव को जो आचरण में लाते हैं वही संत हैं। वैश्णव संतों का यही संदेश भी रहा है। जब हम सभी में इष्टदेव को देखना आरंभ कर दें तो हमारे मन में से घृणा के भाव समाप्त हो जाएगें।

निष्कर्षः

इस प्रकार श्री वैष्णव धर्म मानव के भीतर मानवता के समस्त गुणों का उदय कर उसे पूर्ण मानव बनाता है। इस धरती पर मानव जीवन को यह धर्म विशाल, उदार और स्निग्ध बनाकर पूर्ण विश्व को अलोकित कर रहा है। अतः वष्णव धर्म भारतवर्ष के विभिन्न धर्मों में ही नहीं संसार के धर्मों में नितांत उदात्त तथा महत्वपूर्ण है। इस प्रकार सारी सृष्टि ही एक कुटुम्ब है। इस कारण यह धर्म विश्वव्यापक है और सीय राममय युक्त इस वष्णव धर्म की परिधि के भीतर ही सब आ जाते हैं।

संदर्भित पूस्तकें

1. महाभारतए 18/6/17
2. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की संत–परम्परा, इलाहाबाद : भारती भंडार, 1972
3. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, वैश्णव धर्म, वाराणसी : चौटवम्भा : ओरियन्टलिया, तृतीय संस्करण, 1977
4. आर.जी भंडारकर, वैश्णविज्म, शैविज्म एंड माइनर रेलिजस सिस्टम्स पूना : मुंशीराम मनोहरलाल, 1928
5. सुधीर जायसवाल, द ओरिजिन एंड डेवलमेंट आफ वैश्णबिज्म, दिल्ली, 1976
6. दुर्गाशंकर केवलराम शास्त्री, वैश्णवधर्मनो संक्षिप्त इतिहास, बंबई, 1939

डॉ॰ सुनीता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय
अमृतसर, पंजाब।
मोबाइल–9915065152
ई–मेल–sunitasharma.gndu@gmail.com

5

SCIENTIFIC USE OF ORNAMENTS AND TRADITION IN INDIAN CULTURE

Shamsher Singh, Dr Raja Ram

Abstract

A man does the work for his own benefits that is the human nature. The person who does the work for the Welfare of the society that is the culture which is the result of the society. There are framed rules and regulation for the Welfare of the society. First of all, in the primitive age, man was living in a different way. With the passage of time, these rules and regulations become tradition. In Indian Mythology, King Ramchandra is considered the Idealist King. At that time when his father had three wiveshe vowed to be remind the monogamous for the well being of women and for the well being of his wife and for the purity of conjugal love to prevalent ideal ordination In the Indian culture so that these rules could become traditions. With the passage time, these became the cause of Ordination of tradition and ornaments. Mostly people use wheat and rice because there are available in the plan area. At coastal areas of India, mostly people eat fishes with rice because there is availability of fishes. All the Vedic sacraments are on the Mark and to make a man monogamous and responsible for the society, All the sixteen sacraments are to make a monogamous and responsible for the society so that those could live a life which should be full of purityThis life is a gift of god, which must be lived in a spiritual way that is why every important phase of life is celebrated and should be respected by 16 ornaments was purpose is to be rich by culture and spirit. All the traditions are scientifically pure and beneficial for the society. Significance of Hindu Rituals for Hindus, receiving the blessings of the Almighty is of principal importance when performing the rituals. They believe when God is pleased by their devotion, he bestows his blessings upon them. Most of the Hindu rituals are performed on holy sites such as temples or in nature, but some are performed in the home. As a part of the household responsibilities, a devout Hindu is expected to perform certain rituals every day.

Keywords: Monogamous, ordination, ornaments, traditions, Henna, anklets, Rituals, Yajana, antioxidant, Bhagavad Gita,

Introduction

Dr.Gulab Kothari analyzes everything scientifically and unravels some uncanny facts which can change the direction of our lives. He also describes the importance of acupressure and acupuncture in treating some ailments and related them to the tradition of wearing jeweller. Dr.Rajnikant Shah, Founder of the Museum of Gem and Jewellery Federation, rightly observes, "it takes us into the labyrinth of the glitter of gold, serenity of silver, sparkles of gems and human ingenuity of creativeness. It's unique in that it not only provides deep insights into the ostentatious world of Jewellery but also analyzes each tradition associated with it".

The book makes an absorbing reading and is a must read for those who really want to delve deep into the world of jewellery. All his writings aim at transforming the individual and society and creating social excellence. His eminently known treaties Manas, which runs in twelve volumes and has been translated into eleven Indian languages as well as into English, Fathoms the infinite depths of human psyche, the pathos of man's isolation and gives us deep insights into human nature, It can be reckoned as a paradigm of formative literature that represents the ideals enshrined in the Vedic philosophy and Indian spiritual heritage., His editorial fearlessly exposed acts of injustice, intimidation, corruption and promote reconciliation and harmony society.

The morning rituals may include taking a bath or physical self-purification, offering prayers to the Sun God, or Chanting the Gayatri mantra. The most common rituals practiced in all Hindu households are puja, meditation, silent prayers, yoga, recitation of scriptures from Bhagavad Gita or bhajans, reading religious books, participating in Satsang (prayer meets), performing charitable work, visiting a temple, and chanting the name of their beloved God. It is through these rituals, prayers, and sacred ceremonies that Hindus pay their reverence to God. Prayers or Pooja are an integral part of a Hindu devotee's life. They perform these prayers under the assistance or guidance of Hindu priests or Brahmins. After every pooja, a sacred offering (or Prasad) is made to God. Such offerings are meant to be made without claiming reciprocal advantages as a mark of service to their Almighty. Hindus believe that performing these rituals help in their spiritual betterment.

Performing Rituals at Sacred Sites

The Hindu texts and Holy Scriptures have laid down various rituals that Hindu devotees must perform throughout their lifetime. The holy sites are of great importance when it comes to the Hindu rituals because these sites are considered as God's abodes. The holy scriptures have noted in great detail about the sanctity of holy sites where rituals are performed by the Brahmins. Hindus also pay homage to their ancestors at these sacred sites. Prayers are performed to bestow long-lasting peace and to help them unite with the Divine power.

Hindu Rituals

Yajna - While performing the yajna, offerings are made to different deities under the assistance of priests. A small sacred fire is lit and offerings such as food grains, ghee, and vegetable substances are present. Mantras are chanted simultaneously to invoke Gods like Agni, Indra, and Varuna. They are usually performed for the welfare of the family, to invite rains,and to welcome peace and prosperity. Some Yajnas are performed for a few hours while others last several weeks.

Japa - Japa means recitation of God's name, either silently or audibly. The ritual involves a continuous recitation of God's name to purify the mind and fill one's consciousness with spiritual energy. This regular chanting can create vibrations in the mind and body and can lead to a spiritual transformation. Japa should be done out of pure love for God and not with an expectation to get something in return

Dr.Gulab Kothari analyzes everything scientifically and unravels some uncanny facts which can change the direction of our lives. He also describes the importance of acupressure and acupuncture in treating some ailments and related them to the tradition of wearing jeweller. Dr.Rajnikant Shah, Founder of the Museum of Gem and Jewellery Federation, rightly observes, "it takes us into the labyrinth of the glitter of gold, serenity of silver, sparkles of gems and human ingenuity of creativeness. It's unique in that it not only provides deep insights into the ostentatious world of Jewellery but also analyzes each tradition associated with it". The book makes an absorbing reading and is a must read for those who really want to delve deep into the world of jewellery. All his writings aim at transforming the individual and society and creating social excellence. His eminently known treaties Manas, which runs in twelve volumes and has been translated into eleven Indian languages as well as into English, Fathoms the infinite depths of human psyche, the pathos of man's isolation and gives us deep insights into human nature, It can be reckoned as a paradigm of formative literature that represents the ideals enshrined in the Vedic philosophy and Indian spiritual heritage., His editorial fearlessly exposed acts of injustice, intimidation, corruption and promote reconciliation and harmony society.

Result & Discussion

Nature has designed the shape in of our body hence it works according to the principles of Nature. This is the reason why everything, every living being has an impact on each other. The seven lokas' (layers) of the universe, the seven colours present in the ray of the sun, the seven elements of our body, all influence each other. The harmony between them creates equilibrium in our life. A man is tempera-mentally a free bird and it's quite natural for him to break rules and regulations occasionally and sometimes this affects his health which requires medical treatment. Indian civilization and culture is highly developed. There are ways to regularly control the imbalances in our food habits and lifestyles. Apart from refined methods like Dayan and Yoga to help live a healthy life there is a long and popular tradition of wearing ornaments among the rural, uneducated and even socially prominent communities. Ornaments were worn and made of metal or other natural sub-stance (stones, wood, coconut, lacquer, shells, etc.) according to the profession or the social status of a person. Though the main purpose of wearing ornaments was maintaining good health but aspects of beauty and prosperity were certainly added to it. Today the purpose of wearing ornaments for good health is replaced by beauty and astrology. Astrologist will say that the Sun is offended. Hence whatever medicinal herbs, gemstones, metals, etc., will be used for treatment will belong to the category whose ruling cosmic body is the Sun. Elements like gold, ruby, etc., may be used for the treatment.

Another important principle which gives scientific authenticity to the tradition of wearing ornaments is the principle of acupressure and acupuncture therapy. According to this, there is an extensive network of meridians and its energy or vital points in the body. When there is a disease in the body then various marshal - stimulation points related to that disorder are stimulated to energize them so that the flow of energy can be smoothened to make it free flowing and blockage is removed. A close look at the tradition of wearing ornaments will show that ornaments continuously stimulate these vital points. They certainly increase our immunity. There is a tradition of giving certain ornaments to a new bride on her wedding day but are taken off if she becomes a widow because energy at those points is not needed after the misfortune times. What more scientific reason could be there for wearing ornaments!

Ornaments do have a scientific basis. Ornaments have the extensive and intensive depth of the nature to protect us. They keep us mentally and physically healthy. If we look at our tradition of wearing ornaments then we find that they are associated with humans not only in modern era but were equally associated with our gods and goddesses. We cannot imagine a picture of our gods without any ornament. In pictures and sculptures gods are seen adorned with ornaments from head to toe. Whether it is the idol of the most revered Lord Krishna in Govind Dev ji Temple of Jaipur or Shrinathji of Nathdwara, every time one visits the

temple all the decorations and ornaments of the idol are different. The serpent around Lord Shiva's neck and the crescent on his head are his ornaments. Anything which decorates and adds to the beauty is an ornament. The flowers in a braid or bun are ornaments. The braid, itself is an ornament of hair-styling which enhances the beau-tee of a woman. Maybe because of this we can see various different styles of braiding becoming popular among women to make it look more artistic. Decorating animals also come in the category of ornamentation. Colouring the horns of the oxen and making different designs on their body, artistically cutting or braiding camel hair to beautify them is also part of the tradition of ornaments. Ergo we can say that the definition of the ornaments is very extensive. The tradition of wearing ornaments was very rich during the aristocratic era. But today due to the rising cost of jeweller and the fear of robbers we don't see many women possessing lot of ornaments. Rich people safe deposit their treasure in bank lockers. Also with time, the popularity of ornaments has diminished among ° the common man. Ornaments don't attract the youth either.

Ornaments don't just add to our beauty but they also enhance our health. Ornaments are not just mere aid to the beauty but they give good health. In spite of numerous disorders the Vedas mention these diseases -

All diseases are divided in 13 segments in the manner above.

Their Vedic treatment is divided as seven types.

1. Electrotherapy through Mantras.
2. Neurotherapy through the sounds of conch and gem-stones.
3. Immune therapy through gold - copper firing metals.
4. Chronic, therapy with the help of sunrays helps in treating heart ailments.
5. Water therapy is also used as a cure.
6. Medicines are prepared through the extracts and juices of trees like goolar (Indian fig tree) and Vibhitaka (Beleric tree)
7. Peepli helps in curing kshipt and atividhha disorders,

The ornaments are also useful in overcoming financial difficulties. Nature has not bestowed everyone with fine physical beauty but this can be compensated by ornaments. As one enters the youthful years the importance of ornaments increases in the life of a person. The statues of gods too shall look very plain and simple if we remove ornaments from them. The appeal of ornaments can be understood from the fact that instead of the physical appearance of a person, ornaments catch our eyes immediately. The social status and personality of a person is adjudged by the ornaments worn.

Ornaments worn, by the tribal people are not very expensive. They are made from natural things like colourful stones, wood, feathers, dried leaves and flowers. But the desire for beauty is just as much as a rich man's expensive ornaments. Ornaments should blend well with the environment one lives in. It will look very jarring to the eyes if a tribal woman is seen wearing gold ornaments in her rustic surrounding and a rich woman wears dried flowers and leaf ornaments in an elegant gathering. Neither of them will feel comfortable in what they are wearing. Though the tribal woman may wear ornaments made from wood and leaves but its medicinal properties are well known to everyone.

There is extensive information on ornaments in Indian litter-nature. There is a description of metals, gemstones in the Vedas and Upanishads. Whether it is `Shringarshatak' of Bhartrihari's or Abhigyan Shakuntalam' of Kalidas they have given a lot of importance to ornaments in their writings. The beautiful and minute detailing of the ornaments worn by the leading lady in these books cannot be seen in any other literature. Description of the ornament clad beauty tells about the importance and value of the ornaments in ancient times. Literature of yester years is replete with the descriptions of the leading ladies. The close relation between ornaments and the beauty of women is well described. In the modern day lit-erasure too, a woman's attraction for jeweller has not diminished in any way.

We have also made a survey to collect information about different designs and styles of ornaments. Many interesting facts regarding these are also included in this book. I pray to the Almighty that the information provided in this book is beneficial in increasing your knowledge and happiness. It will also guide you, to a healthy lifestyle.

The information provided in various sections on ornament therapy and treatments have been compiled from various sources and books on ayurveda, astrology, science of gems and metals, acupressure and acupuncture. The reader must not think of this book as the ultimate guide and must consult an experienced therapist and expert of the relevant field before applying it. Ornaments occupy pride of place among man's treasured possessions. Though basically they are supposed to enhance the wearer's beauty they also possess innate attributes of solving our problems and healing ailments.

Recently I was involved in making a Museum of Gem and Jewellery at Jaipur, one of a specific kind and the first one in India. For this we were collecting books and journals published from Jaipur when I stumbled across a book in Hindi entitled 'GahaneKyonPahane' by Dr Gulab Kothari. I was looking for its English version and by the grace of God Vrinda Ji, one of our board members, made it available to me with the title 'Jewellery - A Scientific Study of Social Traditions'. I read it from cover to cover and was quite impressed by its rich content. It takes us into the

labyrinth of the glitter of gold, serenity of silver, sparkles of gems and human ingenuity of creativeness. It's unique in that it not only provides deep insights into the ostentatious world of jewellery but also analyzes each tradition associated with it.

Jewellery is not just meant to beautify a person but it has in it many other uses which have been explained so lucidly by the writer. His definition of ornaments encompasses many new dimensions and gives a deeper understanding of the subtle aspects involved. The author believes that the mother earth herself appears cheerful when she is embellished with flowers, water-falls, plants, trees and so on which, in reality constitutes its jewellery. Even gods, goddesses and deities are adorned everyday with jewellery as a part of worship. This practice has been in vogue since ancient times as evident in pre-historic archaeological artifacts. Though jewellery is a human creation its use is not restricted to humans alone. Even animals like horses, elephants, camels etc. are decked with them on specific occasions.

The author has done ample jus-tice to the subject by covering almost all aspects related to this area. As a matter of fact the book is the result of the profound research in various aspects of jewellery carried out by Rajasthan Patrika under Dr. Kothari's academic leadership. He traces their origin in prehistoric times chronicling their journey systematically through the Vedic era, middle ages and the modern age. In ancient times people used feathers, beads, stones and many natural items to decorate. Use of metals like bronze, silver, and gold, copper has been discussed. He has even covered the latest trends touching the twenty first century.

Jewellery has been discussed in detail covering head to toe. The sketch of a lady with the names of 32 pieces of jewellery speaks volumes of the hard work involved in collecting the requisite information. There is a special chapter on hair ornaments. These have been elucidated very well with the help of various diagrams. Different Era designs with Buns & Braids etc with evidence from archaeological images are well elaborated. Rural and modern Era designs have been included. Dr. Kothari discusses special hair ornaments from a scientific per-species. He also deals with many related topics like gemstones, their colors, their astrological values. Various metals used to make jeweller have been covered in detail. The importance of vari-ouscolors - 'A Rainbow in Daily Life' - is explained with a chart.

There is a special chapter on the use of ornaments in therapy. Special ornaments are used to have infant and children protected from evil. Astrologically useful NavGraha rings, pendants, etc., are very popular. Even there is a chapter on acupuncture with use of gems & metals. The author takes you to the Chinese five elements and their positive and negative energy elements in hand. The details of the same have been very well described with the help of a picture.

The author then moves from the individual to social values. He has considered the age of the person, race, location and finally social status. Even jewellery for girls, children, gents, widower, etc., has been covered. Even while describing the individual jeweller the author relates it to the attires of queens and kings. Similarly, women wear simpler form of jewellery according to their social status. Gents use watches, glasses and the other forms of jewellery. Lately the uses of men's jewellery are gradually declining. Even the younger generation in the modern age is using the simpler form of jewellery.

The younger generation is bringing in new designs and styles. The easy availability of different gem-stones has helped in the development of new designs. Modern generation wants simpler design in jewellery. Various charts, diagrams and pictures have also been illustrated very well. This makes it easy to appreciate various subjects.

Finally, a survey was conducted by the author. Its conclusion is that ornaments are used either for decoration or for security or for social status, peace and happiness. I recommend the book to all those who are fond of jewellery or are interested in knowing their astrological significance.

Scientific use of Henna

When Henna paste is used or applied to your skin in your skin is the chief and essential protein in the surface of your skin and also to relieve oxidative colour to promote hair growth and cubs' hair to wear anklets aside from eating wearing silver anklets, the immune system. It is beneficial in the immunity of a woman according to doctor and scientist and women.wear anklets sound of anklets, make the atmosphere healthy and sweet like Cuckoo.

Use of Mangalsutra

To wear mangalsutra by women is the cause of growthof Tradition and health hygienic the development of the women so that those could a life full of health. It regularises blood flows and keep fresh and energetic that regularise blood pressures and stimulates the Surya Nadi or the Sun channel in the women body and enhance the inherent energy. It falls on the heart and keeps the keep the recalling of her husband is the main source of conjugal love and attracts cosmic energy which imparts enlighten.

To keep Sikha (Braid)

To keep shika is the symbol of the superiority of body of a man and small portion of hair that hangs behindour head that

applies little pressure on our brains that helps as in improving concentration and mind control and improve memory All the tradition are due to scientific use in the Indian culture which is very much essential to live a happy life.

Yoga Practice

Yoga is a spiritual discipline dating back to some 5000 years in the history of Indian philosophy, its purpose, mainly to unleash spiritual and mental powers of an individual. However, in recent times yoga has been extremely popular in the context of fighting stress, anxiety and depression in these times of industrialization and our super-fast lifestyles.

Apart from the spiritual aspects, the physiological benefits acquired from yoga have recently had radical scientific understandings behind its workings. It is also moderate the surge and the production of chemicals in the body that affect us mentally, physically as well as psychosomatically. So, let's understand the science behind yoga that makes it so useful!

Moderates Stress Hormone.

When our body gets severely stressed, it secretes a hormone called cortisol which keeps us alert in crisis situations, but also disturbs the body functioning in the long term. Yoga reduces the stress level of a person, thus moderating the production of the cortisol hormone and keeping the individual calm.

Secretes Antioxidant Enzymes

Repeated exposure to environmental pollutants and metabolic by-products result in the formation of free radicals, which contribute to many diseases including cancer and expedite the aging process. To counteract free radicals, the human body has a powerful internal defence system in the form of antioxidant enzymes. The levels of antioxidant enzymes were found to be significantly higher in people practicing yoga, thus enhancing the defence against free radical damage.

Stimulates Parasympathetic Nervous System

Yoga actually stimulates the parasympathetic nervous system, which calms us down and restores balance after a major stress is over. When the parasympathetic nervous system switches on, blood is directed toward endocrine glands, digestive organs, and other organs, thus reducing the heartbeat rate and lowering the blood pressure.

Improves Immunity Function

This is attributed to the fact that yoga reduces cortisol hormone. Too much of cortisol can dampen the effectiveness of the immune system by immobilizing our defence system in the body (WBC). Yoga moderates the production of cortisol, thus boosting immunity.

Cures Addiction

Dopamine, a chemical in the brain that gives one contentment during a high on ones drug of choice is generated naturally by doing yoga. Thus, the craving for that level of contentment from addiction is no longer manifested. Yoga can give one the same level of dopamine high or contentment, thus cutting out the craving of addiction.

Enlarges the Brain

After conducting MRI scans, scientists have discovered that people practicing yoga have more gray matter (brain cells) than the non-practitioners do. It was found that with more hours of practice per week, certain areas were more enlarged – a finding that hints that yoga was a contributing factor to the bigger brain size.

Yogis have larger brain volume in the regions that contain mental mapping of our body, involved in directing attention, critical to dampening stress, and areas key to our concept of the self.

Helps Stay in the Present

Yoga makes one attentive to the present moment and gives more awareness towards negative thoughts and the ability to let go of them for the sake of self-preservation.

Yoga is a spiritual discipline dating back to some 5000 years in the history of Indian philosophy, its purpose, mainly to unleash spiritual and mental powers of an individual. However, in recent times yoga has been extremely popular in the context of fighting stress, anxiety and depression in these times of industrialization and our super-fast lifestyles.

Apart from the spiritual aspects, the physiological benefits acquired from yoga have recently had radical scientific understandings behind its workings. It is also moderate the surge and the production of chemicals in the body that affect us mentally, physically as well as psychosomatically. So, let's understand the science behind yoga that makes it so useful!

Moderates Stress Hormones

When our body gets severely stressed, it secretes a hormone called cortisol which keeps us alert in crisis situations, but also disturbs the body functioning in the long term. Yoga reduces the stress level of a person, thus moderating the production of the cortisol hormone and keeping the individual calm.

Secretes Antioxidant Enzymes

Repeated exposure to environmental pollutants and metabolic by-products result in the formation of free radicals, which contribute to many diseases including cancer and expedite the aging process. To counteract free radicals, the human body has a powerful internal defence system in the form of antioxidant enzymes. The levels of antioxidant enzymes were found to be significantly higher

in people practicing yoga, thus enhancing the defense against free radical damage.

Stimulates Parasympathetic Nervous System

Yoga actually stimulates the parasympathetic nervous system, which calms us down and restores balance after a major stress is over. When the parasympathetic nervous system switches on, blood is directed toward endocrine glands, digestive organs, and other organs, thus reducing the heartbeat rate and lowering the blood pressure.

Improves Immunity Function

This is attributed to the fact that yoga reduces cortisol hormone. Too much of cortisol can dampen the effectiveness of the immune system by immobilizing our defence system in the body (WBC). Yoga moderates the production of cortisol, thus boosting immunity.

Cures Addiction

Dopamine, a chemical in the brain that gives one contentment during a high on ones drug of choice is generated naturally by doing yoga. Thus, the craving for that level of contentment from addiction is no longer manifested. Yoga can give one the same level of dopamine high or contentment, thus cutting out the craving of addiction.

Enlarges the Brain After conducting MRI scans, scientists have discovered that people practicing yoga have more gray matter (brain cells) than the non-practitioners do. It was found that with more hours of practice per week, certain areas were more enlarged – a finding that hints that yoga was a contributing factor to the bigger brain size.

Yogis have larger brain volume in the regions that contain mental mapping of our body, involved in directing attention, critical to dampening stress, and areas key to our concept of the self.

Helps Stay in the Present

Yoga makes one attentive to the present moment and gives more awareness towards negative thoughts and the ability to let go of them for the sake of self-preservation.

Use of lipsticks

It is no secret that wearing lipstick can dramatically change your mood make you feel sexy, confident professional, creative and is also a form of self expression that has played an important role in music subcultures and fashion trends over the years.

To prostrate:

Dandvat Pranam is a ritual during which devotees offer their respects and surrender themselves to God and His genetic sadhu by bowing down. ' Danda-vat,' a Sanskrit word, literally means lying on the floor like a stick.

A Remedy for Blood Pressure and Heart Problems: Surya Namesake is a natural remedy for blood pressure. The Surya Namesake benefits the heart muscles and corrects irregular heartbeats. The practice also keeps sugar levels in control thus keeping the heart problems at bay.

Use of Jewellry in the Form of Silver:

Silver is considered cool metal and it keeps the body cool so silver is used in wearing as ornaments which is beneficial to wear. if we keep silver in the water then water be purified.

CONCLUSION

All These ornaments are play an important role to attract his life partner for conjugaln love which is the base of family and socity formed by ordination cause of nature, culture and welfare A tempera-mentally a free bird and it's quite natural for him to break rules and regulations occasionally and sometimes this affects his health which requires medical treatment. Indian A man is civilization and culture is highly developed. There are ways to regularly control the imbalances in our food habits and lifestyles. Apart from refined methods like Dayan and Yoga to help live a healthy life there is a long and popular tradition of wearing ornaments among the rural, uneducated and even socially prominent communities. Ornaments were worn and made of metal or other natural sub- stance (stones, wood, coconut, lacquer, shells, etc.) according to the profession or the social status of a person. Though the main purpose of wearing ornaments was maintaining good health but aspects of beauty and prosperity were certainly added to it. Today the purpose of wearing ornaments for good health is replaced by beauty and astrology.

So we can say that all the tradition and ordination scientifically proved feelings also plays an important role in the life that in which manner the life is being spent all the traditions and rituals are very important for daily routine all the use of ornaments and eating habits and rituals are adopted with the passage of time.

References

- Kothari, (2018) a scientific study of social traditions.
- Athawale Jayant, (2010) Balaji science of ornaments.
- Agrawal Nilesh Kumar, (2020) Indian traditions and their scientific reasons.
- Singh kevi, (2015) Hindu rights and rituals number.
- Sony Suresh, (2020) India's glorious scientific traditions.
- Balambal, ((2018) Indian tradition culture and reality.
- Banerjee,(2022) I For India A to Z about India.
- Shrivastava, (2005) make in India A persuasive Thought.
- Singhania, (2005)Indian art and culture.
- Pattanaik, Devdutt, (2008) Indian culture, Art and Heritage

Shamsher Singh

PhD Scholar Department of English Om Sterling Global University, Hisar, Haryana

Dr Raja Ram

Assistant Professor Department of English Om Sterling Global University, Hisar, Haryana

6

भारत का विभाजन और साम्प्रदायिकता

सतीश देशवाल

सारांशः

1947 में भारत का विभाजन आधुनिक इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण और जटिल घटनाओं में से एक है, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप के भू–राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार दिया। इस शोध लेख का उद्देश्य भारत के विभाजन और सांप्रदायिकता के उदय के बीच जटिल संबंधों की गहराई से पड़ताल करना, इस महत्वपूर्ण विभाजन के उत्प्रेरक, गतिशीलता और स्थायी परिणामों पर प्रकाश डालना है। ऐतिहासिक आख्यानों, राजनीतिक विचारधाराओं और सामाजिक गतिशीलता के अंतःविषय विश्लेषण के माध्यम से, यह लेख भारत के विभाजन और सांप्रदायिकता के साथ इसके जटिल संबंध की व्यापक समझ प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्दः भारत का विभाजन, सांप्रदायिकता, अखिल भारतीय मुस्लिम लीग, प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस, विरासत, शांति स्थापना।

परिचय

1947 में भारत का विभाजन और उसके बाद इस क्षेत्र में फैली सांप्रदायिक हिंसा भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। यह विभाजन धार्मिक आधार पर ब्रिटिश भारत के दो अलग–अलग राष्ट्रों, भारत और पाकिस्तान में विभाजन को संदर्भित करता है। जैसे–जैसे ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन समाप्त हो रहा था, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक तनाव बढ़ गया। मुसलमानों के लिए एक अलग मातृभूमि की मांग के कारण पाकिस्तान का निर्माण हुआ, जिसके परिणामस्वरूप लाखों लोग विस्थापित हुए और व्यापक हिंसा और बड़े पैमाने पर पलायन हुआ।

भारतीय उपमहाद्वीप के संदर्भ में सांप्रदायिकता, व्यक्तियों या समूहों की व्यापक राष्ट्रीय पहचान के बजाय मुख्य रूप से अपने धार्मिक या जातीय समुदाय के साथ पहचान करने की प्रवृत्ति को संदर्भित करती है। इसमें धार्मिक आधार पर समाज का ध्रुवीकरण शामिल है, जिससे अक्सर संघर्ष, दंगे और सांप्रदायिक हिंसा होती है। सांप्रदायिक राजनीति राजनीतिक लाभ के लिए धार्मिक मतभेदों का फायदा उठाती है, विभाजन को गहरा करती है और सामाजिक एकता को कमजोर करती है। इस सांप्रदायिकता के उदय के भारतीय उपमहाद्वीप पर दूरगामी परिणाम हुए। इसके परिणामस्वरूप इतिहास में सबसे बड़े प्रवासन में से एक हुआ, जिसमें अनुमानित 15 मिलियन लोगों को उखाड़ फेंका गया और नई खींची गई सीमाओं के पार पलायन करने के लिए मजबूर किया गया। विभाजन के साथ हुई सांप्रदायिक हिंसा में भारी मानवीय पीड़ा, जानमाल की हानि और संपत्ति की क्षति हुई। इसके अलावा, ब्रिटिश भारत के भारत और पाकिस्तान में विभाजन ने दोनों देशों के बीच लंबे समय से चले आ रहे संघर्ष और तनावपूर्ण संबंधों के लिए मंच तैयार किया।

इस शोध का उद्देश्य भारत के विभाजन और सांप्रदायिकता के उद्भव के बीच संबंधों की जांच करना है। निम्नलिखित प्रश्नों को संबोधित करके, हमारा लक्ष्य इस संबंध की गहरी समझ हासिल करना हैः

भारत के विभाजन ने साम्प्रदायिकता के उदय में किस प्रकार योगदान दिया?

इस अवधि के दौरान सांप्रदायिक तनाव को बढ़ावा देने वाले कारक क्या थे ?

विभाजन और सांप्रदायिकता से जुड़ी घटनाओं ने भारत और पाकिस्तान के बाद के इतिहास और राजनीति को कैसे आकार दिया?

ऐतिहासिक संदर्भ

भारत के विभाजन और उसके बाद सांप्रदायिकता के उदय को समझने के लिए, विभाजन–पूर्व भारत के सामाजिक–राजनीतिक माहौल में गहराई से जाना आवश्यक है । ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने उपमहाद्वीप पर गहरा प्रभाव डाला, इसके राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया और मौजूदा दोष रेखाओं को बढ़ा दिया। ब्रिटिश राज की नीतियाँ, जैसे फूट डालो और राज करो की रणनीति, ने विभिन्न धार्मिक और जातीय समुदायों के बीच सांप्रदायिक तनाव के बीज बोये। 20वीं सदी की शुरुआत में सांप्रदायिक तनाव बढ़ना शुरू हो गया क्योंकि विभिन्न समुदायों ने अपने राजनीतिक और सामाजिक हितों को सुरक्षित करने की कोशिश की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जो प्रारंभ में एकजुट उपनिवेशवाद–विरोधी संघर्ष का एक मंच थी, पर हिंदू नेताओं का प्रभुत्व बढ़ता गया। इसके कारण 1906 में मुस्लिम लीग का गठन हुआ, क्योंकि मुसलमानों को मुख्य रूप से हिंदू भारत में हाशिए पर जाने का डर था। धार्मिक समुदायों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों और आरक्षण की माँग के साथ, सांप्रदायिक विचारधाराएँ जोर पकड़ने लगीं।

भारत के विभाजन से पहले के वर्षों में कई प्रमुख घटनाएँ सामने आईं। 1937 के प्रांतीय चुनाव पहली बड़ी चुनावी प्रतियोगिता के रूप में चिह्नित हुए जहां धार्मिक पहचान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चुनाव अभियान धार्मिक मुद्दों पर केंद्रित थे, जिससे समुदायों का धार्मिक आधार पर ध्रुवीकरण हो रहा था। 1940 का लाहौर प्रस्ताव, जिसमें एक अलग मुस्लिम राज्य के निर्माण की मांग की गई थी, मुस्लिम लीग के लिए एक निर्णायक क्षण था और इससे सांप्रदायिक तनाव बढ़ गया। द्वितीय विश्व युद्ध के प्रकोप ने उपमहाद्वीप के सामाजिक–राजनीतिक ताने–बाने को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा शुरू किए गए 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के कारण ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा व्यापक विरोध और दमन हुआ। इस अवधि के दौरान सांप्रदायिक झड़पें हुईं, क्योंकि

विभिन्न धार्मिक समुदाय एक–दूसरे के खिलाफ खड़े हो गए, जिससे विभाजन और गहरा हो गया।

इसके अलावा प्रमुख राजनीतिक दलों और नेताओं के कार्यों और रणनीतियों ने उन घटनाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो विभाजन का कारण बनीं। महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एकजुट, धर्मनिरपेक्ष भारत का लक्ष्य रखा। हालाँकि, उनके मुख्य रूप से हिंदू नेतृत्व और मुस्लिम चिंताओं को पूरी तरह से संबोधित करने में कांग्रेस की अनिच्छा ने मुसलमानों के बीच अलगाव की भावना को बढ़ावा दिया। मोहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व वाली मुस्लिम लीग भारतीय मुसलमानों की प्राथमिक आवाज बनकर उभरी। अलग मुस्लिम राज्य की जिन्ना की मांग ने जोर पकड़ लिया, क्योंकि उनका तर्क था कि हिंदू–बहुल भारत में मुसलमानों को हाशिए पर धकेल दिया जाएगा। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच बातचीत आम सहमति तक पहुंचने में विफल रही, जिसके कारण गतिरोध उत्पन्न हुआ और अंततः विभाजन को स्वीकार कर लिया गया।

विभाजन और सांप्रदायिकता के संदर्भ को समझने में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता। अंग्रेजों ने ऐसी नीतियां अपनाईं जो धार्मिक और जातीय आधार पर विभाजन को बढ़ावा देती थीं, क्योंकि यह उनकी फूट डालो और राज करो की रणनीति के अनुरूप थी। धर्म के आधार पर पृथक निर्वाचन क्षेत्रों की शुरूआत और सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की नीति ने सांप्रदायिक पहचान को और मजबूत किया।इसके अलावा, अंग्रेजों ने 1905 में धार्मिक आधार पर बंगाल का विभाजन कर दिया, जिससे महत्वपूर्ण विरोध और सांप्रदायिक तनाव भड़क गया। हालाँकि इस विभाजन को 1911 में रद्द कर दिया गया था, लेकिन एक मिसाल कायम हो चुकी थी और इसने भारत के अंतिम विभाजन की नींव रखी।1947 में ब्रिटिशों के भारत छोड़ने से सांप्रदायिक तनाव बढ़ गया क्योंकि सत्ता भारतीयों के हाथों में स्थानांतरित हो गई। विभाजन प्रक्रिया में जल्दबाजी और स्पष्टता की कमी के साथ–साथ प्रभावित आबादी की जरूरतों को पूरा करने के अपर्याप्त उपायों के परिणामस्वरूप व्यापक हिंसा, बड़े पैमाने पर पलायन और समुदायों का विनाश हुआ।

सारांशतः, सामाजिक–राजनीतिक माहौल, सांप्रदायिक तनाव का बढ़ना, प्रमुख घटनाएं, राजनीतिक दलों और नेताओं की भूमिका, साथ ही ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के प्रभाव ने उन परिस्थितियों में योगदान दिया जो विभाजन में परिणत हुईं।

सांप्रदायिकता के कारण और कारक

हिंदू–मुस्लिम संबंध भारत के विभाजन और सांप्रदायिकता के उदय के प्राथमिक कारणों में से एक हिंदू और मुसलमानों के बीच गहराता धार्मिक विभाजन था। इन दो प्रमुख धार्मिक समुदायों के बीच सदियों से सह–अस्तित्व में सद्भाव के साथ–साथ संघर्ष के उदाहरण भी देखे गए हैं। हालाँकि, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत, धार्मिक पहचान का तेजी से राजनीतिकरण हो गया। अंग्रेजों ने उपमहाद्वीप पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए मौजूदा धार्मिक तनावों का फायदा उठाते हुए ''फूट डालो और राज करो'' की नीति अपनाई। इस नीति ने धार्मिक मतभेदों को और बढ़ा दिया तथा साम्प्रदायिकता के बीज बोये। ऐतिहासिक शिकायतों, सांस्कृतिक मतभेदों और राजनीतिक प्रभुत्व की धारणाओं से प्रेरित हिंदू –मुस्लिम विभाजन , भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण दोष रेखा बन गया।

सामाजिक–आर्थिक असमानताओं ने सांप्रदायिक तनाव को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्भव, जिसमें शुरू में हिंदू नेताओं का वर्चस्व था, ने मुस्लिमों के राजनीतिक और सामाजिक हाशिए पर जाने के डर को और बढ़ा दिया। अलगाव की भावना के साथ आर्थिक शिकायतों ने सांप्रदायिक राजनीति के उदय और धार्मिक पहचान के आधार पर अलग निर्वाचन क्षेत्रों और आरक्षण की मांगों में योगदान दिया।
राजनीतिक कारकों और विभिन्न राजनीतिक दलों और नेताओं के बीच सत्ता संघर्ष ने भी विभाजन की दिशा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। कांग्रेस के मुख्य रूप से हिंदू नेतृत्व और पर्याप्त राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सुरक्षा उपायों की मुस्लिम मांगों को संबोधित करने में इसकी अनिच्छा ने मुस्लिमों के हाशिए पर जाने के डर को प्रबल कर दिया। मोहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने इन चिंताओं का फायदा उठाया और एक अलग मुस्लिम राज्य की वकालत की। कांग्रेस और मुस्लिम लीग की एक साझा जमीन खोजने और भारत के अपने–अपने दृष्टिकोण के बीच की खाई को पाटने में असमर्थता के कारण विभाजन को स्वीकार करना पड़ा।

भू–राजनीतिक विचारों और द्वितीय विश्व युद्ध सहित बाहरी कारकों ने भी विभाजन की दिशा को प्रभावित किया। 1905 में बंगाल को धार्मिक आधार पर विभाजित करने के ब्रिटिश फैसले ने विरोध और सांप्रदायिक तनाव को जन्म दिया। हालाँकि 1911 में विभाजन रद्द कर दिया गया था, लेकिन एक मिसाल कायम हो चुकी थी और इसने सांप्रदायिक विभाजन के बीज बो दिए।बाद में एकजुट, स्वतंत्र भारत के संभावित रूप से ब्रिटिश हितों को चुनौती देने के डर से उपमहाद्वीप को विभाजित करने की रणनीति बनाई गई। विभाजन प्रक्रिया में जल्दबाजी और स्पष्टता की कमी के साथ–साथ प्रभावित आबादी की जरूरतों को पूरा करने के सीमित प्रयासों के परिणामस्वरूप व्यापक हिंसा और बड़े पैमाने पर पलायन हुआ। निष्कर्षतः, भारत के विभाजन और सांप्रदायिकता के उदय में योगदान देने वाले कारण और कारक बहुआयामी और परस्पर जुड़े हुए थे।

प्रभाव और परिणाम

विस्थापन और शरणार्थी संकट भारत के विभाजन के परिणामस्वरूप इतिहास का सबसे बड़ा और सबसे दुखद मानवीय संकट पैदा

हुआ। ऐसा अनुमान है कि लगभग 15 मिलियन लोग अपने घरों से उजड़ गए, हिंदू और सिख भारत की ओर पलायन कर गए और मुस्लिम पाकिस्तान की ओर पलायन कर गए। मानवीय संकट ने विस्थापित आबादी को समायोजित करने और पुनर्वास करने के लिए अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, संसाधनों और सहायता प्रणालियों के साथ भारत और पाकिस्तान दोनों के लिए भारी चुनौतियां पेश कीं।

भारत के विभाजन के साथ–साथ जीवन और संपत्ति की भारी क्षति हुई। इस प्रक्रिया के दौरान भड़की सांप्रदायिक हिंसा के कारण बड़े पैमाने पर रक्तपात और नरसंहार हुआ। मरने वालों की संख्या का अनुमान अलग–अलग है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि हिंसा और उसके बाद हुई अराजकता में सैकड़ों–हजारों लोगों की जान चली गई। जानमाल के नुकसान के अलावा, विभाजन के परिणामस्वरूप घरों, व्यवसायों और पूजा स्थलों सहित संपत्तियों का विनाश और लूटपाट हुई। ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक विरासतों को भी नष्ट कर दिया गया, जिससे साझा इतिहास और सांस्कृतिक प्रतीक मिट गए। जान–माल की हानि का प्रभावित समुदायों और क्षेत्र के समग्र सामाजिक–आर्थिक ताने–बाने पर गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा।

दोनों देशों के सांस्कृतिक परिदृष्य में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। विभाजन ने सदियों पुराने सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को बाधित कर दिया, क्योंकि लोगों को उनकी पैतृक भूमि से उखाड़कर अपरिचित क्षेत्रों में बसाया गया। साझा सांस्कृतिक प्रथाओं, भाषाओं और परंपराओं के नुकसान का उपमहाद्वीप के सामाजिक ताने–बाने पर स्थायी प्रभाव पड़ा।

ई. विरासत और लंबे समय तक बने रहने वाले सांप्रदायिक तनाव भारत के विभाजन ने सांप्रदायिक तनाव और विभाजन की एक स्थायी विरासत छोड़ी । भारत–पाक युद्धों और कई सीमा झड़पों सहित बाद के संघर्षों ने संबंधों को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया है। विभाजन के दौरान पैदा हुई सांप्रदायिक दोष रेखाएं पूरी तरह से ठीक नहीं हुई हैं, और मेल–मिलाप और अंतर–धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने के प्रयास निरंतर चुनौतियां बनी हुई हैं।

केस स्टडीज

हिंदी साहित्य में विभाजन भारत के विभाजन ने उपमहाद्वीप के साहित्यिक परिदृष्य, विशेषकर हिंदी साहित्य पर एक अमिट छाप छोड़ी है। लेखकों और कवियों ने सांप्रदायिकता, विस्थापन और विभाजन से जुड़ी मानवीय त्रासदी के विषयों की खोज की है। एक उल्लेखनीय केस स्टडी सआदत हसन मंटो का काम है, एक प्रसिद्ध उर्दू लेखक, जिनकी कहानियाँ विभाजन की भयावहता और मनोवैज्ञानिक प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। मंटो की लघु कहानियों का संग्रह '' खोल दो'' विभाजन से प्रभावित लोगों की पीड़ा और पीड़ा को चित्रित करता है। उनके लेखन में सांप्रदायिक हिंसा, नुकसान और अराजकता में फंसे व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाओं की झलक मिलती है। मंटो का काम विभाजन के मानवीय आयाम को दर्शाता है, धार्मिक विभाजनों को पार करता है और सांप्रदायिकता के परिणामों पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी प्रदान करता है।

भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता सांप्रदायिकता का भारतीय राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, विभिन्न राजनीतिक दल चुनावी लाभ के लिए धार्मिक पहचान का फायदा उठाते हैं। एक केस स्टडी है भारत में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) का उदय, जो हिंदू राष्ट्रवाद के एक रूप हिंदुत्व की विचारधारा से जुड़ी रही है। भाजपा की चुनावी रणनीतियों में धार्मिक प्रतीकों, बयानबाजी और हिंदू पहचान पर जोर देने वाले आख्यानों को बढ़ावा देना शामिल है। धार्मिक आधार पर मतदाताओं का ध्रुवीकरण करने में पार्टी की सफलता के कारण उसके राजनीतिक प्रभाव में वृद्धि हुई है। भारत में राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा के सत्ता में आने और उसके बाद की नीतियों ने धर्मनिरपेक्षता के क्षरण और धार्मिक अल्पसंख्यकों के हाशिए पर जाने के बारे में चिंताएँ बढ़ा दी हैं।

भारत का विभाजन अपने पैमाने और जटिलता में एक अनूठी घटना थी, लेकिन इसका विश्लेषण अन्य ऐतिहासिक विभाजन आंदोलनों के साथ तुलनात्मक ढांचे में किया जा सकता है। ऐसा ही एक उदाहरण 1948 में ब्रिटिश फिलिस्तीन का विभाजन है, जिसके कारण इजराइल राज्य का निर्माण हुआ और फिलिस्तीनियों का विस्थापन हुआ। एक अन्य घटना 1990 के दशक में यूगोस्लाविया का विघटन है, जिसमें जातीय और धार्मिक संघर्षों के कारण बाल्कन में नए राष्ट्रों का निर्माण हुआ। यूगोस्लाविया के विघटन के परिणामस्वरूप व्यापक हिंसा, सामूहिक हत्याएँ और जबरन पलायन हुआ। भारत के विभाजन के साथ समानताएं सांप्रदायिक और जातीय तनावों में निहित हैं जिनका राजनीतिक नेताओं द्वारा शोषण किया गया, आबादी का विस्थापन और अंतर–जातीय संबंधों पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा।

ये केस अध्ययन विभाजन के मानवीय आयामों, राजनीति में सांप्रदायिक पहचान के साधन और उपमहाद्वीप के साहित्यिक और राजनीतिक परिदृश्य पर दीर्घकालिक प्रभावों पर प्रकाश डालते हैं।

निष्कर्ष

संक्षेप में भारत का विभाजन न केवल एक भूराजनीतिक घटना थी, बल्कि सांप्रदायिकता के उदय के लिए उत्प्रेरक भी थी। सामाजिक–राजनीतिक कारकों के साथ–साथ हिंदुओं और मुसलमानों के बीच गहरे धार्मिक विभाजन के कारण सांप्रदायिक तनाव पैदा हुआ। धार्मिक कट्टरवाद, सांप्रदायिक हिंसा और पहचानों के राजनीतिक उपकरणीकरण के कारण जो सांप्रदायिकता उत्पन्न हुई , उसका इस क्षेत्र पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा।

मानवीय संकट, जीवन और संपत्ति की हानि, सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन और तनावपूर्ण भारत–पाक संबंध आदि सांप्रदायिकता के परिणाम हैं, इन परिणामों को पहचानना और संबोधित करना सामाजिक सद्भाव, मेल–मिलाप और

समावेशी समाज को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

हालांकि यह शोध भारत के विभाजन और सांप्रदायिकता पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, लेकिन आगे की खोज के लिए रास्ते भी हैं। भविष्य के शोध से विभाजन से प्रभावित सिखों या दलितों जैसे विशिष्ट समुदायों के अनुभवों को गहराई से समझा जा सकता है , ताकि उनके सामने आने वाली अनोखी चुनौतियों को समझा जा सके। इसके अतिरिक्त, भारत के विभाजन और अन्य ऐतिहासिक विभाजन आंदोलनों के बीच तुलनात्मक अध्ययन सांप्रदायिकता और उसके परिणामों की व्यापक समझ प्रदान कर सकता है। संघर्षों में लिंग गतिशीलता की भूमिका की जांच पर भी ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

- अजीम , ए., खान, एसए, और चौधरी, आरएम (2020)। भारत और पाकिस्तान में सांप्रदायिकताः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और समकालीन चुनौतियाँ। जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 5(1), 78–95।
- बोस, एस. (2019)। भारत का विभाजन. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- गिलमार्टिन, डी., और लॉरेंस, बी. (2014)। विभाजन से परेः उत्तर औपनिवेशिक भारत में लिंग, हिंसा और प्रतिनिधित्व। पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय प्रेस।
- बंद्योपाध्याय , एस. (2004). प्लासी से विभाजन तकः आधुनिक भारत का इतिहास। ओरिएंट लॉन्गमैन.
- चटर्जी , जे. (2007). बंगाल विभाजितः हिंदू सांप्रदायिकता और विभाजन, 1932–1947। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- गिलमार्टिन , डी. (1998)। विभाजन, पाकिस्तान और दक्षिण एशियाई इतिहासः एक कथा की खोज में। द जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज, 57(4), 1068–1095।
- जलाल, ए. (1993)। एकमात्र प्रवक्ताः जिन्ना, मुस्लिम लीग और पाकिस्तान की मांग। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- मेनन, वी.पी. और भसीन, के. (1998)। सीमाएँ और सीमाएँः भारत के विभाजन में महिलाएँ। रटगर्स यूनिवर्सिटी प्रेस।
- टैलबोट, आई., और सिंह, जी. (2009)। भारत का विभाजन. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

सतीश देशवाल
पी–एच–डी शोधार्थी, इतिहास–विभाग
लॉर्डस विश्वविद्यालय, चिकानी जिला–अलवर
राजस्थान।

7

GOTRA SYSTEM IS HELPFUL TO MAKE A MAN MONOGAMOUS

Shamsher Singh, Dr Raja Ram

Abstract

Gotra is now the talk of the town with political leaders using it all over the place. However, there I am wondering if this is where the love for preserving cows started. I started to look at the genomes and similarities. The size of the bovine genome is 3 Gb (3 billion base pairs). It contains approximately 22,000 genes of which 14,000 are common to all mammalian species. Bovines share 80% of their genes with humans. Incidentally, cows are less similar to humans than rodents. Perhaps that's why we have a temple for rats also. Cows also have about 1,000 genes that they share with dogs and rodents but not identified in humans. Maybe this is not important to you. Since we all share 50% of our genes with bananas, you can allow me to go bananas sometimes. Gotra is typically the Y chromosome passed on in generations in genomics parlance. You inherit a gotra from your father and pass it on if you are male. Women first are born with the Gotra of their father and then she inherits her husband's gotra. I have no idea what gotra divorced women or folks have. Including the Saptarishis and Bhardwaj Rishi, today there are many more gotras and all of these can be traced back to these original 8 gotras. If they had DNA sequencing and analysis, then these gotras would have all gone all the way back to Africa. But I forget, this was a construction of caste and specifically the Brahmin community and thus limited to India. One of the reasons, I think our ancestors had an inkling about genetics was that persons from the same gotra were not allowed to marry which makes sense as it reduces the probability of them having the same mutations. However, I did hear that disciples of these rush is and sons who were adopted also continued the same gotra which may kill the argument that we knew all about carrier screening back then. But I prefer to give them the benefit of doubt.

Keywords: Gotra, Lineage, Honour Kipling, Kshatriya, Independence, Innovation, Adjacent,

Introduction

There are also many disease conditions that are on the autonomies or X chromosome. So there is more to inbreeding and genetics and disease than just basing marriages on gotra exclusivity. Probabilistically speaking, they did reduce the chances, which I think was a good start. If we wanted to truly prevent inbreeding and reduce chances of genetic disease in offspring, a comprehensive carrier screen would be the most ideal. At Mapmygenome we have Baby Map and Match me to understand how the offspring may be affected and make informed decisions after genetic counselling. If you are someone who wants to know about prevention, we can advise you based on your Genomepatri.

If they had DNA sequencing and analysis, then these gotras would have all gone all the way back to Africa. But I forget, this was a construction of caste and specifically the Brahmin community and thus limited to India. One of the reasons, I think our ancestors had an inkling about genetics was that persons from the same gotra were not allowed to marry which makes sense as it reduces the probability of them having the same mutations. However, I did hear that disciples of these rishis and sons who were adopted also continued the same gotra which may kill the argument that we knew all about carrier screening back then. But I prefer to give them the benefit of doubt.

Gotra lineage segment within an Indian caste that prohibits intermarriage by virtue of the members' descent from a common mythical ancestor an important factor in determining possible Hindu marriage alliances. The name (Sanskrit: “cattle shed”) indicates that the contemporary lineage segment acted as a joint family, holding possessions in common. *Gotra* originally referred to the seven lineage segments of the Brahmans (priests), who trace their derivation from seven ancient seers: Atri, Bharadvaja, Bhrigu, Gotama, Kashyapa, Vasishtha, and Vishvamitra. An eighth *gotra* was added early on, the Agastya, named after the seer intimately linked up with the spread of Vedic Hinduism in southern India. In later times the number of *gotra*s proliferated when a need was felt to justify Brahman descent by claiming for one's line a Vedic seer.

Result & Discussion

The practice of forbidding marriage between members of the same *gotra* was intended to keep the *gotra* free from inherited blemishes and also to broaden the influence of a particular *gotra* by wider alliances with other powerful lineages. The system was, to some extent, adopted by non-Brahman groups in order to take on some of the social prestige accorded Brahmans. Originally, the Kshatriya (warrior-nobles), too, had their own dynasties, the principal traditional ones being the Lunar and the Solar dynasties, to which the heroes of the Sanskrit epics the *Mahabharata* and the *Ramayana* respectively belonged. The epics do not present a sufficiently clear picture to determine the exogamy of such lineages; marriage alliances appear rather to have been motivated by

territorial considerations. In later times, the Kshatriya and the Vaishya (merchant-traders) also adopted the concept of *gotra* in a fashion, by assuming for their groups the *gotra* of their adjacent Brahman *gotra*s or those of their gurus (spiritual guides), but this innovation was never very influential.

Let's delve into the details of how the gotra of women is decided. What is Gotra? Gotra refers to the ancestral lineage or clan of a person in Hindu society. It is believed that the gotra originates from a common male ancestor or sage and is passed down through generations. Individuals belonging to the same gotra are considered to be relatives and marriages within the same gotra are traditionally discouraged. Matrilineal Descent In Hindu society, lineage is typically traced through the male side of the family. The gotra of women is determined based on their father's gotra. When a woman gets married, she is expected to adopt her husband's gotra and leave her natal gotra behind. Adopting Husband's Gotra Upon marriage, a woman is considered to be a part of her husband's family and gotra. This practice signifies her transition from her natal family to her marital family. By adopting her husband's gotra, she is symbolically aligning herself with his lineage and acknowledging her new identity within the family. The Role of Matrilineal Descent The gotra system is deeply rooted in the concept of matrilineal descent, where the lineage is traced through the male ancestors. This system is believed to maintain purity and prevent marriage between close relatives. By tracing the gotra through male ancestors, it becomes easier to determine familial relationships and ensure that marriages occur outside of the same lineage. Exceptions and Modern Influence While the gotra system traditionally follows matrilineal descent, there have been exceptions in certain cases. In some instances, if a woman's father does not have a gotra or if it is unknown, she may be given a gotra based on her mother's lineage. Additionally, with the influence of modernization and changing societal norms, some individuals choose to disregard the gotra system altogether, focusing more on compatibility and personal choices in marriage. In conclusion, the gotra of women is determined through matrilineal descent, where it is based on the gotra of their fathers. By adopting their husband's gotra upon marriage, women symbolically align themselves with their husband's lineage. However, exceptions exist, and with changing times, the influence of the gotra system in marriage decisions has diminished for some individuals. Attention Humanities/Arts Students! To make sure you are not studying endlessly, EduRev has designed Humanities/Arts study material, with Structured Courses, Videos, & Test Series. Plus get personalized analysis, doubt solving and improvement plans to achieve a great score in Humanities/Arts.

Seeing the hindsight of the honour killing tradition, which prevails in some parts of India and continues to stigmatize community? It activates the caste and gotra culture. Nobody should violate the court rule, otherwise faced accusation of breaking the law. Two adults are free to marry and “no third party” has a right to harass or cause harm to them, stated by Chief Justice of India Dipak Misra, speaking against honour killings in India. Honour killing is defined as the killing of a relative, especially a girl, woman and a man perceived to bring dishonour to the family. As per the National Crime Records Bureau, Data 2015 India reported 251 honour killings in 2015, showing a significant rise in killings of people who feel that they are acting in defence of the integrity of their families. The state reported 34 honour killings between 2008 and 2010. There was a rising case of honour killing in India more than 300 cases reported from the last three years. Honour killings have been mostly reported in northern regions of India, mainly in the states of Punjab, Rajasthan, Haryana, and Uttar Pradesh as a result of people marrying without their family's acceptance, and sometimes for marrying outside their caste or religion. Honour killings are also widespread in South India and the western Indian states of Maharashtra and Gujarat. Here in this article, the author addresses the current situation, developments in law and amendments needed to improve the current scenario? Honour killing is an act of murder by members of the family. This would be the immoral conduct of the members of the family belief in caste and gotras above one's life. It is done to remove a family member's dishonour and shame. The male or any member of the family kills the person who doesn't match their social standing. It might even be a pre-planned murder; the key reasons are caste and religion. Even after 70 years of Independence, people still believe in the superiority of caste above life. India is a democratic country where all people have the right to equal treatment and the right to life.

Conclusion

The Gotra is a system which associates a person with his most ancient or root ancestor in an unbroken male lineage. For instance if a person says that he belongs to the BharadwajaGotra then it means that he traces back his male ancestry to the ancient Rishi (Saint or Seer) Bharadwaja. So Gotra refers to the Root Person in a person's male lineage. This Gotra system helps one identify his male lineage and is passed down automatically from Father to Son. But the Gotra system does not get automatically passed down from Father to Daughter. Suppose a person with GotraAngirasa

has a Son. Now suppose the Son gets married to a girl whose father belongs to GotraKashyapa. The Gotra of the girl automatically is said to become Angirasa after her marriage even though her father belonged to GotraKashyapa. So the rule of the Gotra system is that the Gotra of men remains the same, while the Gotra of the woman becomes the Gotra of their husband after marriage. Now suppose a person has only daughters and no sons. In that case his Gotra will end with him in that lineage because his daughters will belong to the Gotras of their husbands after their marriage! This was probably the reason why in the ancient Vedic or Hindu societies it was preferred to have at least one Son along with any number of daughters, so that the Gotra of the father could continue. Most Uprooted Answer How was the gotra of women decided? How was the gotra of women decided? The gotra of women is determined through the practice of matrilineal descent, where the lineage is traced through the male ancestors. The gotra system is an integral part of Hindu society and is associated with the concept of purity and marriage within the same lineage.

References

- 1.Brough, Johan 1947 The early history of the Gotras
- Ambedkar, B.R. 1936. Annihilation of caste
- Ilaiah, (2003)Kancha Why I am not Hindu
- Pawar. (2010) TheWeave of Life
- 5.Anand.Mulk Raj. (1935) Untouchable
- 6.Shrimali. Dr. Narayan.(2011) Guru AamarJaatiGotra Book
- 7.Aacharya.PanditRajendradevlal.(1921) Brahman Gotras
- 8.Tripathi.Dr. VashishthNarayan.(2017) Gotra-PravartakRishi Parampara
- 9.Thakur.(2014) DeshrajJaatItihaas
- 10.HomoHierarchicus, (1966) The Caste System and its Implications

Shamsher Singh

PhD Scholar Department of English Om Sterling Global University, Hisar, Haryana

Dr Raja Ram

Assistant Professor Department of English Om Sterling Global University, Hisar, Haryana

8

गर्भपात का अधिकार और भारतीय महिलाएं

डॉ0 रेणुका पोद्दार

सारांश

गर्भपात का अधिकार और भारतीय महिलाएँ– किसी देश समाज और सभ्यता संस्कृति की तरक्की देखनी हो तो हमें उस देश, समाज या सभ्यता की स्त्रियों की दशा देखनी चाहिए यहीं सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

समाज से जुड़ी कोई भी समस्या अचानक नहीं होती बल्कि धीरे–धीरे अपना अस्तित्व बनाती है। स्त्रियों से संबंधित गर्भपात एवं भ्रूण हत्या की समस्या भी येन–केन प्रकरण स्त्रियों की अतीत कालीन परिस्थितियों की ही देन है क्योंकि यहाँ हम स्त्रियों से संबंधित ऐसे ही एक समस्या का अध्ययन कर रहे हैं जो स्त्रियों के सामाजिक, धार्मिक पारिवारिक, शारीरिक, मानसिक एवं राजनैतिक सभी से जुड़ी एक जटिल समस्या है। इसके लिए सामाजिक सोच तथा समाज में स्त्रियों की परिस्थिति भी कम जिम्मेदार नहीं है।

हम सभी जानते हैं कि पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियों को सदैव दोयमदर्जे का स्थान दिया जाता है। यहाँ जिस समस्या की ओर समाज का ध्यान अवगत कराऐगें वो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसके लिए जिम्मेदार है–

प्राचीन काल में भारतीय नारी की स्थिति– प्राचीन काल में उपलब्ध प्रमाण के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय नारी की स्थिति अच्छी थी संभवतः उस समय मातृसत्तात्मक परिवार थे। उस समय परिवार में गृहस्थी का पूर्ण संचालन नारी द्वारा ही किया जाता था। वंश, परिवार सभी नारी के नाम से ही चलते थे। ऐसे परिवारों की मुखिया भी नारी ही होती थी। संसार की प्रायः सी प्राचीन सभ्यताओं में मातृ देवता की प्रथा विद्यमान थी इससे स्पष्ट है कि इस युग में नारी को देवी मानकर पूजा जाता था अर्थात् स्त्रियों की स्थिति इस काल में बहुत अच्छी थी।

वैदिक काल में भारतीय नारी की स्थिति–वैदिक युग भारतीय इतिहास का गौरवभय काल ही प्रारंभिक आर्य समाज यद्यपि पितृसत्तात्मक था किन्तु पारिवारिक कार्यों में माँ की भी उच्च स्थिति थी। तथा घरेलू विषयों में उसकी सत्ता सर्वोपरि थी।[1] जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में स्त्रियों के सहयोग महत्वपूर्ण होते थे। उन्हें शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास की पूर्ण स्वतंत्रता थी।[2] इस काल में कन्या का जन्म अच्छा माना जाता था।[3] इस काल में स्त्रियां स्वतंत्रतापूर्वक सभी कार्य कर सकती थी पर्दा एवं एकांतवास अज्ञात था।[4] स्त्रियाँ मेलों – उत्सवों में शामिल होती थी और सभाओं व खेलकूद के आयोजनों में निद्वंद होकर भाग लेती थी।[5] न ही कन्या हत्या व स्त्रियों का शोषण होता था।

उत्तर वैदिक काल में भारतीय नारी की परिस्थिति– इस काल में स्त्रियों के संबंध में विरोधी मत प्राप्त हुए है। इस काल में स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं थी। उन्हें हमेशा पुरूषों के संरक्षण में रहना पड़ता था। पुरूष प्रधान समाज में कन्या जन्म कोई उत्साह का कारण नहीं था।

मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति– मध्यकाल में स्त्रियों पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए। उन्हें शिक्षा तथा और भी जरूरी अधिकारों से वंचित कर दिया गया। बाल–विवाह का प्रचलन शुरू किया गया पर्दा प्रथा प्रचलित थी। स्त्रियों को चार दिवारी के अंदर तक सीमित कर दिया गया। विधवा पुनर्विवाह का अधिकार नहीं था। सती प्रथा को बढ़ावा दिया गया। पुरूषों में बहुपत्नी की प्रथा प्रचलित थी।

ब्रिटिश काल में नारियों की प्रतिस्थिति– अंग्रेजों के आगमन के बाद भी कोई सुधार स्त्रियों की स्त्रियों की स्थिति में नही हुए। क्योंकि उन्होंने यहाँ धार्मिक और सामाजिक जीवन में किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप नहीं किया। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय इतिहास के अंधकार युग के रूप में वर्णित 18वीं तथा प्रारंभिक 19वीं शताब्दी **ह्रास** के साथ ही समाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक रूढ़ता और अवनति के शिकार होने लगे। अतः जीवन निम्न धरातल पर पहुँच गया।[1] विधवाओं का जीवन अत्यंत क्लेशमय था। कन्याओं का क्रय–विक्रय और सतीप्रथा भारतीय समाज में व्याप्त अन्य प्रमुख कुप्रथाएँ थी।

इस प्रकार स्त्रियों की स्थिति में समय–समय पर परिस्थितियों के अनुसार उतार चढ़ाव आते रहें है। विवेचनाधीन काल में स्त्रियों की दशा सोचनीय हो चली थी। कन्या वध जैसी कुप्रथा ने जन्म ले लिया।[2]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारियों की स्थिति– स्वतंत्रता के पश्चात आरंभिक दशक में नारियों की स्थिति में सुधार के लिए बहुत से अधिनियम पारित किए गए। जिसके परिणामस्वरूप उनकी स्थिति में तेजी से सुधार होने शुरू हुए।

जनसंख्या दर में भी वृद्धि देखी गई इस ओर तत्कालीन सरकार का ध्यान आकर्षित हुआ। तदुपरान्त इसे रोकने के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम शुरू हुए तथा 1972 में एम0 पी0 टी एक्ट पारित किया गया जिसका उद्देश्य था "गर्भपात को प्रोत्साहन देना और अनैच्छिक गर्भ के समापन को वैधता प्रदान करना तब सरकार की सोच सकारात्मक थी लेकिन अल्ट्रासाउंड तकनीक के विकास ने गर्भस्थ शिशु की लिंग की जांच संभव हो गया तदुपरांत इस तकनीक के प्रयोग से भ्रूण–कन्या की हत्या की जाने लगी।

गर्भपात से तात्पर्य है कि संगभर्ता के 28 सप्ताह के पहले गर्भ का समापन। गर्भावस्था के दौरान अनजाने में उत्तेजक दवाओं के सेवन, दुर्घटना, भावी विकलांगता असाध्य रोग आदि के परिणामस्वरूप गर्भ के समापन से है। गर्भपात शब्द का प्रयोग चिकित्सकीय दृष्टिकोण

से सर्वाधिक किया जाता है।

बीते दिनों माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने गर्भपात कानून के संबंध में एक ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए कहा कि सभी महिलाओं (विवाहित या अविवाहित) को सुरक्षित और कानूनी गर्भपात का समान रूप से अधिकार है इस फैसले के अनुसार अब विवाहित महिलाएँ भी 24 हफ्ते तक की गर्भावस्था को समाप्त करवा सकती है। निश्चित रूप से "महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह एक बेहद महत्वपूर्ण निर्णय है लेकिन अन्य कानूनों की तरह इस कानून की व्यवहारिक सफलता हेतु कुछ अन्य पहलुओं पर गौर किए जाने की जरूरत है।

एक स्त्री को अपने शरीर का पूरा अधिकार मिलना चाहिए–

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने इस फैसले से यह स्पष्ट कर दिया कि स्त्री अगर गर्भधारण नहीं चाहती तो उसपर किसी प्रकार का दबाव नहीं बनाया जा सकता।(प्रभात खबर रविवार, 09/10/2022 सुरभि अंक में प्रकाशित)

महिलावादी पत्रकार गीताश्री का कहना है न्यायालय का निर्णय बेहद स्वागत योग्य है एक स्त्री को अपने शरीर का पूरा अधिकार मिलना ही चाहिए, उसे गर्भ को अपनी कोख में पालनाै या उसे खत्म करना है यह तय करने का हक सिर्फ और सिर्फ उसी का है क्योंकि गर्भधारण करने से लेकर बच्चा पैदा करने तक की सारी तकलीफ तथा परेशानी अकेले उसी को झेलनी पड़ती है। अब तक कुछ विशेष मामलों में ही महिलाओं को गर्भपात का अधिकार प्राप्त था जबकि हम जानते है कि घर परिवार से लेकर ऑफिस, बाजार तक में महिलाओं का शोषण होता है। इसकी वजह से कई महिलाएँ अनचाहा गर्भ ढोने को मजबूर होती है या फिर छिपा–छिपाकर नीम हकीम द्वारा गर्भपात करवाती है जिसके भयंकर परिणाम भुगतने पड़ते है अब इस कानून के लागू होने से ऐसी स्थितियों पर लगाम लगेगा।

(ii) (b) सुरक्षित और कानूनी गर्भपात चुनने का अधिकार–

न्यायालय द्वारा दिए गए आदेश के अनुसार प्रजनन अधिकार शब्द बच्चे होने या न होने तक ही सीमित नहीं है। महिलाओं के प्रजनन अधिकारों में महिलाओं के अधिकारों एवं स्वतंत्रता को भी शामिल किया गया है इन अधिकारों में यौन शिक्षा तथा गर्भनिरोधक एवं यौन स्वास्थय के बारे में जानकारी का अधिकार, सुरक्षित तथा कानूनी गर्भपात चुनने का अधिकार और प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल का अधिकार शामिल है।

संभवतः शीर्ष न्यायालय ने भी इसी बात को ब्यान में रखते हुए कहा कि सरकार यह सुनिश्चित करें कि सभी को प्रजनन और सुरक्षित सेक्स की जानकारी हो ताकि अनचाहा गर्भ न ठहरे इसके अलावा सार्वजनिक नीति निर्माण में भी सभी हितधारकों को महिलाओं और उनके प्रजनन अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करने तथा गंभीरता से इस विषय पर पुनविचार करने की आवश्यकता है।

क्या कहते हैं आंकड़े

स्वराष्ट्र जनसंख्या कोष की स्टेट ऑफ द वर्ल्ड पॉपुलेशन रिपोर्ट 2022 के अनुसार भारत में मातृ मृत्यु दर का तीसरा प्रमुख कारण असुरक्षित गर्भपात को बताया गया है।

असुरक्षित गर्भपात के कारण भारत में हर दिन करीब आठ महिलाओं की मौत हो जाती है।

एन एफ एच एस–5 के अनुसार भारत में होनेवाले कुछ गर्भपात में से 27% गर्भपात घर पर ही होता है।

शहरों में 21.6% गर्भपात महिलाएं गर्भपात स्वयं करवा लेती है जबकि ग्रामीण महिलाओं में ये आंकड़ा 30% है।

डब्लू एचओ और यूएन एफ पीए के आंकड़े बताते हैं कि दुनिया भर के कुल गर्भपातों में 45% असुरक्षित होते है और इन प्रक्रियायों को अपनाने वाली महिलाओं की मौत की आशंका बहुत अधिक बढ़ जाती है।

(ii) (C) क्या कहते है आंकड़े

वर्तमान में दुनिया के कुल 67 देशों में सभी महिलाओं को गर्भपात कराने की अनुमति है दुनिया के 24 देशों में अब भी माना गर्भपात को अपराध माना जाता है।

गर्भपात का अधिकार : भारतीय महिलाएँ

सुप्रीम कोर्ट ने गुरूवार को गर्म का चिकित्सकीय समापन (मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेगनेंसी यानी एमटीपी) अधिनियम के तहत विवाहित या अविवाहित सभी महिलाओं को गर्भावस्था के 24 सप्ताह तक सुरक्षित व कानूनी रूप से गर्भपात कराने का अधिकार दे दिया। कोर्ट ने कहा कि किसी महिला के वैवाहिक होने या न होने का आधार पर कोई भी पक्षपात संवैधानिक रूप से सही नहीं है। अदालत ने बलात्कार के अपराध की व्याख्या में वैवाहिक बलात्कार को भी शामिल किए जाने की वकालत की ताकि (एमटीपी) अधिनियम का मकसद पूरा हो, जस्टिस डी वाइ चंद्रचूड़, जस्टिस पारदीवाला और जस्टिस एएस बोपन्ना की एक पीठ ने कहा कि प्रजनन स्वासतता के नियम विवाहित या अविवाहित दोनों महिलाओं का समान अधिकार देता है।

पीठ ने कहा गर्भपात कानून के तहत विवाहित और अविवाहित महिला के बीच पक्षपात करना प्राकृतिक नहीं है। व संवैधानिक रूप से भी सही नहीं है। यह उस रूढ़िवासी सोच को कायम रखता है कि केवल विवाहित महिलाएँ ही यौन संबंध बनाती है। एमटीपी अधिनियम के प्रावधानों के तहत विवाहित महिला को गर्भावस्था के 24 सप्ताह तक वह गर्भपात कराने की अनुमति दी गई है, बलात्कार की पिड़िता दिव्यांग और नाबालिग लड़की को विशेष श्रेणी में गर्भपात कराने की अनुमति दी जाती है। वहीं कानून के तहत अविवाहित या विधवा गर्भावस्था के 20 सप्ताह तक से संबंध बनाए है या बनाए थे। पीठ ने 23 अगस्त को एमटीपी अधिनियम के प्रावधानों की व्याख्या पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। जिसमें विवाहित व अविवाहित महिलाओं के गर्भपात कराने को लेकर अलग–अलग प्रावधान है।

लिंग चयन प्रतिबंध अधिनियम –

केंद्र की ओर से शीर्ष अदालत में पेश हुई अतिरिक्त सौलीसिटर जनरल एश्वर्या भाटी ने कहा कि गर्भपात पर विशेषज्ञों के राय अलग है। उनके अनुसार इसे विभिन्न श्रेणियों में इसलिए बांटा गया है ताकि गर्भधारण पूर्व और प्रसवपूर्ण निदान तकनीक (लिंग चयन प्रतिबंध) अधिनियम (पी सी– पी एन डी टी) जैसे कानून का दुरूपयोग न हो।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश –

अदालत ने कहा कि हम एक बात स्पष्ट करना चाहेगें जिससे पी सी पी एन डी टी एक्ट के प्रावधान प्रभावित न हो। शीर्ष अदालत ने पाया कि एम टी पी अधिनियम के प्रावधानों में बदलाव की जरूरत है।

भारत के कानून : गर्भावस्था के संदर्भ में

गर्भावस्था के चरण	एम टी पी संशोधन कानून 2021
i) 20 हफ्ते तक	i) एक डॉक्टर की सलाह से
ii) 20–24 हफ्ते तक	ii) कुछ श्रेणियों की महिलाओं को दो डॉक्टरों की सलाह से
iii) 24 हफ्ते से अधिक	iii) भ्रूण के अत्यधिक विकृत होने पर मेडिकल बोर्ड की सलाह से
iv) गर्भावस्था के दौरान	iv) गर्भवती की जिंदगी बचाने के लिए तत्काल ऐसा करना जरूरी हो तो एक डॉक्टर की सलाह पर

दुनिया के 185 देशों में से 77 देशों में वैवाहिक दुष्कर्म को अपराध घोषित करने को लेकर स्पष्ट कानून है। 1932 में पौलैंड ने माना था वैवाहिक दुष्कर्म को अपराध सुप्रीम कोर्ट ने गुरूवार को बलात्कार के अपराध की व्याख्या में वैवाहिक बलात्कार को भी शामिल करने की वकालत की है सं0 राष्ट्र की प्रोग्रेस ऑफ वर्ल्ड वुमेन रिपोर्ट के मुताबिक 2018 तक दुनिया के 185 देशों में सिर्फ 77 देश ऐसे थे जहां वैवाहिक दुष्कर्म को अपराध–घोषित करने को लेकर स्पष्ट कानून है बाकि 108 देशों में से 74 ऐसे है, जहां महिलाओं के लिए अपने पति के खिलाफ रेप के लिए आपराधिक शिकायत दर्ज करने के प्रावधान है वहीं 34 देश ऐसे है जहां न तो वैवाहिक दुष्कर्म अपराध है और न ही महिला अपने पति के खिलाफ दुष्कर्म के लिए अपराधिक शिकायत दर्ज कर सकती है। पौलैंड में वैवाहिक दुष्कर्म के खिलाफ कानून आया। 1970 तक स्वीडेन, नार्वे, डेनमार्क, नार्वे, डेनमार्क, सोवियत संघ, चकोस्लोवाकिया जैसे देशों ने भी इसे अपराध घोषित कर दिया 1976 में आस्ट्रेलिया और 80 के दशक में दक्षिण अफ्रीका आयरलैंड, कनाडा अमेरिका, न्यूजीलैंड, मलेशिया, घानाऔर इस्त्राइल में भी इस लिस्ट में शामिल हो गए, दुनिया के 12 देशों में इस तरह के प्रावधान है जिसमें बलात्कार का अपराधी अगर महिला से शादी कर लेता है तो उसे आरोपों से बरी कर दिया जाता है। यूएन इसे बेहद भेदभावपूर्ण और मानवाधिकारों के खिलाफ मानता है। संयुक्त राष्ट्र 2019 ममें ही दुनियाभर के देशों से वैवाहिक दुष्कर्म पर सख्त कानून बनाने की अपील कर चुका है।

यूरोप में गर्भपात आसान –

यूरोप के ज्यादातर देशों में गर्भधारण के 12–14 हफ्ते तक गर्भपात की अनुमति है। हालांकि कई देशों में अलग अलग तरह की अपवाद की स्थिति में तय सीमा के बाद भी गर्भपात की अनुमति मिलती है। जैसे – ब्रिटेन में भ्रूण विकृत होने की स्थिति में जन्म से पहले कभी भी गर्भपात की इजाजत है।

<u>दुनिया के 24 देशों में गर्भपात कराना गैर कानूनी</u>

सेंटर फॉर रिप्रोडक्टिव राइट्स के मुताबिक दुनिया के 24 देशों में गर्भपात कराना गैरकानूनी है। इसमें सेनेगल मॉरिटोनिया, मिश्र, लाओस, फिलीपिंस अल सल्वाजेर पोलैंड और माल्टा जैसे देश देश हैं। करीब 50 देश ऐसे हैं जहाँ कई सख्त शर्तों के साथ गर्भपात की अनुमति है। लीनिया, इंडोनेशिया, ईरान बेनेजुएला, नाईजीरीया, जैसे देश गर्भवती महिला के स्वास्थ्य को खतरा होने पर गर्भपात की अनुमति देते हैं। कई देश ऐसे हैं जहाँ दुष्कर्म अनाचार, या भ्रूण के विकृत होने की स्थिति में गर्भपात की अनुमति देता है।

सृजन दुनिया की सबसे शक्तिशाली चीज है। इसे प्राप्तकर्त्ता बेहद कम है जिसमें एक है महिला। हाल में USA के सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला दिया है जिसमें 1973 के गर्भपात के निर्णय को रद्द कर दिया गया है। जिसके कारण यह मुद्दा पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बन गया है। जिसमें महिलाओं को एक संवैधानिक अधिकार मिले थे उसे रद्द कर दिया गया है जिसके कारण यह मुद्दा दुनिया भर में चर्चा का विषस बना है।

<u>खबर – द हिन्दू</u>

Explained - What are India's laws on abortions?

<u>भारत में गर्भपात कानून की पृष्ठभूमि –</u>

1) 1960 के दशक में बड़ी संख्या में प्रेरित गर्भपात
2) केंद्र सरकार ने देश में गर्भपात के वैधीकरण पर विचार–विमर्श करने के लिए शांतिलाल शाह समिति के गठन का आदेश।
3) असुरक्षित गर्भपात के कादरण मातृ मृत्यु दर को कम करने के लिए 1971 के लिए 1971 में मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी (MTP) अधिनियम लागू किया।
4) I.P.C. की धारा 312 के तहत एक व्यक्ति जो स्वेच्छा से एक महिला का गर्भपात करवाता है सजा का प्रावधान (3 साल की सजा, जेल या जुर्माना)
   a)जिसमें 3 साल की जेल की सजा या जुर्माना या दोनों
   b)अपवाद – जहाँ उद्देश्य महिला के जीवन को बचाना हों
   c) यह धारा भार में बिना शर्त गर्भपात को अवैध बनाती है।
5) I.P.C. की धारा 313 एक व्यक्ति जो गर्भवती महिला को सहमति के बिना गर्भपात करवाता है सजा का प्रावधान

a) गर्भावस्था के उन्नत चरणों में हो या नहीं

b) सजा आजीवन कारावास या 10 साल तक की जेल या इसके साथ जुर्माने से दंडित।

गर्भपात कानून में संशोधन

- ❖ एम टी वी अधिनियम 1971 में कुछ संशोधन
- ❖ इससे पहले 2003 में एक नए नियमावेश
- ❖ इसमें तत्कालीन नई खोजी गई गर्भपात दवा मिसो प्रोस्टोल के उपयोग की अनुमति दी गई थी।

जिसमें इसमें 7 सप्ताह तक गर्भावस्था को चिकित्सकीय रूप से समाप्त किया जा सके।

6) मूल अधिनियम में व्यापक संशोधन 2020 में पेश किए गए और संशोधित अधिनियम सितंबर 2021 में लागू हुआ।

मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी एक्ट (2021)

- ❖ गर्भावस्था की समाप्ति की अनुमति दी जाती है अगर–
  - a) गर्भावस्था को जारी रखने से गर्भवति महिला के जीवन को खतरा हो।
  - b) गर्भनिरोधक की विफलता का परिणाम है।
  - c) यदि गर्भावस्था बलात्कार का परिणाम है।
- ❖ 20 सप्ताह तक के गर्भ की समाप्ति : एक पंजीकृत चिकित्सक
- ❖ भ्रूण से संबंधित गंभीर असामान्यता के मामले में 24 सप्ताह के बाद गर्भ की समाप्ति के लिए राज्य स्तरीय मेडिकल बोर्ड की राय लेना आवश्यक होगा। यह रिपोर्ट 3 दिन के भीतर राय या मशवरा दे सकता है।
- ❖ इन शर्तों के तहत दो पंजीकृत चिकित्सकों की राय के बाद गर्भकालीन आयु के 24 सप्ताह तक गर्भावस्था को समाप्त किया जा सकता है।
- ❖ यदि महिला या तो यौन हमले या बलात्कार पीड़ित हो : नाबालिग
- ❖ यदि गर्भावस्था के दौरान उसकी वैवाहिक स्थिति बदल गई है। (विधवा या तलाक)
- ❖ बड़ी शारीरिक अक्षमता या मानसिक रूप से बीमार भ्रूण में विसंगति
- ❖ यदि महिला आपदा या सरकार द्वारा घोषित आपातकालीन स्थितियों में हो।

भारतीय समाज में इन मुद्दों पर व्याप्त चुप्पी सही नहीं–

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने फैसले में यह माना है कि प्रजनन की स्वायत्तता और शारीरिक स्वायत्तता में बेहद करीबी रिश्ता है। जहाँ बहुत सारे भारतीय समाज में कुछ शब्दों जैसे सेक्स, कंडोम, संभोग आदि को टैबू माना जाता है। वहाँ गर्भपात के अधिकार का मामला स्वागत योग्य है। आज भी भारतीय समाज में इन बातों पर चुपी व्याप्त है। ऐसी स्थिति में अधिकचरे ज्ञान के साथ किया गया असुरक्षित सेक्स और उसके परिणामस्वरूप ठहरे गर्भ का गर्भपात दोनों ही खतरनाक हो सकता है। गर्भपात से एक लड़की के शरीर को क्या नुकसान है तो वैसी स्थिति में इस कानून के दुरूपयोग की संभावना बढ़ जाती है।

सर्वोच्च न्यायालय का यह निर्णय व्यवहारिक धरातल पर उतरे इसके लिए संबंधित अन्य पक्षों पर भी ध्यान देने तथा लोगों को इस बारे में अधिकाधिक जागरूक करने की जरूरत है।

निष्कर्ष

स्कूलों में यौन शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिए। सामाजिक रूप से टैबू विषयों पर भी अब संवाद की शुरूआत होनी चाहिए ताकि झिझक टूटे केवल तभी हम इस कानून के वास्तविक उद्देश्यों को पूरा करने में सफल हो सकते।

गर्भपात के संदर्भ में बोधगम्यता के अधीन का विश्लेषण से स्पष्ट है कि शत–प्रतिशत कार्यरत महिलाएं गर्भपात से अवगत है गर्भपात की अवधारणा के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सबसे अधिक 49.4% कार्यरत महिलाओं के लिस्ट में गर्व का शुद्ध बदन ही गर्भपात है43.4% कार्यरत महिलाओं के अनुसार सदन गर्भपात शरीर अधिक कमजोर होने के कारण होता है गर्भपात के कारण विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक 27.6% महिलाओं के अनुसार गरबा कनेक्शन गर्भधारण के कारण होता है जबकि 26.4% कार्यरत महिलाओं के अनुसार गर्भपात उक्त सभी लापरवाही अज्ञानता भावी विकलांगता अनैच्छिक गर्भधारण और शारीरिक कमजोरी के कारणों के गर्भपात उपरोक्त सभी कारणों से होता है इसका अध्ययन –नरपत एक सामाजिक समस्या के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक हेतु 2 पॉइंट सिक्स परसेंट कार्यरत महिलाओं के अनुसार गर्भपात एक सामाजिक समस्याएं गर्भपात के लिए समाज में जिम्मेदार वर्ग के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 47.8% कार्यरत महिलाएं गर्भपात के लिए समाज के महिला और पुरुष दोनों घर को समान रूप से जिम्मेदार मानती हैं घर पर सर्वाधिक प्रभावित होने वाला वर्ग के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 93.4% कार्यरत महिलाओं के अनुसार गर्भपात का सबसे अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है के कारण स्त्रियों पर पड़ने वाले प्रभाव का विवरण के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सर्वाधिक पॉइंट महिलाओं के अनुसार स्त्रियों प्रभाव पड़ने की संभावना है वहीं 2.2% महिलाओं की सामाजिक स्थिति में होने की संभावना है का विवरण के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक महिलाओं के अनुसार रहा है महिलाओं के अनुसार जागरूकता का अभाव और लापरवाही के कारण है जिसके कारण प्रभावित हो रहा है भविष्य में प्रभाव पड़ने की संभावना के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक महिलाओं के अनुसार भविष्य में प्रभाव पड़ने की संभावना हैगर्भपात के समाधान में महिलाओं की भूमिका उनके विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 49.8% कार्यरत महिलाओं के अनुसार

गर्भपात के समाधान में महिलाओं की मुख्य भूमिका होनी चाहिए कामकाजी महिलाओं को अधिक गर्भपात होने संबंधी विवरण के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 38.4% कामकाजी महिलाओं के अनुसार कामकाजी महिलाओं को अधिक नहीं होता कामकाजी महिलाओं के अधिक से अधिक भूमिका निभा रही है।गर्भवती महिला के जीवन के लिए खतरनाक गर्भावस्था की स्थिति में गर्भपात कराने की वैधता के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक शिक्षित सिक्स पॉइंट 0% महिलाओं के अनुसार यदि गर्भावस्था को जारी रखना गर्भवती महिला की जीवन के लिए खतरनाक हो तो गर्भपात वैध है।

शब्दार्थ :–

- गर्भपात – गर्भावस्था की समाप्ति
- एमपीटी – मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेगनेंसी

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1) प्रभात खबर, रविवार, 09.10.2022
2) खबर – द हिन्दू
3) डब्लूडब्लूडब्लू.दृष्टिआएएस.कॉम
4) शैलेंद्र पांथरी एवं अमरेंद्र प्रताप सिंह, आधुनिक भारत का सामाजिक इतिहास, पृष्ठ–232
5) जॉन ब्राउन, इंडियन इन्फैन्टीसाइट, 1857 पृष्ठ'8–9 पॉलिटिक्ल डिपार्टमेंट, बाम्बे स्टेट वॉल्यूम–62 1954, पृष्ठ 67–8–9 वॅल्यूम–77, 1870, पृष्ठ–45
6) शैलेंद्र पांथरी एवं अमरेंद्र प्रताप सिंह, आधुनिक भारत का इतिहास 2000, पृष्ठ–230
7) मेरी फ्रांसिस लेलिंगटन वूमन इन इंडिया वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, 1962, पृष्ठ–339
8) एस0 पांथरी एवं अमरेंद्र प्रताप सिं, आधुनिक भारत का इतिहास, 2000, पृष्ठ–230
9) एब्बे जो दुबोवा, हिन्दू मैनर्स, कस्टम्स एवं सेरेमनीज, हैनरी व्यूकैम्प (अनुवादक), 1973, पृष्ठ–26–27
10) "गर्भपात एवं भ्रुण हत्या के प्रति कार्यरत महिलाओं के दृष्टिकोण का एक अध्ययन'', नवीन कुमार विश्वकर्मा, सोशल साइंस, जनरल स्टडीज, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ

डॉ0 रेणुका पोद्दार
राजनीति विज्ञान विभाग
आरकेडीएफ युनिवर्सिटी
रांची, झारखण्ड।
Email Id- drrenukapoddar@gmail.com

9

आपका बंटी में शकुन की नियति

स्निग्ध सिंह

सारांश

हिन्दी साहित्य की मूर्धन्य लेखिका मन्नू भण्डारी जी ने अपनी लेखनी से साहित्य जगत को एक अलग पहचान दी। इन्होंने श्गागर में सागर भरने का कार्य किया अर्थात् इनकी रचनाएं तो कम हैं पर जो भी हैं वह पाठकों के मन पर अमिट छाप छोड़ जाती है। वैसे तो कोई भी वर्ग इनकी लेखनी से अछूता न रहा पर इन्होंने मुख्य रूप से स्त्री को ही अपनी लेखनी का आधार बनाया। अगर इन्हें स्त्री के मन का कलमकार कहा जाए तो यह अतिश्योक्ति न होगी।

इनकी हर रचना का अपना एक महत्व है पर इनकी विमल कीर्ति का आधार रहा आपका बंटी उपन्यास। इस उपन्यास की सफलता के साथ –साथ इसकी प्रासंगिकता बढ़ती ही जा रही है। सामान्यतः यह उपन्यास बाल मनोविज्ञान पर आधारित है, पर इसे पढ़ने के उपरांत यह बताना मुश्किल हो जाता है कि यह बालक बंटी की कहानी है या उसकी माँ शकुन की क्योंकि दोनों की त्रासदी इस प्रकार से जुड़ी हुई है की एक की पीड़ा दूसरे की वेदना बन जाती है ।

इस उपन्यास की खासियत यह भी है कि शकुन के दर्द, पीड़ा, करुणा, अकेलेपन आदि को कहीं भी प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित नहीं किया गया है, बालक बंटी के माध्यम से उसका जीवंत चित्रण हुआ है, जिससे यह और भी रोचक हो जाता है। यह पूरा उपन्यास शकुन और उसके बच्चे बंटी के इर्द –गिर्द घूमता है। इस उपन्यास के शुरुआत में ही हम शकुन के अंदर जो असुरक्षा की भावना है उससे परिचित हो जाते हैं । शकुन बंटी को ऐसे–ऐसे राजकुमारों की कथा सुनाती है जो अपनी माँ के लिए कुछ भी कर गुजरते हैं। वह बंटी से कहती है कि –

अच्छा, बता तू मेरे लिए इतना सब करेगा बड़ा होकर या कि निकाल बाहर करेगा। हटाओ बुढ़िया को, बोर करती है। ————————————1 (पृ. सं –14)

शकुन का रह–रहकर छत पर देखना, उसके अतीत को न भूल पाने के दर्द को प्रदर्शित करता है। आखिर क्यों स्त्री–पुरुष के सम्बन्ध–विच्छेद के उपरांत स्त्री अपने अतीत को भुला नहीं पाती और पुरुष अपने भविष्य का निर्माण करता है ? जब बंटी शकुन की ठोड़ी के तिल पर धीरे–धीरे उँगली फिराता है तब भी शकुन चौंक जाती है फिर एक गहरी साँस छोड़कर छत की ओर देखने लगती है। यह इस ओर इंगित करता है कि स्त्री अपने अतीत को हर पल, हर दिन, हर घंटे, हर मिनट, हर सेकंड याद करती है .....उससे उबर नहीं पाती।

बंटी के प्रति उसकी जो भी जिम्मेदारियाँ हैं वह उन्हें बखूबी निभाती है और उन जिम्मेदारियों के बीच भी वह खुद को नहीं भूलती। अपने आत्मसम्मान, आकांक्षाओं और सपनों को वह सर्वोपरि रखती है। शकुन का अपने पति अजय के साथ सम्बन्ध–विच्छेद का कारण उसका सामाजिक रूप से अधिक प्रतिष्ठित होना और उच्च पद पर होना है। ये बातें कहीं न कहीं अजय के पौरूष को ठेस पहुंचाती हैं और उसकी परिणति सम्बन्ध विच्छेद से होती है।

अगर हम अजय का शकुन के साथ वैवाहिक सम्बन्ध को, अजय की दूसरी पत्नी मीरा के साथ तुलना करें तो हम पातें है कि अजय का दूसरा विवाह खूब अच्छा चल रहा होता है इसका कारण मीरा का अजय पर निर्भर होना है। पितृसत्तात्मक सोच एक स्त्री का आत्मनिर्भर होना बर्दाश्त नहीं कर पाता। शकुन अपनी जिंदगी में गति या उथल–पुथल लाने के लिए अपने को कॉलेज की समस्याओं में उलझाए रखती है, पर जब छुट्टियाँ आती है तो वह खुद को अकेला व जीवन को अर्थहीन व नीरस समझने लगती है। वैसे तो वह खुद को बंटी में उलझाए रखना चाहती है पर इसमें भी असफल रहती है।

पहले तो उसे लगता था की बंटी ही उसे और अजय को जोड़ देगा..... ..... फिर से उसकी जिंदगी संभल जाएगी, पर ऐसा कुछ न हुआ। आखिर क्यों स्त्री अपने अतीत को भुला नहीं पाती, वर्तमान में जी नहीं पाती ?

उसकी मानसिक यंत्रणा इतनी गहरी हो जाती है कि वह चाह कर भी उसे कम नहीं कर पाती। उसका और अजय का वैवाहिक सम्बन्ध दस वर्ष का था जो अब मृतप्राय, कष्टप्राय व निष्प्राण हो गया था। उनका सम्बन्ध घुटन बन कर रह गया था, जिससे आजाद होने के लिए दोनों छटपटा रहे थे।

अजय से अलग होने के बाद भी शकुन आजाद नहीं हुई, वह अब भी कहीं गहरे अवसाद से जूझ रही थी। उसने जीवन में जो भी चाहा वह आत्मसंतुष्टि की जगह अजय को नीचा दिखाने वाला अधिक था। उसका डॉ. जोशी से विवाह करना भी कहीं– न–कहीं अजय को अप्रत्यक्ष रूप से जवाब देना ही था। वह यह दिखाना चाह रही थी कि अगर अजय अपनी जिंदगी में आगे बढ़ सकता है, अपने दूसरे विवाह को पहले विवाह से अधिक सफल बना सकता है तो वह क्यों नहीं? शकुन का अजय से प्रतिस्पर्धा का यह भाव उसे स्वयं से दूर कर एक प्रतिस्पर्धी के रूप में आधिक प्रतिष्ठित करता है। वह अपनी खुशियों को भूल जाती है, उसका हर कदम अजय को नीचा दिखाने वाला होता है। यह इस कथन से सिद्ध होता है कि–

सामनेवाले को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा उसने उसे खुदही पराजित कर दियाष ————————————————2 (पृ.सं–37)

शकुन का अपने बेटे बंटी के साथ अधिक समय बिताना वकील चाचा को बुरा लगता है। वकील चाचा जोकि अजय के मित्र हैं। उन्हें लगता है की अगर बंटी शकुन के साथ आधिक समय बिताएगा तो उसमें स्त्रीयोंचित गुण आ जाएंगे। वे कहते हैं ———

स्निग्ध सिंह (Snigdha Singh)
विश्वविद्यालय रमा देवी महिला विश्वविद्यालय,
भुवनेश्वर
पता– 7RRR+PQV]BhoinagarP-O-]
Bhubaneswar Odisha– Anwesha
Hostel PIN CODE&751022
Mobileno-– 7439481553, 8902094189

जरा सोचो, स्कूल के अलावा बंटी सारे दिन तुम्हारे साथ रहता है या तुम्हारी उस फूफी के साथ। तुम्हारे यहाँ अधिकतर महिलाएँ ही आती होंगी

————————————3 (पृ.सं –40)

वकील चाचा उस पितृसत्तात्मक समाज के वाहक हैं जो गुण के आधार पर भी लड़के और लड़की में भेद करते हैं और यह सोचते हैं की लड़के में लड़कियों के गुण नहीं आने चाहिये। यह कथन उस सोच को भी दर्शाता है की अकेली स्त्री एक बच्चे का पालन– पोषण केरने में सक्षम नहीं है।

शकुन का डॉ. जोशी के साथ नए जीवन की शुरुआत करने का भाव ही उसमें नई ऊर्जा का संचार कर देता है। वह कहीं–न–कहीं खुद को अंदर से भरी हुई व अकेलेपन से रहित समझने लगती है। उसे लगने लगता है कि उसकी जीवन रूपी गाड़ी फिर से पटरी पर लौट आएगी। शकुन के अंदर भी कहीं न कहीं स्त्री की सहज इच्छाएं होती हैं जिन्हें वह दबाए रखना चाहती है पर अजय से सम्बन्ध विच्छेद के उपरांत वह कहीं न कहीं खुद को आजाद महसूस करने लगती है। अब वह खुद को केंद्र में रखना चाहती है, खुद की इच्छाएं, आकांक्षाएं पूरी करना चाहती है, खुद के लिए जीना चाहती है।

डॉ. जोशी के साथ विवाह करने के उपरांत शकुन जिस प्रकार डॉ. जोशी की पहली पत्नी के बच्चों अमि व जोत को अपना लेती है, उस प्रकार डॉ. जोशी बंटी को नहीं अपना पाते। इससे लगता है की जिस प्रकार स्त्री किसी भी परिस्थिति में खुद को ढाल लेती है उस प्रकार पुरुष नहीं।

निष्कर्ष:

इस उपन्यास में शकुन की नियति यही होती है कि वह सामाजिक रूप में तो जीवन में आगे बढ़ जाती है पर मानसिक रूप से वह आज भी अपने अतीत से जकड़ी हुई होती है। उसका बंटी उससे दूर हो जाता है, एक माँ के लिए इससे बड़ी सजा कोई नहीं हो सकती। वह जीत कर भी हार जाती है। अपने जीवन में का चरित्र कहीं–न–कहीं पाठकों को बहुत प्रभावित करता है। आज की नारी किस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रही है इसका जीवंत चित्रण मन्नू भण्डारी जी ने शकुन के माध्यम से किया है। जिन समस्याओं का चित्रण मन्नू जी ने इस उपन्यास में किया है उन समस्याओं से स्त्रियां जूझ रहीं हैं और इस उपन्यास की भी यही त्रासदी है की इसका अंत भी समस्या के समाधान से नहीं होता।

संदर्भ सूची –

1. मन्नू भण्डारी,आपका बंटी, राधाकृष्ण पेपरबैक्स,1970, पृ.सं –14
2. वही, पृ.सं–37
3. वही, पृ.सं –40
4. हंस पत्रिका– स्मृति विशेष मन्नू भण्डारी, जनवरी 2022, पृ०सं– 55

10

विदेश नीति के संकल्पनात्मक और तात्विक मूलाधार

प्रताप सिंह, डॉ0 वेदपाल सिंह

प्रस्तावना–

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के आयाम सदैव गतिशील, जटिल और परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक राष्ट्र की विदेश नीति के निर्धारण एवं मुख्य रूप से उसके संचालन के लिए अत्यन्त चुनौतीपूर्ण रहे है। किसी भी देश की विदेश नीति अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के संदर्भ में उस देश की आन्तरिक आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति होती है। विदेश नीति की संरचना एवं उसके क्रियान्वयन के पीछे उस देश का इतिहास भौगोलिक परिस्थितियाँ, आर्थिक–सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक–दार्शनिक एवं वैचारिक पष्ठभूमि, सैन्य क्षमतायें तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास की समस्त शक्तियों का मंथन विद्यमान रहता है। वर्तमान विश्व का आर्थिक परिप्रेक्ष्य भी आमूल रूप में बदल रहा है और विश्व तथा क्षेत्रीय स्तरों के सामरिक समीकरणों के साथ साथ देशों की आन्तरिक व्यवस्थाये, उनके राजनीतिक व सामाजिक मूल्य व मान्यतायें एवं नैतिक मापदंड भी प्रभावित हो रहे है। ऐसे परिवेश में किसी भी देश की विदेश नीति का नियोजन एवं निर्धारण निश्चय ही चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि विदेश नीति का मूल उद्देश्य संबद्ध राश्ट्रीय हितों की रक्षा और उनकी अभिवृद्धि में ही मुख्यतः निहित रहता है।

किसी राष्ट्र का अन्तर्राष्ट्रीय आचरण और उसकी विदेश नीति बहुत कुछ तत्कानील अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति अर्थात विश्व राजनीति के बदलते स्वरूप और उस परिप्रेक्ष्य में देश की भौगोलिक स्थिति के सापेक्षिक महत्व पर निर्भर है। अतः किसी देश की विदेश नीति तत्कालीन वैज्ञानिक तकनीक के संदर्भ में देश की भौगोलिक स्थिति में निहित लाभ और हानि तथा समकालीन विश्व में प्रमुख शक्ति पुंजों के क्षितिज वितरण प्रारूप का सम्मिलित प्रभाव है। इसलिए देशों की विदेश नीतियों में एक प्रकार की निरन्तरता प्रतीत होती है। यह निरन्तरता युग सापेक्ष एवं दीर्घकालिक है, शाश्वत नही। उदाहराणार्थ 1945 के पूर्व संयुक्त राज्य अमरीका अन्तर्राष्ट्रीय हलचलों से दूर रहते हुए एक तटस्थ दर्शक की भांति अपने का पश्चिमी गोलार्द्ध की राजनीति तक ही सीमित किए रहा था। परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् ब्रिटन की अन्तर्राष्ट्रीय वर्चस्व की समाप्ति के साथ ही संयुक्त राज्य अन्तर्राष्ट्रीय विशयों में पूँजीवादी उदारवादी देशों का नेता तथा विश्व राजनीति का प्रमुख ध्रुव बन गया।

भू राजनीतिक आचार संहिता अंतरराष्ट्रीय संबंधों के स्थानीय क्षेत्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय तीनों स्तरों पर ही परिलक्षित होती है। स्थानीय स्तर पर भारत की तटस्थता मूलक आचार संहिता मूलतः विश्व के सभी देशों के राजनयिको को समान रूप से सम्मान देने तथा किसी भी देश के विरुद्ध राजनीतिक विद्रोह को प्रोत्साहन न देने की नीति में दिखाई पड़ती है। क्षेत्रीय स्तर पर भारत की विदेश नीति का उद्देश्य दक्षिण एशिया में पड़ोसी देशों से मैत्री संबंध बनाए रखने तथा इस पूरे क्षेत्र को विश्व स्तरीय द्विध्रुवीय शक्ति परीक्षण की होड़ से बाहर रखना था। इस प्रयास में भारत को पर्याप्त सफलता मिली परंतु संयुक्त राज्य द्वारा पाकिस्तान को दी जाने वाली व्यापक सैन्य सहायता के फलस्वरूप भारत की सफलता अधूरी रह गई। क्योंकि पाकिस्तान प्राप्त सैन्य सहायता का उपयोग भारत के विरुद्ध करने लगा। यह बात पाकिस्तान द्वारा भारत पर किए गए अनेक प्रत्यक्ष और परोक्ष हमलों से भली प्रकार स्पष्ट है। 1971 में बांग्लादेश की मुक्ति के बाद स्थिति में गुणात्मक सुधार आया परंतु 1989 के बाद भारत में राजनीतिक अस्थिरता के वातावरण और श्री नरसिंह राव के प्रधानमंत्रित्व में शिथिल केंद्रीय नेतृत्व के कारण देश की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में द्रुतगति से गिरावट आई। साथ ही पंजाब और कश्मीर में बढ़ते हुए आतंकवाद के कारण स्थिति उत्तरोत्तर खराब होती गई। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की बात का वजन कम हो गया। इससे पाकिस्तान के नापाक इरादों को और प्रोत्साहन मिला। 1998 के आर्थिक परीक्षण तथा केंद्र सरकार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक और आर्थिक माफिया शक्तियों के दबाव में न आने का निर्णय इस स्थिति को और बिगड़ने से रोकने में सहायक हुआ है। श्री अटल बिहारी वाजपेई की सरकार के द्वारा पर्याप्त बहुमत से सत्ता में आ जाने के कारण अंतरराष्ट्रीय समुदाय में भारत की आवाज पुनः सुनी जाने लगी है। भारत की क्षेत्रीय स्तर की राजनीतिक संहिता के विकास में दक्षिण एशिया सहयोग संगठन एक शुभ कदम है। इसमें पाकिस्तान सहित अथवा पाकिस्तान के बिना पूरे दक्षिण एशिया को एक सशक्त आर्थिक–संस्कृतिक समुदाय का रूप देने की संभावना है।

हमारी तटस्थता मूलक विदेश नीति का एक प्रमुख कारक हमारा योग यंत्र से चला आ रहा अहिंसा तथा वसुधैव कुटुंबकम का जीवन दर्शन था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में आए पुनर्जागरण के यह दोनों आदर्श मुख्य सदस्य थे। अहिंसा के सिद्धांत के अनुसार मानव व्यवहार में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। अतः विभिन्न समुदाय अथवा विभिन्न राष्ट्रीय राजनीतिक इकाइयों के बीच आपसी व्यवहार तथा अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान परस्पर वार्ता से निकालना आवश्यक है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत में अपनी भूमिका इसी मान्यता के अनुरूप निर्धारित की। वसुधैव कुटुंबकम का जीवन दर्शन अहिंसा के दर्शन का परिपूरक था। इसके अनुसार पृथ्वी पर निवास

करने वाले सभी प्राणी एक ही विधाता की कृति तथा एक ही परिवार के अंग हैं। उनमें आपसी सद्भाव आवश्यक है। इस दर्शन की मूलभूत मान्यता है कि विश्व में कोई व्यक्ति ना हो तो शत–प्रतिशत अच्छा है न ही शत प्रतिशत बुरा। अर्थात दोषपूर्ण तथा समुदायों के बीच आपसी द्वेश मूलतया दूसरे पक्ष की अच्छाइयों तथा अपनी बुराइयों को अनदेखी करने से उत्पन्न होते हैं। इस विश्वास के अनुसार यदि कोई तीसरा व्यक्ति संबंध समुदायों को प्रतिपक्ष के दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का प्रयास करें तो समस्याओं का समाधान आपसी मेल मिलाप से निकल सकता है स्वतंत्र भारत के राजनीतिक नेतृत्व के आधार पर अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान प्राप्त करना संभव लगा। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत नें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने लिए यही भूमिका निश्चित की इस सोच के अंतर्गत भारत सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका के विचारों में मिलान बिंदु खोजने तथा उन्हें परस्पर वार्तालाप के लिए प्रेरित करने का प्रयास करता रहा।

भौतिक स्तर पर स्वतंत्र भारत की तटस्थता की विदेश नीति हमारी आर्थिक और तकनीकी आवश्यकताओं से प्रेरित थी। ब्रिटिश शासन के अंतिम चरण में भारत में औद्योगीकरण की नींव पड़ चुकी थी। परंतु सही अर्थों में यह केवल प्रतीकात्मक आरंभ था। आर्थिक जीवन के सभी क्षेत्रों में देश विकसित था तथा तैयार औद्योगिक उत्पादों के लिए विदेशी आयात पर निर्भर था। देश की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के विकास के लिए उसे विकसित देशों से हर संभव सहायता तथा तकनीकी ज्ञान और सहयोग की आवश्यकता थी। अतः सभी देशों से मैत्री संबंध बनाए रखना हमारे राष्ट्रीय हित में था। लंबे समय तक परतंत्र रही जनता सब कुछ द्रुतगति से परिवर्तित होने तथा पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना के सपने देख रही थी। विश्व राजनीति के दोनों ध्रुवों से समान दूरी बनाए रखने का निर्णय दोनों ही गुटों से आवश्यक सहायता और सहयोग प्राप्त करने का भी तरीका था। इसके माध्यम से देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति तीव्रता से की जा सकती थी। एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह थी कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में जवाहरलाल नेहरू का स्थान शीर्षक राजनीतिज्ञों में था। अतः स्वाभाविक था कि दो प्रमुख गुट में से किसी एक का सदस्य बनने पर अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत और भारत के प्रधानमंत्री की भूमिका गौड़ हो जाती है। जो कि जवाहरलाल नेहरू के अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा के अनुरूप ना होने के कारण उन्हें स्वीकार्य नहीं था। अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक मंच पर नेहरू अपने लिए निश्चय ही महत्वपूर्ण भूमिका के थे, और विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र के कर्णधार होने के नाते वे इसके हकदार भी थे। सदस्यता की विदेश नीति उनके इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक थी। 1950 के दशक में स्वतंत्र हुए अनेक राष्ट्रीय इकाइयों के लिए नेहरू एक परिचित नाम था। साथ ही वह इस समूह के राज्यों के स्वाभाविक नेता भी थें। इन राज्यों के स्वतंत्रता संग्राम में नेहरू तथा महात्मा गांधी से प्राप्त प्रेरणा की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। भारत की ही भांति ये राज्य भी अपने को विश्व स्तरीय राजनीति विग्रह से अलग रखकर अपने अपने देश की आर्थिक सामाजिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी समस्याओं को प्रेषित करने के लिए एक प्रभावपूर्ण नेता की खोज में थे। इन कारणों से जवाहरलाल नेहरू को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक राष्ट्र के निर्माण में सहायता मिली।

भारत प्रारंभ से ही विकासशील देशों के एक सम्मिलित मंच के निर्माण का पक्षधर था जिससे कि विश्व के देशों के बीच परस्पर सहयोग द्वारा सहअस्तित्व के मंत्र को अधिक सशक्त आवाज मिल सके। 1949 में इसी उद्देश्य से इंडोनेशिया में हालैंण्ड की सरकार की दमनकारी साम्राज्यवादी नीतियों के विरोध में विश्व के देशों का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से 15 एशियाई देशों की सभा आयोजित की गई थी। अगले ही साल संयुक्त राष्ट्र में एक अलग अफ्रीकी एशियाई संघ के निर्माण हेतु एक सभा आयोजित की गई। 1955 में 29 अफ्रीकी तथा एशियाई देशों के बाण्डुंग सम्मेलन के माध्यम से इस अभियान को व्यापक सफलता मिली। इस सभा में विकासशील देशों के अतिरिक्त संयुक्त राज्य अमेरिका के समर्थक देश जापान और फिलीपींस तथा साम्यवादी गुट के प्रतिनिधि चीन और उत्तरी वियतनाम भी शामिल थे। अतः सही अर्थों में यह सभा तटस्थों का मंच नहीं थी। परंतु तटस्थता के अभियान को इससे निश्चय ही बल मिला।

हृदय स्थल और परिधि प्रदेश के समुद्र तटीय राज्यों के बीच यह संघर्ष द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यूरोपीय महा शक्तियों की सामरिक राजनीति का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका के पास आ जाने के कारण और भी प्रखर हो गया। इस संघर्ष के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत का महत्व बहुत बढ़ गया देश की महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति के कारण सामरिक दृष्टि से भारत की भूमिका इस द्विध्रुवीय संघर्ष में निर्णायक महत्व की थी। अतः सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों ही भारत को अपने पक्ष में रखने तथा उसे अपने विरोधी पक्ष के दायरे में जाने से रोकने के इच्छुक थे। स्पष्ट है कि हृदय स्थल को तीन तरफ से घिरे हुए परिधि प्रदेश में भारत की स्थिति किसी मेहराब की चाबी जैसी है। जिसके ऊपर पूरे मेहराब का संतुलन निर्भर है भारत के विशाल क्षेत्रीय आकार के अतिरिक्त दक्षिण एशिया क्षेत्र में उसका केंद्रीय महत्व, उसकी विशाल जनसंख्या, उसको प्राप्त विकासशील देशों का नेतृत्व तथा विश्व में सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में उसे प्राप्त गौरव पर आधारित था। अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण

भारत दोनों ही ध्रुवों के साथ अपने हितों के बारे में मोलतोल करने की स्थिति में था। अपनी तटस्थ विदेश नीति के आधार पर दोनों पक्षों के साथ मैत्री भाव बनाकर वह विश्व स्तरीय चयन संघर्ष के दायरे से अलग रहकर देश के विकास पर अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से ध्यान केंद्रित कर सकता था।

भारत की भौगोलिक स्थिति का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू हिंद महासागर के संदर्भ में उसकी केंद्रीय स्थिति है। हिंद और प्रशांत महासागरों के विपरीत हिंद महासागर अपेक्षाकृत एक बंद जलाशय है। जो कि पश्चिम में अफ्रीका महाद्वीप के पूर्वी तट पूर्व में दक्षिण पूर्वी एशिया तथा ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट पर तथा उत्तर में दक्षिणी एशियाई भूखंड से घिरा है। दक्षिण में यह सागर दक्षिण ध्रुवीय प्रदेश में खुलता है। इस स्थिति के कारण हिंद महासागर का विश्व स्तरीय यातायात संबंध कुछ सुनिश्चित मार्गो द्वारा ही संभव है। यह मार्ग इस प्रकार हैं। (1) स्वेज नहर लाल सागर और भूमध्य सागर के रास्ते उत्तर अटलांटिक सागर को जाने वाला समुद्री मार्ग, (2) दजला और फरात नदियों की घाटी के रास्ते मेसोपोटामिया तथा मध्य यूरोप को जाने वाला स्थल मार्ग, (3) सिंगापुर के रास्ते सुदूर पूर्व एशिया को जाने वाला समुद्री मार्ग, (4) अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण से केप ऑफ गुड होप के रास्ते दक्षिण अटलांटिक सागर से होते हुए यूरोप को जाने वाला मार्ग, जिस रास्ते वास्कोडिगामा भारत आया था। तथा (5) ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के दक्षिणी तट से होते हुए दक्षिण हिंद महासागर को जोड़ने वाला समुद्री मार्ग हिंद महासागर के इस बंद जलाशय स्वरूप को गोवा के पुर्तगाली प्रशासक अफोंसो अल्बुकर्क ने बहुत पहले ही पहचान लिया था। तथा उसने हिंद महासागर पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए ऊपर वर्णित विभिन्न प्रवेश द्वारों के नियंत्रण की योजना बनाई थी। भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रशासन ने इसी नीति का अनुसरण करते हुए उपर्युक्त पांचों यातायात मार्गों पर नियंत्रण प्राप्त करके हिंद महासागर को ब्रिटिश जलाशय का रूप दे दिया। इस योजना में ब्रिटेन को भारतीय प्रायद्वीप के उत्तर–दक्षिण हिंद महासागर के बीचो–बीच स्थित होने के कारण बहुत सुविधा हुई। क्योंकि देश की इस स्थिति के परिणामस्वरूप भारत के लिए पश्चिम में अरब सागर तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी सहित पूरे महासागर के यातायात संचार पर नियंत्रण रखना सरल हो गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारत भूमि के राजनीतिक विभाजन के कारण भारत तथा पाकिस्तान के संबंध शत्रुतापूर्ण हो गए थे। वृहत्तर क्षेत्रीय भू राजनीतिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में यह शत्रु भाव धार्मिक आधार वाला बन सकता था क्योंकि पाकिस्तान ने अपने आपको एक मुस्लिम राज्य घोषित कर दिया था। धार्मिक विरोध पाकिस्तान की मूल राजनीतिक पहचान थी। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण पाकिस्तान दक्षिण पश्चिम एशिया के इस्लाम मतावलम्बी क्षेत्र का अभिन्न अंग बन गया था। तथा धार्मिक आधार पर वह दक्षिण पश्चिम एशिया के देशों का समर्थन प्राप्त कर सकता था। अरब–इजरायली विवाद के कारण इस पूरे क्षेत्र में धर्म देशों की राष्ट्रीय पहचान मुख्य आधार बन गया था। दूसरी ओर 1949 के बाद भारत के उत्तर में साम्यवादी शक्तियों के नेतृत्व में चीन के एक सशक्त राष्ट्रीय राजनीतिक इकाई के रूप में संगठित हो जाने के बाद भारत की राजनीतिक स्थिति में बड़ा परिवर्तन आ गया था। भू राजनीतिक अंतर्दृष्टि वाले किसी भी विचारक को यह अच्छी तरह ज्ञात था कि उपनिवेशवाद को अहिंसात्मक और लोकतांत्रिक तरीके से समाप्त करने की दिशा में उसके प्रयासों के परिणाम स्वरूप भारत को एशियाई स्तर पर जो प्रतिष्ठा और राजनीतिक नेतृत्व प्राप्त हुआ था वह दीर्घकालिक नहीं हो सकता था। क्योंकि अपने देश की आर्थिक स्थिति पर काबू पा लेने के बाद भी चीन के लिए यह नितांत स्वाभाविक था कि वह एशिया में अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने का भरसक प्रयास करें। ऐसी स्थिति में भारत के साथ चीन के टकराव की संभावना बनी हुई थी। हिंदी चीनी भाई–भाई के नारे तथा पंचशील समझौतों के बावजूद भी।

चीन के साथ संबंध बिगड़ने की स्थिति में यह स्वाभाविक था कि भविष्य में भारत को अन्य मित्र राष्ट्रों की सहायता की आवश्यकता पड़ेगी इस दृष्टि से जहां संयुक्त राज्य अमेरिका सात समंदर पार स्थिति मात्र एक साधारण मित्र जैसा दिखाई देता था। वही सोवियत रूस हमारी उत्तरी सीमा पर स्थित एक सर्वशक्ति संपन्न राश्ट्र था। जो आवश्यकता पड़ने पर हमारे काम आ सकता था। इस संदर्भ में ध्यातव्य है कि इस तथ्य के होते हुए भी रूस तथा चीन दोनों ही साम्यवादी देश थे तथा यह दोनों अंतरराष्ट्रीय साम्यवाद के नाते परस्पर जुड़े थे, परंतु प्रत्येक एक विशाल और शक्तिशाली देश था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशालता के अनुरूप अपनी भूमिका के लिए लालायित होना प्रत्येक के लिए स्वाभाविक था। ऐसी स्थिति में ऐतिहासिक दृष्टि वाले किसी भी विचारक को स्पष्ट था कि कालांतर में रूस और चीन के संबंधों में दरार आना अवश्य संभव था। दोनों में से कोई भी लंबी अवधि तक दूसरे की छत्रछाया तथा दूसरे दर्जे की स्थिति स्वीकार नहीं कर सकता था। साथ ही रूस तथा चीन के बीच हजारों मील लंबी स्थल सीमा थी। जिस पर विवाद इतना भी अवश्यंभावी था। इतिहास के मर्मज्ञ नेता जवाहरलाल नेहरू को यह बातें भली प्रकार स्पष्ट थी। अतः भारत की सोवियत रूस उन्मुख विदेश नीति में इस प्रकार के संभावित घटनाक्रम का बहुत बड़ा योगदान था। यदि हम इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को दी गई सैन्य सहायता के प्रश्न को भी जोड़ दें तो यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाएगी कि भारत और रूस की मैत्री दोनों पक्षों के पृथक पृथक और परस्पर भू

राजनीतिक हितों से प्रेरित और पूरी समझ बूझ के साथ किए गए समझौतों का परिणाम थी ।

संदर्भ

1. गोपाल कृष्ण शर्मा, भारतीय विदेश नीति की बदलती अवधारणाएं, प्रिंटवैल, जयपुर, 1991, पृ. 219
2. जे0एन0 दीक्षित, भारत की विदेश नीति पुनरावलोकन, रोजगार समाचार, नई दिल्ली, 1–7 अप्रैल, 2000 पृ. 5
3. डॉक्टर बी0 एल0 फड़िया, अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2004, भाग–2, पृ. 246
4. डॉ वेद प्रताप वैदिक, भारतीय विदेश नीतिः नई दिशा संकेत, नई दिल्ली, 1980, पृ. 122–132
5. डॉक्टर बी0पी0 दत्त, इंडिया फॉरेन पॉलिसी, विकास पब्लिकेशंस,, नई दिल्ली, 1984, पृ. 23
6. ओ0पी0 तिवारी, राष्ट्रीय सुरक्षा, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 112
7. सुनील सोढ़ी, इंटरनेशनल रिलेशंस, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 224
8. वही

प्रताप सिंह
एम0ए0 (सैन्य अध्ययन)

डॉ वेदपाल सिंह
रीडर (सैन्य अध्ययन/रक्षा अध्ययन विभाग)
बरेली कालिज, (बरेली)

11

हिंदी कथा साहित्य में किन्नर समुदाय : एक अध्ययन

डॉ0 नरेश कुमारी

सारांश :

भारत में किन्नर समुदाय प्राचीन काल से ही अपना जीवन, समाज के अन्य वर्गों के साथ येन–केन प्रकारेण बिता रहा है। इस समुदाय के जीवन की विषमताओं और विसंगतियों की ओर सुसंस्कृत समाज का ध्यान साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत समय तक नहीं गया। यह समुदाय साहित्य की मुख्य धारा में अपनी पहचान दर्ज कराने में असमर्थ रहा। किन्नरों का उल्लेख विविध सदर्भों में भारतीय पौराणिक साहित्य में प्राचीन काल से होता रहा है। रामायण में राम–रावण युद्ध में राम की सैन्य वाहिनी में वानर सेना के साथ कोल, किरात, किन्नर और भील आदि जनजातियों की सेना भी सम्मिलित थी। 'किन्नर' एक वन्य जनजाति के रूप में रामायण महाकाव्य में उल्लिखित है किन्तु यह नपुंसक (हिजड़ा) समुदाय नहीं था। यह बलशाली और वीरता से युक्त जनजाति थी।

समकालीन हिंदी कथा साहित्य प्रवृत्तियों की दृष्टि से नारीवाद, आदिवासी और दलित विमर्श, अल्पसख्यक विमर्श के श्रेणीगत सैद्धांतिक ढाँचे में बँध कर रह गया है। उक्त वर्गीकरण विभिन्न विधाओं में रचित साहित्य के शोधपरक अध्ययन के लिए सुविधाजनक है। दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक समुदाय तथा नारीवादी दृष्टि से साहित्यिक विधाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए उपयुक्त सैद्धांतिक ढाँचे को गढ़ लिया गया है। समकालीन हिंदी कहानियों और उपन्यासों का वर्गीकरण इसी आधार पर कर लिया गया। इसी क्रम में भारतीय समाज में मौजूद एक विशेष वर्ग, किन्नर समुदाय का जीवन भी वर्तमान परिदृश्य में हिंदी कथा साहित्य का प्रमुख अंग हो गया है।

मुख्य शब्द : हिंदी कथा साहित्य, किन्नर समुदाय।

विस्तार : महाभारत कथा में अर्जुन देवलोक में उर्वशी के श्राप से नपुंसक रूप धारण करने को अभिशप्त हो जाता है। अर्जुन की इस स्थिति का सदुपयोग पांडव अपने अज्ञातवास काल में करते हैं। पांडव अज्ञातवास काल में विराट महाराज के आश्रय में रहते हैं जहाँ अर्जुन नृत्यकला के आचार्य वृहन्नला (किन्नर) का रूप धारण कर विराट राजा की सुपुत्री 'उत्तरा' को नृत्य कला में पारंगत कराता है। महाभारत कथा में एक अन्य प्रसंग में महारथी भीष्म द्वारा तिरस्कृत राजकुमारी 'अंबा' अपने अपमान का प्रतिकार लेने के लिए कुरुक्षेत्र के महासंग्राम में नपुंसक शिखंडी के रूप में भीष्म के सम्मुख प्रकट होकर उनके मृत्यु का कारण बनती है। शिखंडी और वृहन्नला दोनों ही किन्नर के रूप में पुराणों में वर्णित हैं। स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त मानव समाज में एक और लिंग व्यवस्था सदियों से चली आ रही है जिसे अन्य लिंगी मनुष्य कहा जाता है अर्थात जो न स्त्री हैं और न पुरुष। जननांगों के अभाव, अविकसित या निष्क्रियता से उत्पन्न नपुंसकता से ग्रस्त मनुष्यों को हिजड़ा कहा जाता है।

प्रकारांतर से इनके लिए एक सम्मानजनक शब्द 'किन्नर' गढ़ लिया गया। 'किन्नर' शब्द का संबंध हिमाचल प्रदेश के 'किन्नौर' जिले से कदापि नहीं है। हिजड़ोण के लिए इस शब्द के प्रयोग पर 'किन्नौर' प्रदेश के लोगों ने आपत्ति की थी।

किन्नरों के लिए अँग्रेजी का 'थर्ड जेंडर' शब्द बहुप्रचलित है अर्थात तृतीय लिंगी मनुष्य। किन्नर चाहे किसी भी धर्म का हो, इस समुदाय में शामिल होते ही वह अपने पूर्व धर्म और जाति को छोड़ देता है। इनकी आरध्या देवी 'बहुचरा माता' (बुचरा) कहलाती है। वह इसी देवी की पूजा करते हैं। एक किंवदंती के अनुसार बुचरा माता की तीन अन्य बहनें – नीलिमा, मानसा और हंसा थीं। सबसे बड़ी बुचरा हिजड़ा बन गई तो बची बहनों को भी उन्होंने अपने जैसा बना दिया। इनकी संतानें नहीं थीं तो इन्होंने लड़कों को गोद ले लिया। लेकिन बुचरा माता के मंदिर में निस्संतान दंपति संतान माँगने के लिए जाते हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में किन्नरों के लगभग 500 धाम हैं जहाँ उनके नायक या गुरु निवास करते हैं।

बुचरा और उनकी तीन बहनों के आधार पर इनकी चार शाखायें हैं दृ बुचरा, नीलिमा, मानसा और हंसा। बुचरा की शाखा में पैदाइशी, नीलिमा की शाखा में जबरन बनाए गए, मानसा शाखा में इच्छा से बने और हंसा में उन्हें जगह दी जाती है जो शारीरिक कमी के कारण किन्नर बनते हैं। एक अन्य विभाजन के अंतर्गत नीलिमा शाखा के किन्नर गाने और ढफली बजाने का काम करते हैं तो मानसा शाखा का काम बनने वाले व्यक्ति के लिए सामान इकट्ठा करना है। जब बुचरा किसी को किन्नर बना रहे होते हैं तब हंसा के जिम्मे साफ–सफाई का काम आता है। साथ ही कब्र खोदने और उसमें राख डालने का काम भी केवल हंसा शाखा के किन्नर ही करते हैं, शवों पर पहली मिट्टी डालने का काम बुचरा शाखा के लोग ही करते हैं। किन्नरों की भी एक पारिवारिक व्यवस्था होती है। यह व्यवस्था सामान्यजनों के परिवारों की तरह ही होती है। हर घर या घराने का एक मुखिया होता है। जिसे नायक कहते हैं। नायक के नीचे गुरु होते हैं फिर चेले। गुरु का दर्जा माता–पिता से कम नहीं होता। हर किन्नर को अपने गुरु को अपनी कमाई का एक निश्चित हिस्सा देना होता है। गुरु के नीचे काम करने वाले सभी चेले घराने की बहुएँ कहलाती हैं। घराने के अंदर भाई, बहन, बुआ, चाही, दादा, दादी आदि का अपना स्थान होता है। जो किन्नर पुरुष प्रवृत्ति का होता है उसे भाई कहा जाता है। ऐसे ही महिला प्रवृत्ति के किन्नरों को बहन का ओहदा दिया जाता है।

भारतीय समाज में जननांगों से अपंग शिशुओं को मातापिता द्वारा त्याग दिया जाता है। जननेन्द्रियों से अपंग या जननांग विहीन शिशु के जन्म की खबर मिलते ही किन्नर समुदाय उस परिवार से शिशु को माँगकर या बलपूर्वक प्राप्त कर अपने समुदाय में पालन–पोषण करने के लिए लेकर चले जाते हैं। वह शिशु किन्नर प्रथा एवं परंपरा के अनुसार ही स्वयं को पुरुष या स्त्री के रूप में ढालकर विसंगतिपूर्ण

जीवन जीने के लिए अभिशप्त हो जाता है। दुनिया के हर देश और समाज में किन्नर समुदाय अनेक उपजातियों में बँटा हुआ है। प्रत्येक उपजाति अथवा उपसमुदाय अपने ढंग से जीवनयापन करता है। इनकी अपनी वेशभूषा, खान–पान और रहन–सहन की संस्कृति होती है जिसका पालन उस समूह के सदस्यों को करना होता है। इन समुदायों के उपसमूहों के नेतृत्व के लिए इनमें आपसी स्पर्धा भी होती है। भारत के महानगरों में किन्नर समुदायों के टोले जगह–जगह दिखाई दे जाते हैं। अक्सर यह लोग चौराहों पर वाहन यात्रियों से पैसे माँगते हुए दिखाई देते हैं। इनके समुदाय शिशु जन्म के अवसर पर लोगों के घरों में बधाई गीत गाकर नवजात को आशीर्वाद देते हैं। इस समुदाय का आशीर्वाद नवजात के लिए कल्याणकारी माना जाता है।

बदले में उन्हें कुछ धन की प्राप्ति हो जाती है। अधिकतर किन्नर समुदाय के लोग जिन्हें भिन्न लिंगी मान लिया गया है, इनके लिए 'इतर लिंगी' शब्द का प्रयोग होता है। शासकीय प्रयोजनों के लिए किन्नर समुदाय के लोगों के लिए 'अन्य लिंगी' नामक श्रेणी निर्मित कर दी गयी है। किन्नरों में शिक्षा का नितांत अभाव होता है। अपवाद स्वरूप यत्रतत्र भारत में शिक्षित व्यक्ति (अन्य लिंगी) दिखाई दे जाते हैं जिनकी संख्या नगण्य है। लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी नामक किन्नर (महिला का वेष धारण करती या करता है) जो शिक्षित विदुषी व्यक्ति के रूप में जानी जाती है। इन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान के साथ संगीत और नृत्य शास्त्र का भी अध्ययन किया है। किन्नर समुदाय के अधिकारों के लिए इन्होंने एक सशक्त आंदोलनकारी के रूप में ख्याति अर्जित की है। उज्जैन महाकुंभ सिंहस्थ 2016 में उन्हें महामंडलेश्वर की पदवी प्रदान की गई थी। इनके द्वारा रचित आत्मकथा 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी' हिन्दी किन्नर साहित्य में बहुचर्चित कृति है। नई सदी में कुछ किन्नरों ने अपने कठिन संघर्ष से राजनीति में प्रवेश कर आम चुनाव में बहुमत से विजय प्राप्त कर विधायक और महापौर तक के पद सँभाले जिनमें प्रमुख हैं – शबनम मौसी, कमला जान, कमला किन्नर और मधु किन्नर आदि। देश की पहली किन्नर शिक्षाविद प्राचार्य मानोबी बंद्योपाध्याय (पश्चिम बंगाल) और पहली किन्नर वकील तमिलनाडु की सत्या श्रीशर्मीला ने सिद्ध कर दिया कि किन्नर अथवा 'थर्ड जेंडर' किसी भी विद्वत स्त्री–पुरुष की भाँति बुद्धिजीवी वर्ग के समकक्ष अपनी प्रतिभा प्रदर्शित कर सकते हैं। अस्मिता की यह लड़ाई जो किन्नरों द्वारा लड़ी जा रही है, इन्हें 15 अप्रैल 2014 को विजय हासिल हुई जब सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति के एस राधाकृष्णन और न्यायमूर्ति ए के सीकरी ने थर्ड जेंडर को मान्यता देते हुए किन्नरों के हक में ऐतिहासिक फैसला दिया।

हिंदी कथा साहित्य में विगत दो दशकों में प्रवृत्तिगत अनेक नए प्रयोग हुए हैं। कहानी और उपन्यास साहित्य में नए सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयाम जुड़ते गए। दलित चेतना प्रखर रूप में कहानी और उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त हुई जिसमें प्रतिरोध का स्वर बलवती दिखाई देता है। इसीके समकक्ष आदिवासी जनजीवन पर केन्द्रित कथा साहित्य विपुल मात्रा में रचा गया। अनेक उदीयमान लेखक उक्त समुदायों के उत्पीड़न भरे जीवन के सामाजिक पक्ष को प्रहारक मुद्रा में व्यक्त करते हुए दिखाई देते हैं। दलित चेतनाप्रधान कथा साहित्य में दलित स्त्रियों की अंतरगाथाओं ने अपनी अलग भावभूमि निर्मित की है।

आदिवासी कथा साहित्य में वन्य प्रान्तों में बसे जनजातियों से विकास के नाम पर उनकी वन्य भूमि को उनसे छीनने तथा उनके विस्थापन के कारण उत्पन्न दुष्परिणामों की करुण गाथा भारत के वंचित तथा हाशिये पर धकेले गए समाज का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करता है। हाशिये पर के जन समुदायों में किन्नर समुदाय का असंगठित बिखराव भरे जीवन को वर्तमान कथाकारों ने अपनी रचनाओं में चित्रित कर एक नई भावभूमि को आविष्कृत किया है। वर्तमान समय में किन्नर जनजीवन की चुनौतियाँ साहित्य के केंद्र में स्थान पाकर शिष्ट समाज का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। किन्नर कथा साहित्य के उदय से आम लोगों में किन्नरों के प्रति घृणा और अलगाव के व्यवहार में परिवर्तन हुआ है। किन्नर व्यक्तियों के प्रति समाज धीरे–धीरे संवेदनशील हो रहा है।

किन्नरों के पक्ष में अनेक गैरसरकारी संगठन और सामाजिक कार्यकर्ता आवाज उठा रहे हैं इसके बावजूद वे उपहास और तिरस्कार के पात्र बने हुए हैं, यह मानवता की दृष्टि से चिंता का विषय है। हिंदी कथा साहित्य में कुछ चुनिन्दा लेखकों ने भारत के विभिन्न महानगरों में छोटे छोटे कुनबों में बसे विभिन्न किन्नर समुदायों के जीवन को वास्तविकता के धरातल पर चित्रित करने का प्रयास किया है।

मानव सभ्यता के विकास यात्रा में अनेक पड़ाव आते रहे हैं। भूमंडलीकरण की स्थितियों से प्रभावित और परिवर्तित सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश ने हाशिये पर पड़े किन्नर समुदाय के प्रति समाज में मानवीय संवेदनाओं को जगाया है। समाज में परिवर्तन की इस लहर से समाज में उपेक्षित वर्गों को पहचान मिली और निस्संदेह हिंदी के कुछ चुनिन्दा कथाकरों ने इस आंदोलन को साहित्य की मुख्य धारा में स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी में किन्नर जीवन पर आधारित कथा साहित्य का आरंभ 21 वीं शती (नई सदी) में हुआ। विगत शती में स्त्री, दलित और आदिवासी वर्ग को तो विशेष अभिव्यक्ति मिली परंतु किन्नर समाज को हिंदी साहित्य में कोई विशेष अभिव्यक्ति नहीं मिली।

हिंदी में किन्नर समुदाय पर केन्द्रित – यमदीप – 2002 (नीरजा माधव), मैं भी औरत हूँ – 2005 (अनुसूइया त्यागी), किन्नर कथा – 2010 (महेंद्र भीष्म), तीसरी ताली – 2010 (प्रदीप सौरभ), गुलाम मंडी – 2013 (निर्मला भुराड़िया), पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा – 2016 (चित्रा मुद्गल) तथा मैं पायल –2016 (महेंद्र भीष्म), पंखवाली नाव (पंकज बिष्ट) उपन्यास प्रकाश में आए हैं। ट्रांसजेंडर स्त्री मानोबी बंद्योपाध्याय की बांग्ला से हिंदी में अनूदित आत्मकथा 'पुरुष तन में फंसा मेरा नारी मन '– 2018 (राजपाल प्रकाशन) किन्नर साहित्य में रचित एक मात्र आत्मकथा

है। बांग्ला में रचित यह बहुचर्चित आत्मकथा हिंदी के अतिरिक्त अँग्रेजी में भी उपलब्ध है।

किन्नर जीवन से संबंधित कहानियों का संग्रह 'थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियाँ' (संपादक – डॉ. एम फिरोज खान) उल्लेखनीय है। इस संग्रह में अठारह कहानियाँ संगृहीत हैं जिनके लेखक क्रमशः शिवप्रसाद सिंह, राही मासूम रजा, सलाम बिन राजाक, एस आर हरनोट, कुसुम अंसल, किरण सिंह, कादंबरी मेहरा, डॉ. पद्मा शर्मा, अंजना वर्मा, महेंद्र भीष्म (त्रासदी), ललित शर्मा (रतियावान की चेली), डॉ. लवलेश दत्त (नेग), गरिमा संजय दुबे (पन्ना बा), श्रीकृष्ण सैनी (हिजड़ा), विजेंद्र प्रताप सिंह (संकल्प), चाँद दीपिका (खुश रहो क्लीनिक), पूनम पाठक (किन्नर) और पारस दासोत (गलती जो माफ नहीं) हैं। किन्नर जीवन पर मछिन्द्र मोरे द्वारा रचित नाटक 'जाने मन' बहुत बारीकी से इस समाज की समस्याओं को प्रस्तुत करता है।

उपर्यक्त उपन्यासों में किन्नर जनजीवन में व्याप्त शोषण, उपेक्षा, तिरस्कार, घृणा, संघर्ष, जिजीविषा को पूरे सामर्थ्य के साथ प्रस्तुत किया है। उक्त कथाकारों ने मुंबई और दिल्ली महानगरों की किन्नर गंदी बस्तियों में नारकीय जीवन जीने के लिए अभिशप्त किन्नर लोगों की सवेदनाओं, अपेक्षा और आकांक्षाओं का चित्रण यथार्थ के धरातल पर किया है। जिस तरह किन्नरों में स्वयं को पुरुष या स्त्री का वेश धारण करने की स्वैच्छिक परंपरा विद्यमान है, इनमें जननेन्द्रिय दोष होने के बावजूद विवाह की परंपरा और पति–पत्नी के रूप में जीवन यापन की स्थितियों का चित्रण, किन्नर समाज के समाजशास्त्रीय स्वरूप को पहचानने में सहायक होता है।

किन्नरों के यौन शोषण के प्रसंग किन्नर कथा साहित्य में बहुतायत से पाये जाते हैं। राजनेताओं से संबंध रखने वाले प्रभावशाली किन्नर नेताओं के जीवन की कथाएँ भी इस साहित्य में दिखाई देती हैं। राजनैतिक प्रयोजनों के लिए भी किन्नर समुदायों को प्रलोभन के मार्ग से शोषित क्या जाता है और कुछ परिस्थितियों में ये राजनीतिक हत्या के भी शिकार हो जाते हैं। प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली' उपन्यास एक किन्नर समुदाय में गद्दी अर्थात शीर्ष नायकत्व को हासिल करने के लिए चलाने वाले षडयंत्र और परस्पर संघर्ष को दर्शाता है। आकर्षक किन्नर अक्सर तथाकथित संभ्रांत वर्ग के विकृत यौनाचार के शिकार हो जाते हैं, ऐसी घटनाओं को किन्नर कथा साहित्य में प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया है। जहाँ एक ओर प्रदीप सौरभ किन्नरों के सशक्तिकरण के लिए आवाज उठाते हैं वहीं दूसरी ओर महेंद्र भीष्म किन्नरों के मानवाधिकारों के लिए पक्षधर बनकर खड़े होते हैं। किन्नर जन्म लेने वाला व्यक्ति बार–बार सवाल करता है कि उसके जन्म के लिए उसका तो कोई दोष नहीं किन्तु समाज उसे इसका दंड क्यों देता है? यह महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका सामाधान कोई सभ्य समाज देने में समर्थ नहीं दिखाई देता। समाज में किन्नरों की स्वीकार्यता महत्वपूर्ण मुद्दा है। भारतीय समाज में एक विचित्र दोहरापन मौजूद है जो सदियों से लिंग के आधार पर सामाजिक अधिकार तय करता है। स्त्रीलिंग और पुल्लिंग इन दोनों को सामाजिक सामाजिक संरचना का आधार माना गया है। ये दोनों मिलकर ही जीवन का सृजन करते हैं जिससे जीवन की शृंखला पीढ़ियों का निर्माण करती है। जननेन्द्रिय के बिना मनुष्य की प्रजनन शक्ति का ह्रास सुनिश्चित है। संतानोत्पत्ति स्त्री–पुरुष के वैवाहिक जीवन का महत्वपूर्ण सामाजिक प्रदेय है। लिंगविहीन या नपुंसक मनुष्य इस अधिकार से वंचित हो जाता है जिससे समाज में इस श्रेणी के मनुष्यों को असामाजिक और अवांछित माना जाता है। इस समुदाय के प्रति सभ्य समाज की यह मानसिकता मानवोचित नहीं है। किन्नर जीवन को जीने के लिए अभिशप्त समुदाय के प्रति मानवीय संवेदना को जागृत करने का गुरुतर दायित्व साहित्यकार और सामाजिक आंदोलनकारियों ने स्वीकार किया।

किन्नर को जीवन के प्रारम्भ से लेकर अंत तक अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उसकी सबसे बड़ी चुनौती उसकी देह होती है। दैहिक बनावट और अंतःकरण की भावनाओं में सामंजस्य न होने के कारण वे मानसिक वेदना तो सहते ही हैं, साथ ही कई बार उनकी देह शोषण का शिकार भी हो जाती है। लोगों के घरों में मंगल अवसरों पर अपनी वेदना को छिपाकर हर्षित होने वाले किन्नरों की देह लोगों में प्रायः आकर्षण का केंद्र बनी रहती है। इसीलिए कुछ कुंठित मानसिकता के लोग उनका दैहिक शोषण करते हैं। किन्नर समाज की यह एक यथार्थ स्थिति है जिसे हिंदी उपन्यासों में मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। नई सदी का हिंदी कथा साहित्य किन्नर समुदाय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अस्मिता की पड़ताल करने में कमोबेश सफल हुआ है।

उपन्यासों में वर्णित किन्नर समाज की चुनौतियाँ : किन्नर समाज का वह वर्ग है जो शारीरिक रूप या यौनिक अंगों के विशेष संदर्भ में अपूर्ण माना जाता है। किन्नर की बाह्य देह का उसके अंतःकरण के भावों से तालमेल नहीं होता अर्थात पुरुष देह में स्त्रियोचित गुण होते हैं या स्त्री की देह में पुरुष देह जैसी मांसलता होती है। वास्तव में यह एक जैविक अनिश्चितता के कारण होता है।

इसी जैविक अनिश्चितता के कारण तह वर्ग समाज के अन्य वर्गों की भाँति सामान्य प्रतीत नहीं होता। इस संबंध में समाज में भी अनेक प्रकार के भ्रम व्याप्त हैं जिस कारण किन्नरों का जीवन सामान्य मनुष्यों के जीवन से सर्वथा भिन्न दिखाई देता है। किन्नर अपने जीवन काल में अनेक विसंगतियो का सामना करता है। इन विसंगतियों को साहित्य के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का चुनौतीपूर्ण अभियान हिंदी के कतिपय कथाकारों ने श्रमसाध्य ढंग से किया। इन सभी लेखकों ने किन्नर जीवन की वास्तविकताओं को समझने के लिए विभिन्न शहरों में बसे विभिन्न किन्नर समुदायों के बीच जाकर समाजशास्त्रीय अनुसंधान किया। इन लेखकों के द्वारा किन्नरों के विभिन्न वर्गों, उनके सामाजिक जीवन, रीतिरिवाज, परम्पराएँ, रूढ़ियाँ, धार्मिक मान्यताएँ, उनकी आजीविका के स्रोत और उनके कामकाज आदि का विस्तृत अध्ययन किया गया। हिंदी में रचित किन्नर जीवनप्रधान उपन्यासों में लेखकों

के द्वारा किए गए सर्वेक्षण और अध्ययन के आधार पर ही कथानकों को बुना गया और पात्रों का चयन किया गया। इन उपन्यासों के सभी किन्नर पात्र पुरुष और स्त्री वेश में भिन्न–भिन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में अपने अभिशप्त जीवन की विडम्बना को भोगते हुए प्रतीत होते हैं। विभिन्न परिवेशों में किन्नर पात्रों के जीवन की कथाओं को लेखकों ने किन्नरों की भाषाई चेतना के संग, उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा रूपों में ही प्रस्तुत किया है। इन उपन्यासों में किन्नरों की विशिष्ट भाषाई चेतना स्पष्ट दिखाई देती है। समाज की रूढ़ मानसिकता के कारण किन्नरों की छवि ऐसी बन चुकी है कि माता–पिता भी जननांग की विकलांगता के साथ जन्मी अपनी ही संतान को त्याग देते हैं। इस तरह जीवन के प्रथम पड़ाव पर ही नपुंसक शिशु को इस चुनौती का सामना करना पड़ता है। इस सामाजिक कुरीति का कोई समाधान दिखाई नहीं देता।

ऐसी संतान को त्याग देने की मानसिकता समाज के सामन्य से लेकर उच्चवर्ग, राजा–महाराजा हर वर्ग में व्याप्त है। 'किन्नर कथा' उपन्यास के आलोक में इस तथ्य को स्पष्ट किया जा सकता है। इस उपन्यास में जैतपुर के राजा जगतराज सिंह के घर कन्या (किन्नर) का जन्म होता है, परंतु वह अपनी लोकमर्यादा की रक्षा के लिए अपनी नवजात कन्या को मरवा देने का हुक्म दे देता है। किन्तु उनका दीवान पंचम सिंह उस शिशु के प्राण नहीं ले पाता है। वह शिशु एक किन्नर के हाथों सौंपी दी जाती है। 'किन्नर गुरु' तारा उस कन्या का पालन पोषण करती है। राजा जगतराज सिंह को लोकलाज ज्यादा प्रिय थी। समाज में यही मानसिकता विद्यमान है जिसका चित्रण सभी उपन्यासों मे एक समान दिखाई देता है। पैदा होते ही किन्नर शिशु को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ती है। कभी–कभी संयोग से यदि किन्नर के रूप में जन्मे शिशु के प्राण बच जाएँ तो भी उसे अपने परिवार के साथ जीवन बिताने का सुख प्राप्त नहीं होता क्योंकि उसे जन्म के बाद किन्नर समुदाय के सुपुर्द कर दिया जाता है या किन्नर समुदाय जबरन उसे अपने समुदाय में शामिल करने के लिए लेकर चले जाते हैं। चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा' के नायक विनोद की स्थिति ऐसी ही है। उसकी माँ उसके किन्नर होने के बावजूद उसे अपनी अन्य संतानों की भाँति ही प्रेम करती है, परंतु पिता के लिए वह चिंता का विषय बन जाता है। विनोद का भाई भी उससे घृणा करता है। उसकी माँ के सिवा उसे कोई अपने समाज में नहीं रहने देना चाहता। इसलिए वे निर्दयतापूर्वक विनोद को किन्नरों को सौंप देते हैं।

विनोद की इस वेदना को समूचे उपन्यास में विनोद के द्वारा उसकी माँ को क्रमशः लिखे जाने वाले पत्रों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। पत्रों के माध्यम से वह अपनी मानसिकता और अपनी उलझनें व्यक्त करता है। वह अपने अधिकारों की लड़ाई अकेले लड़ता है। वह मानो समस्त किन्नर समुदाय के लिए मानवाधिकार की माँग करता है। किन्नरों को भी उनकी इच्छानुसार पुल्लिंग या स्त्रीलिंग श्रेणी में शामिल करने की माँग करता है। किन्नर जीवन पर रचित उपन्यासों में 'नाला सोपारा' का स्थान महत्वपूर्ण है। आत्मकथात्मक शैली में रचित यह उपन्यास किन्नर युवक की शारीरिक और मानसिक वेदना को व्यक्त करता है। किन्नर समुदायों के माध्यम से राजनेता अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। उपन्यास के अंत में विनोद ऐसी ही राजनीतिक हत्या का शिकार होकर अपनी जान गँवा देता है। उपन्यास में पूनम जोशी नामक किन्नर के साथ हुए बलात्कार के प्रसंग से यह तथ्य उजागर होता है कि किन्नरों की देह कुंठित और विकृत यौन शोषण के अभ्यस्त लोगों के लिए अचंभा पैदा करती है और दिल बहलाने का सस्ता साधन बन जाते हैं। बेबसी और लाचारी में किन्नर प्रतिरोध नहीं कर पाते और अंत में मौत का शिकार हो जाते हैं। चित्रा मुद्गल के उपन्यास के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि यौनिक अपूर्णता के बावजूद किन्नरों को शारीरिक यौनाचार का शिकार होना पड़ता है। अतः उनको समाज कि दोहरी मार झेलनी पड़ती है। पहला, अपूर्ण देह के साथ जीवनयापन करना पड़ता है और दूसरा बलात्कार का दंश भी सहना पड़ता है। शारीरिक विपन्नता की विडंबनाओं के अतिरिक्त एक अन्य चुनौती आर्थिक विपन्नता के रूप में किन्नर समुदाय को झेलनी पड़ती है। किन्नर समुदाय लोगों के मगलपर्वों और उत्सवों पर नाच गाकर, तालियाँ पीटकर अपना जीविकोपार्जन करते हैं।

भारत में सरकारी नीतियाँ भी उनके अनुकूल नहीं हैं। सरकारी नौकरी प्राप्त करने का कोई प्रावधान नहीं है। इसलिए वह प्रायः असहाय अवस्था में सड़कों पर, रेलगाड़ियों में तालियाँ पीटकर माँगते हुए दिखाई देते हैं। 'नाला सोपारा' का मुख्य पात्र विनोद उर्फ बिन्नी किन्नर समुदाय में रहते हुए पढ़ाई पूरी करने के लिए गाड़ियाँ साफ करने का काम करता है। इस प्रकार की जागरूकता किन्नर समुदायों में नहीं के बराबर है क्योंकि समाज उन्हें मुख्य धारा में शामिल होने नहीं देता। किन्नर समुदाय में शिक्षा का अभाव होता है। उन्हें शिक्षा का अवसर मुहैया नहीं कराया जाता। इसके लिए आवश्यक है किन्नर समुदाय में चेतना का संचरण। यदि वे स्वयं चेतन हो जाएँगे तो वे स्वयं अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली' उपन्यास की पात्र 'मणि' के साथ स्कूल में एक अप्रिय घटना घटती है जो उसके जीवन को बदलकर रख देती है। एक दिन स्कूल में कुछ बदमाश लड़के उसे नंगा कर उसके गुप्तांगों को देखकर हिजड़ा, हिजड़ा! चिल्लाने लगते हैं। इस अपमान जनित व्यवहार से प्रताड़ित होकर मणि स्कूल छोड़ने के लिए विवश हो जाती है। इसी तरह के प्रसंग का चित्रण 'गुलाम मंडी' (निर्मला भुराडिया) में हुआ है। छात्र का लिंग पहचानने के लिए उसकी चड्डी उतरवाई जाती है और फिर उसे जूतों से मारकर स्कूल से निष्कासित किया जाता है। इस तरह इस वर्ग को सभी क्षेत्रों में हेय दृष्टि से देखा जाता है। आर्थिक क्षेत्र भी इस दृष्टि से अपवाद नहीं है। आर्थिक क्षेत्र में इस वर्ग के जुड़े व्यक्ति का कार्यरत होना असंभव बना दिया गया है। इस वर्ग को लेकर परिवार और समाज के मध्य मौजूद द्वंद्वको लेखकों द्वारा स्पष्ट करने के प्रयास हुए हैं।

नीरजा माधव ने 'यमदीप' में इस द्वंद्वको पूरी संवेदना से उभारा है। 'नाज बीबी' नामक बालिका को उसके हिजड़ा होने के सच जब नहीं छिपाया जा सकता, तब उसके माता–पिता को उसे महताब गुरु नामक एक किन्नर समुदाय के मुखिया को असहाय स्थिति में सौंप देना पड़ता है। इसके अतिरिक्त उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। महताब गुरु के अनुसार उस बालिका के माता–पिता उस बस्ती में रह नहीं सकते थे और अपनी बेटी को अपने साथ नहीं रख सकते थे और अपने को हिजड़ी के बाप कहलाने के अपमान के साथ नहीं जीवन बिता सकते थे। इसीलिए इसे किन्नरों को दे देने के सिवाय उनके पास और कोई रास्ता न था।

महेंद्र भीष्म द्वारा किन्नर जीवन पर रचित दूसरा उपन्यास है 'मैं पायल'। आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत यह उपन्यास लखनऊ की किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन संघर्ष पर आधारित है। 'मैं पायल' उपन्यास में देह व्यापार के दो पक्षों को चित्रित किया गया है। प्रथम 'अनवर' नामक पात्र की माँ का देह व्यापार में संलिप्त होना तथा दूसरा हिजड़ों का देह व्यापार में शामिल हो जाना, दोनों समूहों की देह व्यापार में संलिप्तता का मूल कारण गरीबी है।

थर्ड जेंडर अन्य लिंगी अर्थात किन्नर समुदाय के अतिरिक्त एक और वर्ग है जिसे ट्रांसजेंडर या लिंग परिवर्तित मनुष्यों का है। वह किन्नर जिसमें पुरुष या स्त्रियोचित प्रवृत्तियाँ हावी होती जाती हैं और वह तदनुरूप से ही व्यवहार करता है। ऐसी स्थिति में किन्नर स्वेच्छा से पुरुष या स्त्री के रूप में अपना शारीरिक रूपान्तरण कर सकता है। नव्यतम कॉस्मेटिक सर्जरी व लिंग परिवर्तन के लिए समुचित शल्य प्रक्रिया उपलब्ध होने के कारण अब यह संभव हो गया है। इस प्रक्रिया के द्वारा पुरुष और स्त्री अपना लिंग परिवर्तन कर सकती हैं। इस संदर्भ में उच्चमध्य वर्गीय परिवार में बेटे के रूप में जन्मा 'सोमनाथ' धीरे–धीरे अपने भीतर विकसित स्त्रैण प्रवृत्तियों का आभास करता है। उसका लड़कों के प्रति आकर्षण उसके अस्वाभाविक व्यावहार के प्रति माता–पिता और अन्य लोगों का ध्यान आकर्षित करता है। यही सोमनाथ अंत में मानोबी बद्योपाध्याय के नाम से सुंदर युवती के रूप में परिवर्तित हो जाती है क्योंकि उसमें नारी मन बसता था। स्त्री में स्वयं को बदलने और स्थापित करने के लिए सोमनाथ उर्फ मानोबी को जिन यातनाओं और अपमान से भरे जीवन से संघर्ष करना पड़ा, इसे मानोबी ने स्वयं आत्मकथा में प्रस्तुत किया है। मानोबी बंद्योपाध्याय वह शख्सीयत है जिसने अपने कठिन संघर्ष के द्वारा पर दुनिया भर का तिरस्कार, हिकारत, अपमान, उपेक्षा और नफरत को झेलते हुए पारिवारिक समर्थन के बल पर उच्च शिक्षा पूरी की। बांग्ला साहित्य में एम ए , एम फिल और पीएच डी की उपाधियाँ प्राप्त कीं। और वह पश्चिम बंगाल में एक कॉलेज की भारत की प्रथम ट्रांसजेडर प्रिंसिपल का कार्यभार कुशलतापूर्वक सँभाल रहीं हैं। इस संघर्ष को उन्होंने अपनी आत्मकथा में पिरोया है जो रोचक और रोमांचक दोनों है।

अपनी आत्मकथा 'पुरुष तन में फंसा मेरा नारी मन' को पाठकों को समर्पित करते हुए वह लिखती हैं दृ "उन सबके नाम, जिन्होंने मुझे अपमानित किया और अवमानव कह कर जीवन के हाशिये पर धकेल दिया। उन्हीं के कारण मुझे लड़ने की ताकत मिली और मैं जीवन में आगे बढ़ पाई। आशा करती हूँ कि पुस्तक मुझ जैसों के लिए प्रेरणात्मक सिद्ध होगी और वे भी जीवन में सफल हो पाएँगे।"

लिंग परिवर्तन की सर्जरी के बाद कानूनी तौर पर सोमनाथ ने अपना नाम बदल लिया। इस संदर्भ में वह लिखती हैं दृ "क्योंकि मुझे लगता था कि मेरी देह और आत्मा एक स्त्री की हो गई थी, तो मेरे नाम से भी वही झलकना चाहिए। सोमनाथ, भगवान शिव का एक नाम है, वे एक पुरुष थे और मैं अपने लिए आदर व सम्मान की इस तलाश में उनके नाम का अपमान नहीं करना चाहती थी। मैंने मानोबी नाम इसलिए चुना क्योंकि इसका अर्थ है सर्वोत्कृष्ट मादा दृ प्रकृति दृ जैसा प्रकृति ने उसे बनाया है। मैंने अपना नाम सोमनाथ से बदलकर मानोबी रखा और यह काम कोर्ट में मेजिस्ट्रेट के सामने किया गया। इसके बाद मैंने शीर्षस्थ अखबारों में अपना नाम और लिंग बदलने के बारे में सूचित किया। जब मुझे थीसिस के लिए अपना नाम बदलवाना था तो ये दस्तावेज बहुत काम आये। मैंने 2005 में पीएच डी का काम पूरा कर लिया पर डॉक्टरेट की डिग्री विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में 2006 में दी गयी।"

मानोबी बंद्योपाध्याय का आत्मवक्तव्य गौरतलब है जो आत्मककथा के प्रारम्भ में प्रस्तुत किया गया है। " कितनी बार ऐसा हुआ है कि आपकी गाड़ी लाल बत्ती पर रुकी है और आपने कार की खिड़की के बाहर से, भीख माँगते हिजड़े को देख कर अपना मुँह मोड़ लिया है?क्या आपको बहुत घृणा महसूस हुई? क्या यह स्थिति उस अनुभूति से बदतर नहीं लगी जो आप गोद में बच्चा लिए किसी भिखारिन को भीख माँगते देख कर महसूस करते हैं?क्यों? मैं आपको बताती हूँ कि ऐसा क्यों है। आप हिजड़े से घृणा करते हैं क्योंकि आप उसके लिंग के साथ कोई पहचान नहीं जोड़ पाते। आप उसे एक विचित्र घृणित जीव, संभवतः एक अपराधी और निश्चित तौर पर एक अवमानव समझते हैं।

"मैं भी उनमें से एक हूँ। मुझे सारा जीवन लोगों के मुख से हिजड़ा, बृहन्नला, नपुंसक, खोजा, लौंडा .... जैसे शब्द सुनने पड़े हैं और मैंने जीवन के इतने वर्ष यह जानते हुए बिताए हैं कि एक जातिच्युत व परित्यक्त हूँ। क्या इससे मुझे पीड़ा का अनुभव हुआ?हुआ और इसने मुझे बुरी तरह से आहत किया है। परंतु चलन से बाहर हो चुके मुहावरे का प्रयोग करें तो कह सकते हैं कि समय बड़े–बड़े घाव भर देता है। मेरे मामले में इस कहावत ने थोड़ा सा अलग तरह से अपना प्रभाव दिखाया है। कष्ट तो अब भी है पर समय के साथ–साथ दर्द घट गया है। यह मेरे जीवन के एकांत क्षणों में मुझे आ घेरता है, जब मैं अपने अस्तित्व संबंधी यथार्थ से जूझ रही होती हूँ। मैं कौन हूँ और मैं एक पुरुष की देह में कैद स्त्री के रूप में क्यों जन्मी? मेरी नियति क्या है?मेरे इस रंग–बिरंगे बाहरी आवरण के नीचे, शर्मसार व चोटिल वैयक्तिकता छिपी है जो आजाद होने के लिए तरस रही है दृ अपनी शर्तों पर जीवन जीने की आजादी और जो मैं हूँ, उसी रूप में रहने की आजादी! मैं अपने लिए

यही आजादी और स्वीकृति चाहती हूँ। मेरा बाहरी कठोर रूप तथा उदासीनता ऐसा कवच है जिसे मैंने अपनी संवेदनशीलता को जीवित रखने के लिए पहनना सीखा है। आज, अपने सौभाग्य के बल पर, मैंने ऐसी अद्भुत सफलता अर्जित कर ली है जो प्रायः मेरे जैसे लोगों के लिए नहीं होती। लेकिन यदि मेरा सफर कुछ और हुआ होता? मैं अपने आप से बारंबार कहती हूँ कि अब मेरे लिए समय आ गया है कि मैं इस ख्याति के बीच प्रसन्न रहूँ परंतु भीतर ही भीतर कोई चेतावनी देता है। मेरी अंतरात्मा मुझसे कहती है कि मुझे अपने आसपास जो शोहरत और उत्सव दिखाई देता है, वह सब 'माया' है और मुझे एक संन्यासी के वीतराग की तरह ही इस प्रशंसा को ग्रहण करना चाहिए।

"मीडिया का कहना है कि कोई ट्रांसजेंडर पहली बार कॉलेज के प्रिंसिपल पद पर नियुक्त हुई, जो अपने–आप में एक उल्लेखनीय कदम है। तब से मेरे फोन लगातार घनघनाते हैं, मेरी डेस्क पर अलग–अलग स्थानों पर होने वाले बधाई कार्यक्रमों के न्यौतों के अंबार लगे रहते हैं। मुझे यह मान कर बहुत खुशी होती है कि जो लोग मेरा अभिनंदन करते हैं, उन्होंने मुझे उसी रूप में स्वीकार किया है, जो मैं हूँ, परंतु मैं उन खी–खी करते सुरों, तिरस्कार और दबी हँसी को कैसे अनसुना कर सकती हूँ, जो छिपाने की कोशिश करने पर भी नहीं छिपती?उनके लिए मैं एक 'तमाशा' भर हूँ और बिना पैसों का कोई तमाशा देखने को मिल रहा हो तो कौन नहीं देखना चाहेगा?

"मानसिक आघात और क्रोध, दो ऐसे भाव हैं जिन्हें मैंने दबाना और नजर अंदाज करना सीखा है। ये मेरे मानसिक कवच का हिस्सा हैं, जिनसे मैं अपने आप को महफूज रख पाती हूँ। मैंने अंततः इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि मेरी उपलब्धियों का मेरे आस–पास के लोगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उन्हें अब भी लगता है कि आज मैं भी नपुंसक हूँ और यही मेरी असली पहचान है। मुझे भावुक होने का अधिकार भी है, यह विचार अधिकतर लोगों को अनचीन्हा लगता है। मैं उन्हें दोष नहीं देती। मैं स्वयं को दोषी मानती हूँ कि मैंने ऐसी पीड़ा को नजरअंदाज क्यों नहीं किया। मुझे तो बहुत पहले उनकी परवाह करनी छोड़ देनी चाहिए थी।

"ऐसा नहीं जीवन कि जीवन के इक्यावन वर्षों के दौरान, मुझे कभी अपने हिस्से का प्यार नहीं मिला। कई बार मेरा दिल भी टूटा, पर हर बार मुझे एक नया सबक सीखने का अवसर मिलता। मैंने बहुत अच्छी तरह और गहराई से प्यार किया और आशा करती हूँ कि मेरे साथी जहाँ भी हैं, वे चुपचाप मेरे उस रूप को याद करते होंगे। यह और बात है कि संबंध कभी मेरे लिए कारगर नहीं हो सके। जिन्होंने मुझे प्रेम किया, वे सदा मुझे छोड़ कर चले गए और हर बार जैसे मेरा कुछ हिस्सा भी, उनके संग कहीं खो गया।

"आज अपनी कहानी लिखने बैठी हूँ तो जैसे यादों का रेला उमड़ आया है। मैंने इस विश्वास के साथ यह सब लिखा है कि इस तरह समाज, हम जैसे लोगों को बेहतर तरीके से समझ सकेगा। हम बाहरी तौर पर दिखने में भले ही थोड़े अलग लगें, पर आपकी तरह ही इंसान हैं और आप सबकी तरह ही दृ शारीरिक और भावात्मक जरूरतें रखते हैं।"

निष्कर्षः

हिंदी सिनेमा में भी किन्नरों के जीवन और उनकी समस्याओं को सफलतापूर्वक चित्रित किया गया। प्रारम्भ में फिल्मों में हिजड़ा पात्र हास्य का विषय रहे किन्तु अब इसमें बदलाव आ गया है। किन्नर जीवन पर गंभीर सामाजिक सरोकार की फिल्में बनने लगी हैं। इस दृष्टि से 'वेलकम टु सज्जनपुर' (श्याम बेनेगल) 'सड़क' (महेश भट्ट), 'संघर्ष' (तनूजा चंद्रा), 'तमन्ना' (महेश भट्ट), 'मस्तकलंदर' (राहुल रवेल), 'फायर' (दीपा मेहता) आदि महत्वपूर्ण हैं। किन्नर जीवन और उससे जुड़ी समस्याओं पर साहित्य में विमर्श प्रारम्भ हो चुका है। भविष्य में जब इस समुदाय द्वारा मानव अधिकारों की लड़ाई व्यापक स्तर पर लड़ी जाएगी तो जागरूक समाज उनके साथ उनके पक्ष में खड़ा होगा। इस अभिशप्त समुदाय को बिना लिंग भेद के सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त होगी। इस दिशा में हिंदी कथाकारों ने स्तुत्य प्रयास कए हैं।

संदर्भ सूची–

1. किन्नर कथा– भीष्म, महेंद्र, सामयिक बुक्स, दरियागंज, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ– 8. 2. यमदीप, माधव, नीरजा, सुनील साहित्य सदन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ–93.
3. किन्नर विमर्श साहित्य और समाज–बिश्नोई, मिलन, विकास प्रकाशन– कानपुर, 2018.
4. शिखंडी–स्त्री देह से परे सिंह, शरद, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020.
5. लैंगिक विमर्श और यमदीप–द्विवेदी, हर्षिता, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2021
6. थर्ड जेंडरय अस्मिता और संघर्ष, संपादक – सिंह, विजेंद्र प्रताप, गॉड, रवि कुमार, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2020.
7. थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ, डॉ० शगुफ्ता नियाज, विकास प्रकाशन– कानपूर, 2018.
8. हिंदी कथा साहित्य में किन्नर जीवन, डॉ० दिलीप मेहरा, वाणी प्रकाशन–नई दिल्ली, 2019
9. थर्ड जेंडर कथा आलोचना, डॉ० एम. फीरोज खान, अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स– कानपुर पदकम 2017.

डॉ0 नरेश कुमारी

सहायक प्रोफेसर; हिंदी विभाग

राजकिय महिला स्नात्कोत्तर महाविद्यालय;

रोहतक (हरियाणा)

124001

12

परिवर्तनशील विश्व परिदृष्य और विदेश नीति

प्रताप सिंह, डॉ0 वेदपाल सिंह

प्रस्तावना– अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के आयाम सदैव गतिशील, जटिल और परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक राष्ट्र की विदेश नीति के निर्धारण एवं मुख्य रूप से उसके संचालन के लिए अत्यन्त चुनौतीपूर्ण रहे है। किसी भी देश की विदेश नीति अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के संदर्भ में उस देश की आन्तरिक आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति होती है। विदेश नीति की संरचना एवं उसके क्रियान्वयन के पीछे उस देश का इतिहास भौगोलिक परिस्थितियाँ, आर्थिक–सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक–दार्शनिक एवं वैचारिक पृश्ठभूमि, सैन्य क्षमतायें तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास की समस्त शक्तियों का मंथन विद्यमान रहता है। वर्तमान विश्व का आर्थिक परिप्रेक्ष्य भी आमूल रूप में बदल रहा है और विश्व तथा क्षेत्रीय स्तरों के सामरिक समीकरणों के साथ साथ देशों की आन्तरिक व्यवस्थाये, उनके राजनीतिक व सामाजिक मूल्य व मान्यतायें एवं नैतिक मापदंड भी प्रभावित हो रहे है। ऐसे परिवेश में किसी भी देश की विदेश नीति का नियोजन एवं निर्धारण निश्चय ही चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि विदेश नीति का मूल उद्देश्य संबद्ध राष्ट्रीय हितों की रक्षा और उनकी अभिवृद्धि में ही मुख्यतः निहित रहता है।

किसी भी देश की सफलता का मूल्यांकन मुख्यतः इसी आधार पर किया जाता है कि उसके माध्यम से राष्ट्रीय हितों की काहं तक रक्षा हुई है। इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करने वाली विदेश नीति ही अधिक सार्थक होती है। विदेश नीति का सैद्धान्तिक पक्ष जव व्यवहार के धरातल पर उतरता है तो यह ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है कि घोषित सिद्धान्तों का इस तरह क्रियान्वयन न हो कि राष्ट्रीय हितो की कीमत चुकानी पड़े। इसके अतिरिक्त किसी भी देश की विदेश नीति की सफलता विदेश नीति के लिए उपलब्ध अन्तः संरचना पर निर्भर है। वर्तमान परिदृष्य में विदेश नीति की दिशा का निर्धारण करना अत्यन्त आवश्यक है। दिशा निर्धारण के लिए सर्वप्रमुख और महत्वपूर्ण तथ्य राष्ट्रीय हितों की पहचान है जब तक राष्ट्रीय हितों की पहचान नही हो पायेगी तब तक इनके प्रति हमारी निश्ठा नहीं बन पायेगी और इन हितों की रक्षा करने की आशा व्यर्थ होगी। सन् 1962 में चीन के भारत पर आक्रमण से पूर्व राश्ट्रीय हितों की बात तो अवश्य होती थी पर इन हितों के स्वरूप और आकार की जानकारी नहीं थी। विदेश नीति की समीक्षा की सफलता समीक्षकों के अन्तर्राष्ट्रीय परिवर्तन के विषय में दृष्टिकाण और इस विचारधारा में कि बदली हुई अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में भारत और कहां तक अपने हितों की सुरक्षा एवं पूर्ति कर सकेगा, पर निर्भर करेगी। भारत की विदेश नीति में 1964 से 1984 तक विशेष महत्व के मुद्दों और इसकी दिशा में परिवर्तन का अध्ययन करने पर हम पाते है कि अपने संक्षिप्त कार्यकाल के बावजूद पहले लालबहादुर शास्त्री और फिर श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत की विदेश नीति को नेहरू युग की रोमांटिक मृगमरीचिका और नैतिक यथार्थवाद के दायरे से निकालकर राजनीतिक यथार्थवाद की राह की ओर अग्रसर किया। अगर हम अलगाववादी और विघटनकारी ताकतों से अपने को बचा लेते है तो देश के भविष्य को लेकर आशायें की जा सकती है।

विदेश नीति का निर्धारण किसी देश द्वारा विश्व के अन्य देशों के प्रति अपनाई गई नीतियों को विश्वव्यापी परिवर्तनशील परिदृश्य के संदर्भ में रख कर ही किया जा सकता है। विश्व राष्ट्रों की विदेश नीति के रुझान के अंतर्गत प्रमुख रूप से तीन प्रकार पाए जाते हैं– (क) अलगाववादी रुझान (ख) गुटनिरपेक्ष रुझान एवं (ग) अधीनस्थताबादी रुझान। भारत गुटनिरपेक्ष रुझान को अपनाने वाला राष्ट्र है गुट निरपेक्ष राष्ट्र स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करते हैं वह विश्व की बड़ी शक्तियों द्वारा स्थापित सैनिक संगठनों में भाग नहीं लेते द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भारत सहित अनेक इन एफ्रो एशियाई एवं लातिनी अमेरिकी देशों ने अपनी विदेश नीति के क्षेत्र में गुटनिरपेक्ष रुझान को अपनाया क्योंकि वह जहां एक और विश्व को गुटों में विभक्त नहीं करना चाहते थे वहीं दूसरी ओर बड़ी शक्तियों के प्रभाव मुक्त स्वतंत्र विदेश नीति का क्रियान्वयन करना चाहते थे।

गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का 14 वां शिखर सम्मेलन 16–17 सितंबर 2006 में क्यूबा की राजधानी हवाना में संपन्न हुआ जिसमें 118 सदस्य राष्ट्रीय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया निर्गुण राष्ट्रीय के इस शिखर सम्मेलन में शामिल हुए दुनिया के 100 से अधिक विकासशील देशों ने एक और जहां आतंकवाद की कड़े शब्दों में भर्त्स्ना की वहीं दूसरी ओर ईरान के विवादास्पद परमाणु कार्यक्रम का भी समर्थन किया। नाम के 14 शिखर सम्मेलन में जहां लेबनान और फलस्तीन के खिलाफ इजराइल हमले की निंदा की गई वहीं ईरान पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा बनाए जा रहे दबाव की भी भर्तस्ना की गई क्योंकि नाम के सदस्य राष्ट्रों का स्पष्ट कहना था कि ईरान को शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा उत्पादन का पूर्ण हक है।

किसी भी क्षेत्र में विश्व की प्रमुख शक्तियों के हित उनके अंतरराष्ट्रीय हितों के ही पूरक होते हैं। यही बात दक्षिण एशिया में सोवियत संघ के लिए भी लागू होती थी। सोवियत संघ के अंतरराष्ट्रीय हितों की पूर्ति में दक्षिण एशिया का एक माध्यम एवं अंग के रूप में कार्य करता था। क्योंकि जब विश्व के सभी क्षेत्रों में सोवियत प्रभाव मुद्रण होता, तभी जाकर विश्व में सोवियत प्रभाव सुदृढ़ होता विश्व के सारे क्षेत्र मिलकर संपूर्ण विश्व का निर्माण करते हैं। यदि कोई क्षेत्र महाशक्ति के प्रभाव क्षेत्र से बाहर है, तो वह महाशक्ति के हित के विपरीत होता है। दक्षिण एशिया में सोवियत हित स्पष्ट रूप से वही था जो उसका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर था। इसके अतिरिक्त दक्षिण एशिया सोवियत संघ

के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह क्षेत्र उसकी दक्षिणी सीमा से कुछ ही किलोमीटर दूर था। वह क्षेत्र पर अपना प्रभाव रखकर अपनी दक्षिणी सीमा को सुरक्षित रखना चाहता था सोवियत संघ सोचता था कि यदि दक्षिण एशिया पर अमेरिका का प्रभुत्व स्थापित हो गया तो उसकी दक्षिणी सीमा निरापद नहीं रहेगी।

रूस ने पूर्व सोवियत संघ की ही तरह अपनी नीतियों को संचालित करने की वचनबद्धता समय–समय पर दोहराई है। परंतु वह अपने देश की आंतरिक परेशानियों में इतना उलझा हुआ है कि वह मात्र घोषणाएं करके ही स्वयं को महाशक्ति बने रहने की आत्म संतुष्टि देता रहता है। यदि वह आज भी सैन्य क्षेत्र में एक महाशक्ति है, परंतु आर्थिक जर्जरता के कारण वह अगले शताब्दी के प्रथम दशक तक महाशक्ति की भूमिका निर्वाह करने की स्थिति में नहीं दिखाई पड़ता है।

रूस दक्षिण एशिया में सोवियत संघ जैसी भूमिका निर्वाह करने की स्थिति में नहीं आ पाया है। परंतु उसकी घोषणाओं और क्रियाकलापों को देखकर ऐसा लगता है कि वह इस क्षेत्र में भारत से अपनी प्रगाढ़ता बनाए रखना चाहता है। यद्यपि 1992 से ही ऐसी सूचनाएं मिल रही थी कि पाकिस्तान रूस से विमानों की खरीद के लिए वार्ता कर रहा है, परंतु दिसंबर 1994 में जब रूसी प्रधानमंत्री चेर्नोमिरदीन भारत की यात्रा पर आए। तो उन्होंने स्पष्ट किया कि रूस पाकिस्तान को विमानों की आपूर्ति नहीं करने जा रहा। इसके अतिरिक्त उन्होंने पाकिस्तान की यह कहकर कड़ी आलोचना की कि वह चेचन्या के विद्रोहियों को सैन्य प्रशिक्षण एवं शस्त्र सहायता दे रहा है।

पूर्व सोवियत संघ प्रारंभ में कश्मीर मुद्दे पर तटस्थ रहा, परंतु जब उसने देखा कि पाकिस्तान पश्चिमी शक्तियों और प्रमुख रूप से अमेरिका से मिलकर कश्मीर समस्या का हल निकालना चाहता है। तो उसने भारत का पक्ष लेना प्रारंभ कर दिया पूर्व सोवियत समाचार पत्रों का मत था, कि कश्मीर समस्या अमेरिका तथा ब्रिटेन के द्वारा उत्पन्न की गई है। जिससे कि भारत और पाकिस्तान दोनों पर नियंत्रण रखा जा सके इजबेस्टिया समाचार पत्र लिखता है, कि अगस्त 1950 में अमेरिका ने पाकिस्तान को कश्मीर समस्या पर समर्थन देने का आश्वासन दिया था।

संयुक्त राष्ट्र संघ में कश्मीर मसले पर अमेरिका तथा पश्चिमी शक्तियों ने पाकिस्तान के पक्ष का समर्थन किया जबकि पूर्व सोवियत संघ ने सदैव भारत के पक्ष में मत व्यक्त किया। 1948 में जब कश्मीर समस्या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में उठाया गया तो सोवियत प्रतिनिधि एग्रो मिको ने भारत के पक्ष में अपना विचार व्यक्त किया। जबकि अमेरिका तथा पश्चिमी शक्तियों ने पाकिस्तान का पक्ष लिया 1952 में जब कश्मीर समस्या पुनः सुरक्षा परिषद में उठाई गई तो सोवियत संघ के प्रतिनिधि जैकब मलिक ने कहा कि यह समस्या अमेरिका तथा ब्रिटेन की समाज साम्राज्यवादी नीतियों के कारण 4 वर्ष से नहीं हल हो पा रही है। क्योंकि वह इसमें अपना हल प्रस्तुत कर रहे हैं। उनका विचार है कि इस प्रकार हम कश्मीर के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करते रहेंगे इसके साथ ही साथ यह भी चाहते हैं कि जब तक यह समस्या भारत और पाकिस्तान में चलती रहे वह संयुक्त राष्ट्र की सेना के रूप में जाकर कश्मीर में बैठ जाएं और वहां पर अपना सैनिक आधार बनाकर अंततोगत्वा उसे अपना उपनिवेश बना ले। दिसंबर 1952 में पुनः जब सुरक्षा परिषद की मीटिंग में कश्मीर समस्या उठाई गई तो सोवियत संघ ने वहां विदेशी सेनाओं को भेजने का विरोध किया।

1955 तक यह स्पष्ट हो चुका था तथा सोवियत नेताओं ने इस बात की घोषणा भी कर दी थी कि वह सुरक्षा परिषद में भारत का पक्ष लेंगे। 20 फरवरी 1957 को कश्मीर मामले पर पहली बार सोवियत संघ ने वीटो का प्रयोग किया। यह भी तो अमेरिका ब्रिटेन आस्ट्रेलिया द्वारा लाए गए प्रस्ताव संख्या 5/3787 के विरोध में प्रयोग किया गया था। इस प्रस्ताव में यह कहा गया था कि कश्मीर में जनमत संग्रह के लिए वातावरण बनाने हेतु वहां पर संयुक्त राष्ट्र सेना भेज दी जाए। भारत ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था। सोवियत संघ के प्रतिनिधि सोबोलेव ने 18 फरवरी 1957 को एक संशोधन प्रस्ताव रखा कि कश्मीर में अब स्थिति बदल रही है। वहां की जनता ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि भारत में उसका विलय हो चुका है। और वे भारत के अभिन्न अंग हैं। सोबोलेव ने पुनः कहा कि कश्मीर मसले पर भारत और पाकिस्तान स्वयं मिलकर बातचीत करें। इसमें किसी भी प्रकार के बाहरी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। यह प्रस्ताव जब सुरक्षा परिषद के द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया तो सोवियत संघ ने 20 फरवरी 1957 को वीटो का प्रयोग करके प्रस्ताव को ही निरस्त कर दिया। 1962 में पुनः सोबियत संघ ने कश्मीर में वीटो का प्रयोग किया। इस बार पाकिस्तान ने जनवरी 1962 में सुरक्षा परिषद में यह कहते हुए प्रस्ताव रखा था कि भारत के नेता अपने भाषणों में पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर क्षेत्र का सैन्य बल के द्वारा छीनने की बात कर रहे हैं। इस पर अमेरिका और पश्चिमी शक्तियों ने कश्मीर में संयुक्त राष्ट्र सेना भेजने की बात प्रस्तावित की। जिसे सोवियत संघ ने वीटो कर दिया।

4 सितंबर 1965 को सोवियत प्रधानमंत्री कोसिगिन ने भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तानी राष्ट्रपति अयूब खान को पत्र लिखकर सुझाव दिया कि कश्मीर समस्या का हल बंदूको से नहीं हो सकता। यह केवल शांतिपूर्ण तरीके से हल किया जा सकता है।

इतिहास और तथ्यों का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि दक्षिण एशिया में सोवियत संघ ने अपने हितों की पूर्ति हेतु समय–समय पर अपनी भूमिका में परिवर्तन किया था। कभी वह मात्र भारत के पक्ष में खड़ा दिखाई पड़ा, तो कभी पाकिस्तान को भी प्रसन्न करने को तत्पर हुआ। परंतु यह नितांत सत्य है कि उसने

अपने हितों के लिए भारत को अपने साथ में रखा। रूस आंतरिक परिस्थितियों से ग्रस्त है। ऐसी संभावना प्रतीत होती है कि वह अगली शताब्दी के प्रथम दशक तक महाशक्ति की भूमिका निर्वाह करने की स्थिति में नहीं आ सकेगा।

सोवियत संघ के विघटन के उपरांत अमेरिकी नेतृत्व में स्थापित तथाकथित नूतन विश्व व्यवस्था के अंतर्गत विश्व आश्चर्यजनक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। साम्यवादी किलो के ढहने तथा विश्व राजनीति में संतुलन की भूमिका निर्वहन करने वाली शक्ति के अभाव में विश्व की भू राजनीति व भू सामरिक स्थितियां त्वरित ढंग से प्रभावित हो रही है। दक्षिण एशिया में भारत की केंद्रीय भूमिका व क्षेत्रीय शक्ति के स्वरूप से अमेरिका काफी सतर्क व संवेदन है। चीन व भारत के मध्य पनप रहे मैत्रीपूर्ण संबंधों को वह अपने लिए भावी चुनौती मानकर दक्षिण एशियाई राजनीति में व्यापक रुचि ले रहा है। चीन पाक आणविक सहयोग ईरान चीन भारत दूरी की संभावनाएं तथा दक्षिण एशिया में आणविक अप्रसार संधि की असफलता से चिंतित होकर अमेरिकी प्रशासन ने ना केवल भारत–पाक संबंधों के बीच केंद्र कश्मीर प्रश्न पर नवीन दृष्टिकोण अपनाया है अपितु हिंद महासागर में पूर्व सोवियत संघ की अनुपस्थिति से उत्पन्न एकता के फल स्वरुप उत्पन्न चीनी सामुद्रिक अभिरुचि पर नियंत्रण हेतु उसने जापान के साथ मिलकर संयुक्त सामुद्रिक रणनीति का निर्धारण किया है। दक्षिण एशिया की भू आर्थिक स्थिति की महत्ता का ही यह परिणाम है कि वह ना तो पाकिस्तान जैसे अपने पूर्व दक्षिण एशियाई सहयोगी के मोह से मुक्त हो पा रहा है। और ना ही प्रजातांत्रिक देश भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों को ईमानदारी से निर्वहन कर इस क्षेत्र में विश्वस्त सहयोगी का चुनाव कर पा रहा है।

आतंकवाद के उभार के कारणों में यूं तो सामाजिक राजनीतिक और धार्मिक कारणों को गिनाया जा सकता है, पर यह कारण सर्वविदित और स्पष्टतः उजागर हैं और आतंकवाद के कारणों के रूप में बार–बार इनका उल्लेख किया जाता रहा है। आज के अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का एक महत्वपूर्ण कारक विदेशी सहायता है। आतंकवादी विभिन्न देशों के बीच की आपसी दुश्मनी का लाभ उठाते हैं। अफगानिस्तान के मुजाहिदीनों और भारत के स्थानीय तथा भारत–चीन तनाव के दिनों में उत्तर पूर्व के आदि वादी संगठनों को ऐसा ही लाभ हासिल होता रहा है। अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के उभार के यह कारक लगभग सभी देशों पर लागू होते हैं। और इन कारकों की समाप्ति तभी संभव है जब राष्ट्र ना केवल आपसी समझदारी का बल्कि समान न्याय पूर्ण नीतियों का भी अनुसरण करेंगे। पर एक ऐसे विश्व में जो आर्थिक राजनीतिक विषमताओं से घिरा हो उसमें विश्व सैन्य शक्ति संतुलन एकमात्र महाशक्ति अमेरिका के पक्ष में बदल चुका हो, जिसमें इजराइल जैसी जनवादी सरकारें हो, जो आतंकवाद को संस्थापित रूप प्रदान कर रही हो, क्या यह संभव हो पाएगा?जब तक विभिन्न देशों के राजनीतिक और आर्थिक हित टकराव की स्थिति में हैं, अंतरराष्ट्रीय मंचों से राष्ट्रीय अध्यक्ष अगर आतंकवाद को मिटाने की कितनी ही गुहार कर ले, आतंकवाद विश्व परिघटना और त्रासद सच्चाई बना रहेगा। तथा आतंकवाद के सवाल पर राष्ट्रीय स्वार्थो की संकीर्ण परिधियों से बाहर विचार करने की जरूरत समय का तकाजा है।

सन्दर्भ सूची

1. जी. डब्लू. चौधरीः मास्कोज इन्फलूयंस इन द इण्डियन सबकान्टीनेंट, इन द वर्ल्ड टू डे, लन्दन, जुलाई 1972, पृ. 304–12
2. प्रकाश चन्द्रः इन्टरनेशनल रिलेशंस, विकास पब्लिशिंग हाउस, न्यू डेलही, 1994, पृ. 102
3. रंजीत कुमार का लेखः तूफान से पहले का सन्नाटाः सामरिक परिदृष्य, नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 04.12.1994
4. द टाइम्स आफ इण्डिया, 24.12.1994
5. वही, पृ. 312
6. देवेन्द्र कौशिकः पूर्वोक्त, पृ. 44
7. यश चौहान का लेखः राष्ट्रीय परिधियों से अलग एक परिघटना, राष्ट्रीय सहारा, नई दिल्ली, 25.05.1993

प्रताप सिंह
एम0ए0 (सैन्य अध्ययन)

डॉ वेदपाल सिंह
रीडर (सैन्य अध्ययन/रक्षा अध्ययन विभाग)
बरेली कालिज, (बरेली)

13

वर्तमान भारतीय समाज में महिलाओं की चुनौतियां और संघर्ष

डॉ0 भुपेन्द्र कौर

सरांश–

हमारें देश की सभ्यता एंव संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। इसका मुख्य कारण है कि वेद, पुराण, उपनिशद, रामायण आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ में भारत की नारी का प्रमुख स्थान है। नारी के विशय में मनु–स्मृति में भी कहा गया है–**"यत्र नायस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"** इसका अर्थ है कि जहाँ नारी की पूजा आराधना की जाती हैं, वहाँ देवताओं का वास होता है। प्रकार हम कह सकते है कि हमारे देश में नारी का कितना महत्व है। नारी के बिना नर का कोई अस्तित्व नही और नर के बिना नारी का कोई अस्तित्व नही अर्थात दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है। भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में स्त्रियों महत्वपूर्ण स्थान और सम्मान दिया गया। स्त्रियों को घर की लक्ष्मी कहा गया, जहाँ नारी का सम्मान, मान–मर्यादा नही वह स्थान नरक के समान होता हैं प्राचीन काल में नारी ने महत्वपूर्ण गौरव प्राप्त किया था। वे युद्ध में अपने पति का साथ देती थी। यह भी कहा जाता है कि यज्ञादि, धार्मिक कामों में यदि पत्नी का सहयोग होना उसके महत्व को प्रदर्शित करता है। लेकिन युग बदला और स्त्रियों को पर्दे में रहने के कठोर आदेश दे दिये गये, स्त्रियों को पर्दे में रहना पडता था। इस प्रकार स्त्री पूर्णतः पुरूष पर निर्भर रहने लगी। आज बदलते युग के साथ नारी की स्थिति में भी परिवर्तन हुआ। आज वह प्रत्येक स्थान पर प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही हैं ऐसा परिवर्तन हमारी रूढियों, अन्धविश्वासों व पुरानी परम्पराओं को समाप्त करने से हुआ हैं। वर्तमान समय में नारी पुरूष के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने के लिए तैयार हैं।

मुख्य भाव्द–नायस्तु, पूज्यन्ते, अस्तित्व, प्रदर्शित

प्रस्तावना–प्राचीन समय में स्त्रियाँ काफी शक्तिशाली हुआ करती थीं, परन्तु वक्त बदलने के साथ नारियों की स्थिति में बदलाव हुआ और वों धर की चार दीवारी में कैद हो गयी। स्वत्रन्त्रता प्राप्ति के बाद स्त्रियों की को पुरूषों के समान अधिकार दिये गये। वे आज हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ कदम मिलाकर चल रही हैं लेकिन अन्तराष्ट्रीय महिला वर्ष, इंटरनेशनल इयर ऑफ गर्ल चाइल्ड के बाद वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण के रूप में मनाया गया। देश की आजादी के इतने वर्षो के बाद भी संविधान द्वारा दिये गये समानता के अधिकार आज भी महिलाओं को नही दिये गये। संवैधानिक प्रावधानों और कानूनों के बाबजूद महिलाओं के उत्पीडन की घटनाओं की लगातार बढोत्तरी हो रही हैं।

आधुनिक महिला जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं लेकिन इसके बाबजूद वे आज पूरी तरह से स्वतन्त्र नही हैं। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार भारत की 24.5 करोड महिलाएँ शिक्षित नही हैं इसके साथ ही 90 प्रतिशत महिलाएँ ऐसी है जिन्हें अपने स्वास्थ्य से संम्बन्धित निर्णय लेने का अधिकार नही है। रिपोर्ट में वर्तमान समय में भी नवजात बच्चियों की हत्या तथा भ्रूण हत्या पर भी बल दिया गया है। पुरूष वर्ग नारी को दासी की संज्ञा देता है। समाज में आज भी सामाजिक दशा काफी दयनीय है। समाज में आज भी जितनी परम्पराएँ, रीति–रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान पाए जाते हैं, वे सब पुरूषों द्वारा निर्मित हैं, इसके पीछे नारी का शोषण छिपा रहता है।

पुरानें समय में भारत में नारियों को उच्च स्थान प्राप्त था। नारियों को सुन्दरता का प्रतीक भी कहा जाता है। जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता का निवास होता हैं वहाँ देवता भी निवास करते हैं। लेकिन धीरे–धीरे नारियों के स्थान में लगातार गिरावट होती गयी। इसके परिणामस्वरूप एक ऐसा दौर आया जव नारियों की सीमा घर की चारदीवारी तक सीमित होकर रह गयी। स्वत्रन्त्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में नारियों की स्थिति काफी अच्छी होने लगी। हमारे देश की नारियाँ आज हर क्षेत्र में पुरूषों की बराबरी करने का हरसम्भव प्रयास कर रही हैं।

नारी की दयनीय स्थिति–भारत की ऐतिहासिक पृष्ठीभूमि में स्त्रियों को महत्वपूर्ण स्थान और सम्मान दिया गया है। शास्त्रों के अनुसार स्त्री गृहलक्ष्मी होमी हैं, जहाँ नारी का सम्मान, मान–मर्यादा नही वह स्थान नरक के समान होता है। प्राचीन काल में नारी ने महत्वपूर्ण गौरव प्राप्त किया था। वे युद्ध में अपने पति का साथ देती थी। इसके अतिरिक्त शास्त्रार्थ, यज्ञादि, धार्मिक कार्यो में भी पत्नी यदि साथ न दे तों वह कार्य अपूर्ण माना जाता है।

समाज में फैली कुरीतियाँ–उस समय समाज में बेमेल–विवाह, सती–प्रथा, बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा आदि कुरीतियाँ प्रचलित थी। इसके साथ–साथ एक बाधा आर्थिकता भी हैं इन सब चीजो से बाहर आने के लिए स्त्री के प्रयासों के साथ पुरूष को भी अपनी उदारता के साथ आगे आना चाहिए। विशेश कर वर्तमान में ये सब काफी मश्किल है, क्योंकी आज भी स्त्री आत्म चेतना और सजगता से भरपूर नही है तो आज भी उसके भविष्य पर संकट बना हुआ है। इसके लिए भारतीय नारी को अपने स्वरूप को खुद ही अपनी पहचान बनाने की आवश्यकता है।

नारी की स्थिति में परिवर्तन–अगर महिला शिक्षित होगी तों वह अपने धर की सभी समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकती है। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय विकास में मदद करती है। इसके साथ–साथ आर्थिक विकास और राष्ट्र के सकल धरेलू उत्पादन की वृद्वि में मदद करती है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में भी मदद करती है। कहा भी गया हैकि–**पढी लिखी लडकी रोशनी धर की, एक लडकी पढेगी तो एक धर पढेगा, बेटी**

बचाओं बेटी पढाओं। स्त्री शिक्षा शब्द स्त्री और शिक्षा को अनिर्वाय रूप से जोडने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरूशों के समान शिक्षित करने से है, दूसरे रूप यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धती को सन्दर्भित करता है। मगर अभी ये परिवर्तन संकेतात्मक है। वास्तिविक परिवर्तन लाने में अभी समय लगेगा। सामाजिक सोच के आधार पर स्त्री को अभी भी देह के अलावा स्वीकार नही किया जा रहा है। इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए वर्तमान की स्त्री के पास अगर मजबूत संगठन नही है तो कम से कम उसकी वर्तमान लडाई का एक प्रारूप तो होना चाहिए। इस प्रकार के बदलाव के लिए कोई प्रतिक्रिया अगर घर, परिवार और समाज से शुरू हो तो स्त्री की दुनिया ही बदल सकती है।

आधुनिक भारतीय समाज में नारियों की प्रमुख समस्याएँ–भारतीय समाज में पुरूषों का एकाधिकार हैं। भारत में परम्परात्मक रूप से पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार व्यवस्था का उल्लेख मिलता है जिसमें परिवार के पुरूश सदस्यों को तों अनेक अधिकार एंव सुविधाएँ प्राप्त है, किन्तु स्त्रियों को ये अधिकार प्राप्त नहीं है। संयुक्त परिवार व्यवस्था में स्त्रियाँ दासी की तरह जीवन व्यतीत करती है। उनका जीवन खाना बनानें, बच्चों को जन्म देने, बच्चों की देखभाल करने एंव परिवार के सदस्यों की सेवा में ही बीत जाता हैं। स्त्रियाँ घरेलू हिंसा व मानसिक पीडा का शिकार रहती हैं। परिवार की शान बान के लिए उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य किया जाता है। भारतीय समाज में स्त्री का या तों देवी पूज्नीय या कुल्टा वाला रूप, दोनों में ही उसका मनुष्य रूप धूमिल होता है। इसी मनुश्य रूप को पाने के लिए वह संधर्ष कर रही है। बदलाब की इस सोच के पीछे शिक्षा एक सबसे बडा कारण है। स्त्री शिक्षा के लिए सचेत और जागरूक हो कर उसे पाने का प्रयास करने लगी और उसी प्रयास के आधार पर वह अपने अधिकारों और अपने बजूउ के प्रति जागरूक हो गई।

नारी उत्थान के प्रयास–सरकार ने स्त्री शिक्षा को बढावा देने के लिए अनेक योजना चला रखी है। जगह–जगह बालिका विद्यालय, आवासीय बालिका विद्यालय चला रखे है। पंचवर्शीय योजनाओं के अन्तरगत स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए विशेश ध्यान रखा जाता है। इसके लिए सरकार ने क्षेत्र के विकास कार्यो में स्त्रियों की भागीदारी को बढावा दिया है। स्त्रीयों की आर्थिक स्थिति को स्वतंत्रता एवं स्वावलंबन प्रदान करना। स्त्रियों की स्वास्थ्य सेवा सुधार एवं परिवार कल्याण में अहम् भूमिका तथा शिक्षा प्रशिक्षण के अवसरों को बढावा देकर महिला शिक्षा की राह आसान करना। आकडों के आधार पर देखा जाये तो वर्तमान में भारत में महिला साक्षरता दर पुरूश साक्षरता से काफी कम है। भारत में इनकी साक्षरता दर 65.6 प्रतिशत और विश्व स्तर पर 81.3 प्रतिशत देखी गई है।

विश्व की साक्षरता दर के हिसाब से भारत में महिला साक्षरता दर 79.7 कम मानी गयी है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी स्थिति अधिक गंभीर बनी हुई है। जहाँ लडको की तुलना में लडकियों का स्कूल में नामांकन कम है, और ड्राप आऊट संख्या भी लडकों के मुकाबले लडकियों की ज्यादा है। अगर इक्कीसवी सदी में भी स्त्री इन सब हकीकतों से कोसो दूर है तो यह विडम्बना ही कही जा सकती है।

निष्कर्ष–यहॉ जो स्त्री का वर्णन किया गया है यह स्वतंत्रता भारत में नारी की स्थिति को चित्रित करता है। वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। अब वह धर की चार दीवारी तक ही सीमित नही है, अब वह खुले वातावरण में कही भी कभी भी आ–जा सकती है। आज की स्त्रीयाँ धन कमाने के साथ–साथ समय का सही प्रयोग करना भी जान गई है। आज की स्त्री शारीरिक उन्नती और मानसिक उन्नती दोनो को ध्यान में रख कर आगे बढ रही है। देख जाये तो स्त्री को बराबरी और आजादी के लिए इतिहास से ही लडाई, संधर्ष और कदम–कदम पर चुनौतियों का सामना करना पडा है। आवश्यकता पडने पर स्त्री ने घर और बहार दोनो जगह पर अपनी भूमिका अदा की है। बहरहाल स्त्री अपने स्वत्व और अपने वजूद के लिए जिस सादगी के साथ प्रयास और संघंर्श कर रही है, उसके परिणाम देर से ही सही सकारात्मक आवश्य होगे। भले ही यह समग्र रूप से संभव न हो लेकिन छोटे–छोटे टुकडों मे देर से ही सही एक दिशा की राह चल रहे है जो एक दिन मंजिल की पर जरूर पहुचेगी।

सन्दर्भ सूची–

1. शुक्ला, डॉ0 सुरेशचन्द्र, शुक्ला डॉ0 अर्चना, भारतीय इतिहास में नारी, शिक्षा ग्रंथागार प्रकाशन, समताकालोनी, रायपुर, ृ 49.53
2. चतुर्वेदी डॉ. मुरलीधर, दू. लां. ए. भारत का संविधान, 1994
3. भारतीय सामाजिक समस्याएद्व रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर, 1999, पृ 2001
4. राठौर, मधु, पंचायतीराज और महिला विकास।
5. कुलश्रेश्ठ रमेशचन्द्र, आदर्श निबन्ध संग्रह, अग्रवाल पब्लिकेशन्स 2012–13, पेज 63–65.
6. सिन्हा आलोक, भारतीय समाज, ग्रीन लीफ पब्लिकेशन्स 2014–15, पेज 93–99.
7. पचौरी गिरीश, प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ .
8. लाल एवं पलोड, शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ.
9. डॉ सुधा बालकृश्णन, स्त्री जागरण की दिशाएँ, नारी : अस्तित्व की पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 69,

डॉ. भुपेन्द्र कौर,
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)
Email:srsingh2472@gmail.com
Mob-9456632300

14

भारतीय इतिहास में बहुलवाद

Dr. Rekha Tyagi

सारांश –

राजसत्ता के खण्डित स्वरूप तथा संघों के महत्व का एक अतिरंजित चित्र प्रस्तुत करने पर भी बहुलवादी दर्शन में सत्य का बहुत कुछ अंश है। गैटिल के शब्दों में, "बहुलवाद कठोर और सैद्धान्तिक विधानवादिता तथा ऑस्टिन के सम्प्रभुता के सिद्धान्त के विरुद्ध एक सामयिक और स्वागत योग्य प्रतिक्रिया है।"

बहुलवाद अराजनीतिक संघों के बढ़ते हुए महत्व पर जोर देता है, इन समुदायों के उचित कार्यक्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप के प्रति सचेत करता है और इस बात का प्रतिपादन करता है कि राज्य के द्वारा न केवल इन समुदायों को मान्यता प्रदान की जानी चाहिए वरन् इन समुदायों को अपने कार्यक्षेत्र में बहुत अधिक सीमा तक स्वायत्तता प्रदान की जानी चाहिए। वर्तमान समय में मानव जीवन की बहिर्मुखी आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए बहुलवाद के इस विचार को प्रशंसनीय कहा जा सकता है। उचित रूप में बहुलवाद के इस विचार को स्वीकार कर लेने से न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में सहायता मिलेगी वरन् राज्य की कार्यक्षमता में भी आवश्यक रूप से वृद्धि होगी।

बहुलतावाद के राजनीतिक दर्शन से पता चलता है कि हम वास्तव में "सब साथ मिल सकते हैं और चाहिए।" प्राचीन ग्रीस के दार्शनिकों द्वारा पहली बार लोकतंत्र के एक आवश्यक तत्व के रूप में मान्यता प्राप्त, बहुलवाद अनुमति देता है और यहां तक कि राजनीतिक राय और भागीदारी की विविधता को प्रोत्साहित करता है। इस लेख में, हम बहुलवाद को तोड़ेंगे और जांचेंगे कि वास्तविक दुनिया में यह कैसे काम करता है।

बहुलवाद

संस्कृति की पूर्व विवेचना से यह स्पष्ट हो चुका है कि संस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न विशेषताएं सामाजिक संरचना को व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं। एक ओर संस्कृति व्यक्तित्व के निर्माण का आधार है दूसरी ओर आज के बदलते हुए समाजों में संस्कृति का सार्वभौमिक रूप समाप्त होता जा रहा है। कुछ पहले के अधिनायकवादी राज्यों में सभी लोगों के व्यवहार उसी संस्कृति से प्रभावित होते थे जिसे राज्य का संरक्षण मिला होता था।

आज के लोकतान्त्रिक और परिवर्तनशील समाजों में एक–दूसरे से भिन्न सांस्कृतिक विशेषताओं वाले समूहों में वृद्धि होने तथा राज्य द्वारा उनकी सहभागिता और योगदान को मान्यता मिलने के कारण अधिकांश समाजों की प्रकृति मिश्रित संस्कृति वाले समाजों के रूप में विकसित हो रही है। विभिन्न समूहों के बीच बढ़ती हुई पारस्परिक निर्भरता और आदान–प्रदान के कारण भी अतीत के पूर्वाग्रहों का प्रभाव कम होता जा रहा है।

इन दशाओं के बीच विभिन्न समूहों की प्रस्थिति तथा उनके व्यवहारों को स्पष्ट करने के लिए कुछ नयी अवधारणाओं का विकास हुआ है। इनमें बहुलवाद, बहुल संस्कृतिवाद तथा सांस्कृतिक सापेक्षता कुछ प्रमुख अवधारणाएं हैं। भारतीय सन्दर्भ में इन अवधारणाओं को समझने से इनकी प्रकृति को सरल रूप में समझा जा सकता है।

बहुत सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि जब किसी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक व्यवस्था के अन्दर अनेक उप–व्यवस्थाएं साथ–साथ विद्यमान रहती हैं तब इस दशा को हम 'बहुलवाद' अथवा बहुलताबाद कहते हैं। बहुलवाद मूल रूप से इस मान्यता पर आधारित है कि विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समूह अपनी भिन्नता के बाद भी एक देश में साथ–साथ रह सकते हैं तथा देश की समृद्धि में सकारात्मक योगदान कर सकते हैं।

बहुलवाद एक ऐसी दशा है जिसमें एक–दूसरे से भिन्न धर्म, भाषा, जाति, क्षेत्र अथवा विश्वासों से सम्बन्धित समूहों में से किसी को अविश्वास की निगाह से नहीं देखा जाता, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय मामलों में हिस्सेदारी करने के पूर्ण अवसर दिये जाते हैं। इस दृष्टिकोण से बहुलवाद का सम्बन्ध चार प्रमुख आधारों से है–

(1) सहिष्णुता, (2) पारस्परिक सहयोग, (3) समूहों के बीच अच्छे सम्बन्ध, तथा (4) सांस्कृतिक पहचान सहिष्णुता एक ऐसी दशा है जिसमें एक–दूसरे से भिन्न विशेषताओं वाले समूहों के बीच किसी तरह के पूर्वाग्रह न हों उनमें एक–दूसरे की संस्कृति और व्यवहारों के प्रति समानता की भावना हो। सहिष्णुता की विशेषता पारस्परिक सहयोग पर आधारित होती है। यह सहयोग सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित होता है।

विभिन्न समूहों के बीच अच्छे सम्बन्ध होना बहुलवाद की आवश्यक दशा है। यदि किसी राज्य में एक–दूसरे से भिन्न धार्मिक या भाषायी समूहों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता हो तथा उनके बीच समय–समय पर संघर्ष होते रहते हो तो इससे बहुलवाद के सामने संकट पैदा हो जाता है। बहुलवाद एक ऐसी दशा है जिसमें एक–दूसरे से भिन्न विशेषताओं वाले समूह किसी दबाव या डर से अपनी विशेषताओं को बहुसंख्यक संस्कृति में विलीन नहीं कर देते बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखते है।

इस अर्थ में बहुलवाद की दशा सात्मीकरण से भिन्न है। सात्मीकरण वह दशा है जिसमें कोई समूह अपने से प्रभावशाली समूह की संस्कृति में अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं को विलीन करा और इस प्रकार

विभिन्न समूहों के सांस्कृतिक व्यवहारों में बाहरी तौर पर कोई अन्तर नहीं रह जाता दूसरी और बहुलवाद यह दशा है जिसमें विभिन्न समूह अपनी विशेष सांस्कृतिक विशेषताओं, सामाजिक नियमों, व्यवहार के तरीकों और उप व्यवस्थाओं को बनाये रखते हैं।

हारलम्बोस ने लिखा है कि बहुलवाद एक ऐसी अवधारणा है जिसके द्वारा लोकतान्त्रिक समाजों में शक्ति के वितरण की प्रकृति को समझा जाता है। मार्क्स तथा अनेक दूसरे विचारक जहां यह मानते हैं कि शाक्ति का केन्द्रीकरण केवल कुछ प्रभावपूर्ण समूहों में होता है, वहीं बहुलवादी परिप्रेक्ष्य यह मानकर चलता है कि समाज में शक्ति बहुत से समूहों में फैली हुई होती है।

हारलम्बोस का विचार है कि औद्योगीकरण बढ़ने से जब समाज में एक–दूसरे से भिन्न हितों वाले समूहों में वृद्धि होना आरम्भ हुई तब एक ओर श्रम–विभाजन बढ़ा तथा दूसरी ओर एक दूसरे से भिन्न व्यावसायिक समूहों का विकास होने लगा। सभी व्यावसायिक समूहों के हित और आवश्यकताएं भिन्न–भिन्न होने के कारण ऐसे संगठनों का निर्माण होने लगा जिनके द्वारा वे अपनी शक्ति को बढ़ाकर अपने हितों को पूरा कर सकें।

भारतीय समाज में बहुलवाद

भारत के सन्दर्भ में बहुलवाद की दशा को स्पष्ट करते हुए एम. एन. श्रीनिवास ने लिखा है कि यहां स्वतन्त्रता से पहले तक पवित्रता और अपवित्रता के आधार पर विभिन्न जातियों और उप–जातियों की दूरी निरन्तर बढ़ रही थी. वहीं एक आज ऐसी संस्कृति को प्रोत्साहन मिला है जिसमें विभिन्न जातियां संगठित होकर अपने बड़े–बड़े संघों की स्थापना कर रही हैं।

इसके फलस्वरूप यहां के आर्थिक और राजनैतिक जीवन में जिन जातियों का कोई योगदान नहीं था, उनकी आर्थिक और राजनीतिक पहचान स्पष्ट होने लगी प्रोफेसर एम.सी. दुबे ने बहुलवाद की प्रकृति को आधुनिकीकरण से जोड़कर स्पष्ट किया है। उन्होंने लिखा कि आधुनिकीकरण के कारण भारत की वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक व्यवस्था समाज के केवल संभ्रान्त वर्ग से प्रभावित नहीं है, बल्कि सभी क्षेत्रों में मध्यम वर्ग और विभिन्न जाति समूहों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। संचार के क्षेत्र में होने वाली क्रान्ति ने सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाकर बहुलवाद को प्रोत्साहन दिया है।

भारत में बहुलवाद का एक विशेष रूप सांस्कृतिक अभिसरण (ब्नसजनतंस ब्वदअमतहमदबम) के रूप देखने को मिलता है। अभिसरण का तात्पर्य विभिन्न वाले समूहों की व्यवहार के तरीकों और भौतिक लक्षणों का एक सामान्य बिन्दु पर मिलना है। अभिसरण की प्रक्रिया ऐच्छिक होती है तथा इसे दबाव के द्वारा प्रभावपूर्ण नहीं बनाया जा सकता।

एक ही धर्म से सम्बन्धित लोग अनेक सम्प्रदायों और मतों में विभाजित हैं तथा सभी सांस्कृतिक समूहों के व्यवहार– प्रतिमान एक–दूसरे से अलग है। सम्पूर्ण भारतीय समाज बहुत से भाषायी समूहों में विभाजित है वर्ष 2011 में भारत के संविधान द्वारा बोडो, संथाली, मैथिली तथा डोगरी भाषा को मान्यता देने के बाद अब संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं की संख्या 22 है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण देश अनेक क्षेत्रों में विभाजित है तथा प्रत्येक क्षेत्र की सांस्कृतिक और आर्थिक विशेषताओं में काफी भिन्नता देखने को मिलती है।

बहुलवाद की प्रमुख मान्यतायें (सिद्धांत)

1) राज्य केवल एक समुदाय है : बहुलवादी राज्य को सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तथा नैतिक संस्था के रूप में स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार समाज की वर्तमान स्थिति और रचना के आधार पर राज्य अन्य समुदायों की भाँति ही एक समुदाय के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। मानवीय जीवन की आवश्यकताएँ बहुमुखी होती हैं और राज्य मनुष्य की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। इसी के कारण राज्य के अतिरिक्त अन्य समुदायों का भी उपयोगी अस्तित्व है। राज्य का कार्य मुख्यतया जीवन के राजनीतिक पहलू से सम्बन्धित है और बहुलवादियों के अनुसार उसे अपने ही क्षेत्र तक सीमित रहना चाहिए, जिससे अन्य समुदाय स्वतन्त्र रूप से व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं का यथेष्ठ विकास कर सकें।

2) बहुलवादी राज्य और समाज में अन्तर करते हैं : आदर्शवादियों की भाँति बहुलवादी राज्य और समाज को एक नहीं मानते हैं वरन् उन्हें विभिन्न इकाइयों के रूप में स्वीकार करते हैं। बहुलवाद राज्य को अन्य समुदायों के समान ही एक समुदाय मानता है और समाज को राज्य की तुलना में बहुत अधिक व्यापक संगठन बताता है। राज्य समाज का एक ऐसा अंगमात्र है जो उद्देश्य और कार्यक्षेत्र की दृष्टि से समाज का सहगामी नहीं हो सकता।

3) बहुलवादी नियन्त्रित राजसत्ता में विश्वास करते हैं : बहुलवाद असीमित सम्प्रभुता का खण्डन करता है और आन्तरिक व बाह्य दोनों ही क्षेत्रों में सम्प्रभुता को सीमित मानता है। आन्तरिक क्षेत्र में राज्य की शक्ति स्वयं अपनी प्रकृति तथा नागरिकों एवं समुदायों के अधिकारों से सीमित होती है तथा बाहरी क्षेत्र में राज्य की शक्ति अन्तर्राष्ट्रीय कानून तथा अन्य राष्ट्रों के अधिकारों से सीमित है। इस प्रकार बहुलवाद आन्तरिक और बाहरी दोनों ही क्षेत्रों में राज्य की निरंकुश शक्ति का विरोधी है।

4) बहुलवाद के अनुसार कानून राज्य से स्वतन्त्र और उच्च है : बहुलवादी सम्प्रभुता के परम्परागत प्रतिपादकों के विपरीत कानून को राज्य से स्वतन्त्र और उच्च मानते हैं। इस सम्बन्ध में फ्रांसीसी विचारक डिग्विट और डच

विचारक क्रैव के विचार उल्लेखनीय हैं। डिग्विट (क्नहअपज) के अनुसार, 'विधि राजनीतिक संगठन से स्वतन्त्र, उससे श्रेष्ठ और पूर्वकालिक होती है। विधि के बिना सामाजिक एकता या संगठन या मनुष्यों का एक–दूसरे पर निर्भर करना सम्भव नहीं है। राज्य का व्यक्तित्व एक निरी कल्पना मात्र है। विधि राज्य को सीमित करती है, राज्य विधि को सीमित नहीं करता।' क्रैब ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए हैं।

5) बहुलवाद विकेन्द्रीकरण में विश्वास करता है : बहुलवाद आदर्शवादी दर्शन की भाँति केन्द्रित राज्य में विश्वास नहीं करता है वरन् यह विकेन्द्रीकरण को ही राज्य की वास्तविक उपयोगिता का आधार मानता है। बहुलवाद के अनुसार, स्थानीय समस्याएँ भी कम महत्वपूर्ण नहीं है और इन स्थानीय समस्याओं का समाधान शक्ति के केन्द्रीकरण की पद्धति से नहीं किया जा सकता है। बहुलवादियों के विचार से राज्य को चाहिए कि अपनी केन्द्रित सत्ता को व्यावसायिक प्रतिनिधित्व की प्रणाली के आधार पर विकेन्द्रित करके अन्य समुदायों में विभाजित कर दे और इस प्रकार एक संघात्मक सामाजिक संगठन की स्थापना की जाये।

बहुलवाद की आलोचना

(1) बहुलवाद का तार्किक निष्कर्ष अराजकता है रू बहुलवाद के विरुद्ध आलोचना का सबसे प्रमुख आधार यह है कि बहुलवादी विचारधारा को स्वीकार करने का स्वाभाविक परिणाम अराजकता की स्थिति होगा। यदि प्रत्येक समुदाय को राज्य के समान मान लिया जाये और उन्हें सम्प्रभुता का आनुपातिक अधिकार भी समर्पित कर दिया जाये तो समाज में कानूनविहीन स्थिति उत्पन्न हो जायगी। बहुलवादी विचारक भी इस तथ्य से परिचित हैं। इसी कारण सम्प्रभुता का समुदायों में विभाजन करने के बाद भी बहुलवाद राज्य को समाज के विभिन्न समुदायों में समन्वय और सामंजस्य स्थापित करने की शक्ति प्रदान करता है, किन्तु राज्य के द्वारा उस समय तक इस प्रकार का कार्य नहीं किया जा सकता जब तक कि उसे वैधानिक दृष्टि से सर्वोच्च स्थिति प्राप्त न हो।

(2) बहुलवाद कतिपय भ्रामक धारणाओं पर आधारित है रू बहुलवाद कुछ मिथ्या धारणाओं पर आधारित है। यह समझना गलत है कि प्रत्येक समुदाय का कार्यक्षेत्र एक–दूसरे से सर्वथा पृथक् होता है और मानवीय कार्यों को ऐसे विभागों में विभक्त किया जा सकता है जिनका कि एक–दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध न हो। समाज के वर्तमान संगठन में विभिन्न हितों और आस्थाओं का पारम्परिक संघर्ष नितान्त स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में, यदि समाज में कोई अन्तिम वैधानिक सत्ता न हो तो विभिन्न समुदायों के पारस्परिक संघर्ष के कारण एक अस्वस्थ वातावरण उत्पन्न हो जायगा, जिसमें मानवीय प्रगति लगभग असम्भव ही हो जायेगी। अतः बहुलवादियों का यह समझना असत्य है कि प्रत्येक समुदाय बिना किसी संघर्ष के साधुवत रूप में अपने कर्तव्यों को निभाता रहेगा।

(3) सभी समुदाय समान स्तर के नहीं हैं रू बहुलवादी विचारधारा के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण तर्क यह है कि इस विचारधारा में समाज के सभी समुदायों को समान स्तर का मान लिया गया है। प्रत्येक समुदाय को राज्य के समान मान लेना बहुलवादियों की एक भारी भूल है। वास्तव में, राज्य संस्था के अपने विशेष कार्यों के कारण उसकी स्थिति अन्य सभी समुदायों से भिन्न और विशेष होती है।

बहुलवाद का महत्व

राजसत्ता के खण्डित स्वरूप तथा संघों के महत्व का एक अतिरंजित चित्र प्रस्तुत करने पर भी बहुलवादी दर्शन में सत्य का बहुत कुछ अंश है। गैटिल के शब्दों में, "बहुलवाद कठोर और सैद्धान्तिक विधानवादिता तथा ऑस्टिन के सम्प्रभुता के सिद्धान्त के विरुद्ध एक सामयिक और स्वागत योग्य प्रतिक्रिया है।"

बहुलवाद अराजनीतिक संघों के बढ़ते हुए महत्व पर जोर देता है, इन समुदायों के उचित कार्यक्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप के प्रति सचेत करता है और इस बात का प्रतिपादन करता है कि राज्य के द्वारा न केवल इन समुदायों को मान्यता प्रदान की जानी चाहिए वरन् इन समुदायों को अपने कार्यक्षेत्र में बहुत अधिक सीमा तक स्वायत्तता प्रदान की जानी चाहिए। वर्तमान समय में मानव जीवन की बहिर्मुखी आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए बहुलवाद के इस विचार को प्रशंसनीय कहा जा सकता है। उचित रूप में बहुलवाद के इस विचार को स्वीकार कर लेने से न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में सहायता मिलेगी वरन् राज्य की कार्यक्षमता में भी आवश्यक रूप से वृद्धि होगी।

महत्वपूर्ण परिणामः बहुलवाद

बहुलवाद एक राजनीतिक दर्शन है जो मानता है कि विभिन्न मान्यताओं, पृष्ठभूमि और जीवन शैली के लोग एक ही समाज में सह–अस्तित्व में रह सकते हैं और राजनीतिक प्रक्रिया में समान रूप से भाग ले सकते हैं।

बहुलवाद मानता है कि इसका अभ्यास निर्णयकर्ताओं को उन समाधानों पर बातचीत करने के लिए प्रेरित करेगा जो पूरे समाज के ष्सामान्य अच्छेष् में योगदान करते हैं।

बहुलवाद मानता है कि कुछ मामलों में, अल्पसंख्यक

समूहों की स्वीकृति और एकीकरण कानून द्वारा प्राप्त और संरक्षित किया जाना चाहिए, जैसे कि नागरिक अधिकार कानून।

बहुलवाद के सिद्धांत और यांत्रिकी को संस्कृति और धर्म के क्षेत्रों में भी लागू किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

- "बहुलवाद।" सामाजिक अध्ययन सहायता केंद्र।
- "विविधता से बहुलवाद तक।" विदेश महाविद्यालय। बहुलवाद परियोजना।
- "ऑन कॉमन ग्राउंडरू अमेरिका में विश्व धर्म।" विदेश महाविद्यालय। बहुलवाद परियोजना।
- क्रिस बेनेके (2006)। "सहिष्णुता से परेरू अमेरिकी बहुलवाद की धार्मिक उत्पत्ति।" ऑक्सफोर्ड छात्रवृत्ति ऑनलाइन। ISBN–13 प्रिंट करें : 9780195305555
- बार्नेट, जेक (2016)। "दूसरे की अन्यता का सम्मान करें।" द टाइम्स ऑफ इज़राइल।

Dr. Rekha Tyagi
Associate Professor in History
Pt C.L.S. Government College, Karnal,
Haryana

15

देवपरम्परा में संगीत सम्बन्धी शास्त्रोक्त वर्णन– हिमाचल प्रदेश के सन्दर्भ में

डॉ० संतोष कुमार

सारांश

देवपरम्पराओं से सम्बन्धित नित्य क्रियाएं जो हमारे समाज में विद्यमान है तथा जो निरन्तर देखी अथवा व्यव्हार में लाई जाती है इनका संगीत से सीधा सम्बन्ध होता है क्योंकि हिमाचल प्रदेश के ऊपरी क्षेत्रों में देवता से सम्पर्क करने का सीधा साधन मंत्रों के माध्यम से देखा जाता है अपितु वाद्य यंत्रों की शत प्रतिशत भूमिका देवता को उठाने से लेकर नाचने तक प्रत्यक्ष रूप से देखी जा सकती है। मान्यता यह है कि वाद्य वादन के बिना से देवता क्रियाशील ही नहीं होता अर्थात् देवी–देवता की पालकी या रथ में कोई भी हलचल अथवा गतिविधि नहीं देखी जा सकती है। सामाजिक परिवेश के निरन्तर अनुभव से यह ज्ञात हुआ कि शास्त्रोक्त मंत्रों के माध्यम से ही देवी–देवताओं का आवाहन एवं गुणगान किया जाता है। इसके अतिरिक्त पहाड़ी परिवेश में अनेकों गायन विधाएं हैं जो देवी–देवताओं को मनाने, रिझाने अथवा उनकी प्रशंसा हेतु गाई जाती हैं जो आज के समय में विद्यमान है तथा निरन्तर गतिशील है और इनका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से देखा एवं महसूस किया जाता है।

प्रपत्र

किसी विशिष्ट अथवा विशेष विषय से सम्बन्धित वह समूचा ज्ञान जो विधिवत् तौर से संग्रहित एवं संरक्षित करके रखा गया हो उसे शास्त्र कहा जाता है। यदि हम शास्त्रोक्त की बात करें तो इसका अभिप्राय यह है कि शास्त्रों के अनुसार या शास्त्रयुक्त किसी विषय के बारे में क्या कहा गया है अथवा शास्त्रों के अनुसार किसी कार्य को विधिवत ढंग से किस प्रकार सम्पूर्ण किया जाता है। भारतीय संगीत में 'ऊँ' शब्द को आधार माना गया है जिसके अनुसार अथवा उच्चारण का सीधा सम्बन्ध ईश्वर से जोड़ा गया है। विद्वानों अथवा गुरुजनों की यह धारणा रही है कि यदि सच्चे मन या अन्तर्ध्यान होकर संगीत को गाया और बजाया जाए तो सीधा परमात्मा से सम्पर्क साधा जा सकता है। कहने का अभिप्राय यह है कि संगीत एवं लोक संगीत देवी–देवताओं एवं उनकी परम्पराओं से जुड़ा होता है। भारतीय समाज में कई प्राचीन एवं समय के साथ–साथ लिखे गए शास्त्र विद्यमान है। वैदिक युग को भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का प्राचीनतम युग माना जाता है। भारत में शास्त्रों के सन्दर्भ में वेदों को सर्वोच्च एवं सर्वप्रथम माना गया है। वेदों के अलावा अनेकों शास्त्रों जैसे– पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र, वनस्पति शास्त्र इत्यादि का वर्णन अपितु उपलब्धता है परन्तु इन शास्त्रों की अपनी पृथक महत्त्वता होते हुए संगीत से सीधा सम्बन्ध देखने को नहीं मिलता है। सभी युगों में संगीत व्यापक रूप से विद्यमान रहा है परन्तु संगीत या तो मनोरंजन या फिर धार्मिक अनुश्ठानों को पूर्ण करने हेतु प्रयुक्त होता था।

भारत देश के 28 राज्यों में हिमाचल प्रदेश एक स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है जिसे 'देवभूमी' के नाम से सम्बोधित किया जता है। इसमें 12 जिलें है जो अपनी– अपनी देव परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध हैं। हिमाचल प्रदेश देव परम्पराओं एवं देवी–देवताओं से सम्बन्धित भिन्न–भिन्न गतिविधियों में अग्रणी भूमिका निभाता है। यहां देवी–देवताओं के प्रति सच्ची श्रद्धा एवं पूज्य भावना हर एक इन्सान के अन्दर देखी एवं पाई जाती है। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि गांव ही नहीं अपितु शहरों में बसने वाले लोग भी देवी–देवताओं से सम्बन्धित रीति–रिवाज़ों और परम्पराओं का स्वेच्छा से अंखे मूंद कर पालन करते हैं। हिमाचल प्रदेश के अधिकतर मेले, त्योहार, शादी–विवाह तथा अन्य संस्कार और धार्मिक कार्य देवी–देवताओं की विधि पूर्वक अनुमति से आरम्भ एवं समाप्त किए जाते हैं। ये सभी गतिविधियां ब्राह्मण, ज्योतिष, पूजारी तथा देवताओं द्वारा नियुक्त विशेष व्यक्तियों द्वारा सम्पूर्ण किए जाते हैं। ये कार्य प्रायः देवताओं की आरती से लेकर सायं की पूजा तक सम्पूर्ण विधि विधान से सम्पन्न होते हैं। समस्त देवी–देवताओं की पूजा का मूल 'मंत्रोचारण' माना जाता है। किसी भी परम्परा एवं धार्मिक गतिविधि को आरम्भ से लेकर सम्पन्नता तक मंत्रों के द्वारा ही पूर्ण किया जाता है। इन सभी धार्मिक गतिविधियों में शास्त्रोक्त क्रिया प्रणाली अथवा मंत्र ही उच्चारित किए जाते हैं। प्रत्येक पुरोहित एवं पूजारी का मंत्रोचारण का तरीका स्वयं का होता है। जोकि संगीत की दृष्टि से तालबद्ध न होते हुए लय प्रधान होता है। इसके अतिरिक्त अनेकों क्रियाएं हैं जो नित्य प्रतिदिन देवी–देवताओं की क्रियाशैली से सम्बन्धित है तथा शास्त्रों के अनुसार लिखित है और अनिवार्य रूप से निभाई जाती हैं इन शास्त्रोक्त क्रियाओं के बिना कोई भी दैविय कार्य आरम्भ अथवा सम्पन्न नहीं हो सकता और नित्य देखी जाती हैं जिसक वर्णन इस प्रकार हैः–

स्वास्ति वाचन

स्वास्तिवाचन एक मंत्र है जिसे सभी मंत्रों का मूल मंत्र कहा जाता है। इस मंत्र के बिना छोटी–से–छोटी पूजा से लेकर बड़े–से–बड़े यज्ञ या अनुष्ठान सम्पूर्ण नहीं हो सकते या सम्पूर्ण नहीं माने जाते हैं। शास्त्रों में यह प्रमाण है कि इस मंत्र के माध्यम से समस्त 33 कोटि देवी–देवताओं का आवाहन एवं पूजन किया जाता है। सभी पूजा अनुष्ठानों में उच्चारित किया जाने वाला यह मुख्य मंत्र है। इसका उच्चारण समस्त मंत्रों की तरह अनिबद्ध तथा पण्डित व पुरोहित अपनी–अपनी लय के अनुसार करते हैं। मंत्रों को सरल एवं रोचक बनाने के लिए इन्हें संगीतबद्ध किया गया है। मंत्रों के संगीतबद्ध होने के कारण जब दैविक कार्यों में मंत्रोचारण किया जाता है तो मंत्रों के सांगीतिक प्रभाव से सम्पूर्ण वातावरण व पूजा में सम्मिलित लोग मंत्रमुग्ध एवं भाव–विभार होकर तन–मन से अपनी हाज़िरी सुनिश्चित

करते है।

हरि ओंम् स्वस्ति न इन्द्रो वृहश्रवाः।।

स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः।।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेभिः।।

पूजा संकल्प

किसी भी पूजा, अनुष्ठान, देवी–देवता सम्बन्धि कार्य में स्वास्तिवाचन के पश्चात् पूजा सम्पूर्ण करने के लिए पूजा संकल्प मंत्र का उच्चारण किया जाता है। इसमें यजमान से सम्बन्धित सम्पूर्ण व्यौरा नाम, गांव, खानदन, गोत्र इत्यादि उच्चारित किया जाता है।

मंत्रों को तो भारतीय संस्कृति का आधार माना जाता है। पहाड़ी परिवेश में मंत्रों के अलावा अनेकों ऐसी परम्पराएं और धारणाएं विद्यमान हैं जिनके बिना देवी–देवताओं के कार्य अधुरे माने जाते हैं। ये सभी क्रियाएं गायन एवं वादन रूप में देवताओं से जुड़ी रहती हैं।

बामण ग्रहण

यह विधि देवी–देवता का विराट रूप माना जाता है। समस्त शिमला जनपद में यह क्रिया देखने को मिलती है और कहा जाता है कि प्राचीन समय से यह निरन्तर चली आ रही है। इस विधा में देवता अपने गूर या माली के अन्दर छेर कर या खेल कर अवतरित होते हैं। विशेषकर किसी मंदिर की प्रतिष्ठा समारोह, गडाई कार्यक्रम और किसी दैत्य शक्ति को भगाने के लिए भी देवता बामण ग्रहण करते हैं। इस प्रक्रिया में निरन्तर वाद्यों का वादन चलता रहता है जिससे देवता निरन्तर क्रियाशील रहता है। बामण एक देव शस्त्र है जो कि अष्ठधातु, लोहे की छड़ या चांदी की नुकीली छड़ होती है। इसको कई देवता अर्थात् गूर या माली में अवतरित देवता गाल को छेदकर आर–पार ग्रहण करते है और दूसरे प्रकार से नाक को छेदकर ग्रहण की जाती है। इसकी विशेषता या खास बात यह है कि इसको ग्रहण करते समय अथवा ग्रहण करने के पश्चात् गूर या माली से खून तक नहीं निकलता तथा किसी भी प्रकार घाव देखने को नहीं मिलता है। जब बामण को निकाला जाता है तो गूर या माली को तुरन्त घी से भरा कटोरा पिलाया जाता है। 'बेखनी' नामक कांटे के पत्ते से घाव के छेद को भरा जाता है। वाद्ययंत्रों द्वारा रौद्र रस युक्त वादन सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान चलता रहता है। वामण ग्रहण प्रक्रिया ऊपरी शिमला क्षेत्र में देव संस्कृति एवं देव आस्था का अभिन्न और महत्त्वपूर्ण अंग है।

छमणछणी

छमणछणी देवी–देवता के किसी विशेष समारोह में शिरक्त करने के पश्चात् एक स्वागत हेतु की जाने वाली क्रिया होती है। इसमें सर्वप्रथम पवित्रमंत्र, मांगलिक मंत्र, तिलक मंत्र, आरती दर्शन, स्वस्ति वाचन आदि शास्त्रानुसार उच्चारण होता है। कहा जाता अथवा देखा गया है कि जहां किसी विशेष व्यक्ति द्वारा किसी पावन कार्य हेतु देवी–देवता आमिन्त्रत किए जाते हैं अपितु किसी घर की खुशी के माहौल में, प्रतिष्ठा हेतु और किसी विपदा के समय देवता निमन्त्रण पर जाते है तो देवता का स्वागत प्रथानुसार चलित 'छमणछणी' से किया जाता है। इसके अतिरिक्त बड़े–बड़े कार्यों, यज्ञों, अनुष्ठानों जैसे भूण्डा, शांत, मंदिर की प्रतिष्ठा या बड़े महोत्सवों में जहां अधिक संख्या में देवी–देवता एकत्रित हो, छमणछणी को प्रतिस्पर्धा के रूप में देखा जाता है। इस प्रक्रिया में जो भी देवी–देवता विजयी घोषित होता है या सर्वप्रथम 'वेदी' जो हवन की पवित्र जगह होती है, में अपना शीश नवाजता है वह दस 'छमणछणी' प्रतिस्पर्धा में विजयी हो कर आमुख कार्य की मेजबानी करने के लिए नियुक्त किया जाता है। रामपुर बुशहर के ऐतिहासिक फाग मेले में जब बुशैहर के तीन ईष्ट देवता गसो, बसाहरू और जाख होलिका दहन के मौके पर हवा में आटा एवं रंग उड़ा कर फाग मेले का आगाज़ करते हैं, इसे 'छमणछणी' का एक भाग माना जाता है। आटे को हवा में फैंकना देव सम्बन्धी किसी भी पावन कार्य का अभिन्न एंव अति शुभ अंग कहा जाता है। प्राचीन काल से चली आ रही परम्परा में 'छमणछणी' गायन रूप में देवी–देवता के स्वागत में अनिबद्ध रूप में गाई जाती हैं। जो कि विभिन्न क्षेत्रों में वहां की बोली एवं भाषा में गाई जाती है।

देवकार

पहाड़ी बोली में 'कार' का अर्थ होता है 'कार्य' जिसे स्थानीय भाषा में 'कारज' भी कहा जाता है। देवता सम्बन्धी कार्य अथवा काम 'देवकार' कहलाता है जिसमें देव हवन, अनुष्ठान, बामण ग्रहण, देव स्नान, देवता का ध्यान, छरावण अर्थात् छेरना–हिंगरना कार्य, पजावण पूजा सम्बन्धी कार्य, देवता का नृत्य, छमणछणी इत्यादि सम्मिलित होता है। देवता के कारज में वाद्य यंत्रों का वादन सर्वोच्च भूमिका निभाता है। वाद्य यंत्रों में शंख, घण्टा, घण्टी, ढोल, करनाल, काहल, हरणशींग, भाणटा व गसा वादन देवी–देवता की कार्यप्रणाली में महत्त्वपूर्ण माने जाते है। गसा वादन देवकार में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। गसा तांबा अथवा पीतल की धातु का दो थाली नुमा वाद्य होता है जो आपस में टकराने से जोशपूर्ण ध्वनि उत्पन्न करता है। इसे देव परम्परा का अभिन्न अंग माना जाता है। गसा वाद्य देवता को नाचने या नचाने के लिए प्रेरित करता है। इसके वादन में शास्त्रीय तालों का भी प्रयोग होता है जैसे तीनताल या एकताल की मात्राएं बजाई जाती है जिससे आम लोग अनभिज्ञ होते हैं। देवपरम्परा को यदि संगीत से जोड़ा जाए तो प्रातः काल देवता के कपाट खुलते समय घंटी एवं शंख वादन, भजन कीर्तन, आरती इत्यादि सांगीतिक गतिविधयां देवी–देवता को सीधी श्रद्धा मानी गई है। देवता को मोहरे पहनाना, उठाना, दूसरे देवता से मिलन जिसे 'नरौण' कहते है, देवता की खेल जिसे छरावण कहते हैं इन सब गतिविधयों में बेड़, झाड़ा इत्यादि लोक वादन निरन्तर किया जाता है जिससे यह प्रतीत होता है कि देवी–देवता प्रत्यक्ष रूप से संगीत से जुड़े हैं अपितु हम यह कह सकते हैं कि नित्य क्रिया कलापों से विधित होता है कि देवी–देवता संगीत बिना अधूरे हैं। मंत्रों के उच्चारण बिना देवी देवता शक्तिहीन होते है और मंत्रोंच्चारण से उनमें शक्ति का आवाहन एवं आगमन होता है जो कि संगीत का ही एक अंग है।

गड़ाई

गड़ाई देव परम्परा का अभिन्न अंग है तथा देवी–देवता से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है। वास्तव में गड़ाई का अर्थ है देवी या देवता से सीधा सम्पर्क साध कर देवता की बात का व्याख्यान सभी लोगों के सामने करना। इस कार्य को पूर्ण करने का माध्यम गूर एवं माली होता है जो देवता से सीधी बातचीत करता है। शास्त्रों एवं लोक मान्यता के अनुसार लोहड़ी पर्व जिसे पहाड़ी बोली में 'माघा साजा' भी कहा जाता है। मकर संक्रान्ति के उपरान्त सभी देवी–देवता एक महीने के स्वर्ग प्रवास पर चले जाते हैं। इनमें से कुछ देवता 15 दिन के प्रवास के बाद ही लौट आते हैं, जबकि अधिकतर देवता एक महीने के बाद फाल्गुन मास की संक्रन्ति, जिसे पहाड़ी बोली में 'मनघावण' कहा जाता है, के दिन अपने देवालय में लौट आते हैं। मनघावण के दिन देवता अपने गूर या माली के माध्यम से पूरे वर्ष का फल अर्थात् लेखा–जोखा, अपने देश–दशोटी (समस्त इलाका) के लिए कैसा रहेगा कहने का अर्थ है कि देवता का इलाका रोग–बीमारी, धन–धान्य, फल–फसलों के लिए कैसा रहेगा इसका व्याख्यान खेल कर अथवा छेर कर देवता करता है। देवता अपनी स्थानीय भाषा में गूर के माध्यम से अनिबद्ध रूप में गाकर करता है। कहा जाता है कि यह कला गूर या माली को देवता की अखण्ड कृपा तथा देवता की ही देन होती है। जिसे गड़ाई कहते हैं और यह वर्तमान में भी हर मंदिर में प्रचलन में है।

इसके अतिरिक्त लामण गायन विधा देवी–देवता को रिझाने का सबसे शक्तिशाली बीज मंत्र माना जाता है जो कि अनिबद्ध रूप से गाया जाता है और स्थानीय पहाड़ी बोली में बोला जाता है। उदाहरण के तौर पर रामपुर तहसील के गसो गांव के आराध्य देवता काजल जिन्हें महारुद्र के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है उनके इस्तकबाल अथवा शान में गाया जाने वाले लामण के बोल इस प्रकार से हैः–

देवा राजैया काडे काजडा तेरो हीलौ पीतड़ौ ढोलौ,
तियौ पाए पौगड़ौ जियौ तेरौ मोनणू बोलौ।।

देवता साहब की प्रशंसा में इस तरह के बोल स्थानीय औरतों द्वारा किसी भी आयोजन से पहले गाए जाते हैं। इसका भावार्थ यह है कि देवता को राजा से भी उच्च शिरोमणी मान रहे हैं और यह विनती कर रहे हैं कि हे ईष्ट देवता आपका लाव–लश्कर आपका रथ और यात्रा पीतल के ढोल से सुशोभित होती है। अतः आप प्रजा के कल्याण हेतु जो उचित लगे वो हुकुम दीजिए जो सदैव सर्वमान्य रहेगा। लामण अधिकतर प्राचीन समय से ही तार सप्तक में गाया जाता है। लोगों का मानना होता है कि ऊँची आवाज़ में प्रार्थना भगवान तक अवश्य पहुंचती है। इसी प्रकार अलग–अलग देवी–देवता की प्रशंसा और शान में भिन्न–भिन्न बोलों से प्रसन्न होकर देवता उनके समक्ष पालकी रोक कर, उनकी तरफ झुक कर अपनी प्रशंसा में और गाने का आग्रह करता है और प्रसन्न होकर आशीर्वाद प्रदान करता है।

निष्कर्षः

अंत में हम कह सकते हैं कि हिमाचल प्रदेश की देव परम्परा में संगीत का सर्वोच्च स्थान है तथा यहां के जनमानस देव सम्बन्धि क्रिया–क्लापों एवं परम्पराओं को सर्वोपरि मान कर इसकी पालना करते हैं। हिमाचल प्रदेश की देव परम्पराओं में संगीत की तीनों विधायों गायन, वादन व नृत्य का समावेश रहता है तथा देव सम्बन्धित परम्पराओं को संगीत के साथ मनाया एवं निभाया जाता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि देवी–देवता सम्बन्धित क्रिया–कलाप संगीत के बिना अधुरे प्रतीत होते हैं अपितु संगीत की विधाओं के बिना नामुमकिन हैं। देव परम्पराओं के शास्त्रोक्त अध्ययन से भी हमें ये जानकारी मिलती है कि संगीत वो चाहे गायन हो या वादन दैविय आयोजनों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक संगीत निरन्तर देवी–देवताओं से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से जुड़ा है।

सन्दर्भ ग्रंथ व साक्षात्कार सूची

लेखक/सम्पादक शीर्षक प्रकाशन
गुप्त प्रो० चमन लाल हिमाचली संस्कृति एवं समाज–लोकगीतों के दर्पण में निर्मल पब्लिकेषन ए–139, नं० 3, कबीर नगर षाहदरा दिल्ली–9
ठाकुर डॉ० सूरत हिमाचल की देव–भार्थाऐं अक्षरधार प्रकाशन करनाल रोड कैथल हरियाणा–136027
ठाकुर मौलू राम हिमाचल में पूजित देवी–देवता दिग्दर्षनचरण जैन, ऋशभचरण जैन एवं सन्तति 4662/21 दरियागंज दिल्ली 11002।
साक्षात्कार
श्री राजेन्द्र जोषी (पुरोहित रामपुर बुषहर) गंव धारगौरा तहसील रामपुर बुषहर जिला षिमला हिमाचल प्रदेष दिनांक 02.04.2023
श्री हरबन्स षर्मा (पूजारी) गंव कलन्ती डाकघर बड़ाच तहसील ननखड़ी जिला षिमला हिमाचल प्रदेष दिनांक 26.08.2022
श्री सत्यदेव षर्मा (कुल पुरोहित देवता महारुद्र) गंव जडींड डाकघर धारगौरा तहसील रामपुर बुषहर जिला षिमला हिमाचल प्रदेष दिनांक 10.12.2022

डॉ० संतोष कुमार
विद्यावाचस्पति, संगीत विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला–5
ई मेल– santosh10231988@gmail.com
मोबाईल– 9816601603

16

हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना–प्रक्रिया

नम्रता कुमारी

सारांश

किसी दो साहित्यकार की लेखन प्रक्रिया एक नहीं होती है जैसे एक भी दृष्य को दो चित्रकार अगर चित्रफलक पर उतारेंगे तो ये अलग–अलग संदेशों को प्रतिष्यनित करेंगे– चित्रकार की कला के तत्त्व दो कलाकारों की कृतियों में अंतर पैदा करते हैं और किसी भी लेखक के अंदर कला के तत्त्व या तत्त्वों का निर्धारण का आधार उसकी अंतष्चेतना (Conscience) होती है। यह मनुष्य की नैसर्गिक शक्ति है जो किसी में उन्नत तो किसी में संकुचित होती है। साहित्यकारों में अंतश्चेतना बहुत ही विकसित होती है क्योंकि वह बहुत सम्वेदना के साथ अपनी पीड़ा को पीकर दूसरे की पीड़ा को भी अपनी पीड़ा मान लेता है। वह उस पीड़ा के कारण को जानने की इच्छा रखता है और उसके लिए प्रयत्न भी करता है– वह प्रकृति मनुष्य समाज, राजनीति, धार्मिक व्यवस्था आर्थिक व्यवस्था और समय के साथ उनके अंतर्सम्बधों को देखता, परखता और विवेचित करता है। इससे उसके दृष्टिकोण का निर्माण होता जिसके आधार पर वह सही और गलत सामाजिक क्रिया–प्रक्रिओं का ध्यान रखता है। लेकिन, साहित्यकार अपनी लेखन प्रक्रिया निर्धारित करने के लिए सबसे पहले अपनी अंतश्चेतना के सहारे बढ़ता है। अंतश्चेतना को आत्माराम शाह ने व्याख्यायित किया है–

''अंतश्चेतना शुभाशुभ या सदसत् की पहचानने की वह आन्तरिक शक्ति है, जो तत्काल बतला देती है कि वांछित और उचित क्या है। अंतष्चेतना मानव की शक्ति है। उसके निर्णय अथवा आदेश तर्क और युक्ति, अथवा सामाजिक या राजनीतिक नियमों द्वारा प्रमाणित हो या न हो। अन्तष्चेतना अपने आप में स्वतंत्र अस्तित्व रखती है, यह एक प्रकार का सहज अनुभव है।

जहाँ तक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की अंतश्चेतना का प्रश्न है, मनुष्यों के बीच क्रिया–प्रक्रिया के फल की पहचान का आधार उनका परिवेश और समाज का अध्ययन और उनकी पोथी ज्ञानानुभव या उनकी आदि साहित्य की साधना है। उनकी अंतश्चेतना मनुष्य या सम्पूर्ण प्रकृति के लिए सही और गलत, शुभ और अशुभ सत्य और असत्य, वांछित और अवांछित आदि की पहचान की कसौटी उनके ज्ञानानुभव में निहित है– यही कारण है कि उनको जागतिक साहित्यकार की संज्ञा दी गई है। उनकी यह आंतरिक शक्ति उनके साहित्य को सत्य और यथार्थ के करीब तो ले ही जाती है, साथ ही उनकी कल्पना को भी सत्य का जामा पहना देती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के सामाजिक परिदृष्य को देखकर और उसका अनुभव कर जो कुछ उनको मिलता है उसीसे उनके दृष्टिकोण का निर्धारण हुआ है। उनका सामाजिक और राजनीतिक बोध का आधार उनकी अन्तश्चेतना है जिसमें प्रखरता उनके तीनों कालों के सामाजिक और पोथी ज्ञान पर आधारित है। उन्होंने अपने जीवन के परिवेश से भी अंतश्चेतना की प्रखरता के लिए ज्ञान पाया है। उनकी अंतश्चेतना ने उनको यह ज्ञान दिया कि मनुष्य के लिए जीवन ही सत्य है। जो मनुष्य अपनी मृत्यु के बाद के कथित श्जीवनश स्वर्ग भोगने की लालसा रखता हुआ और नरक की आग से बचने के लिए पाखण्डपूर्ण कर्मकाण्ड में उलझकर अपने वास्तविक कर्म से पिछड़ जाता है। कर्म ही वास्तव में मनुष्य का धर्म है और स्वर्ग या नरक जाने की चिंता छोड़कर उसे सद्कर्म में पूरा जीवन लगा रहना चाहिए। उसे अपने समाज, संस्कृति, राजनीति, धार्मिक परिवेश से जुड़ कर, उसकी विवेचना करनी चाहिए और मनुष्य के जीवन के रोड़ों की जानना चाहिए और रोडे बिछाने वाले को ढूँढ निकालना चाहिए।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने मनुष्य और समाज की विवेचना अपने अंतश्चेतना से की। उन्होंने बाणभट्ट से सम्बंधित संस्कृत साहित्य पढ़ा तो उस काल के समाज की व्याधियों को पाया अपने अंतश्चेतना के द्वारा। विनोद तिवारी ने बाणभट्ट की आत्मकथाश के संदर्भ में लिखा है, उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से अपनी और कोई नूतन परम्परा नहीं बनाई लेकिन साहित्येतिहास से उन परम्पराओं को आज के मनुष्य के लिए उपस्थित किया जो उपयोगी हैं। उनकी लेखन प्रक्रिया में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बाणभट्ट के समाज के अध्ययन के साथ–साथ अपने समाज के अध्ययन का मिलान किया और बाणभट्ट काल के श्रेष्ठ सामाजिक परम्पराओं या उस काल में बने नूतन परम्पराओं का आज के लिए उपस्थित किया। विनोद तिवारी ने लिखा है।

''यह कलात्मक वस्तु बाणभट्ट की आत्मकथा में सम्पूर्ण अविभाज्य संरचना के साथ ऊँचाई पाता है। इस लिए चली आ रही औपन्यासिक रचना प्रक्रिया की प्रचलित परिपाटी और मनुष्य की चेतन प्रकृति को प्रदर्शित रूपों विचारों को ''क्लैसिक की कोटि प्रदान करता है। सकल प्रस्थान क्योंकि यह प्रस्थान अपनी कोई परम्परा नहीं बनने देता। इसे सीमा माने या सीमांत..।''[2]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी लेखन प्रक्रिया के अनुरूप बाणभट्ट के समाज से वस्तुओं का संग्रहण किया और उनको कथा में पिरोते हुए कथा को कलात्मक रूप दिया। यह कथन सत्य है कि 'बाणभट्ट की आत्मकथा में सम्पूर्ण अविभात्य संरचना के साथ ऊँचाई पाता है।'' यही कारण है कि इस उपन्यास में वर्तमान के लिए आधुनिकता के तत्त्व उपस्थित हैं। उनकी औपन्यासिक रचना प्रक्रिया मनुष्य की चेतन प्रकृति को प्रदर्शित रूपों विचारों को उपस्थित करता है और वह आज के मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक माना जाता है।

आचार्य हजारी प्रसाद की मान्यता रही है कि साहित्य का जन्म स्थूल जगत् से सम्वेदना के साथ जुड़ कर ही यथार्थ साहित्य लिखा जा सकता है। मनुष्य अपने समय और भूगोल से अलग होकर

साहित्य की रचना नहीं कर सकता है। अतः उनकी रचना प्रक्रिया में स्थूल जगत् में समय, स्थान या भूगोल और मनुष्य के जीवन का अंतरसंबंधीय अध्ययन और विवेचन है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के लेखन के संबंध में श्रीप्रकाश शुक्ल ने लिखा है–

''उन्होंने श्लालित्य तत्त्व में खुद लिखा है कि श्स्थूल जगत् को छोड़कर मनुष्य जी नहीं सकता और न अपने को देशकाल की सीमाओं से अस्पृश्य रह कर कोई शिल्प सृष्टि ही कर सकता है। काव्य ही नहीं, कोई भी शिल्प स्थूल जगत् से आहरण किए बिना रह नहीं सकता।''[3]

स्थूल जगत् के जीवन को प्रमुखता देकर उन्होंने जीवन सत्य को सामने रखा है। और किसी धार्मिक मान्यता का खण्डन नहीं किया है बल्कि उन्होंने उस चिरंतन सत्य को उपस्थित किया है, जिसे हम अपनी साँसों में नित्य अनुभव करते हैं। जहाँ तक तंत्र–मंत्र का सवाल है. उसका धार्मिक आधार नहीं है, बल्कि यह इसकी शक्ति का इतना प्रचार प्रसार किया गया कि लोगों की मानसिकता में इसकी शाक्ति में विश्वास पैदा हो गया है, जिस विश्वास के आधार का कोई ठोस प्रमाण इस भौतिक जगत् में नहीं है– यह सम्भव है कि इस विश्वास या आस्था के कारण मंत्र से किसी को कुछ मानसिक शांति मिल जा सकती है कि अब विघ्न बाधाओं को या रोग को पार पा जाएगा, तो यह उसकी भूल है, भ्रम है। साहित्य के लेखन की वस्तु स्थूल जगत से ही साहित्यकार ग्रहण करता है. जिस स्थूल जगत् में वह जीवन पाता है, ज्ञान पाता है, समाज का अनुभव करता है। और एक दृष्टिकोण बना कर साहित्य का लेखन इस जगत् मनुष्य को विकास और संघर्ष का राह बताता है–बिना श्रम किए बिना फलदायक कर्म किए कोई भी आदमी, आदमी नहीं बन सकता है। हर आदमी अपने परिवेश से प्रभावित होता है और साहित्यकार भी, लेकिन वह तो जनहित में लेखन करता है– हजारी प्रसाद भी जनहित के अपने साहित्य का हिंदी जगत् को शाश्वत उपहार दिया है।

आचार्य ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हिंदी साहित्य हिंदू साहित्य नहीं है बल्कि यह भारत का साहित्येतिहास है और यह विचार उनके साहित्यिक लेखन के प्रक्रिया में दिखता है। विगत कई हजार साल में भारत में अनेक धर्मों और मतों के लोग, अनेक भाषाओं को बोलने वाले लोग, अनेक तरह के भौगालिक क्षेत्र में रहने वाले भी शामिल हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है–

''दुर्भाग्यवश, हिंदी–साहित्य के अध्ययन और लोक–चक्षु–गोचर करने का मार जिन विद्वानों ने लिया है. वे भी हिंदी साहित्य का संबंध हिंदू जाति के साथ ही अधिक बताते हैं और इस प्रकार अनजान आदमी को दो ढंग से सोचने का मौका देते हैं एक यह कि हिंदी साहित्य एक हतदर्प पराजित जाति की सम्पत्ति है. इसलिए उसका महत्त उस जाति के उत्थान–पतन के साथ अंगांगि–भाव से सम्बद्ध है, और दूसरा यह कि ऐसा न भी हो, तो भी वह एक निरंतर पतनशील जाति की चिंताओं का मूर्त प्रतीक है, जो अपने आप में विशेष महत्त्व नहीं रखता। मैं इन दोन बातों का प्रतिवाद करता हूँ ।''[4]

यह टिप्पणी करते हुए उन्होंने उसकी पुष्टि के लिए अनेक तथ्य उपस्थित किए है और उद्धरण भी उपस्थित किए हैं। इस निबंध में उन्होंने हिंदी साहित्य के लेखन के पूर्व यानी ईसा पूर्व दो ढाई वर्षों में लिखे संस्कृति ग्रंथों का उल्लेख किया है–

मनु और याज्ञवल्क्य की स्मृतियाँ, सूर्यादि पाँचो सिद्धांत ग्रंथ, चरक और सुश्रुत की संहिताएँ, न्यायादि छहों दर्शन सूत्र, प्रसिद्ध पुराण, रामायण और महाभारत के वर्तमान रूप नाट्य शास्त्र, पतंजलि का महाभाष्य आदि प्रामाणिक माने जाने वाला ग्रंथ क्यों न हो, उसकी रचना, सकलन या रूप प्राप्ति सन् दो–ढाई सौ इधर–उधर की है।[5]

कहने का तात्पर्य यह है कि इस टिप्पणी में वर्णित सभी ग्रंथों की रचना हिंदी साहित्य के आलेखन प्रारम्भ होने के काल की है। लेकिन हिंदी साहित्य लेखन के प्रारम्भ होने के समय भारत में किस किस धर्म के साहित्यकारों और विद्वानों ने हिंदी में साहित्य लेखन किया?इस प्रश्न का उत्तर यह प्रमाणित करता है कि ईसा की पहली शताब्दी तक भारत के समाज में बौद्ध और इस्लाम का प्रवेश हो चुका था। बौद्धों के प्रभाव क्षेत्र की जानकारी भी वे इस आलेख में उल्लिखित करते हैं. जिनका प्रभाव सातवीं शताब्दी में भारत के कई क्षेत्रो में बहुत ज्यादा था–

''सन् ईसवी की सातवीं शताब्दी में युक्तप्रांत, विहार, आसाम और नेपाल में बौद्ध धर्म काफी प्रचलित था।''[6]

इसी काल में लोकभाषा का प्रयोग साहित्य में बढ़ा और संस्कृत कुछ ही विद्वानों के पास ही शेष रह गई। पहली शताब्दी के बाद जब राजदरबार के कवियों ने यशोगान की परम्परा लोकभाषा में शुरू की तो संस्कृत काव्य का प्रयोग दरबार में घटता चला गया– प्राकृति ने संस्कृति को एक प्रकार से विस्थापित कर दिया।।

प्राकृति के चार भेदों की चर्चा इस निबंध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने की है– प्राकृत, शौरसेनी, मागधी और पैशाची। फिर अप्रभंश भाषा का प्रयोग बढ़ा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस निबंध में कहो शब्द पर भाषाशास्त्री की तरह लिखा है –

''कहो प्रयोग उत्तर कालीन अपभ्रंश कहिउ से निकला है। इसके अपभ्रंश और प्राकृत रूप की चर्चा की जा सकती है अपभ्रंश कधिदो या कहिदो मागधी कपिदे या कहिदे महाराष्ट्री कहिओ और उत्तरकालीन अपभ्रंश कहिउ या कहिदे स्पष्ट ही पुराने अपभ्रंश रूप कधिदो और कदिदो महाराष्ट्री रूपो से पुराने हैं।''[7]

इस टिप्पणी से यह पता चलता है कि इस निबंध में हिंदी भाषा को भारतीय सम्मिश्रित संस्कृति की भूमि पर जन्म लेने के तथ्य को प्रमाणित करने से पहले एक एक हजार साल के साहित्य और बसावट का वर्णन करते हैं, हिंदी शब्दों और भाषा की उत्पत्ति के पूर्व वे प्राकृत भाषा के चारो रूपों के शब्दों का अध्ययन करते हैं। उनके इस निबंध में हिंदी भाषा के विकास का सूक्ष अध्ययन है।

कालातर में हिंदी साहित्य पर बौद्ध और जैन धर्म का व्यापक असर पड़ा। हिंदू बौद्ध, जैनों और इस्लाम की संस्कृतियों के

बीच आदान–प्रदान हुआ और उसका प्रभाव जनजीवन पर पड़ा और हिंदी के साहित्य में समाज और संस्कृति में आए बदलाव परिलक्षित हुए– इसी तथ्य को प्रस्तुत कर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने निबंध में लिखा कि हिंदी साहित्य हिंदू साहित्य नहीं है, बल्कि यह भारत की सम्मिश्रित संस्कृति के बीच हुए सांस्कृतिक– सामाजिक तत्त्वों के आदान–प्रदान से बने समाज का साहित्य है– सारांश रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य भारत के जन–जन का साहित्य है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने संस्कृत साहित्य और लोकभाषा जो हिंदी के करीब की भाषा थी या उस समय की हिंदी थी को स्पष्ट करते हुए वाणी को उघृत किया है–

'संस्कृत कूप–जल भाषा बहता नीर।' [8]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध ही नहीं उनके उपन्यास भी शोध–ग्रंथ के समान हैं, विशेष कर बाणभट्ट की आत्मकथा । इस उपन्यास में अपने कथन की पुष्टि के लिए वह फुटनोट्स देकर बताते हैं कि प्रसंग कहाँ से लिए गए हैं या श्लोक कहाँ से उधृत हैं। उन्होंने हर्षचरित, कादम्बरी, भवभूति के मालती माधव प्रकरण, महाभारत, वात्स्यायन का कामसूत्र, तुलसीदास कृत रत्नावली आदि से अपने कथनों की पुष्टि की है। इसी ओट में उन्होंने अपने द्वारा रचित अनेक श्लोक जो अपभ्रंश या पाली में लिखे हैं उनको भी उपन्यास में समायोजित किया है, लेकिन वे भी उसी काल के प्रतीत होते हैं, जिस काल की कथा उपन्यास में है। उन्होंने अपनी लेखन वस्तुओं का संचयन आदिकाल के प्रकृति, समाज, संस्कृति, इतिहास और साहित्य से लेकर वर्तमान समय के प्रकृति, समाज, संस्कृति, इतिहास और साहित्य से किया है। उनकी लेखन प्रक्रिया में कल्पना के श्लोक/पद और प्रसंग पोथी और समाज का पठन–पाठन और अन्वेषण है।

निष्कर्ष:

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध की लेखन प्रक्रिया में वे किसी विषय पर अध्ययन, चिंतन–मंथन और अपने द्वारा प्रस्तुत हर विचार को पुष्टि करने की ओर विशेष ध्यान देते हैं। वे निबंध को एक लघु शोध–पत्र की तरह लिखते हैं। निबंध लिखने के पहले आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने निबंध के विषय का चयन यह देखकर किया करते थे कि उनके द्वारा चयनित विषय पर लिखे निबंध को कितना व्यापकता प्रदान की जाए कि यह मनुष्य के जीवन के अनेक पक्षों को स्पर्श कर सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वे विषय से सम्बंधित हर सही स्रोत से जानकारियों इकट्ठी करते थे। उनकी किसी भी विधा में लिखित कति सामाजिक सरोकार रखती है और मनुष्य के जीवन के सुख–दुख, रोग–शोक आदि का ध्यान रखा गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्र.सं. हिंदी साहित्य कोश, 2013. ज्ञानमण्डल लि., संतकबीर रोड, वाराणसी–1, पृष्ठ–5
2. परिचय–07. हजारी प्रसाद द्विवेदी एक जागतिक आचार्य, संपादक–श्रीप्रकाश शुक्ल, पृष्ठ–178
3. परिचय– 07, हजारी प्रसाद द्विवेदी एक जागतिक आचार्य, संपादक श्रीप्रकाश शुक्ल, पृष्ठ–2
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, 2016 राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–2 पृष्ठ–15
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, 2016, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–2, पृष्ठ–16
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, 2016 राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–2 पृष्ठ 16–17
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, 2016, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–2, पृष्ठ–27
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, 2016 राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–2, पृष्ठ–32

नम्रता कुमारी
शोध–प्रज्ञा
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

17

उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी में वृद्ध समस्याएँ

डॉ0 वर्षा शालिनी कुल्लू

सारांश

उषा प्रियंवदा महिला कहानीकारों में विशेष उल्लेखनीय नाम है। उषा प्रियवंदा ने परिवारों के बिगड़ते हुए परिदृष्य को बड़ी यथार्थकता के साथ रखा है। उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी एक ऐसे ही परिवार की कहानी है। इस कहानी से उषा प्रियवंदा को बहुत प्रसिद्धि भी मिली। उषा प्रियवंदा ने आज के आधुनिक युग में समाज के भीतर टूटते रिश्तों को बड़े ही यथार्थकतापूर्वक दिखाया है। उषा प्रियवंदा ने इस कहानी के माध्यम से यह दिखाया है कि भले ही आज का समाज कितना भी आधुनिक हो जाए, आधुनिकता के नाम पर भले ही हम चाँद तक क्यों न पहुँच जाएँ? लेकिन घर के वे वृद्ध जिन्होंने घर बनाने के चक्कर में अपना जीवन अकेलापन के रूप में काट दिया हो उसके साथ इस तरह का व्यवहार कहाँ तक उचित है? उषा प्रियंवदा ने आधुनिकता की आड़ में जो अपने को इस समाज से आगे समझते हैं उस पर सवाल खड़ा किया है। इस कहानी में भी एक ऐसे ही वृद्ध की कहानी है। आज समाज में वृद्धों की समस्या को देखा जा सकता है। समाज आज एक गंभीर समस्याओं से गुजर रहा है और वे वृद्ध–समस्या के रूप में देखा जा सकता है। आज के समाज का सच यह है कि एक माँ–बाप अपने कई बच्चों को आराम से पाल सकते हैं लेकिन वही बच्चा बड़ा होकर एक माँ–बाप को नहीं पाल पाता। आज हमलोग आधुनिक होकर क्या यही सीखे हैं?अगर यही सीखे हैं तो ऐसी आधुनिकता से आधुनिक नहीं होना ज्यादा अच्छा है।

उषा प्रियवंदा की :वापसी' कहानी एक ऐसे ही वृद्ध की कहानी है जिन्होंने अपने बच्चों के चलते शहरों से दूर नौकरी की, हमेशा अकेलापन का दंश झेला। बच्चों और पत्नी को हमेशा शहरों में रखा। जिन्होंने अपने घर को घर बनाने में अपना पूरा जीवन खर्च कर दिए आज वही अपने घर में रिटायरमेंट के बाद फिट नहीं बैठ पाते। इस कहानी में गजाधर बाबू पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर घर जाने के लिए काफी खुश है। वह पैंतीस साल से इसी दिन का इंतजार कर रहे थे। इस पैंतीस सालों में उन्होंने इसी अकेलापन में रहकर परिवार के बगैर रहकर सुखद दिनों की कल्पना की थी। इसी संदर्भ में उषा प्रियंवदा कहती हैं –– "गजाधर बाबू खुश थे। बहुत खुश। पैंतीस साल की नोकरी के बाद वह रिटायर होकर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्हांने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढ़ो रहे थे। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था।"[1]

सचमुच गजाधर बाबू इस दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। वह नौकरी करते हुए हमेशा यही तो चाहा था कि वह अपने परिवार के साथ समय बितायें। उन्होंने इसी सुख की कामना ने अपना पैंतीस साल बीता दिए। आज वही घड़ी थी जो उन्होंने वर्षों से इंतजार किया था। इसलिए आज गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश थे। क्योंकि उन्होंने इसी खुशी की आशा में छोटे स्टेशनों में रहकर भी, अभाव के जीवन जीकर भी संतुष्ट थे। दुनिया के नजरों में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था क्योंकि उन्होंने शहर में एक मकान बनवा चुके थे, बड़े लड़के अमर और लड़की कान्ति की शादियाँ कर चुके थे। दो बच्चे को ऊँची कक्षाओं मे पढ़ा रहे थे। अब इससे ज्यादा एक पिता को क्या चाहिए? गजाधर बाबू बहुत खुश थे और संतुष्ट भी। वे शहर में अपना घर बनवाया और खुद छोटे–छोटे स्टेशनों पर रहते रहे और हमेशा घर की जरूरतों को पूरा करते रहे। गौर करने वाली बात यह है कि उन्होंने अपने अभावभरी जीवन में भी अपने परिवारों को शहरों में रखा, अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दी। आज उसी सबको याद करके रिटायर होने के बाद भी खुश थे। आज इसी स्नेह की आकांक्षी गजाधर बाबू अपने उसी स्नेह की आस में घर जा रहे थे। लेकिन यह खुशी ज्यादा दिन तक नहीं रह सका। जिस दिन वह रिटायर होकर घर पहुँचे उस दिन इतवार का दिन था। सब घर में ही थे, सब रोज की भाँति अपनी–अपनी मस्ती में रमे थे। किसी को पिताजी के रिटायरमेंट को लेकर कोई खास उल्लास, उत्साह, चेहरे पर खुशी नहीं दिख रहा था। सभी परिवार के लोग और इतवार की भाँति ही जी रहे थे। उसी बीच गजाधर बाबू पहुँचते हैं, अपने घर में जाने से पहले जो–जो सपना देखे थे अब उसी को पूरा करने का समय था। नौकरी के कारण बच्चों के साथ कभी मनोविनोद नही कर पाया था। आज उसका भी मन उसी पिता की चाह में मनोविनोद का था। उन्होंने उस मनोविनोद में भाग भी लेना चाहा लेकिन बात वही की वही रही। अब कहानी और आगे बढ़ती है। अब इस घर के बारे में गजाधर बाबू जानना चाहते थे। उनकी व्यवस्था को ठीक करना चाहते थे और इसलिए उन्होंने सुबह का खाना का जिम्मा उनकी भाभी को और शाम का खाना का जिम्मा अपनी बेटी बसन्ती को दिया। दोनों ने इस बात को स्वीकार तो किया लेकिन इससे बचने का उपाय भी कर लिया। बसन्ती शाम का खाना ऐसा बनाया कि कोई खा नहीं सकता था फिर भी गजाधर बाबू ने खाया, लेकिन नरेन्द्र नहीं खा सके। माँ ने उसे मनाकर फिर से अपनी हाथों से बनाकर खिलाया। भाभी ने अलग चाल चली। जो गजाधर बाबू ने इस घर को बनाने में अपना सबकुछ निछावर कर दिया उन्हीं के लिए उस मकान में एक कमरा तक नहीं है। आज उनके लिए इस घर में रहने के लिए अस्थायी प्रबंध किया गया है। इसी संदर्भ में उषा प्रियंवदा लिखती हैं –– "नाश्ता कर, गजाधर बाबू बैठक में चले गए। घर छोटा था और ऐसी व्यवस्था हो चुकी थी कि उसमें गजाधर बाबू के रहने के लिए कोई स्थान न बचा था। जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता

है, उसी प्रकार बैठक की दीवारों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली सी चारपाई डाल दी गई।"[2] जिस घर को बनाने में उन्होंने अपना सबकुछ खो दिया सुख, चैन आदि उसी घर में मालिक के लिए जगह नहीं है। उनके लिए अस्थायी प्रबंध किया गया है।, जैसे मेहमानों के अचानक आ जाने पर व्यवस्था की जाती है। गजाधर बाबू आज अपने ही घर में मेहमान जैसे लग रहे थे। वैसा मेहमान जो बिन–बुलाये आ गये हैं। ये आज के आधुनिक युग की विसंगति ही तो है कि कोई वृद्ध अपने ही घर में अजनबी हो जाता है और इसी बारीकि से उषा प्रियंवदा ने इस आधुनिक समस्या को दिखाया है। बसन्ती को शीला के घर जाने से मना करने पर गजाधर बाबू से वो भी बात करना छोड़ दी थी। नरेन्द्र की पत्नी और नरेन्द्र पिताजी से अलग रहना चाहते थे। कारण पहले जिस आजादी से घर में रहते थे, जो मन होता है सो करते थे, दोस्तों को घर बुलवाकर मस्ती करते थे, पत्नी को सिनेमा ले जाता था, अब वह बंद हो गया था। गजाधर बाबू को पत्नी से कम से कम उम्मीद थी लेकिन वह भी इसी घर गृहस्थी में उलझ गयी थी। उनकी पत्नी को भी यह ज्ञात नहीं हो रहा था कि उनके पति के दिल पर क्या गुजर रहा था? इसी संदर्भ में उषा प्रियंवदा लिखती हैं –– "गजाधर बाबू बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए। यही थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने संपूर्ण जीवन काट दिया था?उन्हें लगा कि वह लावण्यमयी युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचिता है।"[3]

सचमुच गजाधर बाबू ने जिस घर की कल्पना की थी वह अब बिल्कुल अलग था। जब से बसन्ती को बुरा लगा था उससे भी ज्यादा बुरा गजाधर बाबू को लगा था। वे भी अब इस घर की परिस्थितियों को समझ चुके थे। इसलिए उन्होंने अब इस घर के मामले में न बोलने की बात कह दी। एक दिन जब वह घर लौटे तो देखा कि उनका बिस्तर बैठक में नहीं है, उनका चारपाई पत्नी के कमने में लगी थी जहाँ पर अचार, रजाइयों और कनस्तर पड़ा हुआ था। अचानक से उनके मन में कई विचार उभरने लगे थे। वे सोच रहे थे कि जिस घर में गृहस्वामी के लिए एक चारपाई को रखने की जगह नहीं है, जिस घर में बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं, उस घर में परदेशी की तरह ही रहना ज्यादा उचित है। गजाधर बाबू को सबसे ज्यादा दुःख इस बात को लेकर था कि पत्नी ने भी उनके इस बात पर गौर नहीं किया, पत्नी भी उनकी मनःस्थिति को नहीं समझ सकी। गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से अपनी पत्नी को देखा। गजाधर बाबू अब महसूस कर रहे थे कि हम केवल धनोपार्जन के लिए थे, जिसका अपने ही घर में धन कमाने के अलावा कुछ नहीं था। गजाधर बाबू की रिटायरमेंट के बाद का उत्साह सब समाप्त हो चुका था। वह सोच रहे थे कि क्या इसी दिन के लिए उन्होंने इतने कष्ट झेले, सबके साथ रहने के लिए अकेले में रोए। घर में गजाधर बाबू ने नौकर को हटा दिया। इस पर भी अमर के द्वारा कहा गया वह वाक्य काफी सोचनीय है। अमर अपने पिता को 'बुढ़े आदमी' हैं कहकर संबोधित करता है और कहता है बुढ़े आदमी हैं चुपचाप पड़े रहें। इस बात ने गजाधर बाबू के मन को अंदर से झकझोर दिया। सचमुच घर के उस मालिक को जब बुढा कहा गया होगा तो क्या बीता होगा यह आप कल्पना कर सकते हैं। 'वापसी' कहानी इसलिए आधुनिक कहानियों के केन्द्र में रहा है। यह कहानी 1960 में एक सवाल खड़ा कर दिया था। इस संदर्भ में डॉ0 रामचंद्र तिवारी लिखते हैं –– "वापसी एक समय आलोचकों के मन–मस्तिष्क पर छा गयी थी। इसमें अवकाश ग्रहण करने के बाद गजाधर बाबू का अपने ही घर में फालतू या पराया हो जाने का बोध और उससे उत्पन्न पीड़ा ने पाठकों को विचलित कर दिया था।"[4]

सचमुच यह कहानी आज के पाठकों को सोचने पर मजबूर करता है। इस कहानी का अंत तो और भी ज्यादा सोचनीय है। गजाधर बाबू अब इस घर में अपने को फिट नही ंकर पाते हैं इसलिए वह अब इस घर को छोड़ने पर विचार करते हैं। इसलिए उन्होंने सेठ रामजीमल के यहाँ नौकरी करने की बात को कहते हैं। और कहीं न कहीं उनके मन में यह विश्वास भी होता है कि घर के यलोग उन्हें जाने से रोकेंगे कोई नही ंतो कम से कम पत्नी तो रोकेगी ही, लेकिन जब घर में इस बात की सूचना देते हैं तो सब स्वाभाविक रूप से तैयार हो जाते हैं। फिर कुछ और भी कहने की इच्छा होती है लेकिन चुप हो जाते हैं। गजाधर बाबू कहते हैं –– "मुझे सेठ रामजीमल की चीनी–मिल में नौकरी मिल गई है। खाली बैठे रहने से तो चार पैसे घर में आएँ, वही अच्छा है। उन्होंने तो पहले ही कहा था, मैंने ही मना कर दिया था। फिर कुछ रूककर, जैसे बुझी हुई आग में एक चिनगारी चमक उठे, उन्होंने धीमें स्वर में कहा, मैंने सोचा था कि बरसों तुम सबसे अलग रहने के बाद अवकाश पाकर परिवार के साथ रहूँगा। खैर, परसों जाना है। तुम भी चलोगी?मैं?पत्नी ने सकपकाकर कहा मैं चलूँगी तो यहाँ का क्या होगा, इतनी बड़ी गृहस्थी फिर सयानी लड़की?"[5]

गजाधर बाबू का मन अपनी पत्नी के जवाब से बहुत आहत हुआ। जिस घर के लिए उन्होंने क्या–क्या नहीं किया, आज उसी घर में उनके लिए जगह नहीं है। आज हम एक ऐसे समाज में जी रहे हैं जहाँ एक पिता को बुढ़ा कहा जाता है। जिस घर में बरसों से रहने की आकांक्षा थी, वह धरा का धरा ही रह जाता है। नरेन्द्र ने जितनी तत्परता से रिक्सा को बुला लाया और बिस्तर बाँधा। इस बात से साफ जाहिर होता है कि घर के लोग यही चाहते थे। गजाधर बाबू अंत में रिक्सा से चलते हुए बड़े ही आहत होकर उस परिवार को देखते–देखते विदा हो गये। घर से जाने के बाद घर के सभी लोग अपने–अपने कामों में लग गए और सबसे बड़ी बात यह है कि अमर की बहू ने चहकते हुए अमर से पूछा कि सिनेमा ले चलिएगा न?और बसन्ती भी उछलकर कहा – भइया हम भी। कितनी अजीब बात है न कि एक ही परिवार में रहने वाले घर के

वृद्ध को बेकार समझा जाता है। उनके लिए बुजुर्ग का मतलब चुपचाप किसी कोने में पड़े रहना है। गजाधर बाबू जैसे लोग आज समाज में बहुतेरे मिल जाएँगे जो इस तरह के दंश झेल रहे हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आज के आधुनिक युग मे ंहम कहाँ पहुँच गये हैं? इसे फिर से देखने की जरूरत है। आज गजाधर बाबू अपने ही घर में अजनबी बन कर रह गये। जिस घर को बनाने में अपने खून को लेई बना दिये वही रिटायर होने के बाद भी अपने ही घर में अकेलेपन का दंश झेल रहे हैं। आज के समय में वृद्ध समस्या एक अहम समस्या है जिस पर विचार करना जरूरी बन गया है।

शोध–संदर्भ :

1. उषा प्रियंवदा, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960 ई0, पहला संस्करण 2018 ई0, पृ0 31
2. वही, पृ0 23
3. वही, पृ0 34–35
4. डॉ0 रामचंद्र तिवारी, हिन्दी का गद्य–साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1955 ई0, बारहवाँ संस्करण 2018, पृ0 424
5. उषा प्रियंवदा, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960 ई0, पहला संस्करण 2018 ई0, पृ0 39

सम्पर्क सूत्र –

डॉ0 वर्षा शालिनी कुल्लू

सहायक प्राध्यापिका,

हिन्दी विभाग,

गोस्सनर कॉलेज, राँची,

मो0 नं0 7765925197

फ्लैट नं0 – 2/ए

ब्लॉक ए, असारी रसिडेन्सी

दिनकर नगर, गितिलपीड़ी,

हटिया, राँची – 834003

18

अमृतलाल नागर के उपन्यास ''नाच्यौ बहुत गोपाल'' में दलित–समस्या

आशा रानी केरकेट्टा

सारांश

हिंदी में दलित विमर्श की शुरूआत मोटे तौर पर 60 के दशक से मानी जाती है। हिंदी में बहुतेरे आंदोलन हुए लेकिन संत साहित्य के बाद केवल दलित आन्दोलन ऐसा है जिसने साहित्य और विर्मश की जमीन को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। हर युग में साहित्य की जमीन बदली है, उसके मूल्यांकन के औजार बदले हैं लेकिन दलित विमर्श जिस बदलाव की आकांक्षा को लेकर आगे बढ़ रहा है वह इन सबसे आगे की चीज है। दलित विमर्श की शुरूआत नकार से होती है यहाँ साहित्य यश, सम्मान, आनन्द, कल्याण के लिए न होकर संघर्ष के लिए है, बराबरी के हक के लिए है।

शब्दकोषीय अर्थ के अनुसार ओम प्रकाश वाल्मिकी ने दलित शब्द का आशय बताया है – ''**जिसका दलन या दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, विनष्ट, मर्दित, पस्तहिम्मत, हतोत्साहित, वंचित आदि।**''[1]

दलित चिन्तन के क्रम में अमृतलाल नागर का नाम अग्रगण्य श्रेणी में है। उनके कई उपन्यास जैसे – महाकाल, खंजन नयन, नाच्यौ बहुत गोपाल आदि दलित प्रेरणा से युक्त हैं। 'महाकाल' उपन्यास में उच्चजाति के लोग निम्न जाति को ऊपर उठते हुए नहीं देख सकते हैं। 'खंजन नयन' में नागरजी ने सिर्फ जातिवाद पर करारा चोट करने के साथ नवीन समाज की संरचना का मार्ग दिखाया है।

दलित विमर्श के संदर्भ में अमृतलाल नागर का उपन्यास 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उनके सभी उपन्यासों से हटकर सर्वथा मौलिक उपन्यास है। इसमें मेहतर कहे जाने वाले अछूतों में भी अछूत, अभागे अंत्यजों के चारों ओर कथा का ताना बाना बुना गया है और उनके अंतरंग जीवन की करूणामयी और हृदयग्राही झांकी प्रस्तुत की गई है। 'मेहतर' जाति किन सामाजिक परिस्थितियों में अस्तित्व में आई, उसकी धार्मिक, सांस्कृतिक मान्यताएं क्या हैं आदि प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं, साथ ही वर्त्तमान शताब्दी के पूर्वाद्ध की राष्ट्रीय और सामाजिक हलचलों का दिग्दर्शन भी जीवतंता के साथ कराया गया है।

सन् 1978 में प्रकाशित ''**अब मैं नाच्यौ बहुत गोपाल**'' दलित समाज में अपमानित की जाने वाली मेहतर जाति के संघर्ष को सामने लाता है। मलिन बस्तियों में रहकर अनेक साक्षात्कारों और अनुभवों व अमृत लाल नागर ने तीन वर्षों के शोध और श्रम से 'नाच्यौ बहुत गोपाल' का सृजन किया। यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें ग्रामीण जीवन के सर्वथा उपेक्षित अछूतों में भी अछूत मेहतर जाति के जीवन की अंतरंग झांकी प्रस्तुत की गई है।

इस उपन्यास की नायिका निर्गुनिया ब्राह्मण, सुसंस्कृत परिवार की लड़की है। बचपन में ही माँ की मृत्यु के कारण उसे नाना नानी के पास रखा जाता है। उसके नाना कथा वाचक, व्याकरणाचार्य और शास्त्री थे। निर्गुनिया को किसी कारणवश से अछूत बस्ती में रहना पड़ा तब उसे शुद्धिकरण संस्कारों से गुजरना पड़ा। शास्त्री पिता की पुत्री होने के कारण निर्गुनिया की माँ पतिव्रता थी। इसके विपरीत उसके पिता कुसंस्कारों में पले थे। उन्होंने अपने मालिक के बहु के साथ अनैतिक संबंध रखते थे। उसकी माँ पिता की दुत्कार सहते–सहते मर गई। निर्गुनिया के पिता एक दिन उसे मालकिन के यहाँ ले गए।

निर्गुनिया कहती है कि उसका भाग्य खोटा था कि – ''**ननिहाल के स्वर्ग से वह बटुक महाराज की नर भूखी भेड़ियन की मांद में फेंक दी गई। निर्गुन का भाग ही ऐसा था कि जिसे अमृत का कटोरा बनाकर पीना चाहा था वह हाथों में आते ही कालकूट विष बन गया।**''[2] निर्गुनिया अम्मा के गंदे माहौल से अपने आप को बचा न सकी। वह समय से पहले औरत बनी। उसके जीवन में पुरूष आते हैं उसका बच्चा गिरवाकर उसके पिता शादी मसुरियादीन महाराज के साथ कराते हैं। उसकी प्यास बुझ नहीं पाती और वह मोहना के साथ भाग जाती है। मोहना मेहतर समाज का था। ब्राह्मणी होते हुए भी वह मोहना के साथ शादी करती है, लेकिन मोहना पुरूषी अहंकार नहीं भूलता। वह उसे मामा मामी के पाँव छूने के लिए कहता है, वह कहता है मैंने इश्क किया है अपना धरम ईमान नहीं बेचा। वह उसे छोड़ने के लिए भी तैयार होता है। निर्गुनिया ब्राह्मणी होते हुए भी शराब पीती है, सुअर का मांस पकाकर खाती है। खुद सोचने को मजबूर होती है कि **''इतना सब कुछ करने के बाद भी कुत्ते की दुम्म टेढ़ी की टेढ़ी ही रही। मरद की जात निगोड़ी, कैसे बीतेगी सारी जिन्दगी।''**[3] मोहना की मामी बात–बात पर गालियां देकर जुर्म ढाती है, पैर दबवा लेती है।

प्रस्तुत उपन्यास में आर्थिक समस्या को भी चित्रित किया गया है। नौकरी के लिए दारोगा और जमादार मजीद से रिश्वत के साथ बीबी की भी माँग करते हैं। महर्षि वाल्मिकी की जयन्ती पर मजीद और उसके साथी चन्दा इकट्ठा करने जाते हैं, तब महाजन के आदमी गर्दन दबाकर पैसे छीनते हैं।

मेहतर समाज के लोग हिन्दू और मुस्लिम दोनों देवता याने राम और अल्लाह का नाम लेते हैं। इनके बिरादरी में दोनों रिवाज चलते हैं। इसमें एक क्रिश्चियन सोसाइटी भी है। उच्च कुल के हिन्दू अथवा मुसलमान ईसाई बनते हैं लेकिन वे नीच कुलीन ईसाईयों से शादी नहीं करते। इस मेहतर समाज का संबंध केवल उँचे वर्ग से ही नहीं, बल्कि अन्य हरिजन जाति से भी है। गाँधी जी द्वारा किये गए अछूतोद्धार के प्रयत्न से भले ही तैयार हो गये हों, लेकिन निर्गुनिया जानती है कि इस वर्ग संघर्ष की जड़ें इतनी मजबूत हैं कि उन्हें

आसानी से उखाड़ नहीं सकती।

अमृतलाल नागर ने इस उपन्यास में दलितों की समस्या को रखने में सफलता प्राप्त की है। निर्गुनिया मोहना के साथ भागने के बाद कई अंर्तद्वन्द्वों से घिर गयी थी और अंत में अपना ब्राह्मण धर्म छोड़कर सचमुच के मेहतर बन जाती है। इस सब में पति मोहना का मार और उनकी मामी का ताना ने जरूर साथ निभाया। निर्गुनिया मार–मार कर ही भंगी बनाई गई। लेकिन एक बार भंगी बनने के बाद पूरी तरह से उसी धर्म के विकास में अपने आपको झोंक दी। इस संदर्भ में मधुरेश लिखते हैं कि –– **"मोहना की माई सचमुच उसे मार–मार कर भंगी बनाने की कोशिश करती है। उसके सामने ही आंगन की मोरी पर बैठकर जब वह पाखाना करती है, झाड़ू, पंखा निर्गुनिया को थमाकर उसे साफ करने की तादिक के साथ, तो निर्गुनिया स्थिति का विरोध करती है। वह गालियाँ खाती है और पिटती भी है।"**[4]

अमृतलाल नागर ने इस उपन्यास में भंगी जाति के इतिहास से लेकर उनकी समस्याओं तक पूरी यथार्थता के साथ रखा है। भंगी जाति को समाज में सबसे नीच जाति के अंतर्गत माना जाता है। नागरजी ने जाति–प्रथा कैसे समाज में अपना पैठ जमा चुकी है इस पर भी ध्यान दिलाने का काम किया है। गाँधीजी का गाँव–गाँव में सत्यनारायण भगवान की घटना को देखा जा सकता है। उसमें एक भंगी के जाने पर उसी के बीच में हरिजन कहे जाने वाले दूसरे युवक उसे भगा देते हैं। आज समाज की स्थिति यह है कि हर जाति अपने नीची वाली जाति को हीन नजरों से देखता है। यहाँ तक की एक ही जाति में कई उपजातियाँ भी होती है जो एक–दूसरे से अपने को श्रेष्ठ दिखाने के होड़ में लगी रहती हैं और इसी कारण महात्मा गाँधी के 'हरिजन' नाम भी निरर्थक बन जाती है। गाँधीजी ने प्रयास जरूर किया 'हरिजनों' को एक साथ लाने का लेकिन इसमें सफलता नहीं मिली।

अमृतलाल नागर ने बड़ी बारीकी से इस उपन्यास में एक ब्राह्मण स्त्री का भंगी बन जाना और उसके जीवन में, घटित घटना को दिखाया है। इस बात को रखा है। निर्गुन अपने पिछले घटनाओं पर जब बात करती है, स्पष्ट रूप से कहती है कि इस सबके पीछे उनकी ब्राह्मण अम्मा, ब्राह्मण पिता का हाथ ही मानती है। बबुआ सरकार ने तो उन्हें इस काल कोठरी में धकेल ही दिया था। निर्गुन स्वयं कहती है –– **"वैसे बड़े–बड़े त्रिपुण्डधारी पण्डितों को भी मैंने अछूत बस्तियों के पीछे–पीछे कुत्ते की तरह घुमते देखा है। लुक छिपकर मुँह काला करने के बाद फिर उजागर में मूँछों पर ताव देके 'हटो हटो' चिल्लाना शुरू कर देते हैं।"**[5]

अमृतलाल नागर ने निर्गुनिया के माध्यम से ब्राह्मण जाति के अंदर फैले कुव्यवस्थाओं को भी खुलकर रखा है। ब्राह्मण जाति के सच को दिखाने में नागरजी ने कहीं भी पक्षपाती करते नजर नहीं आते। वे सच ही निर्गुन से कहलवाते हैं कि ब्राह्मण लोग भी रात को शूद्रों की स्त्रियों को छूने में कोई परहेज नहीं रखते लेकिन वहीं जब दिन के उजाले में उससे घिन्नाते नजर आते हैं, उससे बचते फिरते हैं। इस दोहरापन को नागरजी ने बड़ी स्पष्टता से दिखाया है।

निष्कर्षतः

कहा जा सकता है कि "नाच्यौ बहुत गोपाल" में दलितों के जीवन को पूरी तन्मयता के साथ नागरजी ने रखा है। भंगी जाति के संस्कार, उसकी उत्पत्ति और किन परिस्थितियों में वे लोगों का शिकार होते गये, इस सबको पूरी स्पष्टता के साथ रखा गया है। अमृतलाल नागर का यह दलित उपन्यास दलितों की जीवन के यथार्थ को दिखाने में पूरी तरह से सही साबित हुआ है।

नागर ने निर्गुनिया की कथा के द्वारा समस्त नारी जाति की व्यथा कथा कही है। मेहतर समाज के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। दिन रात इतनी मेहनत करने के बावजूद भी इन्हें जीवन की हर सुख सुविधा, शिक्षा आदि से वंचित रहना पड़ता है। उच्चवर्गियों ने इस जाति का दमन किया है। उन्हें सुबह छः बजे से गलियाँ साफ करना तथा पच्चीस घरों का काम करना पड़ता है, बदले में दुवन्नी चवन्नी तथा गालियाँ और जूते खाने पड़ते हैं। इस प्रकार नागर ने मेहतर समाज को लक्ष्य बनाकर उन पर किये जाने वाले अत्याचारों का यथार्थ चित्रण किया है। उसमें वे सफल भी हुए हैं।

संदर्भ सूची :

1. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, ओमप्रकाश वाल्मिकी पहला संस्करण – 2001
2. नाच्यौ बहुत गोपाल, अमृतलाल नागर, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष 1978, पृष्ठ 64
3. नाच्यौ बहुत गोपाल, अमृतलाल नागर, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली , प्रकाशन वर्ष 1978 ,पृष्ठ 80
4. मधुरेश, अमृतलाल नागर, व्यक्तित्व और रचना–संसार, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, संस्करण प्रथम 2016, पृ0 87
5. अमृतलाल नागर, नाच्यौ बहुत गोपाल, राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली, संस्करण 2013, 1978, पृ0 11

संपर्क सूत्र –
आशा रानी केरकेट्टा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
गोस्सनर कॉलेज ,राँची।
पूर्ण पता –
हेलेन मेन्शन, फ्लैट नं0 2 बी
के0 एम0 रोड, नया टोली
राँची–834001 (झारखण्ड)
मो0 नं0 – 9835574369

19

पाश्चात्य शिक्षा का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

सुवाति

सारांश

भारत में अंग्रेजी शिक्षा नवजागरण का प्रमुख कारक रहीं है। समकालीन ब्रिटिश साम्राज्य की राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक नीतियों का भारतीय जनसमुदाय पर गहरा प्रभाव पडा। पाश्चात्य शिक्षा के प्रभावस्वरूप भारत में लोकतन्त्रात्मक विचारों, समृद्ध वैज्ञानिक और प्राविधिक संस्कृति के साथ–साथ मानवाधिकारों जैसे विचारों का आगमन हुआ। यद्यपि यह सभी प्रयास ब्रिटिश हितों की पूर्ति एवं सुरक्षा हेतु किए गए किन्तु अनजाने में यह सभी कारक भारतीय राष्ट्रवाद के उद्भव का कारण बन गए। पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार से भारतीय नवयुवकों को नवीन साहित्य पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। ब्रिटिश साहित्य के अध्ययन से नवयुवकों में उपनिवेशवाद के विरुद्ध विद्रोह उत्पन्न हुआ तथा उन्हें स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा मिलीं। धीरे–धीरे समाज में जाति, धर्म, वर्ग आधारित भेदभाव कम होने लगें और समाज में समानता एवं एकता की भावना उपजने लगीं। नवीन विचारों का प्रभाव भारतीय साहित्य पर भी दिखाई देने लगा और धीरे–धीरे भारतीय साहित्य का स्वरूप परिवर्तित होने लगा। इस प्रभाव से विभिन्न भारतीय भाषाओं में नवीन साहित्य का जन्म हुआ।

परिचय–

पश्चात्य शिक्षा के क्षेत्र में मिशनरियों ने अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने ही सर्वप्रथम भारत में मुद्रणालयों की स्थापना की एवं समाचार–पत्रों का सम्पादन प्रारम्भ किया। मिशनरियों के कार्यों से धीरे–धीरे शिक्षित भारतीय भी प्रभावित होने लगे। बौद्धिक समुदाय द्वारा नवीन साहित्य का सृजन किया गया। मिशनरियों ने विभिन्न भारतीय भाषाओं का अध्ययन करने के उपरान्त शब्दकोशों का संकलन किया। शब्दकोशों की सहायता से पाश्चात्य साहित्य का विभिन्न भारतीय भाशाओं में अनुवाद किया गया। नवीन साहित्य के विचारों से प्रभावित शिक्षित युवाओं ने चिंतन प्रारम्भ किया कि जिस प्रकार का साहित्य अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है उस प्रकार का साहित्य भारतीय भाषाओं में नहीं मिलता है। अतः उन्होंने विभिन्न समितियों का गठन किया एवं व्यक्तिगत रूप से भी कुछ प्रयास किए। कुछ समय पश्चात ही साहित्य सृजन में गैर–सरकारी अभिकरण का महत्व बढ़ने लगा एवं उसका प्रभाव दिखाई देने लगा।

भारतीय साहित्य के विकास में पाश्चात्य शिक्षा का योगदान –

मिशनरियों द्वारा निर्मित शब्दकोशों की सहायता से साहित्य सृजन का कार्य सरल हो गया और व्यापक स्तर पर भारतीय जनसमुदाय पाश्चात्य साहित्य को पढने एवं समझने लगा।[1] नवीन शैली में साहित्य लेखन का कार्य उत्साही एवं राश्ट्रीय मनोवृत्ति वाले युवाओं ने किया। अपने विचारों के प्रभाव से वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के बौद्धिक एवं राजनीतिक नेता बन गए।[2] भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, गोपाल कृष्ण गोखले, दादा भाई नौरोजी, रमेशचन्द्र दत्त, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, सुभाशचन्द्र बोस आदि महान पुरुष अंग्रेजी शिक्षा एवं विचारों के प्रभाव की ही देन थीं। इसी कारण मैकाले ने यह घोशणा की ''जब पाश्चात्य शिक्षा में निष्णांत भारतीय यूरोपीय संस्थानों की स्थापना की माँग करेंगे वह ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे गौरवशाली दिन होगा।'' इस प्रकार से शिक्षा एवं पाश्चात्य विचारों के प्रभावस्वरूप ही विशाल जनसमूह प्रांतीय सीमाओं को लांघकर अखिल भारतीय स्तर पर उभरकर सामने आया एवं अपनी माँग को स्पष्ट रूप से ब्रिटिश सरकार के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल रहा। आधुनिक शिक्षा ने राजनीतिक दृढ़ता तथा राश्ट्रीयता के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

समाज का एक वर्ग स्थानीय भाषाओं के महत्व को स्वीकार करता था। इसी कारण पाश्चात्य साहित्य एवं विज्ञान के अध्ययन के लिए स्थानीय भाशा के प्रयोग को अस्वीकृत कर दिया गया।[3] 1854 ई0. में वुड्स घोशणा पत्र द्वारा पाश्चात्य विज्ञान एवं साहित्य के लिए अंग्रेजी माध्यम को अपनाया गया।[4] **'ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन'** ने **थॉमसन कॉलेज ऑफ सिविल इंजीनियरिंग** एवं **मेडिकल कॉलेज ऑफ आगरा** से ऐसे कई उदाहरण प्रस्तुत कर 1867 ई0. में स्थानीय भाशाओं को प्रोत्साहित करने हेतु सरकार को स्मरणपत्र भेजा। यूरोपीय शिक्षा के भारत पर प्रभाव का मूल्यांकन करना सरल नहीं है। बैंटिक के समय से अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव बढ़ा और समाज में यंग बंगाल जैसे संगठन निर्मित होने लगें। परंतु भारतीय विद्वानों को पाश्चात्य विद्वान नकली कहकर संबोधित करते हैं। भारतीयों द्वारा प्रस्तुत तर्कों को सरकार ने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया।[5]

सरकारी सहायता के अभाव में स्थानीय भाशाओं में साहित्य सृजन का कार्य व्यक्तिगत प्रयासों एवं निजी सोसाइटियों द्वारा किया गया। इन्होंने आगरा एवं अन्य प्रेसीडेंसी में स्कूली पुस्तकें लिखना प्रारम्भ किया। इन कार्यों में **'अलीगढ़ साइंटिफिक सोसाइटी'** का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। किन्तु यह प्रयास प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर तक सीमित रहे थे। देशी भाषाओं में मौलिक एवं अच्छे लेखन कार्यों का अभाव था और आंग्ल साहित्य समझना भारतीयों के लिए कठिन था।[6]

स्थानीय भाषाओं में लेखन कार्य करने वालों को आर्थिक रूप से कष्ट सहना पडा। हुगली कॉलेज में लेक्चरर जॉन वाट ने वनस्पति विज्ञान पर पुस्तक तैयार की तथा उसका बंग्ला भाषा में अनुवाद किया। यह कार्य बंगाल के गवर्नर की सिफारिश पर किया गया किन्तु नए गवर्नर ने विद्यालयों में वनस्पति विज्ञान पढ़ाने की योजना त्याग दी। इसी कारण से जॉन वाट को अपनी पुस्तक की पाँच हजार प्रतियाँ रद्दी में बेचनी पड़ी थीं।[7] निर्णायक रूप से सरकार का झुकाव अंग्रेजी साहित्य के पक्ष में ही रहा था। यद्यपि कुछ संगठनों ने देशी भाशाओं

एवं लिपियों के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा को बढ़ावा देने का कार्य किया। 1882 ई0. में बिहार में कैथी लिपि में छपी एक प्राथमिक शिक्षा की पुस्तक उत्तर प्रदेश में उच्च हिन्दी की पुस्तक की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय सिद्ध हुई। इसलिए वोलकर ने स्थानीय भाशाओं की पुस्तकों के प्रयोग का पक्ष लिया था। कृषि निदेशक डब्ल्यू0.एच0. मौरलैंड ने स्थानीय भाशा के प्रयोग को सर्वथा अनुपयुक्त मानकर इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया।[8]

19वीं शताब्दी में अपनाई गई शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत देशी भाशाओं को अनदेखा किया गया और भारतीय साहित्य के स्थान पर समाज में यूरोपीय साहित्य का महत्व बढ़ता गया। इसके विरुद्ध भारतीयों में असंतोश उत्पन्न होने लगा तथा नवीन ढंग से भारतीय साहित्य को उजागर करने का प्रयास किया गया। प्राचीन भारतीय ज्ञान एवं संस्कृति की जड़ों पर कुठाराघात किया गया। अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से हिन्दू संस्कृति में उदात्त तत्वों को बढ़ावा देने वाले कारक भी नष्ट हो रहे हैं, धीरे–धीरे इसमें कुसंस्कार तथा हास्यास्पद तत्वों का प्रभाव बढ़ रहा है।[9]

कुछ देशभक्त भारतीयों ने अपने देश के विलुप्त होते गौरव को संरक्षित करने का प्रयास किया। सरकार द्वारा स्थापित स्कूल–कॉलेज में संस्कृत भाशा एवं प्राचीन साहित्य को भी सम्मिलित किया गया। समाज में हिन्दू पंडितों द्वारा संस्कृत शिक्षा के प्रचार–प्रसार का कार्य किया गया किन्तु वैज्ञानिक आधार पर भारतीय साहित्य का अनुशीलन नवीन विश्वविद्यालयों में ही किया गया। नवीन ढंग से भारतीय साहित्य एवं दर्शन का अध्ययन करने से नवयुवकों के मन में देश के प्राचीन विचारों के प्रति जागृति उत्पन्न हुई। नवयुवक प्राचीन संस्कृति एवं आदर्शों को पुनः प्राप्त करने की ओर आकर्शित हुए। इस प्रकार धीरे–धीरे भारत का प्राचीन ज्ञान जनसाधारण तक पहुँचा तथा वह अपने अतीत से प्रेरित होकर देश की दशा सुधारने की ओर प्रवृत्त हुए।

फ्रांसीसी विद्वान **ए0 डूपरन** ने दाराशिकोह द्वारा रचित उपनिशद के फारसी संस्करण का फ्रांसीसी भाषा में अनुवाद किया। जर्मन दार्शनिक शापेनहावर इन ग्रन्थों के अध्ययन से बहुत अधिक प्रभावित हुए। अतः पाश्चात्य दर्शन पर प्राच्य दर्शन के प्रभाव का प्रारम्भ शापेनहावर से ही माना जाता है। सर विलियम्स जोंस ने संस्कृत ग्रन्थों का अंग्रेजी भाशा में अनुवाद किया। **मैक्समूलर** ने वेदों का अंग्रेजी भाशा में **'ए सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट'** नाम से अनुवाद किया। इन पाश्चात्य विद्वानों ने शास्त्रीय भाशाओं को प्रोत्साहित करने का कार्य किया था। इसी कारण भारतीय भाशाओं का आलोचनात्मक तथा वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन प्रारम्भ हुआ। भारतीय धर्म एवं इतिहास के विशय में फैली भ्रांतियाँ दूर होने लगी थीं। भारतीय विद्वानों में डा0. आर0जी0 भण्डारकर, के0टी0 तेलंग तथा डा0. राजेन्द्रलाल मित्र का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा।

राजाराममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि ने साहित्यिक जागरण की नींव रखी। **बंकिमचन्द्र चटर्जी** ने नई शैली से समाज में देशभक्ति, वीरता एवं स्फूर्ति का उद्भव किया। इसी कारण बंग–विच्छेद पर **'आनन्दमठ'** एवं **'देवी चौधरानी'** की गहरी छाप पड़ी थी। **रमेशचन्द्र दत्त** ने **'जीवन प्रभात'** तथा **'जीवन संध्या'** में स्वाधीनता का महत्व उजागर किया। **माइकेल मधुसूदन दत्त** एवं **द्विजेन्द्रलाल राय** ने अपनी रचनाओं से समाज में राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था।[10]

हरलाल राय, अमृतलाल बसु और **मनोमोहन बसु** ने अपने कृतियों से भारतीय साहित्य को धनी बनाया। **रविन्द्रनाथ ठाकुर** ने अपनी कविता, उपन्यास एवं नाटक से बंगला साहित्य को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया। उन्होंने अपनी कृतियों में वीर रस एवं भक्ति रस के सुन्दर समन्वय का प्रयोग किया है। 'वन्देमातरम्' एवं 'जन गण मन' गीत भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक बन गये। **शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय** ने अपनी कहानियों में सामाजिक समस्याओं को नवीन प्रकार से प्रस्तुत किया। समाज में स्त्रियों की दशा एवं निम्न वर्ग की स्थिति का अद्भुत वर्णन उन्होंने अपनी कृतियों में किया है। उन्होंने बड़े ही मनोरम ढंग से परिस्थितियों से उपजने वाली समस्याओं का वर्णन किया है। उनके विचार समाज में एक क्रान्ति के समान फैले।[11]

सहित्य क्षेत्र में हिन्दी को समृद्ध बनाने का श्रेय **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** एवं **स्वामी दयानन्द सरस्वती** को दिया जाता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली काव्य, नाटक की रचना कर हिन्दी को शिखर पर पहुँचा दिया। उनकी प्रेरणा से दर्जनों कवि एवं लेखक उत्पन्न हुए। उन्होंने हिन्दी साहित्य की मशाल से समाज में सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक सुधार की चेतना उत्पन्न की। उन्होंने हिन्दी के लेखकों एवं कवियों को उन्नति का उत्कृष्ट मार्ग दिखाया। स्वामी दयानन्द सरस्वती के कार्यों से हिन्दी के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। उन्होंने अपनी मातृभाषा गुजराती को उपेक्षित करते हुए राष्ट्रभाषा के योग्य हिन्दी भाषा को स्वीकार कर लिया। उन्होंने हिन्दी भाषा में ग्रन्थों की रचना की तथा भारत मे विभिन्न भागों में जगह–जगह हिन्दी में भाषण दिये। उनके प्रभाव से भारतीय जनता के हृदय में हिन्दी के प्रति प्रेम भाव उत्पन्न हुआ। उनके अनुयायी हिन्दी को **'आर्य भाषा'** कहकर सम्बोधित करते थे। उत्तर भारत में हिन्दी के प्रति जागृति उत्पन्न करने हेतु साहित्य का सजृन करने एवं उसका प्रचार–प्रसार करने का श्रेय स्वामी जी एवं आर्य–समाज को ही दिया जाता है।

प्रतापनारायण मिश्र, पं0 बालकृष्ण भट्ट, एवं **राधाकृष्णदास** ने अपनी कृतियों के माध्यम से हिन्दी के उज्जवल भविष्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिन्दी साहित्य का देश भक्ति को उजागर करने तथा सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात करने में महत्वपूर्ण स्थान रहा था। **मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली** ने उर्दू में कविता लिखी। उन्होंने मुस्लिम समुदाय की सामाजिक दशा पर प्रकाश डाला। **सर मुहम्मद इकबाल** ने अपनी कविताओं के माध्यम

से राष्ट्रीयता को जागृत किया। उसी समय **प0 ब्रजनारायण चकबस्त** विशुद्ध राष्ट्रीय कवि के रूप में उभरकर सामने आये थे।[12] उनकी कृतियाँ उच्च कोटि की होती थी तथा उनमें सामाजिकता का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है।

निष्कर्ष–

इस प्रकार से पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय साहित्य पर पड़ा। नवीन शिक्षा में भारतीय भाषाओं की अवहेलना से ही समाज में जागृति उत्पन्न हुई और भारतीय विद्वानों ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में साहित्य की रचना की। नवीन साहित्य में समाज की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का नवीन ढंग से प्रस्तुतिकरण किया गया। साहित्यिक कृतियों का समाज के नवीनीकरण में महत्वपूर्ण योगदान रहा इसलिए हम इन विद्वानों को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का साहित्यिक सिपाही भी पुकार सकते है। उनके पश्चात् राष्ट्रीयता के उद्भव एवं सुधार की भावनाओं से प्रभावित होकर नव निर्माण की दृष्टि से विभिन्न ग्रन्थों की रचना की गई। नवीन ग्रन्थों में स्वाधीनता, देशभक्ति, कर्त्तव्य–निष्ठा एवं समाज सुधार जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया।

सन्दर्भ–

1. नायक, जे0पी0, नूरुल्ला, सैयद, 'भारतीय शिक्षा का इतिहास (1800–1973)' प्रथम हिन्दी संस्करण (दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1976), पृ0. 182।
2. देसाई, ए0आर0, 'सोशल बैकग्राउन्ड ऑफ इण्डियन नेशनलिज्म' (लंदन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस–1948), पृ0. 190।
3. कुमार, दीपक, 'विज्ञान और भारत में अंग्रेजी राज' (1857–1905), (अनुवादक चंद्रभूषण) प्रथम संस्करण (ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 1998), पृ0. 144।
4. मोंटीथ, ए0एम0, नोट ऑन स्टेट ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया, 'सेलेक्शंस फ्रॉम दि रिकार्ड्स ऑफ जीओआई, (कलकत्ता 1867), पृ0. 113।
5. 'दि ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन', एनडब्ल्यूपी, प्रकाशन सं0. 5–6, (अलीगढ़–1869) पृ0. 4–11।
6. दि इण्डियन टेक्स्टाइल जर्नल, XVi (161), 15 फरवरी, 1904, पृ0. 147।
7. रिपोर्ट ऑफ दि इंडियन एजुकेशन कमीशन ऑफ 1882, पृ0. 343।
8. मौरलैण्ड, डब्ल्यू0एच0, कृशि निदेशक, यू0पी0 द्वारा लिखित नोट ऑन एग्रीकल्चरल एजुकेशन; रेवेन्यू एग्रीकल्चर, संख्या–8, सितंबर, 1902, भाग–बी, फाइल नम्बर–103।
9. दे, सुशील कुमार, ''हिस्ट्री ऑफ बंगाली लिटरेचर इन दि नाईन्टीन्थ सैन्चुरी'' (कलकत्ता विशविद्यालय–1919), पृ0. 31।
10. विद्यावाचस्पति, इन्द्र, 'भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास' (साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली–1960), पृ0. 172।
11. वही, पृ0. 172–173।
12. वही, पृ0. 174–175।

सुवाति
अस्सिटेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
ए0 एन0 डी0 कॉलेज
हर्शनगर, कानपुर (उ0 प्र0) 208012
मो. 9759442530,
swatimzn91@gmail.com

20

दलित विमर्श के नए आयाम

डॉ0 बुद्धप्रिय सिद्धार्थ

सारांश

सामाजिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में इक्सीसवीं सदी का आंकलन तमाम तरह के प्रश्न उत्पन्न करता है । भारतीय समाज की मानसिक द्वन्द्वता अपने पूरे आयाम को समेठे हुए प्राचीन और आधुनिक के मध्य घड़ी के लोलल की भांति गति कर रही है । इस सदी में जहां हम भारत को एक विकसित राश्ट्र बनाने की कल्पना करते है वही स्वंय अपने आचरणों एवं व्यवहार से अठारहवीं सदी की मानसिकता में जीने के लिए प्रतिबद्ध दिखाई पड़तें है समाज में वर्तमान सदी तक जहां समता समानता और बन्धुता का प्रकाश फैलाना चाहिए था । वहाँ हम आज भी उपेक्षा और शोशण की परम्परा को प्रवाहित होने में मदद कर रहे है शोशण और दलितो को बनाये रखने के लिए पुँजीवाद और ब्राहणीय मानसिकता ही निरंतर जिम्मेदार रहे है और आज भी स्वयं को श्रेश्ठ मानने वाली अर्थात ब्राहणीय व्यवस्था के साथ ही साथ पूँजीवाद भी विशालकाय राक्षस की भांति दबे कुचलों का शोशण जारी रखे हुए हैं ।

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने भारत को विकसित राश्ट्र की परिधि में लाने के लिए उसके सामाजिक संगठन को चुस्त – दुरुत करने का प्रयास किया । वे समाज में समता और समानता के स्तर पर ही बन्धुता को स्वीकार करते हैं । समता और समानता के आडे आने वाली श्रेश्ठता की मानसिकता और पूँजीवाद जो एक वर्ग विशेश की स्वतंत्रता और समानता की मांग को हमेशा से दबाता आ रहा है उससे संघर्श कर कमजोर और दलित अपना अधिकार और सम्मान प्राप्त कर सकता है । स्वतंत्रता समता और बंधुत्व की आकांश रखने वाले हर समाज को संघर्श की प्रेरणा देते हुए डॉ0 अम्बेडकर कहते हैं – मेरे विचार से इस देश के दो दुश्मन है , ब्राहण इसके जनक है लेकिन यह ब्रहणों तक ही सीमीत न होकर सभी जातियों में घुसा है ।

<u>प्रस्तावना</u> :–

अम्बेडकर और अम्बेडकर वादियों में आज वहीं गांधी और गांधी के अनुयायियों के बीच अम्बेडकर देश को समता और बन्धुता का पाठ पढ़ाकर सामाजिक परिवर्तन की आंकाक्षा अपने सम्पूर्ण जीवन में पाले रहे किन्तु दुर्भाग्य से वर्तमान राज राजनैतिक और सामाजिक वर्ग जो स्वयं को अम्बेडकरवादी विचार धारा का पोशक बता कर प्रसारित कर रहा है वह अम्बेडकर की दूरदर्शिता को नही छू पाया । दलित , दलित शोशित और उत्पीडित केवल एक वर्ग या जाति विशेश में हो ऐसा नहीं । सामाजिक स्तर पर भले ही थोडा सा भी सम्मान प्राप्त करने वाला आर्थिक दृश्टि से कमजोर और गरीब भी दलित और शोशित की परिधि में आता हैं । अम्बेडकर की दूरन्देशी सोच का वर्तमान दलित दृश्टिकोण उपेक्षित कर रह है । आज अम्बेडकर को एक वर्ग विशेश की बात कहने वाले के तौर पर पेश किया जा रहा है जो न केवल अम्बेकर का अपमान है बल्कि उसकी नैतिक और की बात कहने वाले के तौर पर पेश किया जा रहा है जो न केवल अम्बेडकर का अपमान है बल्कि उसकी नैतिक और विस्तृत विचारधारा को संकीर्ण बनाने और मानने का प्रयास जारी हैं और वह सिर्फ हाशिए की जातियों के उद्धार में अपने अप्रतिम योगदान के लिए याद किए जाते है । निस्संदेह डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने दलितों के भीतर आत्मगौरव का भाव भरा लेकिन शायद हम यह भूल गये कि वह सिर्फ क्रांतिकारी दलित ही नहीं थें बल्कि एक दूरदर्शी लोकतंत्र कमी भी थी। जिनकी जिन्दगी और विचार जाति और धर्म से परे सभी भारतीयों को विवकेशील ज्ञान सम्पन्न बना सकते है ।

भारतीय गणतंत्र सातवें दशक में प्रवेश कर चुका है साठ साल के लम्बे अनुभव के बाद भी गणतंत्र की मशीनरी पूरी तौर पर संविधान राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण उपेक्षित और तिरस्कृत होकर हास्यास्पद प्रतीत हो रहा है , सामाजिक परिवर्तन की आशा लगाए गरीब और बेसहारा आज भी उतना दमित और पीड़ित है जितना कि पहले था । संविधान से संरक्षण प्राप्त आरक्षण केवल उन्हें लाभ पहुँचा रहा है जो आर्थिक दृश्टि से सम्पन्न है भले ही वे सामाजिक स्तर पर वर्ण व्यवस्था के चलते निम्न वर्ग से आते हों आर्थिक लाभ लेने के लिए दलित स्वयं अपने वर्ग के गरीब और कमजोर लोगो का शोशण करने में नहीं चुकते । राजनैतिक मंच पर समानता और समता का उद्धोध निरंतर जारी है पर सामाजिक स्तर पर भेदभाव , उत्पीडन और शोषण से उत्पन्न असमानता का दौर भी चल रहा है ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाज की दोहरी मानसिकता जिसमें एक ओर मत और राजनीति के क्षेत्र में समानता है किन्तु सामाजिक संरचना में असमानता का वातावरण निरन्तर पूँजीवाद की ओर से जारी है । डॉ0 अम्बेडकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान लागू होने के बाद अपनी आशंका और संवेदना को इस प्रकार अभिव्यक्त करते है भारतीय समाज में दो बातों का पूर्णतः अभाव है ।इनमें से एक समानता । सामाजिक क्षेत्र में हमारे भारत का समाज वर्गीकृत असमानता के सिद्धान्त पर आधारित है जिसका अर्थ है , कुछ लोगों के लिए उत्थान एवं अन्यों की अवनति । आर्थिक क्षेत्र में हम देखते है कि समाज में कुछ लोगों के पास अथाह सम्पत्ति है जबकि दूसरी ओर असंख्य लोग धोर दरिद्रता के शिकार है । 26 जनवरी 1950 को हम लोग एक विरोधाभासी जीवन में प्रवेश करने जा रहे है । राजनीति के क्षेत्र में हमारे बीच समानता होगी । राजनीति में हम एक व्यक्ति एक मत एवं एक मत एक मूल्य के सिद्धान्त को स्वीकृत देगे । पर अपने सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक संरचना के चलते एक व्यक्ति एक मूल्य के सिद्धान्त को अस्वीकार करना जारी रखेंगे । हम कब तक विरोधाभासी जीवन करे

जीते रहेगे अपने सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में अस्वीकार करतें रहेगें ।

वर्तमान दलित चिंतन और दलित विमर्श जिस प्रकार से गांधी को नकारने का क्रम जारी रखे हुए है वह केवल सामाजिक समता के स्थान पर समाज के विखडन को बढ़ावा देने का प्रयास भर है आज का दलित विचारक रातनैतिक लाभ लेने के लिए तथा समाज के हाशिए के लोगों को उकसा कर उनका समर्थन प्राप्त करने के लिए गांधी और अम्बेडर की कटुता को हवा दे रहे है । किन्तु वह गाँधी और अम्बेडकर की मानसिकता में जाकर उनकी संवेदना में झांकने का प्रयास बिल्कुल भी नहीं करता । अस्पृश्यता आन्दोलन की असफलता को देखते हुए गांधी की मंशा थी कि समाज में ह्रदयपरिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है । पृथ्क मतदाता मंडल की अम्बेडकर की मांग को गाँधी ने इस लिए आपत्तिजनक माना कि यदि सामाजिक परिवर्तन की प्रारम्भिक प्रक्रिया को पृथकता के आधार पर विभाजित कर दिया तो अछूत हमेशा के लिए अछूत बने रहेगे । अम्बेडकर की पृथ्क मतदाता मंडल की माँग आज के राजनैतिक और आर्थिक युग में स्वत ही अप्रांसगित है किन्तु अम्बेडकरवादी अपनी खीझ को गाँधी की नैतिकता को कोस कर व्यक्त करते है ।

मानवीय संवेदनओं के साथ गहराई तक बैठी अस्पृश्यता की जडें जो अपना बजूद केवल व्यक्ति नरक बनाए हुए है उसे अपने स्थान से विचलित करने के लिए मनुश्य की संवेदना को झकझोर कर सामाजिक संरचना की ओर उन्मुख करना उस समय भी अनिवार्य था और आज भी अपरिहार्य है । गांधी जी ने अस्पृश्यता निवारण के लिए जो प्रारभिक कदम उठाये वे इन तथ्यों की पुश्टि करते हैं । डॉ0 अंबेडकर अस्पृश्सता के संबंध में महात्मा गाँधी के विचारो से असतुश्ट थे । वे दलितों का उत्थान सामाजिक और शोशण का स्थाई हल निकालना चाहते थे ।इसका अर्थ यह है कि दलितों की मुक्ति के लिए वे पृथ्कतावाद को अनिवाय मानने के लिए तैयार नहीं थे । उन्होनें दलितों की राजनीतिक पृथ्कता का विरोध किया क्योकि यह सामाजिक पृथ्कता को तर्क संगत बनाना था और सामाजिक प्रभेद को एक दूसरें सिरे से उकसाना था । सामाजिक पुथ्कतावाद की जगह सामाजिक सुधार और न्याय की जरुरत थी । प्रति घृणा पर आधारित पृथ्कतावाद कभी भी तथाकथित ऊँची जातियों की गुलामी से दलितो मुक्ति का सही रास्ता नहीं था ।

आज जब बडें पैमाने पर विभिन्न स्तरों पर अस्पृश्यता का लोप हो रहा है तब गाँधी जी द्वारा पृथ्क मतदाता मंडल के विरोध की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है । वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य में और अम्बेडकर की माँग का कोई औचित्य नजर नही आता । राजनैतिक भागीदारी केवल भौतिकवाद का पोशण करने का माध्यम है जबकि अस्पृश्यता का निवारण केवल सामाजिक संरचना को चुस्त – दुरुत करने पर ही संभव है जब गाँधी जी कहते है कि अस्पृथ्ता का निवारण न धन से होगा न बाह्रय संगठनों से और यहा तक कि राजनैतिक सस्ता से भी नही होगा तो वे डॉ0 अम्बेडकर को ही आध्यात्मवादियों की भाशा में व्यक्त कर रहे होते हैं । आध्यात्मवादी ऐसे प्रयासों को भौतिक प्रगति प्राप्त करने के रुप में देखते है । आर्थिक अवसर का विचार धन के रुप में व्यक्त होता है । जबकि नागरिक अधिकार और सामाजिक भागीदार राजनीतिक सस्ता के रुप में हैं ।

निष्कर्ष :–

वर्तमान दलित विमर्श के समक्ष एक एक करके जैसे तथ्य और विचार उभरते जाते है वैसे नये नये सन्दर्भ और तथ्यों को लेकर ऊहापोह की स्थिति में है । उसे जब जैसा कथन मिल जाता है वह उसी का प्रयोग करने लगता है । दलित खीझ भरी भाषा शैली का प्रयोग करने लगता है । दलित चिन्तकों की ओर से गांधी पर वर्ण व्यवस्था का पोषक और हिन्दुधर्म का संरक्षक होने का आरोप भी लगाया जाता है लेकिन यह बहुत ही दुःखद है कि ऐसा आरोप लगाने वाला स्वयं कितना धर्म निरपेक्ष है इस सवाल के लिए न कोई मानक है और न ही कोई आधारन । लोकतंत्र में स्वतंत्रता के अधिकार को प्राप्त करके मनमानी करने और कहने की परम्परा का विकास नयी सदी की बहुत बड़ी उपलब्धि हैं । भारतीय समाज में ही नहीं संपूर्ण विश्व की मानव जाति आस्था धर्म और परंपराओ से परिचिलित है किन्तु गाँधी के विषय में आरोपों – प्रत्यारोपों का सिलसिला भी इक्कीसवीं सदी में चल पड़ा है । गाँधी जी धर्म निरपेक्ष थे और उनका दर्शन एवं विचार भी किसी धर्म विशेश को नहीं वरन् धर्म की आत्मा को अधिक महत्व आज भी दे रहा है और भविष्य में भी देता रहेगा ।

धार्मिक मानदण्डों पर आधारित समाज और राजनीति सदैव नैतिक मार्ग पर चल कर आदर्श समाज निर्माण की ओर अग्रसर होता है । गांधी इस तथ्य को बहुत ही गहराई से देख पाये थे । व्यक्ति को सामाजिक बनाने तथा नैतिकता के आनुपालन में पूर्ण धार्मिक भावनाओं को जगाना बहुत ही महत्वपूर्ण है । जो मान्यताए को अप्रासंगिक मानकर किसी विशेश परिवर्तन की उम्मीद करना व्यर्थ है । गाँधी नें स्वच्छ समाज और शुद्ध राजनीति के लिए धार्मिक समाज के अन्तर्गत को सही दिशा देने के लिए की प्रासंगिकता को बरकरार रखा ।

निष्कर्ष

गाँधी दर्शन और उनके दलित दृष्टिकोण को सही परिप्रेक्षय में समझने की प्रवृति को वर्तमान परिदृश्य में विभिन्न अध्येताओं और श्रेष्ठ विचारों ने गाँधी की धर्म सम्बधी विचारधारा को हिन्दु धर्म दर्शन की प्राचीन संस्कृति से पृष्ट माना है । हिन्दु धर्म की वैष्णव परंपरा को परपीडा और पर दुखकातरता जैसे विषद सामाजिक चिन्तन से जोड़ते हुए गिरिराज किशोर ने एक ओर गांधी दर्शन को व्यापकता प्रदान की । गाँधी के सामाजिक चिंतन की मूल अवधारण को वैषणव परंपरा से जोडते हुए गिरिराज किशोर लिखते दृष्टिकोण को सही परिप्रेक्ष्य में समझने की प्रवृत्ति को वर्तमान परिदृष्य में विभिन्न भी शासन और प्रशासन खर्च के नाम पर रिश्वत

लेने या माँगने में नहीं हिचकता । व्यक्ति मजबूत और निराश होकर इस परंपरा का निर्वाह इस लिए कर रहा है कि उसके पास शासन और प्रशासन से टकराने का साहस नहीं हैं । व्यक्तिगत लाभ और व्यक्तिगत स्वार्थ मनुश्य की मानसिकता पर निरन्तर हावी होता जा रहा है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गेल ओमवेट : अम्बेडकर एण्ड आफ्टर , द दलित मूवमेण्ट इन इण्डिया सं0 धनश्याम शाहा , सेज पब्लिकेशन 2002
2. रामचन्द्र गुहा , अमर उजाला पृष्ठ सम्पादकीय 25.01.2010
3. भीमराव अम्बेडकर : संविधान सभा में दिया गया भाषण , नवम्बर , 1949 , सामाजिक क्रान्ति दस्तावेज 2 , सं0 शम्भुनाथ , वाणी प्रकाशन 2004
4. शम्भुनाथ , हिन्दी नवजागरण और संस्कृति पृ0 सं0 – 147
5 अभय कुमार दुबे , आधुनिकता के आइने में दलित , पृ0 सं0 78
6. गिरिराज किशोर , जन – जन जनसत्ता , 239
7. राजकिशोर , प्रधान सम्पादकः दलित राजनीति की रामस्याएँ , पृ0 सं0 124
8. गिरिराज किशार , दलित विमर्शः संदर्भ गांधी , प्र0सं0 12

डॉ0 बुद्धप्रिय सिद्धार्थ

असिस्टेंट प्रोफेसर (समाज शास्त्र विभाग)

ठाकुर रोशन सिंह संघटक राजकीय महाविद्यालय ,

नवादा – दरोवस्त , कटरा ,खुदागंज शाहजहाँपुर , उ0प्र0

मो0 नं0 –9415587252 , 9651610427

Email - dr.buddhapriya@gmail.com

21

प्रधानमन्त्री के रुप में राजीव गाँधी को लोकसभा में प्रचण्ड बहुमत प्राप्ति की समीक्षा

डॉ0 जुल्फिकार अली

सारांश

वक्त की लीला अनोखी है । वह अपने खेल व लीला से चमत्कारित फैसले करके एक नया इतिहास रच देती है । राजीव गाँधी के समक्ष प्रधानमन्त्री पद संभालने के पश्चात् सबसे बड़ी समस्या थी राजधानी और देश के कई भागों में व्याप्त हिंसा पर काबू पाना ।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी के निवास पर उनकी नृशंस हत्या कर दिये जाने से एक विशेष समुदाय के खिलाफ हिंसा भड़क उठी थी । उसको साम्प्रदायिक की श्रेणी में भी नहीं रखा जा सकता था क्योकि उस समय हिंसा का प्रमुख कारण अपने प्रिय नेता की दर्दनाक मृत्यु से था । सीकरी आयोग की रिपोर्ट के अनुसार वह भयानक व हिंसक उपद्रव देश विभाजन के समय होने वाले हत्याकाण्ड से भी अधिक जघन्य था । सीकरी आयोग ने अपनी आख्या में 31 अक्टूबर 1981 से 1 नवम्बर के मध्य दिल्ली में घटी विभिन्न घातक घटनाओं की छानबीन करने हेतु एक समिति के गठन की सिफारिश की थी ।

आकाशवाणी और दूरदर्शन से तत्कालीन प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी ने 31 अक्टूबर 1984 को राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कहा था –

प्रिय देशवासियों ! भारत की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की हत्या हो गयी है । वह केवल मेरी ही माँ नहीं देश की माँ थीं । उन्होने अपने खून की अन्तिम बूँद तक इस देश की सेवा की । आज देश का जो रुप है , उसे बनाने में उनका कितना हाथ , कितना श्रम और कितनी साधना लगी थी , यह सारा देश जानता है ।

<u>प्रस्तावना</u> :–

आप सब जानते हैं कि उनका एक सपना था – एक अखण्ड , शान्तिपूर्ण खुशहाल भारत का , जात – पात से दूर , भेदभाव से दूर जिसमें हम सभी एक बड़े परिवार की तरह रहे । उनकी अकाल मृत्यु से वह अपना काम अधूरा छोड़ गयी हैं । हमें इस काम को पूरा करना है । इस शासन तन्त्र ने इस संकट के समय में मुझ पर जो जबावदेही रख दी है मैं उसको आपके बल और सहयोग से पूर्ण करुँगा । आशा करता हूँ कि आप सभी मुझे सही दिशा दिखायेंगे ताकि मै भारत की मर्यादा , उसका नाम , उसके बुद्धिबल और धीरज का सबूत देने में समर्थ हो सकूँ ।

जहाँ एक ओर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की आठवीं मंजिल पर स्थित आप्रेशन थियेटर में इन्दिरा गाँधी की जिन्दगी और मौत की जंग जारी थी । वहाँ दूसरी ओर मेडिकल सुपरिटेंडेंट के कमरे में आगामी प्रधानमन्त्री पर बहस जारी थी । कमरे में पी0 सी0 अलैक्जैन्डर , अरुण नेहरु , शिव शंकर , बूटा सिंह , आर0के0 धवन , जी पार्थ सारथी , आर0 वैकट रमण , गुलाम नबी आजाद व पी0 हांकरानन्द में विचार विमर्श हो रहा था कि अब किसे नेता बनायें तभी राजीव गाँधी के एक निकटतम साथी ने राजीव गाँधी का नाम सुझााया । उस समय श्री आर0 वैंकट रमण जो तत्कालीन उपराष्ट्रपति भी थे तथा राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह की अनुपस्थिति में वरिष्ठ भी थे उन्होंने कोई भी आपत्ति नहीं की। उस दिन लगभग 2 बजे नरसिम्हा राव भी राजधानी पहुँच गये । उस समय यह भी प्रस्ताव था कि जिस प्रकार नेहरु जी और शास्त्री जी की मृत्यु के पश्चात् जो हुआ था वैसा ही किया जाये अतः बार भी राश्ट्रपति अन्तरिम प्रधानमन्त्री बनायें । जो भी वरिष्ठ हो उसे यह भार सौंप दिया जाये । वरिष्ठ तो उस समय प्रणव मुखर्जी थे जो उस समय राजधानी में उपस्थित भी नहीं थे फिर वह लोकसभा के सदस्य भी नहीं थे इसलिए उनके नाम पर सभी एकमत नहीं थे । स्पष्टतया उनके बाद नरसिम्हा राव का नाम ही सबके साथ था वह लोकसभा के सदस्य भी थे ।

दिन के लगभग साढे तीन बजे राजीव गाँधी प्रणव मुखर्जी के साथ वहाँ पर आ गये । राजीव गाँधी उस समय अत्यन्त दुःखी थे फिर भी उन्होनें धैर्य नहीं खोया । वह अत्यन्त गम्भीर थे उपरोक्त प्रस्ताव के सम्बंध में निर्णय उन्होंने उन सभी लोंगो पर ही छोड़ दिया ।किन्तु उसी समय वसन्त साठे ने कहा अन्तरिम प्रधानमन्त्री चुनने की कोई आवश्यकता नहीं है। राजीव को ही सीधा स्थायी रुप से नेता चुना जाना चाहिए । राजीव गाँधी के पक्ष में सभी के होने की स्पष्ट वजह थी कि आठवीं लोकसभा के चुनाव का समय भी अत्यन्त निकट था । सभी का विश्वास था कि कांगेस (इ) की विजय हेतु इस समय तुरुप का पत्ता राजीव गाँधी ही हो सकते है वह सबसे अधिक वोट अपने पक्ष में बटोर सकते हैं ।

तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जो अपनी विदेश यात्रा अपूर्ण छोड़कर भारत ही लौटे थे उनके मन में तो कुछ अन्य निर्णय हिलोरे मार रहा था । वह भले ही बहुत बड़ी डिग्री धारक नहीं थे किन्तु अपने अधिकारों का प्रयोग करना उनको भली भाँति याद था । उन्होंने अपने संवैधानिक अधिकार की कि प्रधानमन्त्री की नियुक्ति राष्ट्रपति करेगा और वही प्रधानमन्त्री की सिफारिश पर मन्त्रियों की नियुक्ति करेगा का प्रयोग करने का मन बना लिया और संसदीय दल के फैसले की प्रतीक्षा किये बिना उसी संध्या राजीव गाँधी को प्रधानमन्त्री पद की शपथ ग्रहण करा दी ।

पंजाब व असम राज्य को छोड़कर 24 और 27 दिसम्बर को देश में आठवी लोकसभा के चुनाव होने थे। अपने पहले दिवस पर ही राजीव गाँधी ने प्रधानमन्त्री कार्यालय समय पर पहुँच कर सभी सरकारी तन्त्र को सजह कर दिया। 12 नवम्बर 1984 को उन्होनें आठवीं लोक सभा हेतु आम चुनाव की घोषण कर दी । क्योंकि राजीव गाँधी कभी भी कुर्सी से चिपके नहीं रहना चाहते थे उनका मानना था कि जनतन्त्र में जनता का , जनता द्वारा और जनता के लिए ही शासन

होना चाहिए ।

राजीव गाँधी ने निश्चित समय पर घोषित के अनुसार दिसम्बर 1984 में आठवीं लोक सभा का आम चुनाव करवाया । इन्दिरा गाँधी की सरेआम हत्या हो जाने के कारण राष्ट्र की सहानुभति कांग्रेस अर्थात् प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी के साथ थी । जैसे जैसे बैलट वॉक्स खुलते जा रहे थे वैसे वैसे जो परिणाम आये वह चौकाने वाले तथा अद्‌भुत थे । अंग्रेजी में एक कहावत है कि मतपेटी से अजूबे निकलते हैं । विभिन्न प्रयोगों और व्यवहारों के आधार पर यह कहावत संसार भर के सभी जगह निर्वाचनों के विषय में खरी उतरती है तथा भारत भी इससे अछूता नहीं रहा है। 29 दिसम्बर 1984 को कांग्रेस ने लोकसभा सीटों में से 401 प्राप्त कर ली थी । परिणामों के आधार पर विभिन्न राजनीतिक दलों की स्थिति इस प्रकार रही थी –

विभिन्न राजनीतिक दलों की स्थिति

काग्रेस (आई)	:	401
तेलगुदेशम	:	28
सी0पी0आई0 (एम)	:	22
ए0आई00ए0डी0एम0के0	:	12
जनता	:	10
सी0 पी0 आई0	:	6
डी0एम0के0पी0	:	03
एन0 सी0 (एफ)	:	03
वी0 जे0 पी0	:	02
पी0 डब्ल्यू0 पी0	:	01

राज्य बार चुनावों के परिणामों को देखकर यह प्रतीत हुआ है कि प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की हत्या से उपजी राजीव गाँधी के प्रति सहानुभूति की लहर ने ऐसा कहर ढ़ाया कि विपक्षी पार्टियाँ धराशायी हो गयी । एन0 टी0 रामाराव की तेलगुदेशम पार्टी ही सबसे अधिक 28 सीटें प्राप्त करके सत्ता पक्ष के समक्ष विपक्ष में बैठने का अधिकार प्राप्त कर सकी थी जबकी अन्य सभी राजनीतिक दल हाशियें पर आ गये थे ।

लोकसभा के इन चुनाव परिणामों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए चौ0 चरण सिंह ने कहा कि कांग्रेस (आई) ने सभी का सफाया कर दिया है । उसने तुम्हें, मुझे सभी राजनीतिज्ञों को शूट कर दिया है । अटल बिहारी वाजपेयी ने एक समाचार पत्र को दिये गये साक्षात्कार में व्यक्त किया था कि राजीव गाँधी को मिली इतनी बडी सफलता इस बात का प्रतीक है कि सहानुभूति का लाभ उनको प्रमुख रुप से प्राप्त हुआ ।

स्वतन्त्र भारत के इतिहास में यह प्रथम अवसर रहा था जबकि किसी एक राजनीतिक दल ने लोकसभा की 81 प्रतिशत सीटों पर विजय प्राप्त की है । इन चुनावों में सबसे उल्लेखनीय तथ्य यह रहा कि दक्षिणी भारत में कांग्रेस को झटका लगा था । इन्दिरा गाँधी सरकार में कैबिनेट मन्त्री रहे छः कांगेस नेता चुनाव हार गये । वहीं दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी को मात्र दो सीटों पर ही विजय पाकर सन्तोश करना पडा जबकि 28 सीटों पर कब्जा करके नन्दमूरि तारिक रामाराव उस समय के प्रमुख सिने तारित की पार्टी तेलगुदेशम मुख्य विपक्षी दल के रुप में उभर का सामने आया था । इतने बड़े विशाल बहुमत के साथ भारतीय जनता ने चालीस वर्शीय चुवा प्रधानमन्त्री को चयनित कर देश का शासनतन्त्र प्रदत्त किया था । उसकी कल्पना को राजनीति के अखाड़े के खिलाड़ियों के दिमाग में ही नहीं थी । विभिन्न विपक्षी दल तो गठबन्धन सरकार के बनने की सम्भावना पर बल दिया था । आन्ध्र प्रदेश को छोड़कर शेष भारत में राजीव गाँधी की पार्टी कांग्रेस (ई) मतदाताओं ने विशाल समर्थन दिया था

कांग्रेस (आई) दल ने सर्वसम्मति से अपना नेता राजीव गाँधी को चुन लिया । जब राजीव गाँधी भारत के प्रधानमन्त्री बनने जा रहे थे तब राजीव गाँधी को कनाडा के बानकूवर से सात वर्शीय सिक्ख लड़की का एक पत्र मिला था जिसमें उसनें लिखा था कि कृपया आप अपनी मम्मी की तरह बहादुर बनें और भारत पर अच्छी तरह शासन करें। यद्यपि राजीव गाँधी के पास अपनी राजनीतिक पृश्ठभूमि कुछ भी नहीं थी जिस प्रकार से नेहरु जी के पास स्वतन्त्रता संग्राम का विशाल अनुभव, शास्त्री जी के पास राजनीति का अनुभव और श्रीमती इन्दिरा गाँधी के पास सत्रह वर्ष की भारतीय राजनीति का अनुभव ऐसा कुछ भी नहीं थी तथापि यह सब न होना ही भारतीय जनमानस को सबसे अच्छा लगा । ऐसा मुझ शोधार्थी का मानना है ।

<u>निष्कर्ष</u> –

स्वतन्त्र भारत के उस समय तक के सबसे युवा प्रधानमन्त्री के रुप में तत्कालीन राश्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने राजीव गाँधी को प्रधानमन्त्री के रुप में पद और गोपनीयता के रुप में शपथ दिलायी ।

अपार बहुमत पाकर श्रीमती इन्दिरा गाँधी के पश्चात् राजीव गाँधी ने सत्ता सभ्भाली ऐसी आशा किसी को न थी । इन्दिरा जी के निधन पश्चात् जिस सहजता के साथ राजीव गाँधी को कांग्रेसी संसदीय दल का नेता चयनित किया गया वह भी अपने आप में एक विशेशता थी । ऐसी आशा किसी को न थी । विरोधी तो कुछ और ही गणना किये बैठे थे । हर व्यक्ति का अपना अलग अलग नजरिया था। राजीव गाँधी को प्रधानमन्त्री बनाये जाने पर जो किया – प्रतिक्रियायें हुई तथा उनको जो बधाई सन्देश प्राप्त हुए उससे ऐसा प्रतीत हुआ कि राजीव गाँधी अपने दल में तो प्रिय थे ही अपितु उनके प्रति प्रेम भाव अन्य दलों के व्यक्तियों में भी विद्यमान था ।

राजधानी दिल्ली से प्रकाशित अंग्रेजी समाचार पत्र ने सम्पादकीय लेख में लिखा था कि श्री राजीव गाँधी भारत के आयु में सबसे छोटे 40 वर्षीय प्रधानमन्त्री हैं। वह सर्व साधारण की मनोस्थिति का चित्रण करते हैं और उनमें ऊर्जा भर देते हैं । वह सभी कुछ इतनी बेताबी से करने के लिए आतुर हैं । उनसे

सर्वसाधारण को अनेकों अपेक्षायें हैं शायद वह अनुचित रुप में अधिक हैं ।

न्यूयार्क के महापौर एडवर्ड कोच ने तीन हजार से अधिक प्रवासी भारतीयों के साथ नगर के प्रसिद्ध सैन्ट्रल पार्क में जाकर श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रति भाव भीनी श्रृद्धांजलि दी तथा भारत के नव नियुक्त प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी के पक्ष में विश्व भर का सहयोग प्रदान करने हेतु आह्वान किया । इस अवसर पर उन्होंने राजीव गाँधी को किसी प्रकार थोपे जाने की प्रक्रिया से इन्कार किया और कहा कि उनको स्वतन्त्रतापूर्वक चुना गया है ।

सन्दर्भ सूची

1. नवभारत टाइम्स : दिल्ली से प्रकाशित , 30अक्टूबर , 1984
2. दि टाइम्स ऑफ इन्डिया : 01 नवम्बर 1984
3. हिन्दुस्तान : दैनिक समाचार पत्र , 01 नवम्बर 1984
4. मल्होत्रा , इन्दर : इन्दिरा गाँधी, नेशनल बुक ट्रस्ट इन्डिया , अनु 0 व्रज कुमार पाण्डेय दिल्ली , वर्ष 2007 , पृ0 सं0 175
5. इन्डिया टुडे : दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका, 5 फरवरी 1981 , पृ0 सं0 28
6. शंकर , रवि : राजीव गाँधी अमेठी में , सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, वर्ष 1986 ,पृ0सं0 22
7. गौड़ , अनीता : राजीव गाँधी , राजश्री प्रकाशन , दिल्ली , वर्ष 2006 , पृ0 सं0 55
8. जैन , डॉ0 के सी0 : भारत के प्रधानमन्त्री , यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन दिल्ली, वर्ष 2008, पृ0सं0 161
9. मिश्र , भगवती शरण : भारत के प्रधानमन्त्री, राजपाल एण्ड सन्स , दिल्ली, वर्ष 2006, पृ0 सं0 144
10. वेदी , पी0 एस0 व राज शर्मा : राजीव गाँधी, अवर नेशनल हीरो , राज भिन्द्रा पबिल्शर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स , जालन्धर , वर्ष 1985 पृ0 सं0 140

डॉ0 जुल्फिकार अली

असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

ठाकुर रोशन सिंह संघटक राजकीय महाविद्यालय

नवादा – दरोवस्त , कटरा – खुदागंज , शाहजहाँपुर , उ0प्र0

मोबाइल नं0 – 7906074463

22

मानवाधिकार को प्रभावित करता पर्यावरणीय प्रदूषण भारत के सन्दर्भ में :

डॉ0 जिलेदार, डॉ0 आशुतोष

सारांश

अधिकारों के आदर्शवादी सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक मानव को अपने अस्तित्व एवं विकास को सुरक्षित रखने का अधिकार है । इन अधिकारों से अभिप्राय है जो एक मनुष्य को मनुष्य होने के नाते स्वाभावित रुप से प्राप्त होने चाहिए । भोजन, वस्त्र , आवास तथा स्वच्छ हवा में श्वांस लेने का अधिकार यहाँ के हर नागरिक को है , परन्तु पर्यावरण प्रदूषण के कारण यहाँ पर मनुष्य का अधिकार प्रभावित हो रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से पर्यावरणीय प्रदूषण तथा मानव अधिकार का विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत पत्र में पर्यावरणीय प्रदूषण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं तथा इसके समाधान पर प्रकाश डालते हुए भारत सरकार ने पर्यावरणीय प्रदूषण पर नियंत्रण हेतु विभिन्न अधिनियमों को भी पारित किया गया है। जिस पर प्रकाश डाला गया है ।

कुँजी शब्द – मानव अधिकार , पर्यावरणीय प्रदूषण , पर्यावरणीय सम्बंधी महत्वपूर्ण अधिनियम ।

<u>प्रस्तावना</u> :–

मानवधिकार से आशय उन अधिकारों से है , जो मूलतः किसी भी व्यक्ति को उसके जन्म से उसे प्राप्त हो जाते हैं। जैसे जीवित रहने का अधिकार, स्वच्छ हवा में श्वांस लेने का अधिकार, सन्तुलित भोजन का अधिकार , स्वच्छ पानी पीने का अधिकार , विचार , विश्वास तथा अभिव्यक्ति का अधिकार आदि। जब मनुष्य अपने प्राकृतिक अधिकारों (Natural Right) को पाने में वंचित रहता है, तो इन परिस्थितियों में उसके स्वभाव में कुण्ठा और आक्रोश का जन्म होता है जो एक विनाशकारी प्रवृत्ति है , जिससे राष्ट्र की ही नहीं वरन विश्व की सभ्यता व संस्कृति के ह्रास का संकट बना रहता है यदि हम मानवीय अधिकारों की अवहेलना के एतिहासिक पृष्ठभूमि की ओर ध्यान आकृष्ट करें तो हमें इसके अनेक उदाहरण मिलेंगे , जो कि मानवीय सभ्यता को नष्ट करने के कारण रहे हैं। इस विनाशकारी प्रवृत्ति को रोकने और प्रभावित अधिकारों की रक्षा के लिए अक्टूबर 24, 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nation Organisation) की स्थापना की गई , जिसका प्रमुख उद्देश्य अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा बनाये रखना , राजनैतिक आर्थिक एवं सामाजिक अनुकूलन परिस्थितियों को बनाये रखना, और मावनीय विशमताओं को दूर करना है। मानवीय विशमताओं को दूर करने और मानव संहार को रोकने के लिए दिसम्बर 10, 1948 को मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की गई । जिसमें समानता , स्वतंत्रता, सुरक्षा तथा विचार अभिव्यक्ति के अधिकारों को शामिल किया गया है । जो कि हर वर्ष 10 दिसम्बर को सभी देश मानवाधिकार दिवस के रुप में मनाते है ।

भारत में मानवीय अधिकारों के सन्दर्भ में भारतीय नागरिकों को भारत शासन द्वारा कुछ मौलिक अधिकार प्रदान किये गये हैं। भारत में मानवाधिकारों का वर्णन भारतीय संविधान में उल्लिखित है। भारतीय संविधान के निर्माण का प्रमुख श्रेय डॉ0 भीमराव अम्बेडकर को जाता है । डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर ने मानवीय अधिकारों के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संविधान में वर्णित मूल अधिकारों को भारतीय संविधान की आत्मा कहकर सम्बोधित किया गया है। भारत विश्व के अल्प विकसित देशों मे से एक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम देश में नियोजित आर्थित विकास के सतत् प्रयास होते रहे हैं। इसके परिणाम स्वरुप देश ने आर्थिक विकास में उल्लेखनीय प्रगति की हैं। स्वतंत्रता के समय देश में खाघान्न एवं अन्य उपभोगक्ता वस्तुओं का नितान्त आभाव था। सन् 1955 तक देश में खाद्यान्न का उत्पादन मात्र 5 करोड़ टन था। अब देश में खाद्यान्न उत्पादन 20 करोड़ टन होने से भारत खाद्यान्न में आत्म निर्भर हो गया है। कई औद्योगिक पदार्थो जैसे इस्पात , सीमेन्ट , कपास , वस्त्र में भारत आत्म निर्भर है । कई औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से भारत विश्व का दसवां राष्ट्र बन चुका है , परन्तु भारत अभी भी आर्थिक विकास की दृष्टि से खाद्यान्न में लगभग आत्म निर्भर होते भी भारत को खाद्यान्न तेलों का आयात करना पड़ता है। आज भी भारत को औद्योगिक वस्तुएँ जैसे रासायनिक उर्वरक, कागज , उत्कष्ट मशीनों, वायुयान जैसे परिवहन उपकरण को आयात करना पड़ता है ।

<u>पर्यावरण ह्रास से उत्पन्न समस्यायें</u> :–

भारत में इतनी बड़ी जनसंख्या के सामने एवं जीवन की अन्य मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में बड़ी कठिनाई होती है इसके लिये देश में आर्थिक विकास की दर 9 से 10 प्रतिशत वार्षिक करने की आवश्यकता है। भारत का आर्थिक विकास अभी कई प्रकार से असन्तोषप्रद है। देश में निर्धनता एवं असमानता मिटाने के लिये भारत में बड़े पैमाने पर आर्थिक विकास को प्राप्त किया है जिसके परिणाम स्वरुप देश में व्यापक रुप से वायु प्रदूशण, जल प्रदूशण , मृदा अपरदन तथा ऊर्जा संकट की समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं ।

- देश में प्रतिवर्ष 12 अरब टन मिट्टी का अपरदन हो रहा है ।
- प्रत्येक वर्ष जितने क्षेत्र में फसल की उपज बढ़ाने के लिए सिंचाई की व्यवस्था की जाती है। इसके एक चौथाई से आधा जल रिक्तता तथा मिट्टी में लवणता वृद्धि से ग्रस्त होने से जमीन कृषि के लिये अस्थाई रुप से अयोग्य हो जाती है ।
- सिंचाई एवं जल विद्युत की सुलभता बढ़ाने के लिये देश में 1551 बांध निर्मित अथवा निर्माणाधीन हैं, परन्तु इनमें से बड़े बांधों के बनने से अनेक परिस्थितिकी समस्याएँ उत्पन्न हो रही है ।
- देश में कुल ऊर्जा का उपभोग लगभग आधा सिर्फ भोजन पकाने

पर खर्च होता है । जिसकी आपूर्ति 90 प्रतिशत ऊर्जा लकड़ी , गोबर एवं फसलों के डण्ठल आदि से प्राप्त होता है। इमारती लकड़ी एवं जलावन की लकड़ी के लिये वृहद पैमाने पर वन कटाव के चलते वास्तविक वन क्षेत्र कुल क्षेत्रफल के 11 प्रतिशत पर सिकुड़ गये हैं ।

- कृषि उत्पादकता वृद्धि के लिये कीटनाशक दवाओं का प्रयोग हो रहा है इनसे उत्पादन खाद्यान्न का प्रयोग करने पर अधिक से अधिक लोग बीमारियों का शिकार तो होते हैं साथ ही साथ इन दवाओं को बनाने तथा छिड़कने में लगे लोग भारी संख्या में मरते हैं ।
- भारत में औद्योगिक संश्लिष्टों एवं नगरों के आस पास वायु प्रदूषण का स्तर चिन्ताजनक है। औद्योगीकरण एवं नगरीकरण बढने के साथ साथ जल प्रदूषण की स्थिति गम्भीर हो गई है । भारत की शत प्रतिशत नदियों का जल नगरों के वाहित मल तथा औद्योगिक कचरे से प्रदूषित है ।
- नदियों में पहुँचने वाले वाहित मल के शुद्धिकरण की सुविधा नही के बराबर होने के कारण अधिकांश नदियाँ प्रदूषित हो चुकी हैं ।
- देश के नगरों में भी कूड़ा कचरा संग्रह एवं निस्तारण की व्यवस्था न होने से इनसे उत्पन्न प्रदषण बढता है ।
- देश की अधिकांश जनसंख्या कुपोषण एवं प्रदूशित जल तथा वायु सेवन से जनित बीमारियों के चलते हर नगर में निजी नर्सिग होम गली कूँचों में बढ़ती संख्या से अस्पतालों का प्रकोप लगभग फैला रहता है ।
- देश को विकराल जनसंख्या वृद्धि ने हर तरह की पर्यावरणीय समस्या को उत्पन्न किया है ।

प्रत्येक मनुष्य को स्वच्छ वायु में सांस लेने , स्चच्छ जल पीने और प्रकृति की अन्य दोनों को उनके प्राकृतिक स्वरुप में यंथा सम्भव उपयोग करने का एक नैसर्गिक अधिकार को देखते हुए जिस व्यवसाय में वायु , जल और वातावरण प्रदूषण हो सकता है , वह व्यवसाय करने के मूलभूत अधिकार को समाज के कल्याण के हित में सीमित कर दिया जाना चाहिए । पर्यावरण के समस्त पहलुओं को सुरक्षित रखने से सम्बंधित विनिदिष्ट विधियाँ सम्पूर्ण विश्व में बनाई जा रही हैं । भारत भी इस दिशा में अग्रसर हो रहा है । भारत में पर्यावरण संरक्षण संबंधी लगभग 200 कानून है । भारत के संविधान में यह स्वीकार किया गया है कि राज्य और नागरिकों का यह कर्तव्य है कि वे पर्यावरण की रक्षा करें । इस हेतु अधिनियम बनाये गये हैं विशेष रुप से जल प्रदूषण के नियन्त्रण वायु प्रदूषण के नियन्त्रण , वन्य जीवों के संरक्षण तथा वन के संरक्षण से संम्बंधित है ।

<u>पर्यावरण संम्बंधी कुछ महत्वपूर्ण अधिनियम</u> :–

1. शोर एक्ट – 1877
2. भारतीय दण्ड संहिता – 1860
3. इण्डियन फिशरीज अधिनियम – 1877
4. विश अधिनियम – 1919
5. खान एवं खनिज अधिनियम – 1947
6. फैक्ट्री एक्ट – 1948
7. उद्योग (नियन्त्रण एवं विकास) अधिनियम – 1951
8. प्रिवेन्शन आफ फूड एडल्ट्रेशन अधिनियम – 1954
9. रिवर बोर्ड अधिनियम – 1956
10. पीड़कनाशी अधिनियम – 1968
11. मर्चेन्ट शिपिंग (संशोधन) अधिनियम – 1970
12. विकिरण संरक्षण अधिनियम – 1971
13. वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम – 1972
14. दण्ड प्रक्रिया संहिता – 1973
15. जल प्रदूषण निवारण एवं नियन्त्रण अधिनियम – 1974
16. वन संरक्षण अधिनियम – 1980
17. वायु प्रदूशण निवारण एवं नियन्त्रण – 1981
18. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम – 1986
19. मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम – 1989
20. पब्लिक लायबिलिटी इन्शोरेन्स अधिनियम – 1991

<u>भारत का संविधान एवं पर्यावरण</u> :–

भारत के संविधान में पर्यावरण के संरक्षण के लिये संविधान (42 वां संशोधन) अधिनियम, 1976 द्वारा विनिदिष्ट उपबन्धों को नियमित किया गया है। अब राज्य और प्रत्येक नागरिक का अनिवार्य कर्तव्य है कि वह पर्यावरण की रक्षा कर और उसमें सुधार करे । भारत के संविधान के भाग चार में राज्य की नीति के निर्देशक तत्व दिये गये हैं अनुच्छेद 47 में यह कहा गया है कि लोक स्वास्थ्य का सुधार राज्य के प्राथमिक कर्तव्यों में से एक कर्तव्य है । अनुच्छेद 48 – अ में उल्लेख है कि राज्य पर्यावरण का संरक्षण तथा सुधार करने तथा देश के वनों तथा वन्य जीवों को सुरक्षा करने का प्रयास करेगा। अनुच्छेद 51 अ (छ) में विनिर्दिष्ट रुप से पर्यावरण से सम्बंधित मूलभूत कर्तव्यों का उल्लेख है । इस अनुच्छेद में वनों , झीलों , नदियों तथा वन्य जीवों सहित प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण तथा सुधार करना तथा जीवित प्राणियों के प्रति दया भाव रखना , भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होगा ।

<u>पर्यावरणीय संरक्षण हेतु सुझाव</u> :–

विकास एवं पर्यावरणीय प्रदूषण से स्पश्ट है कि भारत में संविकास, जिसके द्वारा परिस्थिति की संरक्षण के साथ–साथ आर्थिक विकास अग्रसर हो सके इसकी नितांत आवश्यकता है । मानव पर्यावरण सम्बंधों को जल विकास के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो ये एक दूसरे के पूरक प्रतीक होते हैं । इनके सम्बन्ध भी अमिट बने रहें । इस हेतु पर्यावरण प्रवन्धन को अपनाना होगा जिसका तात्पर्य है कि पर्यावरण के विभिन्न घटकों के संरक्षण, संवर्धन, उपयोग तथा उपलब्धता से सम्बंधित प्रयासों एवं उपायों से है

जिससे कि आपसी सम्बंधों में सन्तुलन बना रहे । आज हम सभी पर्यावरण के विभिन्न प्रकोपों की मार से पीड़ित हैं । इन प्रकोपों से बचने की रणनीतियाँ सोचनी होगी जो निम्न हैं –

- सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थानों हेतु अधिक से अधिक भाग पर वृक्षारोपण किया जाना चाहिये ।
- पर्यावरणीय जागरुकता अभियान तथा जनसंख्या नियन्त्रक अभियान प्रत्येक स्तर पर चलाया जाना चाहिये ।
- संसाधनों का खनन, दोहन, कृषि पद्धति, औद्योगिक उत्पादन, वृक्षारोपण पर्यावरण के अनुकूल हों ।
- ऊर्जा उत्पादन हेतु इनके वैकल्पिक स्रोतो को अधिकाधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये ।
- पर्यावरण प्रबन्धन हेतु सरकार द्वारा बनाये गये कानून , अधिनियम एवं उपायों का पालन कठोरता से लागू किया जाना चाहिये ।
- प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं सोचना होगा कि पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले सामानों का प्रयोग कम से कम करें ।
- लोगों को शिक्षा के माध्यम से वर्तमान में पर्यावरणीय समस्याएँ तथा इनसे होने वाले दुश्प्रभावों को बताया जाना चाहिए ।

जल प्रदूषित होता है तो मानव अधिकार भी प्रभावित होते हैं । उपरोक्त उपायों को अपनाने से पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है । अन्ततः यदि इस धरती को बचाना है तो हम सभी को पर्यावरण मित्रता तथा विकास मित्रता पर्यावरण को अपना आदर्श बनाना होगा ।

<u>सन्दर्भ</u> :–

- कपूर , श्याम किशोर (2001) : मानव अधिकार '' प्रस्तावना '' , पृ0–1 किताबमहल , इलाहाबाद ।
- नन्दलाल (2004) '' मानवअधिकार '' राजनिति विज्ञान , पृ0 147 , शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा ।
- अवस्थी डॉ0 एन 0 एम0 (2005–06): पर्यावरणीय अध्ययन , पृ0– 375 , लक्ष्मी नारायण अग्रवाल , आगरा ।
- तिवारी डॉ0 विजय कुमार (2004) : '' पर्यावरण प्रदूषण '' हिमालय पब्लिशिंग हाउस गिरगाँव मुम्बई ।

डॉ0 जिलेदार

कार्यवाहक प्राचार्य (असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल विभाग)

ईश्वरी प्रसाद रामकली देवी महाविद्यालय विरासिन, निगोही , शाहजहाँपुर , उ0प्र0

डॉ0 आशुतोश

डायरेक्टर (असिस्टेंट प्रोफेसर समाज शास्त्र विभाग)

ईश्वरी प्रसाद रामकली देवी महाविद्यालय विरासिन , निगोही , शाहजहाँपुर , उ0प्र0

मोबाइल नं0 9917803315

पत्राचार पता : –

डॉ0 जिलेदार S/O स्व0 श्री सूबेदार

ग्राम– दीपपुर , पो0 खुदागंज , तहसील – तिलहर

जिला – शाहजहाँपुर , उ0प्र0 242305

मो0 नं0 9198729024

23

अथर्ववेद और लोककल्याण

दीपमाला

सारांश

वेद को ईश्वर का निःश्वास कहा गया है, वेद से ही समस्त जगत् का निर्माण हुआ है। इसलिए भारतीय संस्कृति में वेद की अनुपम महिमा है। वेद को – **'देवपितृमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनः।'** कहा गया है। मनु ने कहा है कि इनका उपयोग तीनों कालो में है और सब कुछ वेद से प्राप्त होता है –**'भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिद्धयति।' 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'** अर्थात् मन्त्र और ब्राह्मण इन दोनों की संज्ञा वेद है। वेद चार है– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। चारों वेदों में अथर्ववेद में लौकि सामग्री प्राचुर्य मात्रा में प्राप्त होने से यह सबसे विलक्षण है। महर्षि पतंजलि अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया है। परन्तु सम्प्रति दो शाखाएँ पैप्पलाद एवं शौनकीय प्राप्त है। इसमें (शौनकीय शाखा में) 20 काण्ड, 731 सूक्त और 5987 मन्त्र है। विषय वस्तु की दृष्टि से भी यह वेद अद्वितीय है। यद्यपि इसमें स्थालीपाक, अन्न सिद्धि, मेधाजनन, ब्रह्मचर्य, राष्ट्रसंवर्धन, परिवार का अभ्युदय, साम्मनस्य अर्थात् समाज एवं लोक के कल्याणार्थ आपस में प्रेम एवं सौहार्द की भावना का विकास, राजकर्म, सामरिक, पापक्षय कर्म भैषज्य संस्कार, अभिचार, दर्शन, आयुष्य याज्ञिकविधि इत्यादि विषयों का समावेश है परन्तु समाज, देश, राष्ट्र एवं विश्वकल्याण की भावना का वर्णन जो इसमें निहित है वह इस वेद का गौरव और बढ़ा देता है। समाज में सौहार्द की प्रतिष्ठा तथा विश्वमङंल की कामना, चिन्तन की परिपक्वता तथा समाज को धारण करने और दिशा निर्देश देने वाले महान् ओर उदान्त विचारों के समायोजन की दृष्टि से अथर्ववेद सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में अनन्य है। संसार की प्रत्येक वस्तु के मंगलकामना के लिए कवि पूर्ण प्रयास करना चाहता है। जल के लिए कहा गया है–

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पतिये।
शं योरभि स्रवन्तु नः ।।

अथर्व 1/6/1

की भावना, मनुष्य को मनुष्य से घृणा समाज से सौहार्द का पतन इत्यादि समस्याओं से निवारण एवं सामंजस्य को बनाये रखने के लिए मन्त्र दृष्टा ऋषि कहते है– हे! मनुष्यों तुम लोगों को समान हृदय वाला, समान मन वाला तथा द्वेष से रहित बनाता हूँ, जिस प्रकार गाय अपने उत्पन्न बछड़े को प्यार करती है, उसी प्रकार तुम लोग भी एक दूसरे से प्रेम करो।

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाहन्या।

अथर्व 3/30/1

पारिवारिक सौहार्द को स्थापित करने वाला साम्मनस्य सूक्त का एक मन्त्र दृष्टव्य है–

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतुशन्विाम्।।

अथर्व 3/30/2

अर्थात् पुत्र–पिता का आज्ञापालक हो, माता पुत्रों के साथ एक मन वाली हो, पत्नी पति के लिए मीठी तथा कल्याणकारीवाणी बोले।

एकता एवं अखण्डता की रक्षा का सन्देश भी हमें अथर्ववेद के मन्त्रों में प्राप्त होता है। श्रेष्ठ गुणों से युक्त, समानचित्त वाले एक साथ साधना करते हुए, कन्धे से कन्धा मिलाकर चलते हुए तुम लोग अलग मत होवों। परस्पर एक दूसरे के लिए प्रियवचन बोलते हुए यहाँ आवों मैं तुम लोगों को एक साथ कार्य में प्रवृत्त होने वाला तथा समान मन वाला बनाता हूँ–

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनोमा वियौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चतः।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः संमन संस्कृणोमि।।

अथर्व 3/30/5

आज विविधता भरे इस देश में विभिन्न भाषाओं, धर्मों, सम्प्रदायों, जातियों, वेशभूषा वाले लोग किसी संस्था, संगठन, विश्वविद्यालय, कार्यालय अन्यान्य स्थानो में अपने कर्तव्यों का पालन करते है किन्तु जब यह भिन्न–भिन्न मतों वाले लोग एक जुट होकर किसी रंगमंच पर आसीन होते है तब सबको अपनेपन से आनन्द की ऐसी अनुभूति होती है कि उसी प्रसन्नता एहसास ही सुखद होता है। सम्पूर्ण राष्ट्र में निवासकर रहे अलग–अलग धर्म, जाति, सम्प्रदाय के लोग जब अपने राष्ट्र, देश, प्राप्त और समाज के लिए सब के सब सौहार्दमयी भावनाओं में आबद्ध होकर रह रहे है। इसलिए यह धरती कभी किसी का मोहताज नहीं रही है न रहेगी इसी सन्दर्भ में धरती का उदाहरण के रूप में पृथ्वी सूक्त का मन्त्र शिक्षा दे रहा है–

जनं विभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य में दुहां ध्रवेव धेनुरनपस्फरन्ती।।

अथर्व 3/30/45

अलग–अलग धर्मों और अलग–अलग भाषा बोलने वाले पूरे मानव समाज को यह धरती एक ही परिवार की तरह समान रूप से प्यार करती है और अपने उदर में व्याप्त सोने–चाँदी आदि अपार खनिज सम्पदायों के हजारों स्रोत सबको समाज रूप से प्रदान करती

है। ठीक उसी प्रकार जैसे कोई सीधी सादी न बोलने वाली गाय अपनेपन से दूध की अनेक धाराएं जनहित में प्रवाहित करती रहती है।

आज समाज में शान्ति की कल्पना, विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास, सौहार्द प्रेम, लोक कल्याण कैसे हो और उसे कैसे स्थापित किया जाय इसके लिए अथर्ववेद के मन्त्र को देखें और उसमें वर्णित शब्दों में जो गुण सन्निहित है उस पर गम्भीर चिन्तन से एवं अनुपालन से अमन चैन कामय हो सकता हैं–

सत्यं बृहदृतमुगं दीक्षा तपो।
ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।।

अथर्व 12/1/1

सत्य, वृहत, ऋतम्, उग्र, दीक्षा, तप, ब्रह्म, यज्ञ यही सात साधन पृथ्वी को संतुलित किए हुए है दूसरे शब्दों में पृथ्वी पर रहने वालों में उक्त साथ गुणों का होना आवश्यक है।

राष्ट्र की उन्नति, बलशालिता और शक्ति की कामना तथा राष्ट्र में निवास करने वालों का शत्रुओं से रक्षा का वर्णन अथर्ववेद में सूक्ष्म रूप से वर्णित है–

राष्ट्राय मह्यं बध्यतां सपत्नेभ्यः पराभुवे
उदसौ सूर्यो अगादिदं मामकं वचः।
यथाहं शत्रुहोऽसान्यसपत्नः सपत्नह।
सपत्नक्षयणों वृषाभिराष्ट्रो विषासहिः।
यथाहममेषां वीराणां विराजानि जनस्य च

अथर्व 1/29/4–6

मैं राष्ट्र के कल्याण के लिए शत्रुओं को पराजित करूँ। उदित सूर्य ने मेरा यह वचन कहा है। मैं शत्रुघन्ता, शत्रुरहित तथा शत्रुआशक बन कर राष्ट्र की सेवा करूँ।

'माता भूमि : पुत्रोऽहं पृथिव्याः' पृथ्वी सूक्त की यह पंक्ति हम सबको यह सन्देश देती है कि इस धरती माँ तथा समस्त राष्ट्र के कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। इसी भाव को प्रकट करते हुए कवि कहता है–

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवी
मिन्दुमुप्ताम्।।
अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम्।।

अथर्व 12/1/11

सभी के समान रूप से कल्याण की भावना का वर्णन किया गया है चाहे वह शूद्र हो या आर्य हो–

प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये।

अथर्व 19/62/1

अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि हे! मानव, आओ, हम सब मिलकर ऐसी प्रार्थना करें, जिससे मनुष्यों में परस्पर सुमति और सद्भावना का विस्तार हो–

तत्कृण्मों ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरूषेभ्यः।

अथर्व 3/30/4

लोककल्याण की भावना का जिक्र करते हुए एक मन्त्र में कहा गया है कि हे! मनुष्यों तुम जीवन में ऐसा कोई कार्य मत करो जिससे तुम्हारी उन्नति बाधित हो, तुम अवनति की ओर अग्रसर होवो–

सत्येनोत्तभिताभूमिः सूयेणोन्यभिता द्यौः।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधिश्रितः।।

अथर्व 14/1/1

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि अथर्ववेद में लोककल्याण की भावना का सूक्ष्म विवेचना किया गया है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसका समाज से बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध होता है क्योंकि वह समाज का एक अह्म हिस्सा है एकता और मेलमिलाप से ही समाज में शक्ति संभव है और यह प्रकरणा हमें अथर्ववेद से प्राप्त होती है। कर्मठ और पुरूषार्थी व्यक्ति ही परोपकार, कर सकता है, वही समाज, देश, राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण कर सकता है। जो क्षुद्र व्यक्ति है वह तो केवल यह अपना है यह पराया है केवल स्वार्थ में ही लगे रहते है। उदार ह्रदय वाला तो पूरे विश्व का कल्याण यह भाव रखता है। हितोपदेश में कहा गया है–

अर्य निजः परोवेतिगणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

दीपमाला
शोधार्थी (संस्कत विभाग)
राममोहन लोहिया
अवध विश्वविद्यालय,
अयोध्या (उ0प्र0)
9170367738

24

जनजातीय जीवन और नगरीकरण

करम सिंह मुण्डा

सारांश

प्रागैतिहासिक काल से भारत अनेक प्रजातियों का देश रहा है। इसके विभिन्न भू–भागों में निवास करने वाले मानव समुदाय, सांस्कृतिक लक्षणों तथा आर्थिक विकास की दृष्टि से एक–दूसरे से भिन्न रहे हैं। यहाँ अभी भी अनेक ऐसे समुदाय हैं जो आदिम अवस्था में हैं इसलिए इन्हें आदिवासी कहा जाता है। आदिवासी समुदाय प्रायः सभ्य समाज से कोसों दूर जंगलों, पहाड़ों और बीहड़ जंगली क्षेत्रों में रहते हैं और हर हाल में पिछड़े हैं। इन दुर्गम और पृथक क्षेत्रों में निवास करने वाले मानव समुदाय सभ्यता के विकास की दृष्टि से अभी तक प्रारंभिक सोपानों पर ही है। आदिवासी समुदायों को विकसित लोगों ने आदिवासी जनजाति, आदिम जाति, वन्य जाति, वनवासी आदि नामों से सम्बोधित किया है।

भारतीय संविधान में ऐसे लोगों को 'अनुसूचित जनजातियाँ' कहा गया है। इण्डोनेशिया में इन्हें भूमि – 'पुत्र' कहते हैं। अफ्रीका तथा अमेरिका में आदिवासी को 'प्रीमिटिव' और आस्ट्रेलिया में 'अनक्षर जनजाति' कहा जाता है। भारत की पौराणिक कथाओं में ऐसे अनेक मानव समुदायों का उल्लेख मिलता है जो भारत देश में आर्यों के आगमन से पूर्व विद्यमान थे।

'आदिवासी' शब्द अंग्रेजी शब्द के 'TRIBE' का हिन्दी रूपान्तर है। 'TRIBE' शब्द लैटिन शब्द 'TRIBE' का रूपांतरण है। इस शब्द का अर्थ तीन वर्ग है। फिर भी इस शब्द का अर्थ भिन्न–भिन्न राष्ट्रों में भिन्न–भिन्न पाया गया है। रोमन के अनुसार यह एक राजनैतिक वर्ग है जबकि ग्रीक में इसे भ्रात्रीय के समान अर्थ के रूप में लिया है। इरीस इतिहास के अनुसार यह 'आदिवासी' शब्द परिवार या समुदाय बोधक है।

भारतीय समाज में जनजातीय समूह आर्थिक एवं शैक्षणिक दृष्टिकोण से सबसे, पिछड़ा हुआ वर्ग है, पर वर्तमान में इसमें सुधार हो रहा है। सन् 1961 ई0 की जनगणना में जनजातियों की आबादी 04 करोड़ दिखाया गया था। सन् 1971 ई0 की जनगणना के अनुसार जनजातियों की काबादी 3,80,15,162 थी, जो देश की कुल आबादी का 5.36 प्रतिशत है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार जनजातियों की कुल आबादी 8,4324,240 हो गयी है जो भारत की कुल आबादी का 8. 08 प्रतिशत है सन् 2011 ई0 की जनगणना के अनुसार जनजातियों की कुल आबादी 10,42,81,034 हो गयी है।

आजादी के बाद सन् 1950 ई0 में जनजातीय समुदायों की पहचान कर 225 जनजातीय समुदायों की सूची तैयार करने के बाद अनुसूचित जनजाति घोषित किया गया। जनजातियों में विभिन्न प्रकार की अपनी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाएँ विद्यमान है, अनेक प्रकार की विवाह तथा पारिवारिक प्रथाएँ विद्यमान है। जनजातियों का जीवन सामुदायिक है, जादू, धर्म, टोटम तथा आर्थिक विश्वासों की प्रधानता धर्म, है। जन– जातियों का भौतिक संस्कृति का अपना अलग परिवेश है। फलस्वरूप मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र के विद्वानों ने जनजातियों के सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन को विशेष स्थान दिया है।

भारत में जनजातियाँ सभी भागों में पाये जाते हैं, परन्तु जनजातीय जनसंख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ का स्थान प्रथम है। द्वितीय स्थान–उड़ीसा तथा तृतीय स्थान – झारखण्ड, बिहार और चौथा स्थान महाराष्ट्र का है।

'जनजाति' की परिभाषा विभिन्न मानवशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रियों ने अपने–अपने ढंग से प्रस्तुत किया है जो निम्न प्रकार है –

1. हिन्दी भाषा के अनुसारः– "आदिवासी" शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है। "प्राचीन काल का वासी"
2. क्रोबर के अनुसार :– "जनजाति की एक छोटा, अलग और मजबूत बंधन से बँधा हुआ समाज कहा है जिसमें सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू, नातेदारी के आधार पर मुख्य रूप से संगठित होते हैं।
3. गिलिन एण्ड गिलिन के अनुसारः– "स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी संग्रह को जो एक सामान्य क्षेत्र में रहता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता हो। एक जनजाति कहते हैं।"
4. जार्ज पीटर मर्डाक अनुसार – "यह एक सामाजिक समूह होता है जिसकी एक अलग भाषा होती है तथा भिन्न संस्कृति एवं एक स्वतंत्र राजनैतिक संगठन होता है।"
5. फ्रेंज बॉआस के अनुसार – "जनजाति का अर्थ आर्थिक दृष्टि से ऐसा स्वतंत्र जन समूह है जो एक भाषा बोलता है और बाह्य आक्रमण से सुरक्षा के लिए संगठित होता है।"

नगरीकरण का अर्थ : ग्राम से नगर बनने की प्रक्रिया को नगरीकरण (शहरीकरण) कहा जाता है। नगरीकरण का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट होता है कि जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि ही नगरीकरण का द्योतक नहीं अपितु वहाँ के सामाजिक व आार्थिक सम्बंधों में परिवर्तन अनौपचारिक सम्बन्धों का औपचारिक सम्बन्धी में परिवर्तन, प्राथमिक समूहों का द्वितीय समूहों में परिवर्तन भी नगरीकरण का

द्योतक है।

अरनेस्ट वर्गेल के अनुसार – "वाद–विवाद के दृष्टिकोण से नगरीयता को एक प्रक्रिया मानना चाहिए और नगरीयता को एक स्थिति या परिस्थिति का एक समूह। इस प्रकार नगरीकरण को परिवर्तनशील के रूप में ग्रहण किया जाता और नगरीयता को स्थिर रूप में।

नगर की निश्चित भौगोलिक एवं कानूनी सीमा होती है किन्तु इसका ये अर्थ नहीं है कि नगरीय जीवन पद्धति नगर के क्षेत्र में ही सीमित रहे। समय के साथ इसके स्वरूप में भी परिवर्तन होते रहते हैं। शिक्षा, यातायात, दूर संचार, भौतिक संस्कृति की प्रगति के साथ – साथ नगरीयता का प्रभाव क्षेत्र बढ़ता जा रहा है। नगरीयता के इस विस्तार की प्रक्रिया को ही दूसरे शब्दों में नगरीकरण कहा जा सकता है।

नगरीकरण में जनजातीय समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है जो नम्नलिखित है–

1. **सामाजिक प्रभाव** :– जनजातियों के सामाजिक परिवर्तन में नगरीय जीवन शैली का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। स्वतंत्रता के बाद देश का विकास तेजी से हुआ। छोटे–छोटे कस्बों मे व्यापार उद्योग, एवं आवागमन में वृद्धि के कारण नगरों का रूप धारण किया। ये प्रभाव जनजातीय क्षेत्रों में भी पड़ा है। नगर में रोजगार के नये अवसरों ने जनजातीय जनसंख्या को अपनी ओर खींच लिया है। लोग गाँव से शहरों की ओर जाने लगे हैं। नगरों में रहने के लिए उनकी आवश्यकतानुसार उत्पादन की ओर ध्यान गया। धान, अरहर, उड़द, महुआ, और जौ जैसी उपजों के साथ–साथ नकदी फसलों सब्जी, आलू, प्याज, लहसुन, मिर्चा आदि की भी उपज की जाने लगी। नगरों के कल कारखानों में तैयार सामान जैसे कि कपड़े, रेडीमेड कपड़े, चश्मा, बुंधी पाउडर, चूड़ियाँ, स्टील के बर्तन, प्लास्टिक के समान, एल्युमीनियम के बर्तन, ऊनी वस्त्र और तरह–तरह के तेल आदि ने जनजातियों के घर में प्रवेश कर लिया। जनजातीय क्षेत्रों में नगरों के उदय हो जाने से उनके सामाजिक आचार–विचार, रहन–सहन पर भी प्रभाव पड़ा।

इसके अलावे अन्य कई क्षेत्र है जिस पर नगरीकरण का प्रभाव पड़ा है। जैसे कि विवाह, पर्व– त्योहार आदि में भी प्रभाव पड़ा है। अपने पारंपरिक वस्त्रों के अतिरिक्त नये डिजाइन के वस्त्र पैन्ट–सर्ट, कुर्ता–पायजामा, घड़ी, बेल्ट चश्मा और टोपी आदि का प्रयोग जनजातीय समाज में दिखने लगा।

नगर प्रगतिशील संस्कृति के द्योतक है। विज्ञान और शिक्षा के प्रभाव को यहाँ सरलता से देखा जा सकता है। आजकल जनजातीय परिवार के बच्चे भी डी. ए. वी., कान्वेन्ट, कार्मेल आदि विद्यालयों में पड़ रहे हैं। नगरीकरण का प्रभाव संयुक्त परिवार पर भी पड़ा है। अधिकांश लोग अपने जीविकोपार्जन के लिए गाँवों को छोड़कर शहर की ओर जा रहे हैं और बसते जा रहे है, इसलिए संयुक्त परिवारक भी विघटन हो रहा है।

2. **राजनीतिक प्रभावः**– जिस तरह नगरों में रहने वाले व्यक्ति राजनैतिक गतिविधियों में खुले रूप में भाग लेते हैं। राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर के समस्याओं पर अपना विचार व्यक्त करते हैं। नगरों में पुरूष और स्त्री दोनों ही राजनीति में भाग लेते हैं। ठीक उसी प्रकार आजकल जनजातीय लोग भी राजनीति में भाग ले रहे हैं। वर्तमन में कई आदिवासी स्त्रियाँ विधायक, सांसद और मंत्री पद में है। यह नगरीकरण का ही प्रभाव है। आज के समय जनजातीय समुदाय प्रत्येक क्षेत्र में जागरुक है और अपने हक और अधिकार को समझने लगे हैं।

3. **आर्थिक प्रभावः**– आर्थिक विकास एवं प्रगति का प्रभाव जनजातियों के संपूर्ण जीवन पर पड़ता है। औद्योगिक विकास ने जनजातियों को भी प्रगतिशील, व्यक्तिवादी, महत्वाकांक्षी और अहसरवादी बना दिया है। नगर रुपये की धूरी पर घूमता है और व्यक्ति रुपये के चारों ओर परिक्रमा लगाता है। नगरीय व्यक्ति लोगों का सम्बन्ध धन पर बनते और टूटते है, इसलिए यहाँ व्यक्ति का महत्व न होकर नगरों में कोई भी कक्ति कहीं पर भी अपना जीविका के लिए काम कोई भी काम कर सकता है।

नगर असमानताओं का केन्द्र स्थल है यहाँ लाखों व्यक्ति गन्दे बस्तियों में रहते है। वही दूसरी ओर कुछ लोग ऐसे भी है जो वातानुकूलित महलों में रहते है। नगरों में गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी और चिकित्सा के अभाव में निर्धन मरता है और धनी व्यक्ति मुँह फेर कर चला जाता है। इन सबका प्रभाव जनजातीय जीवन पर पड़ा है।

4. **धार्मिक प्रभाव** : नगरीकरण से जनजातीय धार्मिक व्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ा है। चूँकि जनजातीय समुदाय का प्रकृति के प्रति गहरा लगाव होता है। नगरीकरण के प्रभाव से जनजातीय का शांतिपूर्ण जीवन में उथल–पुथल आ गया है। भाग दौड़ भरी जिंदगी में व्यस्थता के कारण समय का अभाव रहता है। घर में जब कोई धार्मिक काम विधि–विधान आयोजित होती है जिसमें घर के सभी सदस्य मिल जुलकर खुशियाँ बाँटते थे। अब इसमें कमी आ गई है।

(5) जाति पर प्रभाव :– नगरीकरण का प्रभाव जनजातीय समाज पर भी पड़ा है। नगरीकरण से नगर का वातावरण प्रगतिशील होता है जिसे लोग अपनी परम्परागत कार्यों को धीरे–धीरे छोड़ते जा रहे हैं और नये–नये पेशों को अपनाते जा रहे हैं। नगरों में यह आवश्यक नहीं है कि धोबी, चमार, ब्राह्मण, लोहार, नाई, बढ़ई अपने परम्परागत पेशे को ही करें वे कोई भी पेशा करने के लिए स्वतंत्र है और वर्तमान में कर भी रहे है।

नगरीकरण के कारण ग्रामीण जनजातीय युवक और

युवतियों को एक साथ काम करने का अवसर मिलता है, इससे वे एक दूसरे सम्पर्क में आते हैं।

एक दूसरे को समझने का अवसर प्राप्त होता हे। इस प्रकार के सम्पर्क में आने के कारण अर्न्तजतीय विवाह की प्रेरणा और प्रोत्साहन मिल जाता है। जिससे नगरो में अर्न्तजातीय विवाह की दर में निरंतर वृद्धि होती जा रही है।

निष्कर्ष :

अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि जनजातीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर नगरीकरण का प्रभाव पड़ा है। नगरीकरण के प्रभाव से कहीं लाभ हुआ है तो कहीं नुकसान भी। नगरीकरण के परिणाम स्वरूप प्रतिस्पर्धा एवं शोषण की भावना में विकास हो रहा है। नगर असमानताओं का केन्द्र स्थल है। परन्तु इस बात से इनकार भी नहीं किया जा सकता है कि रोजगार के अधिकतर साधन और अच्छे से अच्छे चिकित्सा पद्धति नगरों में ही होते है। शिक्षा, यातायात, दूर संचार, भौतिक संस्कृति की प्रगति जैसे तमाम चीजे नगरों में ही संभव हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ0 चतुर्भुज साहु, झारखण्ड की जनजातियाँ के0के0 पब्लिकेशन, 618 कटरा इलाहाबाद–211002
2. डॉ. चन्द्रकान्त वर्मा, झारखण्ड के आदिवासी के0के0 पब्लिकेशन्स, 618, पुराना कटरा इलाहाबाद–211002
3. डॉ. बीरेन्द्र कुमार सोम 'मुण्डा' मुण्डा जनजाति का परिचय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस एन–3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली – 110059
4. महावीर सिंह त्यागी, झारखण्ड का इतिहास, राजीव प्रकाशन, लालकुर्ती मेरठ – 250001 –
5. गया पाण्डेय – भारतीय जनजाति संस्कृति, 2007
6. डॉ. राम कुमार तिवारी, झारखण्ड की रूपरेखा, शिवांगन पब्लिकेशन, शिव भवन कमलाकान्त रोड, रातू, राँची–834001

करम सिंह मुण्डा
सहायक प्राध्यापक
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
मुण्डारी विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची
पिन – 834001
मो0–8809783457
E-mail: mundakaram1990@gmal.com

25

मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा–साहित्य में नारी के विविध रूप

पिंकी देवी, डॉ० कृष्णा जून

सारांश

किसी भी राष्ट्र या समाज के विकास में नारी और पुरुष का समान सहयोग आवश्यक है एक के अभाव में समाज की गतिशीलता संभव नहीं है। पुरुष जहाँ उत्साह, शक्ति और बल का प्रतीक माना जाता है, वहीं नारी को वात्सल्य, त्याग, समर्पण और कोमलता की प्रतिमूर्ति माना जाता है। प्रकृति ने नारी को पुरुष की अपेक्षा अधिक कोमल बनाया है। सृष्टि के विकास क्रम में उसका महत्वपूर्ण योगदान है। नारी एक रूप अनेक यह बात एकदम सत्य है। सर्वप्रथम वह एक बेटी के रूप में जन्म लेती है फिर धीरे–धीरे वह बड़ी होते–होते बहन, पत्नी और माँ रूप का रूप लेती है। बेटी बनकर माँ–बाप के दर्द को बांटती है बहन के रूप में एक अच्छी दोस्त होती है पत्नी बनकर पति की अर्धांगिनी कहलाती है और माँ के रूप में बच्चों से असीम प्रेम करती है। इन सभी भूमिकाओं को निभाते हुए वह अपना जीवन व्यतीत करती है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी के परम्परागत और आधुनिक दोनों प्रकार के पात्रों को रेखांकित किया है। उनके साहित्य में जहाँ परिवार से जुड़ी हुई सामान्य नारी है तो वही अपनी अस्मिता को पहचान बनाकर विपरीत परिस्थितियों से लड़ने वाली नारी भी है। मनीषा जी ने नारी की मनोदशा, संघर्ष, तनाव, दाम्पत्य जीवन में उतार–चढ़ाव, स्वतंत्रता और सामाजिक बंधनों का विश्लेषण बहुत बारीकी से किया है।

भारतीय समाज में नारी की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है, उसे समाज में नर से ऊँचा स्थान प्रदान किया गया है अर्थात, वह पुरुष से श्रेष्ठ मानी गई है। मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार ''एक नहीं दो–दो मात्राएं नर से बढ़कर नारी।''[1] इस सृष्टि में नारी का सबसे सुंदर रूप माँ का माना जाता है, बच्चे के जन्म के समय सबसे अधिक खुशी माँ को ही होती है। भारतीय संस्कृति में माँ का दर्जा सबसे ऊपर माना जाता है। " मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव!"[2] हम कह सकते हैं कि माँ का स्थान पिता और गुरु से भी पहले है। समाज में माँ उच्च स्थान का परिचायक है वह बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है। अपनी संतान को गुरु की तरह सामाजिक जीवन की व्यावहारिक शिक्षा देती है। एक माँ ही होती है जो अपने बच्चे की सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखती है, उसकी सभी परेशानियों को अपने ऊपर ले लेना चाहती है और उसकी गलतियों कोनजरअंदाज कर उसे जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। 'नई सम्भावनाओं का आकाश' कहानी में एक ऐसी ही माँ का वर्णन किया गया है जो अपने बेटे को जीवन में हतोत्साहित होते हुए नहीं देख सकती। अमृता अपने बेटे का ऐसे समय पर साथ देती है, जब हर कोई उससे रिश्ता तोड़ना चाहता है। कहानी में शौर्य की दोस्ती स्थानीय राजनीतिज्ञ के बेटे से होती है। एक दिन उसका दोस्त नशे में फायर कर देता है और गोली वेटर को लग जाती है। पुलिस दोनों को पकड़ कर ले जाती है। शौर्य को दो साल की सजा होती है। बिना किसी गलती के जेल में रहते हुए उसे घुटन महसूस होती है अपने भविष्य को लेकर सदैव चिंतित रहता है। उसकी माँ उससे मिलने जेल में आती है, ताकि वह निराश न हो और उसे जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सके। वह अपनी माँ से कहता है कि मैं अब कुछ नहीं कर सकता मेरा भविष्य खराब हो गया। माँ आप मिलने आती रहा करो अच्छा लगता है, तब उसकी माँ सोचती है ''आऊँगी, आना ही होगा, आते रहना होगा, क्योंकि मैं नहीं चाहती तुम जीवन से उम्मीदें तोड़ बैठो। बस एक साल और ... फिर .... फिर से हम खोज लेंगे नई सम्भावनाओं का आकाश।"[3] अतः अमृता एक ऐसी माँ के रूप में प्रस्तुत हुई है जो अपने बेटे को जीवन में टूटता या बिखरता हुआ नहीं देख सकती है वह उसे प्रेरित करती है कि तुम जीवन में अभी भी बहुत कुछ हासिल कर सकते हो।

माँ बच्चे को सिर्फ जन्म ही नहींदेती बल्कि उसका अच्छे से पालन–पोषण कर एक अच्छा इंसान बनाना चाहती है। इसके लिए उसे जीवन में चाहे कितनी ही समस्याओं का सामना करना पड़े, वह अपने कदम पीछे नहीं हटाती। वह अपनी संतान के लिए निरंतर संघर्ष करती रहती है। प्रत्येक माँ की इच्छा होती है कि उसकी संतान पढ़–लिखकर आत्मनिर्भर बने। 'कुरजां' कहानी में कुरजां के माध्यम से ऐसी ही माँ को रेखांकित किया गया है। कुरजां की हार्दिक इच्छा है कि उसका बेटा स्कूल में जाएं और पढ़–लिखकर आत्मनिर्भनर बने। लेकिन गाँव के बड़े अधिकारी व अन्य लोग कुरजां व उसके बेटे को गाँव से बाहर निकाल देते है। इतनी विपरीत परिस्थितियों में भी कुरजां हार नहीं मानती, अपने बच्चे के लिए वह हर संभव प्रयास करना चाहती है। वह स्कूल के अध्यापक से अपने बच्चे के दाखिले के लिए बात करने जाती है।"बस दो घड़ी मेरी बात सुन लो मास्टर साब। मेरे बच्चे का दाखिला"

''स्कूल की बात स्कूल आकर करना। अभी जाओ"

"स्कूल वहां तो आपका चपरासी कालू अंदर आने नहीं देता है।"[4] स्कूल का चपरासी भी विरोध करता है उसका व गाँव वालों का मानना है कि वह एक डाकण है इसलिए उसका बेटा स्कूल में नहीं पढ़ेगा। भारतीय संविधान द्वारा प्रत्येक बच्चे को प्राप्त शिक्षा का अधिकार भी उसके बेटे को नहीं मिलता। कुरजां एक ऐसी माँ है जो अपने बेटे के लिए

संघर्षरत है।

प्रत्येक दंपति की हार्दिक इच्छा होती है कि उनके घर में बच्चे की किलकारियां गुंजे। एक नारी भी अपने जीवन को तभी सार्थक मानती है जब वह माँ बनती है। विवाह के पश्चात शुरू के दो–तीन सालों में तो कोई विशेष चिंता नहीं होती लेकिन पाँच–छह वर्षों बाद अगर घर में बच्चे की किलकारियां न गुंजे तो ऐसी स्थिति में नारी को शारीरिक और मानसिक यातना सहनी पड़ती है। बच्चे की प्राप्ति के लिए वह हर संभव प्रयास करना चाहती है। आज के वैज्ञानिक युग में विभिन्न जाँच प्रणालियों के विकास ने टेस्टट्यूब बेबी एवं सरोगेसी की सुविधायें खोज निकाली है। जब नारी गर्भधारण करने योग्य नहीं होती तो ऐसी स्थिति में चिकित्सक, उसे टेस्टट्यूब बेबी या आई.वी. एफ की सलाह देते है। 'सोफिया' उपन्यास में जब कथावाचिका पैंतीस साल की उम्र तक माँ नहीं बन पाती है तो वह टेस्टट्यूब बेबी के माध्यम से ही माँ बनने का निर्णय लेती है।"इसी बीच दिल कड़ा करके मैंने फैसला कर लिया और सेबी ने एक हफ्ते की छुट्टी भी ले ली। एक तयशुदा दिन मरियम की देख–रेख में आई. वी. एस करवा ही लिया।"[5] मीनल भी मातृत्व सुख को प्राप्त करना चाहती है।

परिवार में नारी की विविध भूमिकाओं में से एक मुख्य भूमिका पत्नी की भी है उसे पति की अर्धागिनी कहा जाता है। हमारे समाज में एक आदर्श पत्नी को अधिक महत्व दिया जाता है जिसमें त्याग, प्रेम, समर्पण, मधुरता, कोमलता और सहनशीलता जैसे गुण विद्यमान हो। एक नारी जब ससुराल के आंगन में पैर रखती है तो उसे, अपने सामने कर्तव्यों की एक लंबी कतार खड़ी मिलती है। वह अपने कर्तव्य को पूर्ण करते हुए अपने पति की ही नहीं बल्कि परिवार के अन्य सदस्यों की भी आवश्यकताओं का ध्यान रखती है। वह हर परिस्थिति में अपने पति के साथ खड़ी रहती है। 'कठपुतलियां' कहानी में तेरह वर्ष की सुगना का विवाह तीस वर्ष के विधुर अपाहिज रामकिशन से होता है। सुगना एक परम्परागत पत्नी के रूप में दिखाई देती है। वह रामकिशन और उसके दोनों बच्चों का बहुत ध्यान रखती है घर को सजाने संवारने में लगी रहती है।"वह आटे की परात, कचरियों–फलियों और हरे साग की टोकरी और दराँती लेकर पेड़ के नीचे बने चौतरे पर आ बैठती और खाना बनाने की पूरी तैयारी यही करती। लगन के तुरंत बाद मेहंदी छूटते ही, पहला जो काम उसने किया वह यही था कि एक पक्की, एक कच्ची कोठरी वाले घर के आँगन में लगे इस खेजड़े के पेड़ की चारों तरफ भाटे लगाकर, चुना–गारा थोपकर, ऊपर से लीपकर उसने गोल सुघड़ चौतरा बना लिया था। खेजड़े पर पंछी आते तो वह खुश हो जाती है, मटके के टूटे पैंदे में पानी भरकर टांग दिया था, खेजड़े की एक डाल पर प्यासे पछियो के लिए मुट्ठी भर बाजरा आँगन में बिखेर देती तो वे चहचहाते हुए नीचे उतर आते। बंसीका बापू हँस दिया था, उसकी इस हरकत पर। तब उसने उसकी तरफ पहली बार घूंघट हटाकर, देखकर हँसकर कहा था, "इस घर को अपना बना रही हूँ।"[6] सुगना घर के प्रति जो उसके कर्तव्य है उन्हें अच्छे से निभाती है अपना पूरा जीवन रामकिशन के साथ बिताना चाहती है और अपने वैवाहिक जीवन को सफल बनाने के लिए अपने पति के अनुरूप चलती है।

'सुबह का भूला' कहानी में शैलजा के माध्यम से ऐसी नारी को रेखांकित किया गया है। जो अपने पति व बच्चों के साथ गृहस्थ संसार को संजोकर रखना चाहती है। विश्वास जो पति–पत्नी के रिश्ते की नींव होता है। उस विश्वास को उसका पति खोखला करता जा रहा है। शैलजा जानती है कि उसका पति उससे प्रेम नहीं करता। वह अपनी भाभी से प्रेम करता है। उसके साथ दैहिक संबंध बनाता है। अक्सर वह सोचती है कि क्या यही वह इंसान है ? जिसके साथ उसने गृहस्थ संसार का निर्माण किया था। सब कुछ पता होते हुए भी शैलजा कुछ नहीं कर पाती। शैलजा एक विवश पत्नी के रूप में प्रस्तुत हुई है।"हर वर्ष वहीं और वैसे ही दीपावली मनती। जब उसे पहली बार राजन और भाभी के अजीबोगरीब सम्बंधों का पता चला तो वह चौकी थी। चुपचाप सी साधारण सी दिखने वाली भाभी और राजन के बीच ऐसा कैसे हो सकता था?तब वह भाभी के कमरे से बाथरूम जाने के लिए गुजरी तो उसे भाभी के पैरों पर चलते राजन के हाथ दिखे। उसका दिल धक्क से रह गया। फिर भाभी की अलमारी में उसे अपने जैसे मोती के कर्णफूल दिखे जो राजन ने पिछली दीपावली से पहले मुम्बई से ही खरीद कर दिए थे। जब राजन और भाभी के सम्बंध स्पष्ट हो ही गये तो उसने सास से बात की, सास ने यह कहकर टाल दिया कि – "बड़ी जाने कि राजन, अब हमें पूजा–पाठ के दिनों में इस गन्दगी में न समेटो तो अच्छा"[7]यह कैसी विवशता है जो इंसान होने तक का अधिकार छीन लेती है परिवार में नारी का अस्तित्व क्या है?क्या वह एक कठपुतली की तरह है जिसे व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुरूप जब चाहे वैसे इस्तेमाल कर सकता है?

भारतीय समाज में एक पतिव्रता नारी की कल्पना की जाती है। पति चाहे कैसा भी हो वह उसे परमेश्वर मानकर पूजती है उसकी हर आवश्यकता का ध्यान रखती है। पति उसका इसी कमजोरी का फायदा उठाता है और उसे शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है। आधुनिक युग में पत्नी–पति से अधिक कार्य करती है, वह घर भी संभालती है और नौकरी भी करती है। 'मास्टरनी' कहानी में सुशमा परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नौकरी करती है लेकिन उसका पति उसे कोसता रहता है कभी उसका साथ नहीं देता।"पति की ओर से दो बोल प्रेम के तो दूर, सांत्वना या तसल्ली तक के नहीं मिल पाते। हर वक्त

उससे खीजा–सा रहता है आरोप ही आरोप जिसका न सिर न पैर। एक घनेरी ऊब और असंतुष्टी उसके व्यवहार से झलकती रहती है, साथ वह चलता नहीं शको शुबहों का अन्त नहीं!"[8] पत्नी दोहरी भूमिका का निर्वाह करती है लेकिन उसका पति उससे लड़ाई–झगड़ा करता रहता है। ऐसे में पत्नी को अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है लेकिन वह निरंतर कठिनाइयों का सामना करते हुए आगे बढ़ती रहती है। 'पल्लव' कहानी में पल्लव ऐसी पत्नी के रूप में हमारे सामने आई है जो परपुरुष से शारीरिक संबंध बनाती है। वह अपने पति को धोखा दे रही है। पति को भी नहीं छोड़ना चाहती और परपुरुष से संबंध भी रखना चाहती है।

नारी के अनेक रूपों में एक रूप बहन का भी है। भाई–बहन का रिश्ता गंगा की तरह पवित्र माना जाता है, उनका प्रेम निस्वार्थ होता है। बहन अपने भाई के मंगलमय जीवन की कामना करती है। विभिन्न त्योहारों में दो त्योहार ऐसे है जो भाई–बहन के रिश्ते की उच्चता व पवित्रता को दर्शाते है –रक्षा बंधन और भाई दूज। भाई अपनी बहन को स्नेह व संरक्षण प्रदान करता रहा है एक बहन का अपने भाई के प्रति जो लगाव होता है वह कभी कम नहीं होता चाहे वह उसके पास हो या दूर। 'शिगाफ़' उपन्यास में अमिता अपने परिवार से दूर स्पेन में रह रही है। अपने भाई से दूर रहने के बावजूद उससे असीम प्रेम करती है। एक बहन अपने भाई से सभी प्रकार की बातें सांझा कर सकती है। स्पेन में अमिता अपने भाई को याद करती रहती है। उससे बात करने के लिए ऑनलाइन उसकी प्रतीक्षा करती रहती है। "अश्वत्थ से बात करने के लिए इस बार मुझे बहुत दिन 'ऑनलाइन' इन्तजार करना पड़ा।"[9]भाई बहन का रिश्ता बड़ा ही प्यारा व नौकझौंक वाला होता है। बचपन में साथ–साथ खेलते व पढ़ते हैं और जीवन में घटने वाली अच्छी बुरी घटनाओं के साक्षी होते हैं। 'मल्लिका' उपन्यास में मल्लिका बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के मामा की लड़की है। लेकिन उन दोनों में सगे भाई–बहन जैसा प्रेम है। मल्लिका बाल–विधवा है। वह कुछ समय के लिए अपने भाई के घर ठहरने जाती है, लेकिन उसकी भाभी को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। वह भाई–बहन के पवित्र रिश्ते पर संदेह करती है इसलिए मल्लिका काशी जाने का निर्णय लेती है।वह अपने भाई से कहती है "चंद्र भैया जिसका तुम जैसा बड़ा भाई हो, उसे किस बात की चिंता होगी?लेकिन बोउदी के मन में कुछ और होती जा रही हूँ। तुम्हारे निकट आती हूँ तो भाभी की दृष्टि में एक ईर्ष्या व द्वेष पाती हूँ। डरती हूँ कि आपके दांपत्य में अशांति नला दूँ।"[10]यहाँ मल्लिका एक आदर्श बहन के रूप में प्रस्तुत हुई है अपने भाई–भाभी के जीवन को सुखमय बनाने के लिए वह वहाँसे चली जाती है।

नारी का प्रथम रूप बेटी का है। यह एक कड़वा सत्य है कि हमारे समाज में बेटे को बेटी की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाता है। वैवाहिक चिंताओं के कारण ही बेटी जन्म को दुखद माना जाता है। 'भाग्यलक्ष्मी' कहानी के माध्यम से परम्परागत पुत्री को चित्रित किया गया है जो अपने माता–पिता की पसंद के व्यक्ति से विवाह करने के लिए तैयार हो जाती है। विलास भाग्यलक्ष्मी से उम्र में बहुत बड़ा है वह आगे पढ़ना चाहती है लेकिन अपने माता–पिता की इच्छा को अधिक महत्व देती है।"पर बाउजी के आगे किसी की नहीं चली। जल्दी ही शहनाई बजी। मुझे दुःख था तो इस बात का कि मुझे बी. ए. तो पूरा करने दिया होता। उम्र के फर्क को मैं समझ ही नहीं सकी। यूँ भी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हमारे खानदान की ज्यादातार लड़कियों की शादियाँ बेमेल – सी ही है।"[11]भाग्यलक्ष्मी जहाँ परम्परागत पुत्री के रूप में दिखाई पड़ती है वहीं इसके ठीक विपरीत आधुनिक पुत्री भी है वह अपनी पसंद के व्यक्ति से विवाह करना चाहती है अपने माता–पिता को साफ–साफ कहती है कि आप राजी होगे तो ठीक है नहीं तो हम सिविल मैरिज कर लेंगे। "मम्मी सैबी एकदम अलग किस्म का लड़का है। उसे मेरी जाति – धर्म से कोई फर्क नहीं पड़ता है तो मुझे क्यों दिक्कतहो उसके कुछ भी होने से ?"

"जानती तो होन... वे लोग बीफ़ वगैरह खाते है।"

"यार मम्मी, पापा भी तो मटन बाहर खाकर आते है। सैबी आपके सामने नहीं खाएगा। ऐ ! माँ... यार हम दो साल से एक–दूसरे को डेट कर रहे हैं। आप राजी होगी तो हमारी, शादी रीति–रिवाज से हो जाएगी । देख लो ! नहीं तो सिविल मैरिज करनी पड़ जाएगी, फिर आपको और बुरा लगेगा। पापा, आप समझाओ न इनको; हम तय कर चुके है आप तो मिले है सेबी से।"[12] यहाँ ऐसी बेटी को चित्रित किया गया है, जो सबके सामने निःसंकोच भाव से अपनी राय रखती है। अपने प्रेम–प्रसंग के संबंध में अपने परिवार वालों को बड़ी ही बेबाकी से कहती है। समय बदल रहा है पहले ये विवाह गुनाह समझे जाते थे लेकिन अब इन्हें सहज स्वीकृति मिलने लगी है।

निष्कर्ष :

मनीषा कुलश्रेष्ठ प्रसिद्ध कथाकारों में से एक है उनके साहित्य की केंद्रीय पात्र नारी रही है। वह अनेक भूमिकाओं को निभाते हुए जीवन पथ पर अग्रसर होती है। भारतीय समाज में माँ का दर्जा सर्वाधिक मान्य व प्रभावशाली रहा है। नारी जीवन की परिपूर्णता के लिए उसका विवाह और उसके पश्चात संतान की प्राप्ति आवश्यक मानी गई है। बच्चे का पालन–पोषण करने, प्रेम, त्याग, धैर्य, ममता एवं घर के वातावरण को जीवंत बनाने में नारी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भाई–बहन का रिश्ता आत्मीयता का रिश्ता होता है। नारी माँ, पत्नी, बहन और बेटी के रूप में अनेक दायित्व का निर्वाह करती है।

संदर्भ–सूची

1. मैथिलीशरण गुप्त, द्वापर, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, पृ० 39
2. डॉ. सुमन कुमारी, समाज और साहित्य नारीवादी अवधारणा, श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2014, पृ० 36
3. मनीषा कुलश्रेष्ठ, बौनी होती परछाई, मेधा बुक्स, दिल्ली, संस्करण 2003,पृ० 18
4. मनीषा कुलश्रेष्ठ, गंधर्व – गाथा, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2022, पृ०117
5. मनीषा कुलश्रेष्ठ, सोफिया, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2021, पृ० 30
6. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कठपुतलियां, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2010, पृ० 9–10

7-http://gadyakosh-org\>

8. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कुछ भी तो रुमानी नहीं, अंतिका प्रकाशन, संस्करण 2008, पृ० 71
9. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ़, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2012, पृ० 58
10. मनीषा कुलश्रेष्ठ, मल्लिका, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृ० 58
11. मनीषा कुलश्रेष्ठ, बौनी होती परछाई, मेधा बुक्स, दिल्ली, संस्करण 2003, पृ० 41–42
12. मनीषा कुलश्रेष्ठ, सोफिया, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण – 2021, पृ० 22

पिंकी देवी

शोधार्थी, हिंदी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

Email : sarhaya.a@gmail.com

डॉ० कृष्णा जून

शोध निर्देशिका, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, महर्शि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

26

घाड़ क्षेत्र की तहसील बेहट में बाढ़ एंव भूमिक्षरण की समस्या एवं समाधान

डॉ0 राजेन्द्र कुमार

सारांश

बेहट उत्तर प्रदेश के जनपद सहारनपुर की तहसील है। इसके उत्तर में शिवालिक पहाडी व जनपद देहरादून व उत्तराखण्ड राज्य है। दक्षिण में तहसील सहारनपुर पूर्व में जनपद हरिद्वार और पश्चिम में यमुना नदी का खादर व हरियाणा राज्य है। उत्तरी भाग पहाडी होने के कारण भूमि पथरीली और अनुपजाऊ है जिसे घाड के नाम से जाना जाता है। उत्तरी भाग में कहीं–कहीं रेत एवं पत्थर मिलते है। बाढ एवं भूमिक्षरण इस क्षेत्र की गम्भीर समस्या है। तथापि धन, जन सहित बडी संख्या में पशुधन का भी विनाश हुआ है जो एक विचारणीय पहलू है। इसी समस्यात्मक पहलू को दृश्टिगत करते हुए बाढ़ एवं भूमिक्षरण समस्या एवं सुझाव विशय की शोध पत्र का विशय प्रस्तुत किया गया है जो कि वर्तमान आर्थिक विकास के सन्दर्भ में बहुत ही चिन्तनीय एवं ज्वलन्त है। क्षेत्र में बाढ़ द्वारा भूमि क्षरण की समस्या एक अभिशाप है।

2. प्रस्तावना– बेहट उत्तर प्रदेश में जनपद सहारनपुर की तहसील है इसके उत्तर में शिवालिक पहाडी व जनपद हरिद्वार और पश्चिम में यमुना नदी का खादर व हरियाणा राज्य है, तहसील बेहट का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 69695 हेक्टेयर है तथा 2001 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 398543 है, जिसमें 212234 पुरूश तथा 186309 स्त्रियां है। तहसील बेहट में सढोली कदीम व मुजफ्फराबाद दो विकासखण्ड है तथा कुल 322 ग्राम है जिनमें 258 आबाद तथा 64 ग्राम गैर आबाद है। स्वतंत्रता प्राप्ति के छः दशक के उपरांत भी भारतीय ग्रामीण क्षेत्र आज भी विभिन्न आर्थिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त है। तहसील बेहट में विकास की यह विशमता स्पश्ट रूप से देखने को मिली है।

3. अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत बहने वाली नदियों में यमुना नदी व बरसाती नदियाँ, मसखरा, गंगारो, चाचाराव हिण्डन, सोलानी आदि है जो शिवालिक पहाडी से निकलती है। जिन्हें स्थानीय भाशा में राव कहते हैं। क्षेत्र वासियों के लिए यह नदियाँ वरदान एवं अभिशाप दोनों ही रूप में है। वर्शा के समय यमुना नदी व इसकी सहायक नदियों में जल का प्रभाव तीव्र होता है जिससे प्रतिवर्श बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में भूमि का अत्यधिक कटाव एवं फसली क्षेत्र की हानि होती है। अत्यधिक जल भराव एवं क्षेत्र में कुछ नदियों पर पुल न होने के कारण क्षेत्रीय सम्पर्क टूट जाता है।

मिट्टियाँ– अध्ययन क्षेत्र में मिट्टी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। मिट्टी से किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास प्रभावित होता है। मिट्टियों के वितरण पर धरातलीय दशा व मिट्टी के प्रकारों में दिखाई पड़ता है। मिट्टी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। जिस पर क्षेत्र का सम्पूर्ण कृषि उत्पादन निर्भर करता है। अमेरिकन विशेशज्ञ डा0 बैनेट के अनुसार ''मिट्टी भूपृश्ठ पर मिलने वाले असंगठित पदार्थों की वह ऊपरी परत है, जो मूल चट्टानों अथवा वनस्पति के योग से बनती है।'' मिट्टियों का निर्माण जलवायु तथा चट्टानों के विखण्डन के फलस्वरूप होता है जिसमें अनेक प्रकार के रासायनिक तत्व पाये जाते है। फलतः विभिन्न जलवायु में विभिन्न चट्टानों से बनी मिट्टियों में न तो एकरूपता ही पााायी जाती है और न सबकी उर्वरा शक्ति ही समान होती है, तथा मृदा का रंग रासायनिक गुण एवं मृदा संरचना में भिन्नता देखने को मिलती है। सामान्यतः यह क्षेत्र खादर व बांगर के अन्तर्गत आता है। इसे काप मिट्टी के नाम से भी जाना जाता है। यह क्षेत्र मिट्टियों की निर्माण प्रक्रिया तथा भौगोलिक दृष्टिकोण से धरातलीय विशेषताओं जलवायु व अपवाह तन्त्र को दृष्टिगत रखते हुए निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है।

तालिका सं0 1.1 तहसील बेहट में मिट्टियों के प्रकार व वितरण

क्र0सं0	प्रकार	कुल क्षेत्रफल (हे0 में)	कुल क्षेत्रफल प्रतिशत
1	रेतीली व कंकरीली मिट्टी	35450	50.86
2	दोमट मिट्टी	29433	42.23
3	रेतीली मिट्टी	4812	6.91
	योग	69695	100.00

1. पर्वतीय मिट्टी– यह मिट्टी शिवालिक पहाडी क्षेत्र में मिलती है। इस मिट्टी में कंकड़, पत्थर, अधिकांशतः पाये जाते हैं, जो नदियों द्वारा लाकर एकत्रित कर दिये जाते है। इस मिट्टी का दाना बडा होता है। इसमें कंकड पत्थर के छोटे टुकडे मिले होते हैं किन्तु इस मिट्टी में वनस्पति, चूने और लोहे का अंश कम होता है। अतः कृशि की दृष्टि से यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है।

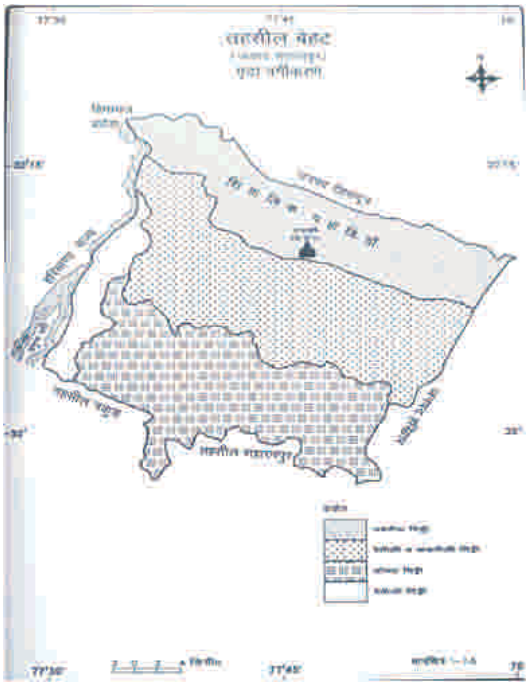

2. रेतीली व कंकरीली मिट्टी– यह पथरीली सतह रखने वाले क्षेत्र में फैली हुई है तथा भाबर (घाड़) क्षेत्र में पायी जाती है। पश्चिमी भाग में नदियों से मध्यवर्ती ऊँचें उठे भागों में यह गहरे तथा चॉकलेटी रंग की है तथा उपजाऊ है। पूर्वी भाग में रेतीली व हल्की मुलायम चीका प्रकार की है तथा कम उपजाऊ है। कंकरो की अधिकता है मूंगफली उत्पादन के लिए इसका विशेष महत्व है।

3. दोमट मिट्टी– यह नदियों द्वारा लायी गई प्राचीन मिट्टी है, जो ऊँचे भागों में पायी जाती है। जहाँ पर बाढ का प्रभाव नहीं होता है। इसे हल्की दोमट अथवा रोसली कहा जाता है। इसमें रेत व हल्की चीका का मिश्रण पाया जाता है। पानी को अधिक सोखने की शक्ति रखती है। बिना सिंचाई की सहायता के भारी उत्पादन प्रदान करने में सक्षम है हल्की दोमट भूड कहलाती है। इसमें 75 प्रतिशत अंश रेत है तथा कृषि के लिए कम महत्व रखती है।

4. रेतीली मिट्टी– यमुना नदी, क्षेत्र की मिट्टियों को सीधे तौर पर प्रभावित करती है। वर्शा में मिट्टी का कटाव व जल भराव मिट्टी की उर्वरकता को प्रभावित करती है। साधारण अधिवासों के समीपवर्ती भूमि अधिक उपजाऊ पायी जाती है। सढोली कदीम, असलमपुर, बरथा, कासेंपुर, आदि यमुना के बहुत निकट है।

अधिकांश ग्रामीण अधिवास बाढ़ से प्रभावित होने के कारण न्यू उर्वरकता की मृदा धारण किये हुए हैं। इस मिट्टी को नूतन जलोढ कहा जाता है।

तालिका 1.2 तहसील बेहट में भूमिक्षरण प्रभावित अधिवासों का विवरण–2011

क्र0सं0	मिट्टी क्षरण प्रभावित अधिवास	भूमि हेक्टेयर में	भूमि का प्रतिशत
1	बरथा कोरसी	23.33	2.70
2	असलमपुर बरथा	16.66	1.9
3	धोलरा	20.00	2.32
4	टटौहल	20.00	2.32
5	प्रतापपुर	3.33	0.38
6	कासेंपुर	46.68	5.41
7	टोडरपुर	266.69	30.89
8	हैदरपुर	266.65	30.89
9	भूकडी	200.00	23.16
	योग	863.37	100.00

यह क्षेत्र शिवालिक पहाडियों का प्रपाती ढाल बरसाती नदी नालों व राव को तीव्र वेग प्रदान करता है। जिसके फलस्वरूप सबसे अधिक क्षति रावों के पहाडी ढालों के बाहर निकलने के स्थान पर होती है। यह क्षेत्र मिट्टी कटाव से बुरी तरह प्रभावित है। मिट्टी का संचय समुचित उपभोग एवं सुरक्षा अति आवश्यक है। जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे फसलों के उत्पादन से मिट्टी की उर्वरा शक्ति क्षीण हो जाती है। प्रवाहित जल से बहुत ही उपजाऊ भूमि अपरदित होकर नश्ट हो जाती है, चूंकि जीव जगत वनस्पति पर पूर्णतः आश्रित है और वनस्पति मिट्टी पर अतः स्पश्ट होता है कि मानव मात्र का कल्याण मिट्टी की उर्वरा शक्ति से घनिश्ट सम्बन्ध रखता है।

भूमिक्षरण मिट्टी की चोरी एवं रेंगती मृत्यु है। क्षरण से कृशि क्षेत्र की ऊपरी तह की लगभग 18 सेमी0 मिट्टी 27 वर्शों में नश्ट जो जाती है। जबकि इतनी उपजाऊ मिट्टी के निर्माण में 500 से 1000 वर्श लग जाते है। क्योंकि मानव सभ्यता मिट्टी के निमार्ण से ही आरम्भ होती है। अगर मानव अस्तित्व को बचाये रखना है तो मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बनाये रखना होगा। मृदा संरक्षण क्षेत्र की एक ज्वलंत समस्या है। एवं इस क्षेत्र का समेकित समाधान एवं भू–वैज्ञानिक आधार प्रदान करना होगा। अन्यथा यह क्षेत्र बंजर क्षेत्र बन जायेगा वैसे भी इस क्षेत्र की वन सम्पदा जैव विविधता एवं जंगली जीवन समाप्ति की ओर है। इसका प्रमुख कारण मानवीय

भौतिक वादी सोच बढ़ती जनसंख्या, क्षेत्रीय संसाधनों पर मानवीय बढता दबाव है।

उत्तरी व पश्चिमी भाग में भारी मिट्टी कटाव देखने को मिलता है। इस क्षेत्र में बडे–बडे बीहड क्षेत्र पाये जाते हैं। यहाँ खुजनावर के पास हिण्डन नदी के रेत में 6 मीटर ऊँचे कुएं की दीवार पायी जाती है। जो इस क्षेत्र में मिट्टी कटाव की विकट समस्या को बताने में सहायक है।

बाढ़ के समय इन नदियों का प्रवाह अत्यधिक तीव्र होता है एवं विस्तृत क्षेत्र जलमग्न हो जाता है, जिससे भूमि का कटाव होता है एवं कृषकों की फसलें नश्ट हो जाती है। कभी–कभी बाढ़ का पानी ग्रामीण आवासीय क्षेत्रों में भर जाता है, जिससे जनजीवन, कृशि, पशु जीवन व आवासीय क्षेत्रों को हानि होती है।

खादर क्षेत्र में नुकसान कम होता है क्योंकि इनके समीप या तो कृशि क्षेत्र कम है या फिर घास के जंगल है। यह क्षेत्र जल प्लावित हो जाता है, क्योंकि यहाँ इस पानी के निकास की भी कोई व्यवस्था नहीं है, जिससे मानव एवं पशु दोनों का जीवन प्रभावित होता है।

तालिका 2.3 तहसील बेहट में मात्र 24 घण्टे में यमुना नदी में आये बाढ़ के पानी की मात्रा का विवरण

सितम्बर 2009 समय	पानी की मात्रा (क्यूसेक में)	अगस्त 2010 समय	पानी की मात्रा (क्यूसेक में)
रात्रि 1 बजे	130328	रात्रि 12 बजे	82488
रात्रि 3 बजे	128695	रात्रि 1 बजे	105725
सुबह 5 बजे	123327	रात्रि 2 बजे	105165
सुबह 6 बजे	120856	रात्रि 3 बजे	221384
सुबह 8 बजे	120018	सुबह 4 बजे	233794
सुबह 10 बजे	102415	सुबह 5 बजे	242075
सुबह 11 बजे	101070	सुबह 6 बजे	261856
सुबह 12 बजे	91492	सुबह 7 बजे	269786
दोपहर 1 बजे	99563	सुबह 7 बजे	304674
		सुबह 10 बजे	324365
		सुबह 12 बजे	304138

स्रोत– सितम्बर 11, 2009 एवं अगस्त 23, 2010 दैनिक जागरण रिपोर्ट

इन नदियों की सहायक नदियाँ जो केवल वर्शाकाल में ही प्रवाहित होती है, उनकी सफाई व्यवस्था न होने के कारण वर्षा काल में अवरूद्ध हो जाती है, जिससे क्षेत्र का पानी मुख्य नदियों में प्रवाहित होने के बजाए, क्षेत्र में ही जमा होता रहता है, जिससे क्षेत्र के अन्तर्गत अनेक बीमारियाँ जन्म ले लेती है।

एक ओर वर्शा जल की अधिकता एवं दूसरी और यमुना नदी पर खारा नामक हथनीकुण्ड बैराज से यमुना नदी में अचानक लाखों क्यूसेक पानी छोडे जाने के कारण यमुना नदी व उसकी सहायक नदियों में प्रलयकारी बाढ़ का प्रकोप दिखायी देने लगता है। जिसमें कृषि भूमि का कटाव होता है एवं कृषकों की फसलें नष्ट हो जाती है।

बाढ़ का पानी ग्रामीण आवासीय क्षेत्रों में भर जाता है। जिससे जन जीवन, कृषि, पशु, जीवन व आवासीय क्षेत्रों को हानि होती है। चारों और बीहड़ क्षेत्रों में जल ही जल दिखायी देने लगता है। यह मंजर प्रतिवर्श देखने को मिलता है। क्षेत्र में बरथा कोरसी, असलमपुर, घोलरा, टटौहल, प्रतापपुर, कासेंपुर, टोडरपुर, हैदरपुर, साढोली कदीम, सोंधेबांस, नानोली, आलमपुर, मरवा, कादरपुर, पठानपुर, बेगपुर, पाजूवाला, अलीपुर, भागूवाला, जसमौर, पाजराना, जन्धेडी, मीरगपुर, खुशहालीपुर, जहानपुर, मुजफ्फराबाद आदि प्रतिनिधि ग्रामीण अधिवासों में बाढ़ द्वारा भूमिक्षरण की समस्या एक अभिशाप है।

इस समस्या का एक ही समाधान है। जल, जंगल, जमीन का संरक्षण जल संरक्षण हेतु क्षेत्र में छोटी, छोटी जल संरचनाओं का निर्माण करना होगा। सूखी अथवा बरसाती नदियों को सतत्वाही बनाकर अधोभूमि जलीय संरचनाओं का आवरण क्षेत्र की तरह पुर्नजीवित कर जल भण्डारण, भूमिगत जल संरक्षण एवं जल संरचनाओं के निर्माण को मूर्तरूप देकर क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक विकास को नये आयाम दिये जा सकते हैं।

निष्कर्ष– अतः राजनैतिक प्रभाव एवं क्षेत्रीय विशेषताऐं इस क्षेत्र की विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में मुख्य बाधक है। यह क्षेत्र वस्तुतः एक भौगोलिक ईकाई है। जिसमें भूमि क्षरण के साथ–साथ, वन क्षेत्र, बाढ क्षेत्र, खादर पर्वत पदीय क्षेत्र विभिन्न भौतिक समस्यायें है। इसके स्थायी समाधान के लिए स्थानीय व्यक्तियों के अनुभव तथा ठोस प्रबन्धन योजनओं को लागू किया जाना अति आवश्यक है। अतः उक्त सुझावों के अनुरूप यह क्षेत्र एक आदर्श ग्रामीण क्षेत्र के रूप में विकसित होगा तथा अध्ययन की सार्थकता भी सिद्ध होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bansal, C.C: Saharanpur Ek Bhogolik Parichaya- 2019
2. तहसील, बेहट, मुख्यालय सहारनपुर, 2018
3. विकास खण्ड कार्यालय सढोली कदीम, 2019
4. विकास खण्ड कार्यालय मुजफ्फराबाद, 2015
5. जिला मुख्यालय सांख्यिकी कार्यालय, सहारनपुर, 2001, 2011

डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुत्र लेखराज

ग्राम– ककराला डा0 जिला– सहारनपुर

पिन– 247001 उ0प्र0

मो0– 7668773615

27

भारत चीन सीमा सम्बन्धः–एक अवलोकन

Dr. Bharat Samrat

सारांश

प्राचीन काल से भारत चीन के मध्य सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं। दोनों राष्ट्रों ने पड़ोसी की भूमिका का उत्कृष्ठ स्वरूप में निर्वहन किया है। व्यापारिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य में भी लम्बे अन्तराल से चीन एवं भारत में मधुरता कायम रही है। चीन में सर्वाधिक बौद्ध धर्म का वर्चस्व रहा है और इस मायने से भारत चीन का धर्मगुरु रहा हे।

इतिहास साक्षी है कि ह्वेनसांग, फाह्या, इत्सिंग जैसे कई चीनी यात्री अनवरत भारत में बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्ति के लिए आते रहे हैं। श्रेष्ठ सम्बन्धों के अतिरिक्त भारत की हिमालय श्रृंखलाओं ने भारत को चीन के प्रति निश्चिन्त बनाये रखा है। कालान्तर में दोनों राष्ट्र विदेशी आधिपत्य में आ गये। इसके फलस्वरूप सम्बन्धों में दूरियाँ बढ़ती गयी। 1947 में कोमिन्तांग सरकार के पतन के पश्चात् चीन 1949 में साम्यवादी देश के रूप में उभरा। पुनः दोनों देशों के मध्य अन्तर्सम्बन्धों की महत्ता का अनुभव किया गया। यहां यह बताना उचित होगा कि भारत की विदेश नीति में चीन के साथ शान्धि एवं मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना मूल लक्ष्य रहा है। किसी भी काल में अपने पड़ोसी के प्रति भारत का दृष्टिकोण दूषित नहीं रहा। इस सन्दर्भ में शांति एवं मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की भारतीय भावना को स्पष्ट करने के लिए 7 दिसम्बर 1949 को आल इण्डिया रेडियो प्रसारण से दिये गये प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के कथन को उद्धृत करना श्रेयस्कर होगा–

''चीन अपने इतिहास के साथ एक महान शक्तिशाली राष्ट्र है। वह हमारा पड़ोसी है। वह युगों से हमारा मित्र रहा है और यह मित्रता बनी रहेगी और बढ़ेगी, फूलेगी।''

भारत चीन के मध्य सीमा :- भारत चीन सीमा 2500 मील लम्बी है जो उत्तर पश्चिम में कश्मीर से लेकर अरुणाचल प्रदेश में तालु पास जहाँ चीन, भारत व बर्मा की सीमा मिलती है तक माना जा सकता है। भारत व चीन के बीच भौगोलिक सीमांकन को क्रमानुसार इस प्रकार से समझा जा सकता है–

पश्चिमी क्षेत्र :– भारत व चीन पश्चिमी क्षेत्र में दोनों के बीच लगभग 2152 कि.मी. की सीमा रखते हैं। यह सीमा गिलगिट व सीकियांग के बीच एक प्राकृतिक सीमा है जो दर्रों से बनती है। इस सीमा के मुख्य रूप से चार हिस्से किये जा सकते हैं–

(I) **लद्दाख** :– जम्मू–कश्मीर का यह क्षेत्र उत्तर व पश्चिम में 560 कि.मी. की सीमा रखता हे। यह क्षेत्र हिन्दुकुश व कारकोरम पहाड़ों से पश्चिम व उत्तर में घिरा है।

यह इलाका समुद्रतल से 4500 मीटर ऊँचा है। यह एक सूखा व सुनशान इलाका है जिसमें न तो कोई मानव रहता है व न ही वहाँ कुछ उगता है। यह कश्मीर के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। यह इलाका एक आन्तरिक निकासी का इलाका है।

(ii) **पाक अधिकृत कश्मीर** :– भारतीय सीमा का यह हिस्सा पाक अधिकृत कश्मीर इसलिए कहलाता है क्योंकि इस हिस्से पर पाकिस्तान ने अवैध कब्जा कर रखा हे। पाकिस्तान ने 1963 में एक समझौते के तहत इसका कुछ हिस्सा चीन को दे दिया है। यह हिस्सा चीनी सीक्यांग प्रान्त से 200–2500 मील की सीमा बनाता है।

(iii)**हिमाचल प्रदेश** :– यह प्रदेश तिब्बत के साथ 300 कि.मी. की सीमा बनाता है। इस क्षेत्र में कौरिक व सिपकि ला दो मुख्य रास्ते हैं। इस प्रदेश के किन्नूर, लाहोल व स्पिटी जिले तिब्बत से सीमा का निर्माण करते हैं। इस प्रदेश में 16000 फिट से 21000 फिट ऊँचे पर्वत स्थित हैं।

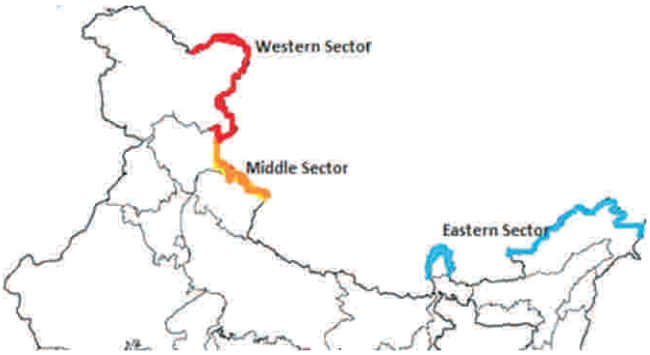

Source: -India-China Border Dispute Map, India China border dispute, https://www.studyiq.com/articles/india-china-border-dispute/ accessed on17-06-2022

मध्य क्षेत्र :

(I) इस क्षेत्र का भारतीय राज्य उत्तरांचल चीन के साथ 400 कि.मी. सीमा बनाता है। इस सीमा पर स्थित कुछ मुख्य पास निट, कुँगरि, बिन्गरि, तन्जने ला और लिपुलेख हैं। यह सीमा हिमाचल सीमा पर सतलज नदी को काटती है। इस सीमा पर उत्तराकाशी, चमोली, पिथोरागढ़, गढ़वाल व अलमौड़ा आदि उत्तरांचल के जिले स्थित हैं। इस इलाके में 18000 फिट से 20,000 फिट ऊँचे पर्वत मिलते हैं। इन्हीं पर्वतो में गंगा, यमुना व अलकनन्दा के उत्पत्तिस्थल मिलते हैं। टोन्स इस इलाके को दक्षिण में हिमाचल प्रदेश से अलग करते हैं वहीं काली से इसे पूर्व में नेपाल से अलग करती है। यहाँ स्थित पर्वत प्रमुख रूप से दो भागों में बँटे हुए हैं जिन्हें नन्दा देवी श्रृंखला व बद्रीनाथ श्रृंखला के नाम से जानते हैं। एक अन्य मुख्य श्रृंखला धोली गंगा व विष्णुगंगा के

बेसीन पर स्थित दर्रे की तरफ चली जाती है। यहाँ की मुख्य चोटी कमेट 25,447 फिट ऊँची है जो दर्रे के बिल्कुल पास स्थित हैं इसका एक जिला अल्मोड़ा भी बर्फीले पर्वतों के क्षेत्र में आता है। यह जिला काली नदी की पश्चिमी सहायक नदियोंके द्वारा सिंचित होता है। काली नदी इसे नेपाल से अलग करती है।

(2) नेपाल :– उत्तरांचल के हिस्से को छोड़ने के बाद भारतीय सीमा एक सम्प्रभू व स्वतन्त्र राज्य में से होकर गुजरती है। नेपाल हिमालय के दक्षिणी ढलानों पर स्थित है। यह हिमालयन पठार व भारतीय मैदानी भाग को दो भागों में बाँटता है।

पूर्वी क्षेत्र :- इस भाग में हम भारत चीन सीमा को तीन भागों में बाँट सकते हैं।

(1) **सिक्किम** :– सिक्किम के साथ चीन की सीमा 225 कि.मी तक की है। इस सीमा पर वह पर्वत स्थित है जिसके ढलानों से तीस्ता नदी को पानी मिलता है। उत्तर की तरफ इन्हीं पहाड़ों से तिब्बत की नदियों को पानी मिलता है। लगभग 2/3 सिक्किम पहाड़ों से आच्छादित है। इस सीमा पर गोरा ला, नाथू ला, और जुलेप ला नामक महत्वपूर्ण पास स्थित हैं।

(2) **भूटान** :– इस सीमा पर भूटान नामक एक स्वतन्त्र व सम्प्रभू राज्य स्थित है।

(3) **अरूणाचल प्रदेश** :– यह सीमा भूटान से लेकर वर्मा, चीन भारत सीमा के त्रिकोण तक लगभग 1140 कि.मी. की है। अरूणाचल प्रदेश को चार राजनीतिक क्षेत्रों में बाँटा गया है कमेंग, सवाँसरि, सियाँग व लोहित।

निष्कर्ष :

इस प्रकार कश्मीर से लेकर अरूणाचल तक भारत चीन सीमा एक प्राकृतिक सीमा है जो दर्रों पहाड़ों व नदियों द्वारा अंकित है। प्राकृतिक सीमांकन को बहुत से देशों द्वारा अपनाया गया है जैसे कोलम्बिया वकोस्टारिका अर्जेन्टीना व चिली, ग्वाटेमाला व होन्डूराम। यूरोप में यह फ्राँस व स्पेन के द्वारा तथा अफ्रीका में यह काँगो रिपब्लिक व उत्तरी रोडेशिया के बीच अपनाया गया है।

सुदर्भ सूची :

1. The Chinese Revolution of 1949, Office of the Historian, https://history.state.gov/milestones/1945-1952/chinese-rev, accessed on 26-07-2022
2. Management of Indo-China Border, https:// www.mha. gov.in/ sites/ default/ files/ INDO%20 CHINA _05052017. pdf, p-01
3. India-China Border Disputes, https:// www.ias4 sure.com/ ias4sure-notes/india-china-border-disputes/ accessed on 24-06-2022
4 Sudhakar Bhatt `India and China' edit - 1967 p. 135
5. The mosaic of Jammu and Kashmir, published in Frontline, Hindu 28 April 2001,https://front line. the hindu. com/the-nation/ article 30159675. ece, accessed on 6-07-2022.
6. Ibid.
7 B.L. Sukhual, India a political Geography (Allied publishers, Bombay-1, 1971) p.p. 206-207.
8. The Boundary Agreement between China and Pakistan, 1963, http://prfjk.org/wp-content/uploads/books/historical-doc/China-Pakistan%20frontier%20agreement%201963.pdf, accessed on 6-7-2022
9. Archana Phull, 'International border in Himachal Pradesh in state of neglect', 3rd May 2017, The Statesman, https://www. the statesman.com /cities / international-border-in-himachal-pradesh-in-state-of-neglect-1493812764. html
10. Sanjay Singh, 'Half of Border Area Development funds to go to villages along China border: Centre', The Economic Times, https:// economictimes. indiatimes.com/news/defence/half-of-border-area-development-funds-to-go-to-villages-along-china-border/articleshow/80469887.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst Accessed on 23-06-2022
11 V.B. Karnik, Chinese Invasian : Background and Sequel (Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay-7, 1966) pp. 165-166.
12. Roshan Gupta, Sikkim fortifies its borders with China, 24-06-2020, Times of India, https://timesof india.indiatimes.com/city/kolkata/sikkim-fortifies-its-border-with-china/article show/ 76540329. cms, accessed on 9-06-2022
13. Arunachal Pradesh: India's tri-junction to the east, 27, November 2018, The Arunachal Times, https://arunachaltimes.in/index.php/2018/11/27/arunachal-pradesh-indias-tri-junction-to-the-east/, accessed on 18-04-2022

Dr. Bharat Samrat
Asst. Professor (vsy)
Govt. Girls College
Behror (Alwar) Rajsthan
Pin-301701
Mob.9414466238

28

डॉ शीलधर प्रसाद सिंह : बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी

शिल्पा बाड़ा

सारांश

डॉ शीलधर प्रसाद सिंह प्रयोगवाद और नई कविता के दौर के प्रतिष्ठित कवि थे। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी और प्रखर कवि रहे हैं। शिक्षा, संगीत और साहित्य जैसे विधा में सशक्त हस्ताक्षर के रूप में स्थापित हुए हैं। मध्यमवर्गीय परिवार और संयुक्त बिहार के छोटे से गांव में जन्म लेने के बाद भी अपनी असाधारण प्रतिभा के बल पर शिखर तक पहुंचने में कामयाबी पाई। कस्बे की छोटी पत्रिका से लेकर आकाशावाणी तक के माध्यम से पाठकों,श्रोताओं तक पहुंचे। दो प्रकाशित पुस्तकों के माध्यम से लोगों के बीच आज भी बने हुए हैं। वे प्रकृति प्रेमी थे, उन्हें यायवरी पंसद थी। इस सबके बाद भी उनका गांव, उनका शहर दिल में बसा रहा। जब कलम चलाने की बारी आई तो अनाम जगहों, संस्कृति आदि से दुनिया का परिचय कराया। अपना अंतिम वक्त गांव की गलियों में गुजारा। स्वर्गारोहण के इतने साल बाद भी आज भी साहित्य जगत के लिए प्रकाश पुंज बने हुए हैं। उनकी रचनाओं पर शोध जारी है। जिससे रोज ही इनके व्यक्तित्व के नए पक्ष से लोग अवगत हो रहे हैं।

प्रारंभ –

झारखंड की धरती सिर्फ कोयला, लोहा, सोना हीं नहीं उगलती है। यहां की धरती साहित्य के लिए भी बड़ी उपजाऊ है। शायद इसी वजह से राज्य ने हिंदी, अंग्रेजी से लेकर विभिन्न जनजातीय भाषाओं में सैंकड़ों कवि लेखक दुनिया को दिए हैं। जिन्होंने साहित्य जगत में अपना मुकाम बनाया है। ऐसे ही एक कवि हैं डॉ शीलधर प्रसाद सिंह। उनका जन्म देश की धार्मिक मानचित्र पर प्रमुख स्थान रखने वाले देवघर जिले के एक छोटे से गांव टाभाघाट में 21 जुलाई 1932 को हुआ था। उनके पिता का नाम शारदा प्रसाद सिंह और माता का नाम करमा देवी था। शारदा बाबू मध्यमवर्गीय परिवार से आते थे। बालक शीलधर का जन्म परिवार के लिए बाबा बैद्यनाथ की मनोकामना पूर्ण करने जैसा था। इसलिए जन्म से काफी दिनों तक खुशियां मनाई गई। परिवार मे पूजा अर्चना का दौर भी लंबे समय तक चला।

डॉ शीलधर प्रसाद सिंह बचपन से ही मनमोहक व्यक्तित्व के स्वामी थे। कंधे तक काले घुंघराले बाल और हाथों में बांसुरी। यह उनकी पहचान थी। बाद के दिनो में संगीत के प्रति इनका रूझान बढ़ता ही चला गया। बांसुरी के अलावे अन्य वाद्य यंत्रों में उनकी रूचि बढ़ने लगी। दरअसल उनके दादा और परदादा भी संगीत के मर्मज्ञ थे। इसलिए उनके संगीत प्रेम को पारिवारिक पृष्ठभूमि ने औऱ आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान की। हालांकि उनके पिता का जोर शिक्षा के प्रति था। वह आजादी के पहले का दौर था। पिता शारदा प्रसाद सिंह, अपने पुत्र की शिक्षा में कोई कमी नहीं छोड़ना चाहते थे। इसलिए उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव की पाठशाला से आरंभ हुई। हाई स्कूल के लिए बगल से शहर देवघर और जसीडीह भेजे गये। उच्च शिक्षा के लिए शीलधर प्रसाद सिंह को पटना भेजा गया। वहां उनका नामांकन सबसे प्रतिष्ठित पटना विश्वविद्यालय कराया गया। यहां से उन्होंने स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। पटना जाना उनके लिए वरदान साबित हुई। पूरे बिहार के मेधावी छात्र यहां पढ़ने आते थे। यहां साहित्यक माहौल भी था। जिससे शीलधर प्रसाद सिंह के व्यक्तित्व को खूब विस्तार मिला। भारत के पूर्व विदेश सचिव मुचकुंद दूबे उनके सबसे अच्छे मित्रों में एक थे। दरअसल दोनों महान विभूतियों की मित्रता की बड़ी वजह साहित्य के प्रति अनुराग ही था। उन दिनों की घटना को याद करते हुए देवघर के प्रख्यात शिक्षक गंगानाथ झा लिखते हैं कि वह सुनहरा दौर था। जब हम भाषा पर अधिकार के लिए लगातार मेहनत कर रहे थे। इस दौरान सृजनात्मक कार्य भी चल रहे थे। विभिन पत्र पत्रिका और रेडियो के लिए लेखन काम और बेहतर ढंग से होने लगा।

पढ़ाई पूरी करने के बाद मध्यमवर्गीय परिवार के बच्चों की पहली प्राथमिकता नौकरी होती है। इसलिए शीलधर सिंह ने भी 1956 में बिहार सरकार में ग्राम पंचायत पर्यवेक्षक की नौकरी ज्वाइन कर ली। करीब छह सालों तक नौकरी करने के बाद नौकरी छोड़ दी, क्योंकि यह नौकरी उनके मिजाज के अनुसार नहीं था। यहां ना कविता थी, ना संगीत था। जिसके बाद उन्होंने जामताड़ा कॉलेज में सहायक प्राध्यापक की नौकरी शुरू की। यह काम उनके मन क लायक था। इसके साथ ही उनकी साहित्य साधना ने गति पकड़ ली। हिंदी के प्राध्यापक के तौर पर जल्द ही उन्हें ख्याति मिलने लगी। बच्चे उनके पढ़ाने की तरीके के कायल थे। हिंदी साहित्य पढ़ाने के दौरान में उनका क्लास ठसाठस भरा रहता था। शीलधर प्रसाद सिंह को अपने विद्यार्थियों को बेहतर से बेहतर ढंग से पढ़ाने की कोशिश करते थे। इस दौरान उन्होंने हिंदी साहित्य से लेकर विश्व साहित्य का भरपूर अध्ययन किया। जिससे इनका शिक्षक रुप लगातार निखरता गया।

हालांकि वे इससे संतुष्ठ नहीं हो गये। दरसल वे सृजनशील और कविहृदय थे। इस कारण कॉलेज और पारिवारिक जिम्मेवारियों के बीच मन की भावनाओं को व्यक्त करने का वक्त निकाल लेते थे। उनकी रचनाओं में कविता,व्यंग और ललित निबंध होते थे। उन दिनों के प्रमुख पत्र पत्रिका में उनकी रचनाओं की धूम थी। एक छोटे शहर में रहने के बाद भी उनकी ख्याति बड़े लेखकों के बीच थी। साहित्यकारों का साथ भी उन्हें खूब मिला। शीलधर सिंह भले ही शिक्षा के लिए पटना और नौकरी के लिए जामताड़ा गए, लेकिन उनके मन में उनका गांव बसा हुआ था। उनकी कविताओं में गांव समाज की वे बातें बार

बार आई हैं जो ग्रामीण संस्कृति का मूल तत्व है। उन्होंने कई कविताएं लिखी लेकिन हमारे बीच उनकी दो प्रकाशित पुस्तकें ही हैं। जिनके नाम डढ़वा के तीरे–तीरे और देश की माटी हमे बुलाती हैं। दरअसल बचपन से ही वे प्रकृति प्रेमी थे। उनके गांव टाभाघाट से गुजरने वाली डढ़वा नहीं उनके लिए दोस्त की तरह था। जिससे वे प्रेरणा लेते और उसके किनारे घंटो बैठते थे। उन्होंने कविता लिखने की शुरुआत यही से किया। अपनी कविताओं में शीलधर प्रसाद सिंह ने प्रकृति प्रेम, जीवन संघर्ष और प्रेम जैसे विषयों को प्रमुखता दी। जीवन के संघर्षों को उन्होंने गले लगाया और उस पर जीत दर्ज कर आगे बढ़ गये। निराशा को कभी जीवन पर हावी नहीं होने दिया और मंजिल की तलाश में अनवरत चलते रहे। जीवन के संघर्ष ने उन्हें सफल व्यंगकार भी बनाया। उनके समय की प्रमुख पत्र पत्रिकाओं का गंभीर अध्ययन करने से पता चलता है कि कैसे देश और समाज की समस्या को चुटीले अंदाज में व्यक्त किया। जिसको पढ़ने से मन में गुदगुदी भी होती है। दूसरी तरफ समस्या समाधान को लेकर मन बेचौन भी हो जाता है। व्यंग लिखने के दौरान वे व्यंगकार से ज्यादा दार्शनिक लगते। मशहूर पत्रिका सारिका के 1974 के दिसंबर अंक में व्यवस्था नामक व्यंग में भ्रष्टाचार की पोल खोलने का काम किया। इसको पढ़ने से लगता है कि भ्रष्टाचार सिर्फ वर्तमान समय की समस्या नहीं है। उस समय भी यह विकराल रुप में थी। वहीं अपूवर्या नामक पत्रिका के 1993 के नवबंर अंक में टिप्पणी नामक व्यंग के माध्यम से बताने की कोशिश कर रहे हैं कि हम दूसरों को ज्ञान तो देते हैं, लेकिन खुद इसका पालन नहीं करते। प्रकृति प्रेम और नये लोगों से मिलने की रूचि के कारण शीलधर बाबू ने खूब यायवरी की। जिसका प्रभाव इनकी रचनाओं पर भी पड़ा। वे यात्रा के अनुभवों को बड़े सलीके से व्यंग का विषय बना लेते थे। इस वजह से इनकी रचनाओं में एक विस्तार है। विषयों की दरिद्रता नहीं है। भोगे हुए सच की वजह से प्रमाणिकता है। शायद इसी वजह से एक अंचल का साहित्यकार होने के बाद भी इनकी रचनाएं आंचलिकता से मुक्त है। कोई दोहराव नहीं है। कोई ठहराव नहीं है। जैसे इनके गांव की डढ़वा नदी का उद्गम स्थल गांव है, लेकिन महासागर में मिलने की उत्कंठा साफ दिखती है। उसी तरह ठाभाघाट के शीलधर सिंह अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य जगत के बड़े कैनवास का हिस्सा जीवनकाल में ही बन गये थे। जिस विषय पर कलम चलाई वह कमाल का हो गया। अगर उनके कवि रूप को देखा जाए तो विविध रंग देखने को मिलता है। भारत के दुश्मनों के खिलाफ शीलधर सिंह वीररस से ओतप्रोत कविता भी लिखते थे। देश की माटी हमें बुलाती नामक किताब में उन्होंने विदेशी शक्तियों के खिलाफ हुंकार भरा है। वे ऐसे देशों को दुनिया की मानचित्र से खत्म करने की अपील करने से गुरेज नहीं करते, जो भारत के खिलाफ बुरी नज़र रखते हैं। उनके युवाकाल में भारत के साथ चीन, पाकिस्तान से साथ भारत की चार लड़ाई हुई। इस दौरान उनकी रचनाएं आग उगल रही थी। उनकी कविता आगे बढ़ नौजवान की पंक्तियों में युद्ध के समय नौजवानों के श्रौर्य को जगाने की भरसक कोशिश की गई है।

जाग सिंह दहाड़ तू,
कांपे थरथर पहाड़
भीषण भूचाल उठे
फट जाए आसमान ।
रणभेरी बजा आज
नित नूतन ब्यूह साज
मातृभि रक्षाहित
युद्ध कर घमासान।
आगे बढ़ नौजवान,
डट कर लड़ नौजवान

वीरता और क्रांतिकारी भावनाओं से सराबोर उनकी रचनाओं को देखकर सहसा अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है कि यह कवि प्रेम और प्रकृति के बारे में लिखने वाला है। सिर्फ आक्रामकारी पड़ोसियों के खिलाफ ही नहीं इनकी कलम देश के अंदर के दुश्मनों पर भी खूब चली। गरीबों का शोषण और किसानों की परेशानी भी डॉ शीलधर प्रसाद सिंह के मन को आंदोलित किए बगैर नहीं रह सका। उन्होंने अपने जीवनकाल में सामाजिक विषमता, अन्याय और भाई भतीजावाद के खिलाफ भी अलख जगाने का काम किया। वे दूर बैठकर देखने के बदले गलत के खिलाफ आवाज उठाने के पक्षधर रहे हैं। अध्यापनकाल में उन्होंने इस पर विशेष ध्यान दिया। अपने छात्रों को सिर्फ साहित्य का पाठ नहीं पढ़ाते। उन्हें दुनियादारी की चीजों के लिए भी तैयार करने का काम करते थे। सिर्फ ज्ञान नहीं देते थे। खुद उसे जीने की कोशिश करते थे। दीन दुखियों और शोषित समाज के लोगों के प्रति विशेष अनुराग रखते थे। उनकी जंगल नामक कविता में यह चिंता साफ दिखाई देती है :

देखता हूं
आजकल
अपने चतुर्दिक
उगर रहा है
तीव्र गति से
आदियुग का वही तिमिराच्छन्न जंगल
और उसमें
विषधरों के दल
मनाते मोद–मंगल।

उनकी रचनाएं देखकर कई बार लगता है कि वे कवि से ज्यादा दार्शनिक थे। डॉ शीलधर प्रसाद सिंह पर गांधीवाद का साफ असर था। आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने का मौका भले नहीं मिला, लेकिन आजादी के सिपाहियों के बताए रास्ते पर चलते थे। देश की उन्नति की गजब लालसा थी। बगैर कोई आडंबर के रहते थे। साधारण पोशाक, सादा भोजन शीलधर बाबू को प्रिय थे। अंतिम दिनों तक अपने स्कूली मित्रों के साथ मजलिस जमाने में इन्हें

खूब मज़ा आता था। इनके चार पुत्र हैं। जो विभिन्न राज्यों में निवास करते हैं और अच्छे पदों पर हैं। इसके बाद भी शीलधर बाबू के लिए जन्मस्थान टाभाघाट सबसे प्रिय बना रहा। वे अपने पुत्रों को भी गांव से जोड़कर रखने की कोशिश करते। उन्होंने अपनी कविताओं में जिस गांव, पर्यावरण और शोषणमुक्त समाज की कल्पना करते थे। उसे असल जीवन में भी साकार करने की कोशिश में लगे रहते थे।

निष्कर्षत :

डॉ शीलधर प्रसाद सिंह की साहित्य साधना को गौर से देखने से पता चलता है कि वे जन्मजात कवि थे। भाव और भाषा दोनों पर उनका समान अधिकार था। उनकी रचनाओं में एक स्वभाविक प्रवाह होने के कारण उनकी रचनाएं विशिष्ठ और बहुआयामी है। साहित्यक वाद विवाद से कोसो दूर रहे। किसी खास वाद के चक्कर में पड़कर रचनाएं नहीं की। देश और काल के अनुसार रचनाएं करते रहे। साहित्य में नये प्रयोग को अपनी सृजन संसार का हिस्सा बनाया। अपने युग धर्म के अनुकूल कार्य किया। राष्ट्रीय और सामाजिक परिस्थियों प्रति उदासीन होकर अपनी कल्पना लोक में खोये नहीं रहे। डॉ शीलधर प्रसाद सिंह की अनुभूतियों का व्यापक क्षेत्र है। जिसमें प्रेम, आनंद, उल्लास, विस्मय, विषाद, वेदना, आशा निराशा सबका समावेश है। इसलिए उनकी रचना संसार में आप तरह तरह के मोती पाएंगे। जो उनके निधन के बाद भी साहित्य जगत में चमक बनाए हुए हैं। प्रकृति प्रेम, राष्ट्रीयता समाज को बदलने की बेचौनी, सौंदर्य विलास, दर्शन का समावेश उनकी रचनाओं में देखने को मिलती है। जो उनकी बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व का बखान उनके निधन के बाद भी कर रही है।

संदर्भ :

- देश की माटी हमें बुलाती : शीलधर प्र सिंह ,अरुणशील प्रकाशन, देवघर, 1957
- डढ़वा के तीरे तीरे : शीलधर प्र सिंह ,अरुणशील प्रकाशन ,देवघर, 1957
- सारिका के 1974 दिसंबर अंक
- अपूवर्या पत्रिका, नवंबर 1993
- उड़ान पत्रिका दिसंबर 2012 अंक
- मेरे मित्र : लेखक गंगानंद झा
- प्रभात खबर देवघर एडिशन में प्रकाशित खबर

शिल्पा बाड़ा
शोध छात्रा
हिंदी विभाग
रांची विश्वविद्यालय, राँची
ग्राम – भरम टोली बरियातु, नियर सृजन नर्सिंग होम
पी०ओ०+पी०एस– बरियातु
जिला–राँची, राज्य–झारखण्ड 834009
मो० नं० 8709506174

29

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार

रेनू कुन्डू

सारांश

साहित्य समाज का दर्पण होता है किन्तु साहित्य और दर्पण में को समान मानने के बावजूद भी सूक्ष्म अंतर यह माना जाता है कि दर्पण केवल गुण और दोषों को प्रतिबिंबित करता है। परंतु साहित्य गुण व दोषों की विवेचना करके उनका समाधान करते हुए समाज के लिए नए प्रतिमान को भी स्थापित करता है। साहित्य से ही उस काल की सामाजिक स्थिति का पता लगाया जा सकता है। रचनाकार समाज के साथ मिलकर अपना तादात्मय स्थापित करके व समाज का निरक्षण करके उसमें व्याप्त बुराइयों को निकालने की कोशिश करता है। साहित्य द्वारा ही लेखक पाठक के मन को जाग्रत करता है व समाज में फैली बुराइयों / कुरीतियों से निपटने का समाधान भी बताता है।

अज्ञेय के अनुसार, ''समाज से अभिप्राय है वह प्रवृत्ति जिसके साथ व्यक्ति किसी प्रकार का अपनापन महसूस करें, वह मानव समाज का अंश भी हो सकती है और मानव की परिधि से बाहर पशु–पक्षियों को भी घेर सकती हैं बल्कि (चरमावस्था) मानव समाज को छोड़कर पशु–पक्षियों और पेड़ पत्तों तक ही रह सकती है। समाज इथत्ता, अंत्योगत्वा समाजत्व की भावना पर आश्रित है।''[1]

हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – ''साहित्य में उन सारी बातों का जीवन विवरण होता है, जिसे मनुष्य ने देखा है, अनभुव किया है, सोचा और समझा है।''[2]

समाज का जैसा आचार–व्यवहार, आपसी संबंधों का आदान–प्रदान और जीवन मूल्य होते हैं, साहित्य में उसकी ऐसी ही प्रतिच्छाया मिलती है। साहित्य समाज के किसी भी रूप को दिखाने में पीछे नहीं रह सकता यदि भोग–विलास का प्राधान्य है, तो साहित्य में भी इस प्रवृत्ति की प्रतिच्छाया होगा और यदि धार्मिक भावनाओं का आधिक्य है तो साहित्य उस प्रवृत्ति से अछूता नहीं रहता। प्रेमचन्द ने साहित्य को सामाजिक जीवन की आलोचना माना है। साहित्य को सामाजिक जीवन के यथार्थ की विषमताओं को अभिव्यक्ति करके युगानुरूप कभी आदर्श रूप की तो कभी मानवीय नैतिकता की स्थापना करता है। इस प्रकार साहित्य में सामाजिक जीवन के यर्थाथ की अभिव्यक्ति एवं उसे आदर्शोन्मुख करने की अद्‌भुत शक्ति समाहित होती है।

रामदर्श मिश्र

''साहित्य का मूल संबंध मानव की संवदेना से है बिना संवेदना के साहित्य नहीं बनता चाहे उसमें बुद्धिवान का कितना ही ऊहापोह क्यों न हो। साहित्य सृष्टि एक जटिल प्रवाह है, जिसमें सौन्दर्य चेतना, भावबोध, जीवन–चिंतन सभी संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत होता है। हिन्दी साहित्य में महिला लेखिकाओं की एक सुदीर्घ परम्परा मिलती है।''

स्त्री–पुरुष समाज की आधारभूत व महत्वपूर्ण ईकाई है। मृदुला गर्ग पुरातन संदर्भों एवं सकीर्ण मानसिकता से विस्तृत दृष्टिकोण से इन संबंधों का बखान करती है। जोकि आज के परिवेश के लिए अत्यंत आवश्यक है। शरीर को मन के समांतर खड़ा करने और नर–नारी संबंधों की जटिल बुनावट को सुलझाने की चेष्टा हर नारी की है। विवाह के नाम पर खोखले रिश्तों का बोझ उठाता हुआ मनुष्य के सवाल एक नई दृष्टि से सोचने को मजबूर करते हैं। मृदुला गर्ग के साहित्य से हम मानव मन की गहराइयों तक पहुँचकर भावनाओं का सूक्ष्म अध्ययन कर सकते हैं।

मृदुला गर्ग का जन्म 25 अक्तूबर, 1938 में कलकता में हुआ था। पिता का तबादला होने के कारण लगभग तीन वर्ष की आयु में वे दिल्ली आ गई। मृदुला जी का बचपन शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त रहा जिसके कारण वे कई सालों तक स्कूल में नहीं गई। वे पढ़ाई में अत्यंत होशियार थी। घर पर ही रहकर उन्होंने सभी परिक्षाओं को उत्तीर्ण किया। उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से एम.ए. किया, उसके उपरांत 1960 से 1963 तक दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज और जानकीदेवी कॉलेज में प्राध्यापिका पद पर कार्यरत रही। इसी दौरान उन्होंने सामाजिक और आर्थिक शोषण जैसे विषयों पर भी अध्ययन किया। मृदुला जी का बचपन से ही साहित्य पठन से लंबा लगाव रहा है वे कहती है – ''साहित्य पठन से मेरा लम्बा लगाव रहा, बचपन से साहित्य ही मेरा एकमात्र आसरा था। वह मेरे खून में समा गया, वह मेरा दिलो–दिमाग का हिस्सा बन गया। चूँकि उसने मेरे जीवन में बहुत जल्द प्रवेश कर लिया था, इसलिए बड़े नामों से मुझे डर नहीं लगता।'' (मृदुला गर्ग मेरे साक्षात्कार, पृ. 32)

मृदुला गर्ग ने बचपन से ही अपने जीवन में संघर्ष किया और कई उतार–चढ़ाव को देखा है। मृदुला गर्ग के लेखन के समय समाज में पाश्चात्य का प्रभाव व आधुनिकता का प्रचलन बढ़ रहा था। देश नूतन व पुरातन संस्कृतियों की परिस्थिति में था। इनके पात्र अंधविश्वास, रूढ़ि, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि प्रक्रियाओं के प्रति प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। इन्होंने अपने साहित्य के द्वारा समाज की कुरीतियों से निपटने के लिए समाज को ही नहीं चेताया बल्कि महिला की स्वतंत्रता के लिए अनेक पात्रों का चित्रण भी किया है।

मृदुला गर्ग आत्मविश्वासी स्त्री है उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर अपने उपन्यासों की नींव डाली। वे स्त्री को उपभोग की वस्तु नहीं मानती बल्कि जीवित व्यक्ति मानती है। मृदुला गर्ग के उपन्यास वास्तविकता से ओत–प्रोत हैं। इसके उपन्यास नारी के सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव को दर्शाते हैं। मृदुला गर्ग के उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप, मैं और मैं, चित्तकोबरा, में विवाहेत्तर संबंधों में स्त्री पात्र

रूढ़िवादी परम्परा को तोड़ना चाहती है और यथार्थ के धरातल पर अपने लिए एक अलग रास्ता बनाना चाहती है। वह उस विवाह का विरोध करती है जिसमें स्त्री को पुरुष की अनुगामिनी बनना पड़े। वह उस विवाह की पक्षधर है जिसमें स्त्री अपने स्वतंत्र विचारों को रख सकती है। मृदुला गर्ग एक बेबाक साहित्यकार है और उतने ही बेबाकी से उन्होंने अपने विचारों को लिखा है। 'कठगुलाब में लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि चाहे भारतीय परिवेश ही या विदेशी परिप्रेक्ष्य सब में स्त्री की स्थिति समान है।

'उसके हिस्से की धूप में' विवाहेत्तर संबंधों के बारे में बताती है कि सबके मध्य प्रेम का आकर्षण होता है। कहीं पर भी नायिका को इन्द्र का सामना नहीं करना पड़ता। वह अपने पति से भी प्रेम करती है व प्रेमी के प्रति भी आकर्षित रहती है। उनके इस उपन्यास में परम्परागत मूल्यों के बीच में आधुनिकता के नए पैमाने को रेखांकित किया गया है। लेखिका पुराने सभी परम्पराओं को तोड़कर आगे बढ़ती नजर आती हैं।

'वंशज' उपन्यास में पुरानी पीढ़ी व नई पीढ़ी के बीच द्वन्द्वकी स्थिति को दर्शाया गया है। संयुक्त परिवारों के टुटने और नई पीढ़ी की स्वतंत्रता की तलाश की अभिव्यक्ति को हमारे सामने लाता है। पुरानी पीढ़ी पुरानी परम्पराओं से जकड़ी हुई है इसके विपरीत नई पीढ़ी उन्हें बेबुनियादी मानती है और कुछ परिवर्तन चाहती है तभी समाज को आगे बढ़ाया जा सकता है जिसके कारण दोनों पीढ़ियों में टकराहट की स्थिति पैदा होती है।

'चितकोबरा' मृदुला गर्ग का प्रसिद्ध व विवादास्पद उपन्यास है। इस उपन्यास में नारी मन की कुंठाओ को दर्शाया गया है। नारी शारीरिक ही नहीं मानसिक रूप से भी कुंठित है। मृदुला गर्ग के उपन्यासां में नारी के पात्र को जिस साँचें में ढालती है उसका आवरण भारतीय होते भी आंतरिक पदार्थ पाश्चात्य है। उनके उपन्यासों में नारी के इस द्वन्द्वरूप की दिखाया गया है।

मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों में स्त्री–पुरुष के संबंधों को बिना किसी संकोच के अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। वे पुरुष प्रधान समाज में नारी को अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत करती है व दोनों में सामंजस्य स्थापित करना चाहती है। दोनों के बीच में उत्पन्न समस्या का समाधान भी निकालती है। इनके उपन्यासों में परम्परा से घिरी नारी को बाहर निकालने का मार्ग दिखाया गया है। मृदुला गर्ग के उपन्यास केवल भारतीय परिवेश तक ही सीमित न रहकर वैश्विक परिदृश्य तक समाए हुए हैं।

मृदुला गर्ग विख्यात उपन्यासकार होने के साथ–साथ एक साहसी स्त्री भी है। इन्होंने वैविध्यपूर्ण एवं उत्कृष कोटि की कहानियाँ भी लिखी हैं। इनकी कहानियों में नए प्रयोग के साथ–साथ नया कथ्य भी पाया जाता है। इनकी कहानियों में विविध पहलू पाये जाते हैं जैसे – संवेदनाशून्यता, आधुनिक जीवन की आपाधापी, अजनबीपन संबंधों में उदासीनता, वीरानापन आदि कथ्य की दृष्टि से विविध पहलू पाए जाते हैं। नए –पुरानी पीढ़ियों में मतभेद, मूल्यों का विघटन, रिश्तों में उभाऊपन, क्षणिक आवेगों ने उत्पन्न स्थितियाँ, खोखले संबंधों एंव आत्मीय संबंधों के बीच ऊपजी रसहीनता को इन्होंने कथ्य के लिए चुनाव किया है।

मृदुला गर्ग ने अपना लेखन कार्य बोल्ड रूप में किया है। उन्होंने स्त्री के स्वातंत्रयोत्तर परिवेश के केन्द्र में रखकर लेखन किया है। उन्होंने अपने साहित्य में दांपत्य जीवन, नारी चेतना, स्त्री–पुरुष संबंध, सामाजिक विसंगतियाँ, आर्थिक विवशताएँ, राजनीतिक विडम्बनाएँ आदि संबंधों के बारे में वर्णन किया है।

रमेश कुन्तल मेघ के शब्दों में, ''मृदुला गर्ग एक लेखिका के रूप में शोख और शरारती तो पहले लगेगी, किंतु बाद में वे शांत और सहज की तलाश करती हुई मिलेगी। उनकी थीमें असंभव अभारतीय और अलौकिक प्रतीत हो रही हैं किंतु ये थीमें हमें अटका दे रही है।''

मृदुला गर्ग की कहानियों में सामाजिक सरोकर

मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों में समसामयिक समाज का एक यथार्थ रूप उभारा है जिसमें समाज में व्याप्त चेतना ही नहीं बल्कि अपनी स्वतंत्रता के लिए लगातार संघर्ष करते पात्रों को दिखाया गया है। आज की स्वतंत्र नारी अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए संघर्षरत है। 'कितनी कैदें कहानी संग्रह की कहानियों में अनेक पात्र और उनकी समस्याओं तथा उसके बदलते व्यवहारों के बारे में बताया गया है।

इसमें संग्रहित 'हरी बिंदी' कहानी की प्रमुख नारी पात्र भारतीय परम्पराओं व मान्यताओं को स्वीकार नहीं करता। भारतीय परंपरा में विवाहित स्त्री लाल बिंदी लगाकर शादीशुदा होने की दिखाती है परन्तु नायिका हरी बिंदी लगाकर उसका विद्रोह करती है। 'एक और विवाह कहानी' में आधुनिक नारी की स्वतंत्रता व्यक्तित्व के रूप को दिखाया गया है। 'खरीददार' कहानी में नायिका एक कामकाजी महिला है जो पुरुषों के अभिमान, व्यंग्य, नारी के प्रति हीन भावना का विद्रोह करती है। मृदुला गर्ग के नारी पात्र अपने बलबूते पर अपने सामाजिक मूल्यों में बदलाव करने की हिम्मत रखती है और ऊँचे से ऊँचे रूतबे का हासिल कर लेती है। आज स्त्रियाँ अपने बलबूते पर जो करना चाहती है वे करके रहती हैं।

'टोपी' कहानी में एक बारह वर्षीय बच्ची जिसका नाम 'सुवर्णा' है जोकि स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने की बजा' एक अमीर पर में नौकरानी है। परंतु वह किसी की सांत्वना नहीं चाहती। इस कहानी में बताया गया है कि सारे आदर्श पूंजीवादी व्यवस्था रूपी चट्टान से टकराकर चूर हो गए है। मृदुला गर्ग ने अपने जीवन के अनुभवों को बिना किसी झिझक के अपनी कहानियों व उपन्यासों में साझा किए है। निःसंदेह मृदुला गर्ग आधुनिक जीवन से सामंजस्य करके नए जीवन को तराशने का कार्य करती है। जो साहित्य के साथ सरोकर रखती है।

मृदुला गर्ग के साहित्य में आधुनिकता

मृदुला गर्ग आधुनिक युग की सुप्रसिद्ध साहित्यकार है। इनके उपन्यासों में आधुनिकता और पाश्चात्य का प्रभाव दिखाई देता है। स्त्री पुरानी रूढ़ि परंपराओं को तोड़कर नए मूल्यों का प्रतिपादन करती है। नारी मानसिकता, मानवीय रिश्तों में पड़ी दरार, नारी पुरुष संबंधों में टकराहट, दांपत्य जीवन में उपजा आधुनिक दृष्टिकोण, मूल्यों में परिवर्तित स्थिति आदि का इनके उपन्यासों में वर्णन किया गया है। मृदुला गर्ग ने बदलते पुराने मूल्यों का बिखराव व आधुनिक मूल्यों के बीच तालमेल रखने की कोशिश की है। इन्होंने अपने साहित्य में मूल्यगत विघटन के विविध आयामों की अभिव्यक्ति की है।

निष्कर्ष:

मृदुला गर्ग बौद्धिक विचारों वाली सशक्त महिला है। उनके विचार संवेदना पैदा करने वाले है। वे अपने उपन्यासों के माध्यम से पाठकों में कई सवाल पैदा करती हैं और अपने मूल्यों के प्रति जाग्रत करती है। जब हम किसी भी साहित्यकार के साहित्य का चिंतन करते है। तो वर्तमान युग के अनेक दृष्टिकोण भी हमारे सामने होते हैं जोकि उस काल की परिस्थिति को परखने का प्रयास करत है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास स्त्री–पुरुष संबंधों में मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन के संदर्भ में सुकाचेपूर्ण पढ़ने में सिद्ध हुए हैं। इनके उपन्यासों को अनेक चिंतन आयामों की दृष्टि से समझने की कोशिश की गई हैं। परंतु मेरे मतानुसार मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित स्त्री–पुरुष संबंधों की अवधारणा की नए दृष्टिकोण से पढ़ने व समझने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 अज्ञेय, सर्जना और सन्दर्भ, पृ. 17

2 हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर, पृ. 3

3 बुक से टाइप करी है सीरिज से

4 हरी बिंदी, मृदुला गर्ग, समसामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2008

5 इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2002

6 कितनी कैदें, मृदुला गर्ग, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, कृष्णा नगर, दिल्ली–51, प्रथम संस्करण 1975

7 उसके हिस्से की धूप, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण 1987, पुनर्मुद्रित – 1991,1993

8 वंशज अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1978

9 चित्तकोबरा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सातवाँ संस्करण 2004

10 अनित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 1987

11 मैं और मैं, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984

12 कठगुलाब, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 1998

13 मिलजुल मन, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009

रेनू कुन्डू

शोधार्थी हिन्दी–विभाग

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय

अस्थल बोहर,

रोहतक–124001

30

भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और संवहन में भारतीय भाषाओं की भूमिका

शकुन्तला बेसरा

सारांश

हमारा देश भारत जिसे हम भारत माता कहकर सम्बोधित करते हैं। ये तीन और महासागरों तथा एक और विशाल हिमालय पर्वत माला से घिरा हुआ है। कल्पना से भी अधिक सुन्दर और मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। हमारा देश भारत एक ऐसा अनोखा देश है जहाँ कई धर्म, सम्प्रदाय के लोग रहते हैं तथा अपनी वैविध्यपूर्ण भाषिक सम्पदा के कारण विश्व के मानचित्र पर एक विलक्षण स्थान रखता है। इस देश का अनोखापन इस बात से भी है कि यहाँ पर कई भाषा परिवार की भाषाएँ बोली जाती है, जिन्हें भारतीय भाषा के रूप में पहचानी जाती है। इन भाषाओं में यहाँ के लोक जीवन आस्था, परंपरा उमंग तथा उल्लास निर्मल, स्वच्छ अविरल गंगा की भांति बहती है।

हमारा देश भारत में ज्ञान की एक समृद्ध परंपरा रही है और एक विरासत है जो कई सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रवर्तक स्वदेशी भारतीय लोग ही थे, यह बात अब पुरातत्व जानकारी, आनुवंशिक जानकारी तथा कंकालों की पुनर्रचना करके प्राप्त जानकारी आधार पर वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुकी है। पारंपरिक ज्ञान, स्वदेशी ज्ञान और स्थानीय ज्ञान आमतौर पर क्षेत्रीय, स्वदेशी या स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं में अंतर्निहित ज्ञान प्रणालियों को संदर्भित करते हैं। ।

सामान्यतः ज्ञान का अर्थ जानना, ज्ञात होना, आदि के सम्बन्ध में लिया जाता है। ज्ञान को प्रकाशमय माना गया है। ज्ञान का स्वरूप है किसी वस्तु को प्रकाशित करना। जिस प्रकार दीपक निकटस्थ वस्तु को प्रकाशित करता है उसी प्रकार ज्ञान भी वस्तु को प्रकाशित करता है। इस ज्ञान को ईश्वर प्रदत्त अर्थात सत्य प्रदत्त माना गया है।

धरती पर रहने वाला हर एक सजीव प्राणी भोजन, नींद, प्रजनन और आत्मरक्षा के बारे में सोचता है। मानव ही एक ऐसी प्रजाति है जिसके पास इन सबसे ऊपर उठकर सोचने – समझने के लिए दिमागी शक्ति है। नई दिमागी शक्ति का विकास होने से मानव स्थायी भौगोलिक स्थानों में रहना शुरू कर देता है। इस प्रकार प्राप्त ज्ञान अपने साथियों के साथ साझा करना जरूरी हो जाता है। ज्ञान के इस स्थानांतरण ने पहले संकेतों का रूप लिया और इसके बाद ये सांकेतिक भाषा कहलाए। बाद में, इस सांकेतिक भाषा ने शब्दों का रूप ले लिया और भाषा बन गए।

विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन और संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, पारंपरिक ज्ञान, और पारंपरिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति दोनों प्रकार के स्वदेशी ज्ञान हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा जो वैदिक एवं उपनिषद काल में थी, वह बौद्ध और जैन काल में भी रही विभिन्न विश्वविद्यालयों की स्थापना और शिक्षा व्यवस्था से ये स्पष्ट परिलक्षित होता है। लेकिन इसका लोप विगत 200 से 300 वर्षों में हुआ है। इसे राष्ट्रीय रूपरेखा में उचित रूप में प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता है।

वैदिक काल ज्ञान दर्शन का अरुणोदय काल है। जिज्ञासा और प्रश्न सशक्त ज्ञान का उपकरण हैं। ज्ञान दर्शन की यह परंपरा ऋगवेद सहित चार वैदिक संहिताओं में विश्व की पहली ज्ञान सारिणी है। प्राचीन दर्शनों में जिज्ञासा व तर्क के साथ सत्य दर्शन है। यही ज्ञान परंपरा बुद्ध व जैन दर्शनों में सम्मानीय है। ज्ञान को प्रकट करने का प्रथम उपकरण वाणी है।

विवाह परंपरा का जन्म वैदिक काल में ही हुआ। प्राचीन काल में गीत, संगीत, चित्रकला और स्थापत्य सहित सभी ज्ञान अनुशासन, फल– फूल रहे थे। लेकिन काल परिस्थिति के प्रवाह में यह ज्ञान परंपरा टूट गई।

ब्रिटिश सत्ता के समय भारतीय ज्ञान परंपरा पर सुनियोजित आक्रमण हुए।

इससे पश्चिमी ज्ञान और सभ्यता का प्रभाव बढ़ा। यहाँ के विद्यालयों में पश्चिम की प्रशंसा को अधिक और भारतीय ज्ञान को कमतर पढ़ाया जाने लगा। जिससे यहाँ की ज्ञान परंपरा से लोग परिचित नहीं हो पाये। ज्ञान हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। ज्ञान से अर्थ, काम और मोक्ष मिलते हैं। ज्ञान का सम्बन्ध मनुष्य से इस प्रकार है जिस प्रकार वृक्ष और जड़ का। जिस प्रकार जड़ों से उखड़े वृक्ष पर फूल नहीं खिलते और फल नहीं लगते, उसी प्रकार ज्ञानहीन मनुष्य जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर सकता है।

संसार में लोगों की मौजूदा जनसंख्या लगभग 770 करोड़ है और वे सभी 5,000 से अधिक भाषाएँ बोलते हैं। सन् 2010 से 2013 के बीच किए गए –

PEOPLE'S LINGUISTIC SURVEY OF INDIA (PLSI) के अनुसार हमारे देश की जनसंख्या 130 करोड़ है और यहाँ 780 से अधिक भाषाएँ बोली जाती है। भारतीय संविधान ने अपनी आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को अधिकारिक भाषाओं का दर्जा दिया है – (1) असमिया (2) बंगाली (3)बोडो (4) डोगरी (5)गुजराती (6) हिन्दी (7) कन्नड (8) कश्मीरी (9) कोंकणी (10) मैथिली (11) मलयालम (12) मणिपुरी (13) मराठी (14) नेपाली (15) उड़िया (16) पंजाबी (17)संथाली (18) सिंधि (19) तमिल (20) तेलगु (21) संस्कृत और (22) उर्दू। उनकी जड़ों के आधार पर, भारतीय भाषाओं कों चार श्रेणियों में बाँटा जी सकता है – 1. भारत – आर्य भाषा परिवार 2. द्रविड़ भाषा परिवार 3. खगोल–एशियाई भाषा परिवार 4. तिब्बती–बर्मन भाषा परिवार।

भाषा किसी भी व्यक्ति एवं समाज की पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक तथा उसकी संस्कृति की सजीव संवाहिका होती है।

देश में प्रचलित विविध भाषाएँ व बोलियाँ हमारी संस्कृति उदात्त परम्पराओ, उत्कृष्ट ज्ञान एवं विपुल साहित्य को अक्षुण्ण बनाये रखने के साथ ही वैचारिक नव सृजन हेतु भी परम आवश्यक है। विविध भाषाओं में उपलब्ध लिखित साहित्य की अपेक्षा कई गुना अधिक ज्ञान गीतों, लोकोक्तियों तथा लोक कथाओं आदि कहे मौलिक परंपरा के के रूप में होता है।

आज विविध भारतीय भाषाओं व बोलियों के चलन तथा उपयोग में आ रही कमी, उनके शब्दों का विलोपन व विदेशी भाषाओं के शब्दों से प्रतिस्थापन एक गंभीर चुनौती बन कर उभर रहा है। आज अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ विलुप्त हो चुकी हैं और कई अन्य भाषाओं का अस्तित्व संकट में है। भारतीय भाषा प्रतिनिधियों का यह मानना है कि देश की विविध भाषाओं तथा बालियों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए सरकारो, अन्य नीति निर्धारिकों कोर स्वैच्छिक संगठनों सहित समस्त समाज को हर सम्भव प्रयास करना चाहिये।

ज्ञान परंपरा को संरक्षण और संवहन में भाषा की अहम भूमिका होती है। भाषा ही ऐस एक ऐसा माध्यम है जो समाज के सदस्यों को एक सूत्र में बाँधने का काम करती है। भाषा के माध्यम से ही समाज में ज्ञान परंपरा आग बढ़ता है। इसीलिए भाषा जितनी विकसित होगी ज्ञान उतना ही विकसित होगा ! भाषा ही एक साधन है जिससे समस्त संसार या समाज में रहने वाले या विभिन्न क्षत्रों में रहने वाले तथा विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग मिलजुल कर रहते हैं अर्थात भाषा समाज, राष्ट्र और विश्व को जोड़ने का काम करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि भाषा सामाजिक जीवन में प्रगति का आधार है। भाषा के अभाव में हमे अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त ज्ञान प्राप्त नहीं होगा।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि भाषा मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्व आधार है जिसके बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ हैं। भाषा मनुष्य के अन्दर उत्पन्न भावनाओं और ज्ञान को दूसरों तक पीढ़ी दर पीढ़ी रूप में पहुंचाते रहता है।

संदर्भ ग्रंथ

1.आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद 211001

2.डॉ. भोला शंकर व्यास, भारतीय साहित्य की रूपरेखा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन केर 37/117 गोपालमन्दिर लेन पौ० वा. म० 1129 वाराणसी 221001

3.नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृतियों लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद – 211001

4.गया पाण्डेय, भारतीय जनजातीय संस्कृति, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी। A/15–16 कॉमर्शियल मोहन गार्डन नई दिल्ली – 110059

5.विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य का साल इतिहास, प्रकाशक, ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड 3–6–752 हिमायत नगर, हैदराबाद – 500029

शकुन्तला बेसरा
सहायक प्राध्यापिका
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
संताली विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची
मो.– 7645913037
Emall in& besra shakuntala @ gmail.com
Pin - 834001

31

घरेलू एवं कामकाजी शिक्षित महिलाओं के आत्म सम्मान एवं समायोजन से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन

नीतू सिंह, डॉ0 सतीश चन्द्र गोयल

सारांश

आज हिंदुस्तानी नारी पुरुषों की अपेक्षा बहुत आगे बढ़ गई हैं, परंतु उसने इस आगे बढ़ने की होड़ में बहुत कुछ खो दिया है। जैसे तरलता, भावुकता, और कुछ हद तक गरिमा का परित्याग कर दिया हैं। प्रकृति ने स्त्री और पुरुष को अलग–अलग बनाया है। इन दोनों में अंतर है, और वह अंतर है स्त्री की कोमलता। हम तुलनात्मक अध्ययन करें और जीव विज्ञान के अंतर को छोड़ दिया जाए तो स्त्री किसी भी मायने में पुरुष से कम नहीं है। किंतु वर्तमान समाज स्त्री को हीन दृष्टि से देखा है। वह इतना पक्षपात करता है कि महिला के सामाजिक पारिवाकि, व्यवहारिक और व्यवसायिक कार्यो में उसके योगदान के स्थान पर, उसकी कमियों को ऐसे उजागर करता है जैसे उसके कार्य क्षमता में कमी आ जायेगी, किन्तु ऐसा नही होता, वह पुरूश समाज की कुदृश्टि को सकारात्मक रूप से स्वीकार करते हुए वह दिन प्रतिदिन प्रत्येक क्षेत्र में पुरूशों को पीछे करती जा रही है।

स्त्री को सहनशीलता और विनम्रता की देवी भी कहा जाता है। इसका कारण यह है की बड़े से बड़ा महापुरुष भी स्त्री के इसी गुण के कारण उसके आगे नतमस्तक हो गया। वह भावनात्मक रूप से कितनी भी कमजोर है, परंतु उसका आंतरिक पक्ष इतना अधिक मजबूत है कि समय आने पर वह अपने पति व परिवार के लिए एक ढाल भी बन जाती है। जिसका प्रमाण शास्त्रों में भी मिलता है। जब देवगण हार रहे थे, तब मां काली ने असुरों का संहार किया था। और परिणाम स्वरुप देव विजय हुए थे। एस थॉमस के अनुसार "स्त्री और किस्मत भले ही साथ न दे पर जब साथ देती हैं तो किस्मत बदल देती हैं।"

(1) वैदिक कालः

इस काल में लड़कों एवं लड़कियों को एक समान समझा जाता था। उस समय स्त्रियों की स्थिति उनके आत्म विकास, शिक्षा, विवाह, संपत्ति आदि के संबंध में प्रायः पुरुषों के समान थी। कुछ लोग तो विदुषी कन्या को प्राप्त करने के लिए कर्मकांड तक करते थे। यजुर्वेद के अनुसार स्त्रियों को उपनयन का अधिकार प्राप्त था। उस समय तक पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं थी। विधवा विवाह पर किसी प्रकार का प्रबंध भी नहीं था। पत्नी के रूप में उनकी स्थिति बहुत उच्च थी। विवाह वयस्क आयु में होते थे। महाभारत के अनुसार "वह घर–घर नहीं यदि उस घर में पत्नी नहीं", अथर्ववेद के अनुसार "नववधू तू जिस घर में जा रही है वहां की तू समृद्धि है तेरे सास ससुर देवर व अन्य व्यक्ति तुझे साम्राज्ञी समझते हुए तेरे शासन में आनंदित हो।"

(2) उत्तर वैदिक कालः

ईसा से लगभग 600 वर्ष पूर्व से लेकर ईशा के 300 वर्ष पश्चात तक के काल को उत्तर वैदिक काल माना जाता है। इसी काल में महाभारत की रचना हुई महाभारत से स्पष्ट होता है कि इस काल में महिलाओं को सामाजिक तथा धार्मिक दोनों प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। लेकिन इस काल में महिलाओं की शिक्षा में बाधा पहुंची जिस कारण से उनकी शिक्षा साधारण स्तर पर आ गई। इसका कारण यह था कि धर्म सूत्रों ने बाल विवाह का निर्देश दिया। उनके ऊपर धार्मिक संस्कारों में भाग लेने पर रोक लगाई गई। स्कंद पुराण में पतिव्रता स्त्रियों के लिए कुछ नियमों का उल्लेख किया गया है। पद्म पुराण में पतिव्रता स्त्री को विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार की भूमिका निभाने की बात कही गई है। इस पुराण के अनुसार पतिव्रता स्त्री की परिभाषा कुछ इस प्रकार से दी गई है "वह स्त्री पतिव्रता है जो सेवा में दासी की भांति संभोग में अप्सरा की भांति भोजन देने में मां की भांति तथा विपत्ति में मित्र की भांति हो"।

(3) धर्म शास्त्र कालः

यह काल तीसरी शताब्दी से लेकर 11वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक का है। इस काल में पाराशर विष्णु तथा याज्ञवल्क्य संहिताओं की रचना का आधार मनुस्मृति था। इस युग में स्त्रियों की दशा और भी निम्न कोटि की हो गई थी। इसी युग में स्त्रियों के समस्त अधिकारों को समाप्त कर दिया गया तथा विवाह की आयु सीमा 12–13 वर्ष कर दी गई। बाल विवाह होने के कारण स्त्रियों की शिक्षा में अत्यंत गिरावट आ गई। अतः मनुस्मृति के अनुसार स्त्रियों को किसी भी अवस्था में स्वतंत्र ना रखा जाए, बचपन में पिता, युवावस्था में पति एवं वृद्धावस्था में पुत्र के संरक्षण में रखना उचित होगा। इस काल में पति भक्ति को ही स्त्री का कर्म मान लिया गया। इस काल में पुनर्विवाह पर कठोर प्रतिबंध लगा दिए गए और स्त्री का सती होना सर्वोत्तम माना गया।

(4) मध्यकालः

ग्यारहवीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर 18वीं शताब्दी तक के काल को मध्यकाल कहते हैं। इस काल में स्त्रियों की दशा और अधिक दयनीय हो गई। इसका प्रमुख कारण मुगल साम्राज्य की स्थापना थी। ब्राह्मणों ने हिंदू धर्म की रक्षा स्त्रियों के सतीत्व और रक्त की शुद्धता को बनाए रखने के लिए, स्त्रियों के लिए धर्म संबंधी नियम कठोर कर दिए ऊंची जातियों में उच्च शिक्षा भी समाप्त हो गई तथा विवाह की आयु में परिवर्तन कर उसे 8–9 वर्ष तक कर दिया गया। तथा पर्दा प्रथा को और अधिक प्रोत्साहित कर दिया गया। बाल्यावस्था से ही स्त्रियों को गृहस्थियों का पूर्ण भार दे दिया गया। इसी काल में विधवाओं का पुनर्विवाह पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया गया। और सती प्रथा अपने चरम सीमा पर पहुंच गई।

(5) आधुनिक कालः

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तक स्त्रियों की स्थिति में बहुत कम सुधार हुआ वह अनेक प्रकार की निर्योग्यताओं की शिकार थी। उन्हें शिक्षा व नौकरी करने का अधिकार प्राप्त नहीं था। परिवार में पत्नी पुत्री एवं विधवा के रूप में उनकी स्थिति और भी दयनीय थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से स्त्रियों की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन किए गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक अधिनियम पारित किए गए, जैसे हिंदू विवाह अधिनियम, हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, हिंदू नाबालिक और सुरक्षा संस्था अधिनियम, हिंदू दत्तक ग्रहण और भरण पोषण अधिनियम, दहेज निरोधक अधिनियम आदि प्रमुख हैं। इन नियमों ने स्त्रियों की दुर्दशा को दूर करने व उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन अधिनियम के फल स्वरुप स्त्रियों को अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता मिली। स्त्रियों को गोद लेने व विधवाओं को पूर्ण पुनर्विवाह की स्वीकृति मिली। कुछ विशेष परिस्थितियों में स्त्रियों को अलग–अलग रहने पर भरण पोषण मिलने का अधिकार भी प्राप्त है। स्त्रियों को पुरुषों के समान संपत्ति में अधिकार मिलने से भी उनकी स्थिति में सुधार हुआ है।

भारत में महिलाओं की बदलती स्थितिः

भारत में स्थित सुधार के आंदोलन का आरंभ राजा राममोहन राय ने किया। स्त्रियों की दशा को सुधारने के लिए 1828 मे ब्रह्म समाज की स्थापना की गई। दयानंद सरस्वती ईश्वर चंद्र विद्यासागर महात्मा गांधी तथा विभिन्न सरकारी संगठनों ने स्त्रियों की दशा को सुधारने के लिए उल्लेखनीय कार्य किये। आधुनिक समय में स्त्रियों की स्थिति को हम निम्न प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं। स्त्रियों की स्थिति में शिक्षा का प्रसार, विवाह का आधार, राजनीति का आधार, परिवार में उच्च स्थिति, आर्थिक अधिकार, संपत्ति का अधिकार, सार्वजनिक अधिकार, परिवार में व्यक्तिक स्वतंत्रता आदि के आधार पर महिलाओं की स्थिति में सुधार आया। 19वीं शताब्दी तक स्त्रियों का व्यक्तित्व अंधकारमय था। आधुनिक समय में उन्हें पूर्ण प्राचीन वैदिक काल की महिलाओं के समस्त अधिकारों पर राज्य ने अपनी मोहर लगा दी है। उन्हें पुनः प्राचीन बौद्धिक काल की तरह व्यक्तित्व के विकास के लिए संपूर्ण अवसर प्रदान किए गए हैं। आधुनिक नारी अपने अधिकारों का मूल्य समझती है, और उन्हें प्राप्त करने के लिए पूर्ण रूप से प्रयत्नशील है इस प्रयत्न में उन्हें सफलता भी प्राप्त हो रही है।

संबंधित साहित्य का अवलोकनः

किये गये शोध में पाया गया है कि गोरी महिलाओं में काली महिलाओं की तुलना में भोजन संबंधी विकारों की अधिकता पाई गई। आंकड़ों से यह भी ज्ञात होता है कि काली महिलाओं में यह विकार उनकी शारीरिक वजन की समस्याओं से जुड़े थे। जबकि गोरी महिलाएं में ऐसा नहीं पाया गया जाता है। दोनों प्रकार की महिलाओं में भोजन संबंधी विकार उनके अवसाद चिंता और निम्न आत्मसम्मान के साथ जुड़े हुए हैं। **Abrams, Kay Kosak Allen, La Rue Gary James J (1993)**

Metcalf के अनुसार *Navajo* महिलाओं ने मध्य बचपन में जो शैक्षिक अनुभव प्राप्त किये उससे उनके वयस्क, आत्मसम्मान और मातृत्व दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ा। अध्ययन में पाया गया की मां की पृष्ठभूमि का प्रभाव बच्चों के समायोजन पर भी होता ह`l जो महिलाएं एकांकी जीवन व्यतीत करती हैं। उनके आत्मसम्मान में कमी पाई जाती है। जबकि सामूहिक रूप से जीवन व्यतीत करने वाली महिलाओं का आत्मसम्मान उच्च श्रेणी का होता है। **Metcalf, Ann 1 (1976)**

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि तलाक और समायोजन में महिलाओं में सार्थक संबंध प्रदर्शित किया है। तलाकशुदा महिलाएं विवाहहित महिलाओं की तुलना में अधिक समायोजित पायी गई हैं। **Bonnington, Stuart (1988)**

Judith A Stein; Michacl D New Comb ने अपने अध्ययन में 462 वयस्क महिलाओं और 192 वयस्क पुरुषों को लेकर उनके अभिभावकपन, व्यावसायिक स्थिति और आत्मसम्मान के बीच के संबंधों का अध्ययन किया। प्रारंभ में महिलाओं के विषय में आत्म सम्मान विवाह और पारिवारिक भागीदारी के साथ नकारात्मक रूप से जुड़ा था। लेकिन पुरुषों में ऐसा नहीं पाया गया। अध्ययन में पाया गया कि महिलाओं की आत्मसम्मान के लिए महत्वपूर्ण चर वैवाहिक स्तर ना होकर व्यावसायिक स्तर था। जो महिलाएं व्यवसाय के स्तर में नहीं थी। उन्होंने विवाह पारिवारिक भागीदारी और आत्मसम्मान में नकारात्मक संबंधों का प्रदर्शन किया। **Judith A Stein; Michacl D New Comb; PM Bentler (1990)**

कावॉस जॉर्ज ने विवाहित जोड़ों के आत्मसम्मान, नियंत्रण के केंद्र एवं अभिप्रेरणा का अध्ययन किया। उन्होंने पाया की संपूर्ण मनोवैज्ञानिक कार्य प्रणाली में आत्मसम्मान सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारक है। उन्होंने पाया कि नवविवाहित जोड़ों में विवाह के बाद उनके आत्मसम्मान में वृद्धि हो जाती है। **Kawash, George. F, Scherf, Germard W. (1975)**

Nathawat, S.S & Mathur के अनुसार, कामकाजी महिलाएं घरेलू महिलाओं की तुलना में पारिवारिक जिम्मेदारियां को अधिक कुशलता से निभाती हैं। और उनका आत्मसम्मान भी उच्च श्रेणी का होता है। जो महिलाएं घर से बाहर कार्य करती हैं, वह अपने आत्मसम्मान के लिए सचेत रहती हैं, और ऐसा करने से उनमें एक आत्मबल का संचार होता है। जो महिला घरेलू कामकाज में

लगी होती है, वह कामकाजी महिला के प्रति नकारात्मक सोच रखती है। **Nathawat, S.S & Mathur, Asha (1993)**

Valentine ने बताया कि जो पुरुष कम आत्मसम्मान का प्रदर्शन करते हैं वह कामकाजी महिलाओं का अधिक विरोध करते हैं। ऐसे पुरुष विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रह से ग्रसित पाए गए हैं। इन इस अध्ययन में यह भी पाया गया है कि जो पुरुष उच्च आत्मसम्मान का प्रदर्शन करते हैं। वह महिलाओं का बाहरी कामकाज करना पसंद करते हैं। **Valentine, Scan (1998)**

शोधार्थियों ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन कार्य स्थलों पर महिलाओं को अधिक कार्य करना पड़ता है। वहां पर वह सामाजिक एकांकीपन का अनुभव करती हैं। लेकिन जिन कार्य स्थलों पर ऐसा नहीं होता है। वहां की महिलाएं सामाजिक रूप से अधिक जुड़ी होती हैं, और वह कामकाजी महिलाएं जो अलग–अलग क्षेत्र में कार्य करती हैं। वह अपने कार्य क्षेत्र में महारत प्राप्त करके तरक्की करती हैं। क्योंकि सशक्त महिला ही परिवार व देश को अधिक मजबूत बना सकती है। **Lawrence, Debra Lynn (1999)**

Dreit, Dana Lee के शोध कार्य ने बताया कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले समूह में उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले समूह की तुलना में अवसाद के अधिक लक्षण पाए गए। उन्होंने आगे पाया कि गैर पारंपरिक व्यवसाय से जुड़ी महिलाएं कम संतुष्ट पाई गई और उनमें निराशा भी पाई गई। **Dreit, Dana Lee (2001)**

Nunez के शोध के अनुसार तलाकशुदा और विवाहित महिलाओं में से तलाकशुदा महिलाओं में आत्मसम्मान उच्च स्तर का था। अध्ययन में पाया गया कि आत्मसम्मान और आय में एक मध्यम स्तर का संबंध होता है। जो विवाहित महिलाएं कामकाजी थी, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर थी। इस तरह की महिलाओं में आत्मसम्मान उच्च स्तर का था। जिसके कारण उनके अपने पति और परिवार के साथ समायोजन करना मुश्किल हो गया। और यही कारण उनके तलाक का भी बना। **Nunez, Mercy (1999)**

अध्ययन से ज्ञात होता है, कि वयस्कों में प्रतिस्पर्धा, सामाजिक भागीदारी एवं संतोष, सामाजिक संबंध उनके मनोबल, आत्मसम्मान के साथ सकारात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। यह परिणाम यह बताते हैं, कि व्यक्तित्व विशेषताऐं अंतर संबंधों के परिणाम और अनुभवों के साथ जुड़ी होती हैं। अधिक आयु वर्ग में समायोजन की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। **Hasson, Robret O, (1986)**

Craver, Rhonda Sacleth ने पाया कि महिलाएं अपने जीवनसाथी को चुनने में काफी सतर्क हैं, और इसका उनके आत्मसम्मान और शैक्षिक योग्यता से सीधा संबंध है। वह अपने ज्ञान के आधार पर तीव्रता से रिश्ते की बुरी स्थितियों को जान लेती हैं। महिलाएं शादी से पूर्व अपने जीवनसाथी से मिलकर बातचीत के दौरान उनमें जो तनाव या झगड़े होते हैं। उससे वह अपने रिश्ते की स्थितियों को जान लेती हैं। और सोच समझकर शादी का फैसला करती हैं। शिक्षित महिलाएं अपने ज्ञान के आधार पर एक गलत जीवनसाथी को अपना जीवन सौंपने से बचा सकती हैं। **Craver, Rhonda Sacleth (2000)**

किये गये शोध में बताया गया कि विधवा महिलाएं निराश होने के बाद भी अच्छी तरह से सामायोजित थी। विवाहित और विधवा महिलाओं के आत्मसम्मान में कोई अंतर नहीं पाया गया है। जीवन संतुष्टि, निराशा और आत्मसम्मान को जीवन जीने के सार्थक संकेतो या निर्धारकों के रूप में पाया गया। अतः दुख और आत्मसम्मान काफी सार्थक हैं, जीवन को संतुष्टि और अवसाद की ओर ले जाने में। **Howard, Sharon Page (2000)**

तलाक से पहले महिलाओं के आत्मसम्मान में कमी आ रही है, वह अपने आप को अलग–थलग कर लेती हैं। निराशा और अनिश्चितता की यह स्थिति तलाक के समय सबसे अधिक होती है। किंतु तलाक के बाद वे स्वयं को प्रसन्न महसूस करती हैं। और उनके आत्म सम्मान में वृद्धि होती है। **Molina, Olga (2000)**

Younger, Brenda Lee ने अपने अध्ययन में पाया कि महिलाओं में नेतृत्व क्षमता और आत्मसम्मान दोनों सार्थक रूप से आपस में जुड़े होते हैं। महिलाओं के शैक्षिक स्तर का भी उनके आत्म सम्मान के साथ सीधा और सार्थक संबंध है। महिलाओं की शिक्षा का स्तर जब ऊंचा होता है, तो उनमें आत्मसम्मान की भावना अपने आप ही उच्च हो जाती है। इस प्रकार की महिलाओं में आत्मबल भी अधिक होता है। और आत्मबल से परिपर्ण महिलाएं अच्छा नेतृत्व करने में सफल होती हैं। अध्ययन में ऐसा पाया गया की आयु का सीधा संबंध नेतृत्व की क्षमता से होता है। इस अध्ययन से ऐसा भी संकेत मिलता है कि आगे होने वाले अध्ययनों में भी ऐसा पाया जा सकता है। **Younger, Brenda Lee (2002)**

अध्ययन में पाया कि सिर्फ 12 से 17 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं ही व्यवसाय और परिवार दोनों को प्राप्त करने में सफल हो सकती हैं। क्योंकि परिवार और व्यवसाय दोनों में आपसी सामंजस्य बनाना एक सफल शिक्षित महिला का काम होता है। वह अपने काम के साथ–साथ वह अपने परिवार को भी अहम मानती है। जिससे दोनों में किसी भी प्रकार का टकराव उत्पन्न नहीं हो पाता, और वह अपनी जिम्मेदारियां को बखूबी निभाती हैं। **Ferber, Marianne A & Green, Carole A (2003)**

अध्ययन में पाया कि 26 प्रतिशत महिलाओं को अवसाद की महत्वपूर्ण चिकित्सीय समस्या भी थी। इसके पीछे विभिन्न प्रकार के दुर्व्यवहार कमजोर कानूनी प्रतिनिधित्व पूर्व साथी के बारे में लगातार नकारात्मक भावनाएं, तलाक के समय दोस्त और परिवार

के समर्थन में कमी, शादी के बाद सामाजिक गतिविधियों में कमी और कम आए जैसे कारक थे। **Kristen C Kling; Carol D Ryff; Gayle; Marilyn Esscr (2003)**

Misra, Joya ने अपने अध्ययन में पाया कि महिलाएं पारिवारिक नीतियों को बनाने में एवं सार्थक भूमिका का निर्वहन करती हैं। महिला अपने पारिवारिक व्यवहार को एक नया रूप प्रदान करके उसे एक अच्छा परिवार बनाती हैं। महिला ही परिवार को रचती है और एक आदर्श रूप में परिवार को सहायता प्रदान करती है। **Misra, Joya (2002)**

Allen, Zalonya ने बताया कि आत्मसम्मान और शारीरिक सम्मान में एक संबंध है। इस संबंध में महिलाओं के व्यावसायिक स्तर का कोई प्रभाव नहीं होता है। **Allen, Zalonya (2004)**

शोध के अनुसार पार्ट टाइम व्यवसाय करने के बाद भी महिलाएं अपने पारिवारिक भूमिकाओं एवं व्यवसायिक अवसरों के बीच तालमेल बैठाने में सफल हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार 1996 आई.वी. एफ. के अनुसार काम और जीवन के मुद्दों का एक सबसेट बनाकर काम किया जा रहा है। तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया गया कि पूरा समय काम करने वाली महिलाऐं व ऐसी महिला जो पार्ट टाइम व्यवसाय करती है तो पाया गया कि पार्ट टाइम व्यवसाय करने वाली महिलाएं अपने परिवार और व्यवसाय के बीच बहुत अच्छा तालमेल बैठाने में सफल रही हैं। अध्ययन में पाया गया है कि अंशकालीन समूह में कार्य करने वाली महिलाओं ने 47 प्रतिशत कम घंटे कार्य किया। और पूर्णकालीन समूह में कार्य करने वाली महिलाओं की तुलना में 41 प्रतिशत कम आय प्राप्त की। यह आंकड़े एक नई अवधारणा पर बल देते हैं कि अंशकालिक कार्य करना एक ऐसा विकल्प है उन महिलाओं के लिए पेशेवर कार्य करती हैं या पूरा समय कार्य करती हैं। यह विकल्प उनको अपने परिवार और व्यवसाय के बीच सही तालमेल बिठाने में सहायता करेगा अपने अध्ययनों के निहितार्थ यह निष्कर्ष प्राप्त किए हैं। **Hill, E. Jebbrey & Other's(2004)**

Helen Lingard & Jasmins Lin के शोध– अनुसार व्यावसायिक प्रतिबद्धता और व्यावसायिक विकास में महिलाओं के बीच एक संबंध है जो कि उनके कार्यस्थल, कार्य करने की दशाओं से प्रभावित होता है। निर्माण करने वाली कंपनियां हमेशा इस बात पर जोर देती हैं कि वह आरंभ से ही पढ़े–लिखे लोगों को ही नौकरी के लिए नियुक्त करें। जिससे वह अपने कार्य को अच्छी तरह से कर सकें। इस तरह के लोग उन्हें गाइड करने वाले हैं या जो प्रबंधन व्यवस्था के लोग हैं। वे उन्हें सहयोग करे तो उनके कार्यों का परिणाम अच्छा ही निकल कर आता है। **Helen Lingard & Jasmins Lin (2004)**

अश्वेत महिलाओं पर किए गए अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम महिला कर्मचारियों को उनकी समस्याओं से बाहर आने में काफी सहायता करते हैं। **Harper, Addie Margie (2004)**

अध्ययन में पाया कि समूह परिचर्चा के कारण महिलाओं के आत्मसम्मान, आत्मबल में वृद्धि होती है। शारीरिक रूप से अशक्त महिलाओं के लिए समूह परिचर्चा का कार्य बहुत लाभदायक होता है। **Rosmary B. Hughes & Other (2004)**

कामकाजी महिलाओं में आत्मसम्मान घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं की तुलना में उच्च स्तर का था। उन्होंने यह भी पाया कि कार्य करने के तरीकों का कार्य स्थल में कार्य करने की क्षमता पर भी प्रभाव पड़ता है। अतः कामकाजी महिलाओं का स्तर और उनकी स्थिति इस बात का को महत्व देती है। कि वह अपने कार्य को किस प्रकार से सार्थकता द्वारा सफलता की ओर ले जाती है। और वह इस सफलता के द्वारा ही एक अहम मुकाम पर पहुंच जाती है। **Azar, Irandokht Asadi Sadeghi (2006)**

लोगों के शोधानुसार निम्न आय वर्ग वाली महिलाएं व्यवसाय प्रबंधन में अधिक कुशल थी। आय बढ़ाने के साथ–साथ महिलाओं की स्थिति में भी सुधार आता है। और वह अपने जीवन को अच्छी तरह से जी पाती हैं अध्ययन में यह भी पाया गया कि रिश्तों और व्यवसाय के बीच विवाहित महिलाएं अपने कार्य की भूमिका को बहुत अच्छी प्रकार से नियंत्रित कर लेती हैं। फिर चाहे वह परिवार के संदर्भ में हो या आर्थिक संदर्भ में। गणनात्मक रूप से अध्ययन कर करने पर पाया गया कि परिवार का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। जो सकारात्मक रूप से संबंधित है, प्रबंधन की तीव्रता से। जिन महिलाओं की आमदनी कम है वह ज्यादा प्रबंधन करने योग्य है अपेक्षाकृत दूसरे आमदनी स्तर वाली महिलाओं से। कम शिक्षा रखने वाली महिलाएं भी पारिवारिक लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त कर लेती हैं। उनमें कोई प्रतियोगिता नहीं होती है। परिवार और व्यावसायिक साधनों के बीच और उनमें पैसे से संबंधित कोई समस्या भी नहीं होती है। और ऊँचे प्रबंधन की व्यवस्था जीवन को खुशहाल बनाने में सहायक होती है। **Lee, Yoon G & Other's (2006)**

अध्ययन में पाया कि आत्म सम्मान और बौद्धिक कार्यक्षमता के बीच में संबंध का अध्ययन किया और यह पाया कि आत्मसम्मान और शैक्षिक कार्य क्षमता में सकारात्मक संबंध है। **Leslic. J. Caplan Carmi Schooler (2006)**

Valentine, Sean ने बताया कि आत्मसम्मान और आत्मीकरण में धनात्मक संबंध है। उन्होंने यह भी पाया की संस्थाओं के अपनी महिला कर्मचारी के आत्मसम्मान और आत्मिकरण की

नीतू सिंह
एम0ए0 (मनोविज्ञान)
हिन्दू कालेज, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

डॉ सतीश चन्द्र गोयल
पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग,
हिन्दू कालेज, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

वृद्धि के लिए विभिन्न प्रकार की नीतियों का प्रयोग करना चाहिए। और वह संगठन जिसमें महिला कर्मचारी हैं। उन्हें यह भी सोचना चाहिए कि महिला कर्मचारियों के प्रति अपनी सोच को सकारात्मक रूप से रखे। और उन्हें उनके करियर के प्रति जागरूक करना चाहिए और उन्हें आत्मसम्मान के साथ–साथ उनकी योग्यता को भी ध्यान रखना चाहिए। महिला कर्मचारी अपनी ऑफिस में जहां भी काम करती है उनको आगे उन्नति की ओर ले जाती है। **Valentine, Sean (2006)**

Rachelle Cortis & Vinccnt Cassar ने बताया कि प्रबंधकीय व्यवसाय में महिलाओं को विभिन्न प्रकार के अभिवृत्ति बाधकों का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण उनकी कार्य क्षमता भी प्रभावित होती है। प्रबंधकीय नीतियों में बदलाव करके उनको इन बाधाओ से बाहर निकालने में सहायता की जा सकती है। इसमें यह भी परिणाम पाया गया कि महिला को व्यवसायिक होने के लिए कई प्रकार के बंधकों को दूर करके अपने कार्य के प्रति जागरूक होना चाहिए। कुछ संगठन अपनी नीतियों को महिलाओं के पक्ष में रखते हैं और उन्हें लागू करते हैं। अतः महिलाएं अपने करियर को बहुत महत्वपूर्ण समझती हैं। **Rachelle Cortis & Vinccnt Cassar (2005)**

सन्दर्भ सूची

1.Adinolfi. Felicc & Capitanio, Fabian (2009). "New Medit Mediterranean Journal economics, agriculture & environment 8(2) Jun 2009 p. 23-30.

2.Abbott. D.A. & Brody. G.H. (1985). The relation of child age gender & number of children to the marital adjustment of wives journal of marriage & the family. 47, 77-84.

3.Adam. D.W. (1966)- Social Interefere in family. New York

4.Abrams, Kay Kosak Allen, La Rue Gray, James J (1993), "International journal of eating Disorders. June 93, Vol 14 ISSVE 1 p. 49-57.

5.Belinda E. Bruster (2009). Transition from welfare to works self-esteem & self-efficacy influence on the employmen outcome of African American women. Journal of human behavior in the social environment 19(4) 2009. P. 375-393.

6.Craver, Rhonda Saeleth (2000). "Dating violence & its relation to identity, self-esteem & silencing the self among college women." Dissertation abstracts International Section A : Humananities & social science S 60 (7-A) Jan 2000 P 2707.

7.Dreith, Dana Lee (2001), Dissertation abstracts International Section B: The science & engineering 61 (7-B) Jan 2001 p 38-39.

32

'जूठन' में चित्रित 'यथार्थ'

बूटा सिंह

सारांश

'दलित–चेतना भारतीय जाति–व्यवस्था की कोख से या कहें कि अस्पृश्यता की दारुण वेदना से पैदा हुई है। यह सदियों से सताये हुए लोगों की पीड़ा की सजीव अभिव्यक्ति है। 'दलित' शब्द आक्रोश, चीख, वेदना, चुभन, घुटन और छटपटाहट का प्रतीक है।" चेतना शब्द बड़ी व्यापकता धारण किये हुए है सामान्यतः चेतना शब्द के लिए विभिन्न अर्थ प्रचलित हैं – 1. बुद्धि 2. मनोवृति 3. ज्ञानात्मक 4. स्मृति चेतनता जड़ से ज्वलनशील तक अछूतों ने जो सफर किया है वह एक उपलब्धि है क्योंकि दलित शब्द उसे उसके शोषण और दमन की याददिहानी करवाता है जो चिंतन को आन्दोलित करता है और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देती है जैसा कि अब्राहिम लिंकन ने कहा है कि–

'एक दास से कहो कि वह दास है और वह विद्रोह कर देगा'

बाबा साहब डॉ0 अम्बेडर 'दलित' कहकर उन्हें उपकी शोचनीय स्थिति का बोध कराया और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए आह्वान किया।

डॉ0 अम्बेडकर ने दलितों को उनकी गुलामी का अहसास कराया और उनकी सोई हुई चेतना को जागकर उन्हें बोलने के लिए विरोध प्रकट करने के लिए मुखर वाणी दी। आज दलित समाज में प्रखर, मुखर साहित्यकार पैदा हो गए हैं। दलित साहित्य की रफ्तार आज तेज होती नजर आ रही है। इसी कड़ी में कुछ साहित्यकारों अपनी आत्मकथा लिखकर समाज को दलितों की असली स्थिति बताने की कोशिश की है जिसमें एक दलित साहित्यकार है। 'ओमप्रकाश' बाल्मीकी'। जिन्होंने अपनी आत्मकथा 'जूठन' लिखकर समाज को आइना दिखाने की कोशिश की है। 'ओमप्रकाश बाल्मीकि' की 'आत्मकथा जूठन' ऐसा दस्तावेज है जो दलित उत्पीड़न की प्रक्रियाओं को उद्घाटित करती है। सामाजिक रीति–रिवाजों प्रथाओं व कथित परम्पराओं में छिपे दलित उत्पीड़न की ब्राह्मणवादी मोर्चावंदी से बचना व बचकर अपना रास्ता बनाना तथा इसके विरुद्ध संघर्ष करने का मादा जज्बा और संकल्प का आधार तैयार करती है। ब्राह्मणवाद के तन्तुओं को जो समाज में असमानता को वैध ठहराने का तथा श्रेष्ठ नीच को मान्यता देने का आधार तैयार करता हैं, जो कभी वंश गौत्र के रूप में आते हैं तो कभी व्यथित उच्च जाति के रूप में। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी अपनी आत्मकथा 'जूठन के माध्यम से इसकी पहचान करवाते हैं। वे बताते हैं कि कैसे सवर्ण समाज ने उनके लिए ऐसी परिस्थितियाँ तैयार की हैं जिनसे निकलना इतना आसान नहीं उनको मजबूरी वश कथित सवर्णो के अधीन रहकर जीवन निर्वाह करने पड़े।

'जूठन' में प्रतिपादित सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सांस्कृतिक परिस्थितियाँ दलित वर्ग का शोषण करने वाली हैं। शताब्दियों से उन्हें छूआछूत, भेदभाव, घृणा का शिकार बनाया गया है। आर्थिक तौर पर उनसे बेगार के रूप में, उच्च ब्याज दर के रूप में वह उनके श्रम की कम मजदूरी देकर उनका शोषण किया जा सके। 'जूठन आत्मकथा में ओमप्रकाश बाल्मीकि ने कैसे उनका जीवन तात्कालीक परिस्थितियों से प्रभावित होकर अभी हाल तक जब तक वो जीवित रहे जाति प्रथा, छूआ–छूत, घृणा अन्धविश्वास, अन्याय, शोषण, जूठन प्रथा, सलाम प्रथा, नारी–दुर्दशा, पुलिस भ्रष्टाचार आदि बुराइयों से ग्रस्त था। ऐसे समाज में लोगों का रहन–सहन कैसा होगा? यह हम आसानी से अनुमान लगा सकते हैं। स्वाभावक है कि मनुवाद पर आधारित समाज व्यवस्था ऊँच–नीच भेदभाव को बढ़ावा देती है।

'जूठन' आत्मकथा के लेखक इसी वर्ग में पैदा हुए। उन्हें स्कूली जीवन से ही छूआछुत, जातिवाद के नश्वर शारीरिक व मानसिक रूप से झेलने पड़े थे। सवर्ण अध्यापकों का जातिगत व्यवहार ओमप्रकाश वाल्मीकि को काफी मजबूर करता था। सभी जातिसूचक शब्दों से पुकारते थे। त्यागियों के बच्चे उन्हें 'चूहड़े' का कहकर चिढ़ाते थे। इसका वर्णन उन्होंने अपनी आत्मकथा 'जूठन में भी किया है।

'ओमदत्त त्यागी अंग्रेजी पढ़ाते थे। उनका बोलचाल का तरीका व्यंग्यात्मक था। प्रत्येक वाक्य में यानि के जोड़ देते थे, वह भी प्रश्नचिन्हन लगाकर'[1]

अध्यापकों के जातिगत भेदभाव के कारण ओमप्रकाश बाल्मीकि को इन्टर की परीक्षा में रसायन शास्त्र के प्रैक्टिकल में फेल कर दिया गया था। यद्यपि उन्होंन सभी प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर दिये थे।

अर्धवार्षिक परीक्षा में बाल्मीकि अपने सैक्सन में प्रथम आया था इस परिणाम ने उसके भीतर आत्मविश्वास जगा दिया था। परीक्षा के बाद कक्षा का मॉनीटर बना दिया गया था, कुछ अध्यापकों का व्यवहार अभी भी उसके प्रति रूखा व बेहद कटु अनुभव देने वाला था, उनके व्यवहार में प्रताड़ना थी, बाल्मीकि के प्रति उपेक्षा का भाव साफ दिखाई देता था।

"मुझे सांस्कृतिक कार्यक्रमों क्रियाकलापों से दूर रखा जाता था। ऐसे वक्त मैं सिर्फ किनारे खड़ा होकर दर्शन बना रहता था। स्कूल के वार्षिक उत्सव में जब नाटक आदि का पूर्वाभ्यास होता था, मेरी भी इच्छा होती थी कोई भूमिका मुझे भी मिले। लेकिन हमेशा दरवाजे के बाहर खड़ा रहकर सब सहना पड़ता था। दरवाजे के बाहर खड़े रहने

की इस पीड़ा को तथाकथित देवताओं के वंशज नहीं समझ सकते थें।[2]

उस समय जाति भावना अपनी चरम सीमा पर थी। अछूतों के लिए सार्वजनिक कुंओं से पानी पीने की मनाही थी। खाकी वर्दी को ओमप्रकाश बाल्मीकि ने खूब रगड़–रगड़ कर धोया था। समस्या थी इस्तरी करने की। उसकी कक्षा में एक धोबी का लड़का था उसने वाल्मीकि वर्दी लेकर उसके घर गया। उसे देखते ही उसका बाप चिल्लाया "अबे चूहड़े के किंधे घुसा आ रहा है?उसका बेटा उसके पास खड़ा था। मैंने कहा "वर्दी पर इस्तरी करानी है।" हम चूहड़े चमारों के कपड़े नही धोते हैं, नही इस्तरी करते हैं। जो तेरे कपड़े के इस्तरी कर देंगे तो लगा हमसे कपड़े न धुलवाएगें, म्हारी तो रोजी–रोटी चली जाएगी..... उसने साफ–साफ जवाब दे दिया था।"[3] एक बार मास्टर बृजपाल सिंह ने ओमप्रकाश वाल्मीकि व भिखूराम को गेहूँ लाने के लिए भेजा। जब तक जाति का पता न चला तब तक उनका खूब अतिथि–सत्कार किया गया। जाति का भेद खुलते ही अतिथि–सत्कार को खोखलापन खुल गया था। अतिथि की जाति ही आदर दिलाती है। वैसे भी आदर पाने का हमें अधिकार ही कहाँ था। मेरी आशंकाएँ सच हो रही थी। किसी तरह हम लोग उनके चंगुल सेबच गए थे।[4]

अपनी आत्मकथा के माध्यम से वाल्मीकि जी बताते हैं कि जाति का कोढ़ हाथों से नही चिपटा बल्कि दिमाग में चिपटा है। वह पुस्तकों से पहचान से पैदा नही होता बल्कि पुस्तकों ने तो भेदभाव के अहसास को मात्र तीखा किया है। यह कोढ़ जोर से चीखने या कोसने से नहीं समाप्त होता बल्कि इसके लिए हिम्मत करके बराबरी के व्यवहार की माँग करने की जरूरत है।

मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में उसके सामाजिक परिवेश की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय समाज सदा से वर्ण और जात–पात की व्यवस्था पर आधारित रहा है। भारतीय समाज में दलितों के साथ सदा से ही आमानुषिक व्यवहार होता रहा है। लेखक के जीवन की यात्रा ऐसे ग्रामीण परिवेश और वातावरण से शुरू होती है, जिसमें शायद कभी कोई जन्म नहीं लेना चाहेगा। स्वयं बाल्मीकि जी के शब्दों में "जोहड़ी के किनाने पर चूहड़ो के मकान थे, जिनके पीछे गाँव की औरतें, जवान लड़कियाँ, बड़ी–बूढ़ी यहाँ तक कि नई नवेली दुल्हनें भी इसी डब्बोवाली के किनारे खुले में टट्टी–फ़रागत के लिए बैठ जाती थी। तमाम शर्म लिहाज छोड़कर वे डब्बो वाली के किनारे गोपनीय जिस्म उधाड़कर बैठ जाती थी। .... चारों तरफ गंदगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घुट जाए। तंग गलियों में घूमते सुअर, नंग–धडंग बच्चे, कुत्ते, रोज़मर्रा के झगड़े, बस यह था वह वातावरण जिसमें बचपन बीता। .... उसी बगड़ में हमारा परिवार रहता था ..... घर में सभी कोई न कोई काम करते थे। फिर भी दो जून की रोटी ठीक ढंग से नहीं चल पाती थी।..... नाम लेकर पुकारने की आदत किसी को न थी। उम्र में बड़ा हो तो 'ओ चूहड़े', बराबर या उम्र में छोटा है तो 'अबे चूहड़े के' यही तरीका या सम्बोधन था। अस्पृश्यता का ऐसा माहौल कि कुत्ते–बिल्ली, गाय–भैंस को छूना बुरा नहीं था लेकिन चूहड़े का स्पर्श हो जाए तो पाप लग जाता था। सामाजिक स्तर पर इनसानी दर्जा नहीं था। वे सिर्फ जरूरत की वस्तु थे। ..... इस्तेमाल करो, दूर फैंको।"[5]

'जूठन' आत्मकथा के सन्दर्भ में डॉ0 ललिता कौशल का कहना है कि 'जूठन' शीर्षक में बाल्मीकि की जाति बिरादरी की पीड़ा, अपमान और गरीबी समाई हुई है। यह दिल दहला देने वाली एक लेखक की सच्ची कहानी है। यह आत्मकथा ब्राह्मणवादी वर्ण–धर्म व उसके संस्थागत रूप के पाखंडों में मौजूद अमानवीयता को उद्घाटित करती है। स्वयं लेखक 'जूठन' को अपने जीवन के अनुभवों उतार–चढ़ाव और संघर्षो की कथा कहता है।"[6]

कथित उच्च जाति के परिवारों में बच्चों के मन में दलितों के प्रति यह भावना भर दी जाती थी कि दलित गन्दे व घृणित होते हैं, सवर्ण जाति वालों को उनसे नफरत करनी चाहिए। अपनी आत्मकथा 'जूठन' में बाल्मीकि जी एक ऐसी ही घटना का वर्णन करते हुए बताते हैं कि जब महाराष्ट्रीय, ब्राह्मण परिवार में मुसलमान व दलितों के लिए अलग बरतनों में चाय परोसने पर ओमप्रकाश उस परिवार की लड़की सविता से इस बारे में बात करते हैं। उन्हें हैरानी होती है कि सविता इस भेदभाव को सही और संस्कृति का हिस्सा मान रही थी। उसके तर्क लेखक को उत्तेजित कर रहे थे। फिर भी लेखक काफी संयत था उस रोज उसका सविता कहती है कि एस. सी. अनकल्चर्ड होते हैं। गन्दे रहते हैं इसलिए उनके साथ खाना–पीना अच्छा नहीं लगता। लेखक लिखते हैं – मैंने पूछा, "तुम ऐसे कितने लोगों को करीब से जानती हो?" वह चुप हो गयी थी। उसका परिचय ऐसे किसी व्यक्ति से नहीं था। फिर भी पारिवारिक पूर्वाग्रह उस पर हावी थे। उसका कहना था, आई (माँ) और बाबा ने बताया। यानि बच्चों को यह सब घरों में सिखाया जाता है कि एस0 सी0 से घृणा करो।"[7]

यद्यपि सवर्ण पशुओं की खाल से बनी वस्तुओं को तो बड़े चाव से पहनते हैं, लेकिन उसको तैयार करने वालों से नफरत करते हैं। यह काम दलितों को बेगार के रूप में करना पड़ता है। मरे हुए पशु को उठाने के लिए उन्हें कोई मजदूरी नहीं दी जाती, जबकि यह काफी मेहनत का काम होता है। "ब्रह्मदेव तगा का बैल मरने पर उनकी खाल उतारने के प्रसंग से समझा जा सकता है। बाल्मीकि को इस हाल में देखकर उसकी माँ रो पड़ती है। सिर से पाँव तक गन्दगी से भरे हुए कपड़ों पर खून के धब्बे साफ दिखाई दे रहे थे बड़ी भाभी ने उस रोज माँ से कहा था, "इनसे ये न कराओ, भूखे रह लेंगे – इन्हें इस गन्दगी में न घसीटो"[8]

यह निर्विवाद सत्य है कि वर्ण व्यवस्था के माध्यम से सवर्णों ने एक प्रकारकी मनोवैज्ञानिक जीत हासिल कर ली है। इसके कारण दलित चेतना पूर्णः कुन्द हो चुकी है। दलित साहित्य के जनक डॉ0 अम्बेडकर ने ठीक ही लिखा है –

'हिन्दू धर्म मेरी बुद्धि में जाँचता नही है, स्वाभिमान को भाता नही है, जो धर्म तुम्हें शिक्षा प्राप्त नहीं करने देता है उस धर्म में तुम क्यों रहते हो?जिस धर्म में मनुष्यता नहीं उद्दण्डता की सजावट है"[9]

शादी विवाह के अवसर पर जब बाराती खाना खा रहे होते थे तो चूहड़े दरवाजों के बाहर टोकरे लेकर बैठे रहते थे। बारात के खाना खाने के बाद झूठी पत्तले उन टोकरों में डाल दी जाती थी, यह कितनी अमानवीय प्रथा है। एक व्यक्ति दूसरे की जूठन खाएँ। ऐसे में उस व्यक्ति में बराबरी व सम्मान की भावना कैसे आ सकती है। लेखक द्वारा आत्मकथा में लिखी गई इन पंक्तियों में यह बात अच्छी तरह से स्पष्ट हो जाती है।

"टोकरा भर तो जूठन ले जा री है .... ऊपर से जाकतों के लिए खाणा मांग री है?अपनी औकात में रह चहूड़ी। उठा टोकरा दरवाजे से और चली बन।"[10]

इसी तरह 'जूठन' में लेखक ने सलाम प्रथा का जिक्र किया है जिसमें दलित के लड़के या लड़की की शादी होती है तो उसे सलाम करने या एक तरह से कहें कि भीख मांगने के लिए सवर्णो के दरवाजे पर जाना पड़ता है। इसके लिए दुल्हन की माँ को पैसे लेने के लिए भी काफी जद्दो जहद करनी पड़ती है, यानि उस समय भी सवर्णों के हाथ से आसानी से पैसा नही छूटता। हिरम की सास कहती थी, "चौधराइन, मेरी कोई दो–चार लौंडी तो है नहीं जो मेरे और जमाई थारे दरवाजे पर आवेंगे। इज्जत से लड़की को भेज संकू, ऐसा तो कुछ दो"[11] लेकिन इस गिड़गिड़ाहट का कोई असर दिखाई नहीं पड़ता था।

ब्राह्मणवादी दलितों को शिक्षा व ज्ञान वे वंचित करके ही उनकी मानवीय गरिमा व पहचान समाप्त करने में कामयाब हुआ। ज्ञान व शिक्षा पाने की ललक दलितों में थोड़ी बहुत हमेशा हो रही है लेकिन सवर्ण समाज उनको शिक्षित करना नहीं चाहता था। दलित वर्ग की अनपढ़ता व अज्ञानता से ही ब्राह्मणवाद कायम रहता है।

जूठन आत्मकथामें नारी की स्थिति अच्छी नहीं थी। उनकी इज्जत व सम्मान का कोई ख्याल नहीं रखा जाता था।

"जोहड़ी के किनारे पर चूहड़ों के मकान थे, जिनके पीछे गाँव भर की औरतें, जवान लड़कियाँ, बड़ी–बूढ़ी यहाँ तक की नई–नवेली दुल्हने भी इसी डब्बोवाली (जोहड़ी) के किनारे खुले में टट्टी–फरागत के लिए बैठ जाती थी। रात के अन्धेरे में ही नही, दिन के उजाले में भी पर्दों में रहने वाली त्यागी महिलाएँ, घूँघट काढ़े, दुशाला ओढ़े इस सार्वजनिक खुले शौचालय में निवृति पाती थी तमाम शर्म लिहाज छोड़कर वे डब्बे वाली ने किनारे गोपनीय जिम्स उघाड़कर बैठ जाती थी।"[12]

निष्कर्ष

ओमप्रकाश बाल्मीकि अपने दलित समाज को दलित मुक्ति संघर्ष के लिए जागृत करते हैं। उनको ब्राह्मणवादी शोषण से बचाने के लिए प्रयास करते हैं। उनको ब्राह्मणवादी शोषण से बचाने के लिए प्रयास करते हैं जिससे समाज में समानता, स्वतन्त्रता, बन्धुत्व की भावना स्थापित की जा सके और वे आप आदमी की तरह जीवन जी सके।

"समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है"[13]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओमप्रकाश बाल्मीकि 'जूठन' पृ0 78
2. ओमप्रकाश बाल्मीकि 'जूठन' पृ0 26
3. ओमप्रकाश बाल्मीकि 'जूठन' पृ0 28
4. ओमप्रकाश बाल्मीकि 'जूठन' पृ0 66
5. ओमप्रकाश बाल्मीकि 'जूठन', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृ0 12
6. डॉ0 ललिता कौशल, हिन्दी की चर्चित दलित आत्मकथाएँ साहित्य संस्थान, गाजियाबाद 2010, पृ0 54
7. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 118
8. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 48
9. डॉ0 अवन्तिका प्रसाद मरमट : वर्ण व्यवस्था और दलित समस्याएँ, पृ0 41
10. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 21
11. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 43
12. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 11
13. भारतभूषण कपूर : समाजशास्त्र की मूल अवधारणा, पृ0 57

बूटा सिंह
शोधार्थी
गुरु काशी युनिवर्सिटी
तलबण्डी साबो,
डी0 एस0 पी0
तलवण्डी साबो
मोबाईल– 7719777976

33

इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों की हिन्दी कहानियों में नारी चित्रण
स्त्री जीवन : तनाव, अलगाव और दबाव

रेनू

सारांश

जीवन में आयी हर चुनौती और परिस्थितियों को नारी ने सहजता से स्वीकार कर उनका सामना किया है।आज महिलाओं का जीवन जैसा है, जो उपलब्धियाँ उन्हें प्राप्त हैं, वो आसानी से प्राप्तनहीं हुयी हैं।इसके लिए स्त्रियों ने लम्बा संघर्ष किया है। इस संघर्ष के दौरान नारियों ने तनाव, अकेलापन और अनेक प्रकार के दबाव भी झेले हैं।परम्परागत समाज के तौर–तरीकों, परम्पराओं से अलग चलने में पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक दबाव झेले हैं।पारिवारिक स्तर पर अलगाव और अकेलापन झेला है।चारो तरफ से आयी चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार कर उन पर विजय प्राप्त की है, किन्तु व्यक्तिगत स्तर पर ये संघर्ष अभी भी जारी है।हर एक नारी को अपनी लड़ाई अभी भी लड़नी पड़ रही है, जिस कारण उनके जीवन में तनाव, अलगाव और दबाव अभी भी बरकरार है। आज भी नारियों को अपने अस्तित्व और बराबरी के व्यवहार के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है और इस तनाव को सहकर भी उन्हें मुस्कुराना पड़ता है।

आधुनिकता के साथ–साथ स्त्रियों के जीवन मेंअलगाव, अकेलापन बढ़ा है।समाज में बराबरी का दर्जा पाने की चाहतमेंनारियों ने शिक्षा का सहारा लिया। खुद को आत्मनिर्भर बनाने के लिए घर से दूर जाकर नौकरी एवं रोजगार करने लगी। एक समय ऐसा भी आया जब नारियों को कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा परिवार की आवश्यकता ज्यादा महसूस होने लगी और यही वो समय है, जबउन्हें अकेलापन चोटने लगता है और वो तनाव में आकर दबाव महसूस करने लगती हैं।कुछ इसी तरह के तनावमें उषा प्रियंवदा की कहानी ''छुट्टी का दिन'' की नायिका ''माया'' है और ''सुरंग'' की अरूणा तथा ''कोई नहीं'' कहानी की नमिता।तीनोंही युवतियाँ उच्च शिक्षित और नौकरी करने वाली हैं।माया एक अध्यापिका है और लखनऊ जैसे शहर से दूर रहकर एक छोटी सी जगह पर नौकरी करती है, जिसके सप्ताह के छः दिन तो बच्चों को पढ़ाने में बीत जाते हैं, किन्तु छुट्टी का दिन उसके जीवन में उदासी भर देता है।

''फिर भी जाने क्यों उसे रोना आ गया। किसलिए वह घर–बार छोड़कर इतनी दूर आकर पड़ी थी, किसलिए वह सुबह से शाम तक कॉलेज में मगज–पच्ची करती थी।इसलिए कि जिन्दगी के दिन एक–एक करके गुजरते जाएँ और हर गुजरा हुआ दिन उसके जीवन का खालीपन और भी गहरा करता जाए और एक दिन, सोचे कि इस जीवन में उसने क्या पाया, तो पता चले कि वह लम्बे अनन्त मरूस्थल की तरह था।[1]

सामाजिक बन्धनों से बँधीनारी अक्सर अपने आस–पास एक आभासी आवरण–साबना लेती है, जिसके बाहर की दुनिया को वो सिर्फ ये जताती है, जैसे वो संसार की सबसे सुखी महिला है, उसे कोई दुःख, पीड़ा या परेशानी नहीं है, उसका पति और परिवार सबसे बेहतर और अच्छा है, जबकि इस आवरण के भीतर वो बाहरी आवरण के एकदम विपरीत है। वो सारे क्लेश, दुःख और परेशानियाँ झेल रही है, जो वो किसी को बता नहीं सकती।पति उस पर अत्याचार करता है, हाथ उठाता है, परिजन उसे ताने देतेहैं, किन्तु नारी ने जैसे उन सबको सहने का मन बना लिया है।अन्दर से दुःखी होते हुए, बाहर से खुश होने का ये उपक्रम उसे अलगाव और दबाव की ओर धकेलता है। ऐसा ही जीवन 'यादवेन्द्र' की कहानी 'स्वर्णन दी रेत की' की 'पुनीता' का है।पुनीता ने दिगन्त से प्रेम विवाह किया, किन्तु उसे शादी के कुछ ही दिन बाद पता चल जाता है कि उसका दिगन्त से शादी का फेसला गलत हैं।दिगन्त के लिए वो सिर्फ एक शरीर है, नातो दिगन्त को उसकी फिक्र है, नाही उसकी भावनाओं की, वो पुनीता को इकलौती सन्तान तक से भी नहीं जुड़ने देता और बेटे को भी हॉस्टल भेज देता है।दोनों साथ रहकर भीसाथ नहीं, परिवार होकर भी परिवार नहीं और ये सारी बातें पुनीता को खोखला करती जाती हैं।

''एकान्त के खामोश क्षणोंमें उसका भीतरी को लाहलती व्रत रहो जाता था, उसे एहसास होता था कि झूठ के लबादे एक पर एक उसके बदन को ढँकते जारहे हैं।दूसरे लोग उसके जीवन को वसन्त समझते हैं, परवह तो हर साल पतझड़ के बिखरे पत्तों की तरह बिखरती जा रही है।कई बार वह पसरी चाँदनी में अपने जीवन के अंधेरे टुकड़ों को देखती थी।''[2]

गलत का विरोध ना करके, सब कुछ सहती नारी जीवन में केवल तनाव को झेलती रहती है, किन्तु जब वो नारी अनुचित का विरोध करती है तो उसके सम्बन्धों और जीवन में अलगाव भी आ जाता है और उसी क्षण से समाज की सारी बुराईयों की जड़ जैसे वो नारी ही हो जाती है और उसका अत्याचारी पति मासूम और निरपराध हो जाता है। विरोध करने वाली स्त्री को सदैव ही सम्बन्धों से अलग होना पड़ता है।समाज उस`अपनी सम्पत्ति समझता हैऔरहर कोई उसेअपने झाँसे में लेकर उसका शोषण करना चाहता है।लोग सहानु भूति दिखाने की आड़ मेंअपना उल्लू सीधा करना चाहत`हैं। 'अल्पना मिश्र' की कहानी 'मेरे हम दम, मेरे दोस्त' की सुबोधिनी भी अपनेपति की ज्यादती से तंग आकर अपने पति से तलाकले लेती है।तलाक के बाद उसका पति बच्ची को छिनने के लिए सुबोधिनी को परेशान करने लगता है। एक तरफ थी घर–परिवार से जुड़ी परेशानियाँ तोदूसरी तरफ नौकरी से जुड़ी समस्यायें इन सब से जूझती सुबोधिनी दिन–रात तनाव ग्रस्त रहती है।दफ्तर से जुड़ा हर एक पुरूष उसे एक अलग ही दृष्टि से देखता है।

''अभी एक–दो दिन पहले ही उसने अपने लिए

दफ्तर में किसी को कहते सुना था– 'आदमी ने छोड़ दिया है बेचारी को' जबकि असलियत में तंग आकर उसी ने छोड़ दिया था।ज्यादा दुखड़ा रोएगी तो अगले दिन से कई जगह उसी का नाम सुनाई, दिखायी पड़ेगा।जैसे किटीना का नाम। बाथरूम की दीवारों तक पर लिखा दिखताहै।थकहार करटीना ने यहाँ से ट्रांसफर लिया था।''[3]

नारी अतीत को वर्तमान परपूरी तरह हावी नहीं होने देने का प्रयास कर रही है, वो खुद को सँभालती जीवन में आगे बढ़ रही है, किन्तु 'पलाश के फूल' की नायिका जो अपने प्रेमी के चले जाने पर उसकी यादों में घुलती रहती है। वो सब कुछ पहले की तरह करती है, किन्तु भीतर से जैसे वो सुलगती रहती है।होली की आगको देखकर चिल्लाती है, आग उसे उसके प्रेमी की चिता की याददिलातीहै, उसेपतझड़ पसन्द हैं, क्योंकि पलाश के लाल फूलों कोउसके लिए तोड़ते समय उसके प्रेमी की मौत हो गई थी।अपने इकलौते बेटे को खोकर उसकी माँ की सुध–बुध खोगई, वो बेटे की याद में शाम के धुधल कों में थाली में पलाश के फूलों को चुनती हैं, जो उसके बेटे को पसन्द थे।दूसरी ओरनायिका को लोग अब पागल समझने लगे हैं और अजीबसी नजरों से देखतेहैं।कोई नहीं जानता वो भीत रही भीतर कितना जल रही है।

''उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि वो बहुत सारे अंगारे सिर पर उठाए खड़े हैं।बावजूद इसके पेड़ बिल्कुल भी नही चिल्लाते।चिल्लाती तो मैं भी नहीं, वरना हर किसी को मालूम नहीं पड़ जाता कि मेरे अन्दर भी पिछले चार सालों से कुछ दहक रहा है, जब पलाश फूल जाता है, पतझड़ दस्तक देता है ता`मुझे उसकी बहुत याद आती है।''[4]

इकलौते बेटे को खोने का जैसा गमकहानी 'पलाश के फूल' की माँ कोहै, जो विक्षिप्त–सी हो गई है, वैसा ही गम कहानी 'खामोशी' की नेहा वर्मा को भी है, जिसने युवापुत्र को खोया है, जोहरपल अफसोस करती है कि काश उसने अपने बेटेको उसके दोस्तों के साथ घूमने ना भेजा होता। लोगों के लिए निश्चित तौर पर वो एक मजबूत इरादों वाली महिला है, किन्तु अंदर से वो टूटचुकीहैं।

इतने ज्यादा तनाव में होने के बावजूद भी आधुनिक नारी में अपनी जिम्मेदारियों के प्रतिपलायन का भावनहींहै। शायद ही कोई उन्हें देखकर पहचान पाये कि वो किस माहौल से गुजर रही हैं, किस दुःख को झेलकर मुस्करा रही हैं।कई दफा तो बाहरी व्यक्ति क्या अपने सगे–सम्बन्धियों तक को भी वो भनक नहीं लगने देती।कहानी 'चार अक्षर' की सरोज भी ऐसी ही नारी पात्र है, जिसके दुःख या तनाव का पता किसी को नहीं लगपाता। शादी के बादजब वो पहली बार मायके आती है तो उसकी खुशी और हँसी को देखकर किसी को भी अनुमान नहीं होता कि वो भीतर से कितनी दुःखीहै, उसके दुःख का पता तब चलता है, जब वो पागल हो जाती हैं।

जब तक अपना दर्द छुपासकी, तब तक छुपाया और जब सहन–शक्ति से बाहर हा`गया तो पागल हो गई, खुदकशी की या फिर शरीर ने ही ऐसी नारी का साथ छोड़ दिया।जैसे कहानी 'बेघर' की विनी, जिसने घरवालों की मर्जी के विरुद्ध जाकरविजय से अन्तर्जातीय विवाह किया था, जो मजबूत इरादों वाली, साहसी युवती है, हॉकी की नेशनल स्तर की चैम्पियन खिलाड़ी है, किन्तु विजय से शादी करने के बाद भीतर ही भीतर टूटने लगती है।चार साल तक अपने इकलौते बेटे की मौत का गम सहती है।विजय की बेवफाई, परिवार के ताने सहती है।इन्हीं सब से विनी को ब्रेन हेमरेज हो जाता है, जो उसकी दुःखद जीवन का अंत करने का कारण बना।उसकी बड़ी बहन सुमन आखिर तक नहीं जान पायी, क्यों विनी मुखर स्वभाव वाली होते हुए भी अन्दर ही अन्दर घुटती रही।

''हाँ, दीदी ये सब बीती बातें हैं, उस विनी को ढूँढ़ोगी तो अब कहीं नहीं मिलेगी।'' पता नहीं उसकी इस बात से सुमन को ऐसा अहसास हुआ कि कहीं किसी तरफ मन के बन्द कोने में कोई तकलीफ छिपी हुई थी, जिसे वह किसी से शेअर नहीं करना चाहती थी।[5]

इस संसार में नारी की नियतिसीता जैसी है।सदियाँ बीत गयी हैं, किन्तु आज भी नारी की नियति जस की तसहै।नारी पुरूष की सहधर्मिणी तो बन सकती है, दुःख की भागी बन सकती है, किन्तु सुख की छाया से भी उसका वास्ता नहीं पड़ता। 'सिरी उपमाजोग' कहानी की नायिका लालू की माँ, ''जिसने अपनी जीवटता, साहस, धैर्य से अपने पति की सेवा की, घर की जिम्मेदारियों से मुक्त रखकर केवल साहब वाली नौकरी की तैयारी करवायी, जिसने स्वयं को परिश्रम की आगमें झौंककरभी अपने पति को उसके उद्देश्य की तरफ बढ़ने को प्रेरित किया, किन्तु उसका पति नौकरी पाकर दूसरी शादी कर लेता है। उसे अपनी पत्नी लालू की माँ के साथ रहते, चलते शर्म आती है। वो पुरूष उस स्त्री को भूल गया, जिसने उसक`लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया, उसे समाज और परिवार की तरफ से शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना को झेलना पड़ रहा है।

''मन में सवाल उठने लगे–क्या मिला उसको, उन्हेंआगे बढ़ाकर? वे बेरोजगार रहते, गाँव में खेती–बारी करते।वह कन्धें से कन्धा भिड़ाकर खेत में मेहनत करती।रात में दोनों सुख की नींद सोते। तीनों लोकों का सुख उसकी मुट्ठी में रहता।छोटे से संसार में आत्म सन्तुष्ट हो जीवन काट देती। उन्हें आगे बढ़ाकर वह पीछे छूट गई।माथे का सिन्दूर और हाथ की चूड़ियाँ निरन्तर दुःख दे रही हैं उसे।''[6]

अपनों के दिये जख्म नारी को तनाव और अलगाव ही देते हैं।वे सबनारी जाति को दिन–रात का दर्द देते हैं और ये दर्द नारी को खामोशियों से भरता जाता है। वो अपना दर्द किसी से नातो कह पाती है और नाही किसी पर विश्वास कर पाती हैऔर ऐसी दशा में सिर्फ रह जाती है, सिर्फनारी के जीवन में आहें और ये आहें उसे बीते जीवन में मिली बेवफाई और दर्द से आगे नहीं बढ़ने देना चाहती हैं। चाहकर भी नारियाँ उन खुद गर्जियों और

दुःख से आगे नहीं बढ़ पाती। यदि नारी इन सब से बाहर निकलने की कोशिश भी करती है तो स्वयं को और भी ज्यादा घने जाल में उलझा लेतीहै।जैसे कहानी 'उदासनी ले दिन' की अनुमेहा।

''निकलने की कोशिश में पहली बार जाना था, बीते कुछ सालों में अपने ही अनजाने कैसे–कैसे जालेबुन लिए हैं उसने खुद के आस–पास कितनी मोटी, मजबूत दीवारें खड़ी करली हैं। यह अपनी कैद थी, खुद को तोड़कर निकलना आसान नहीं होता।[7]

तनाव की दशा में कोई स्त्री विद्रोही स्वभाव वाली हो जाती है, कोई शान्त हो जाती है, तो कोई अत्यन्त भावुक, गम्भीर स्वभाव वाली हो जाती है।तनाव प्रत्येक नारीको एक अलग तरीके से प्रभावित करता है। 'अनघ शर्मा' की कहानी 'इस धुएँ का नाम शामहै' की नायिका तराना का जीवन दुःख और अभावों से भरा हुआ है, जिसने उसे कम उम्रमें ही बड़ी बना दिया है। जिस गुण को लोग उसका हुनर समझते हैं, वो वास्तव में उसका बचपन से ही जीया गया जीवन है।उसके पिता की मौत और लगातार जीवन में मिले अभावों और दुःखों ने उसके जीवन को अलगाव और तनाव से भर दिया है।जो जीवन वो पर्देपर जीती है, वो उसके निजी जीवन की परछाईमात्र है।उसके जिस जीवन की लोग तारीफें करते हैं, वो उस जीवन के अन्धेरे में घुटती है और उससे भागना चाहती है तथा इस तनाव कोना झेल पाने की स्थिति में खुद को शराब में डुबो लेती है और अन्ततः ये शराब ही उसकी मौत का कारण बनती है।

''मेरी किसी रेगिस्तान में फंसे मुसाफिर सी डूबती, काँपती आवाज लोगों को सुरूर से भर देती थी।मेरा टूटता वजूद उन्हें अदाकारी का नायाबन मूना लगता, पर कोई कभी नहीं समझ पाया कि मैंने कैसे अन्दर ही अन्दर खुद को खींच के तान रखा है।जिन्दगी मुझे बार–बार भरमा देती है कि बहार के मौसम बहुत हैं, बस तुम मेरा हाथ न छोड़ना और मैं पागल इस भुलावे में आकर अपनी डूबती नाव का चप्पू फिर थाम लेती हूँ, ओह! बाबा अगर तुम हो तेतो मैं तुम्हें मन के सब राज बोलकर सुनाती।''[8]

सिर्फ पति या सम्बन्धों से दूरी ही नारी जीवन में तनाव पैदा नहीं करता है, बल्कि सम्बन्धों में आया, शक भी उन्हें तबाह करता है। जरूरत से ज्यादा असुरक्षा की भावना, एकाधिकार की प्रवृत्तिनारी के जीवन को असहनीय कष्ट की अनुभूति कराती है।चाहे उस परिवेश में उसे कितने ही भौतिक सुख–सुविधाएं क्यों ना प्राप्त हों। यदि उस परिवेश में सम्मान और बराबरी का सम्बन्ध नहीं है तो नारी का जीवन नारकीय ही है। शक और प्रताड़ना से भरा जीवन नारी को असहनीय पीड़ा ही दे सकता है।जैसे 'मधुकांकरिया' की कहानी 'चूहे को चूहा ही रहने दो' की युवती।नारी जीवन का ये एक ऐसापक्ष है, जिसके कारण नारी तनाव और दबाव सहन करती है।नारी अपने जीवन में इन दबावों और तनावों से जूझते हुए अपने अकेलेपन से पार पार ही है। तनावों की वजह को ही खत्म कर रही है।'जीत' कहानी की अलका इसका उदाहरण है–

''उसने महसूस किया किसी निर्णय पर पहुँच जाना ही आधी दुश्चिंताओं को जीत लेना है।कितने दिनों से खुद से ही हारती आ रही है।उसने खुद को आईने में देखा।अपनी ही आँखों में अजीब सी चमक देखी, उसे अच्छा लगा, देर से ही सही, उसने खुद को जीत लिया हैं।''[9]

निष्कर्ष :

आधुनिक नारी अपने टूटते सम्बन्धों का रोना ना रोकर उनके बिनाभी जीवन में खुशी और हँसी की तरफ बढ़ रही है।नारी ने आधुनिक शिक्षा को प्राप्त कर नये समाज के निर्माण में सहयोग करना शुरू कर दिया है। अब वो चुपचाप ज्याद तीना सहनकर के अनुचित का विरोध करने लगीहै।उसने अपने अतीत, अपने दुःख और अकेलेपन से जीतना सीख लिया है।नारी ने खुद पर विजय हासिल करना जान लिया है।अब कुछ भी नारी के लिए जीतना मुश्किल नहीं है।

सन्दर्भग्रन्थ–सूची

1. उषा प्रियवंदा, प्रतिनिधि कहानियाँ, राज कमल प्रकाशन, वर्ष 2018,पृ0 59
2. यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', वाहकिन्नी, वाह!, वाणी प्रकाशन, वर्ष 2009,पृ0 56
3. अल्पना मिश्र, कब्र भी कैद औ' जंजीरे भी, राज कमल प्रकाशन, वर्ष 2015,पृ0 81
4. आकांक्षा पारेकाशिव, तीन सहेलियाँ, तीनप्रेमी, राजकमल प्रकाशन, वर्ष 2013,पृ0 09
5. क्षमा शर्मा, नेम प्लेट, राज कमल प्रकाशन, वर्ष 2010, पृ0 60
6. शिवमूति, केशर कस्तूरी, राजकमल प्रकाशन, वर्ष 2015,पृ0 58
7. संपा0 संजय सहाय, हंस, अक्षर प्रकाशन, नवम्बर 2018,पृ0 27
8. साराॉय, बियाबान में, पृ0 113, वर्ष 2019, राज कमल प्रकाशन, 1बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली।
9. आकांक्षा पारे काशिव, तीन सहेलियाँ, तीनप्रेमी, राज कमल प्रकाशन, वर्ष 2013, पृ0 69

रेनू पत्नी संदीप धीमान
3/3596, कपिलविहार,
निकट विश्व कर्मा चौक,
पेपर मिल रोड, सहारनपुर।
मो0– 9760453548, 9760519548
शोध निर्देशक
डॉ0 राकेश चन्द्र
(एसोसिएट प्रोफेसर)
हिन्दी विभाग
जे0वी0 जैन कॉलेज
सहारनपुर (उ0प्र0)
मो0– 9457639374

34

अमृत लाल नागर कृत' नाच्यौ बहुत गोपाल' में काम–वासना की समस्याएँ

राम ईश्वर कुमार

सारांश

अमृतलालनागर का उपन्यास 'नाच्यौ बहुत गोपाल' मेंकाम–वासना की समस्याएँ देखने को मिलता है। इस उपन्यास में निर्गुनिया के साथ जो कुछ भी घटित होता है उसमें काम की अहम भूमिका है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि काम जीवन का अभिन्न अंग है।जिस समाज में संस्कृति और संस्कार के नाम परकाम की उपेक्षा की है उसका अहित होना निश्चित है।मनुष्य के शरीर में दो तरह के भूख हैं पहला पेट की और दूसरा काम की। संसार में अगर देखा जाए तो पेट की भूख के लिए सारा कर्म किया जाता है।आदमी भूख को मिटाने के लिए क्या कुछ नहीं करता? उसी प्रकार काम की भी भूख होती है।आज भी हमारे समाज को काम को निकृष्ट माना जाता है। लेकिन क्या काम या यों कह लीजिए सेक्स इतनी बुरी चीज है?उस पर गहरे विचार करने की जरूरत है। नैतिकता की आड़ में आज हम जिस तरह से सेक्स कोपाप की वस्तु समझ रहे हैं आने वाले दिनों में इसका विकृत रूप भी देखने को मिलेगा।अगर गौर से देखा जाए तो पता चलेगा कि इस सृष्टि का जन्म सेक्स से ही हुआ है। और सृष्टि में सेक्स के दम परही जीवन बसा हुआ है। फिर भी उसी सेक्स को अछूत क्यों समझा जाता है?संसार में जितने भी बुद्धि जीवी हैं सब सेक्स से परिचित हैं। यहाँ तक की रात में उसका उपभोग भी करते हैं लेकिन उजाले में आकर नैतिकता की दुहाई देने लगते हैं। आज भी हम अपने बच्चों को सेक्स के बारे में बतलाने से कतराते हैं। ये समाज में विकृतियाँ पैदा करती है। सेक्स का परिष्कृत रूप प्रेम–भाव है। तबतो ये बातें निश्चित हो जाएगी कि जहाँ काम भावना नहीं होगा वहाँ प्रेम भी नहीं होता। प्रेम के लिए काम–भाव का होना बहुत जरूरी है। और अगर प्रेम–भाव न हो तो यह जीवन कैसा निरस हो जाएगा? इसकी कल्पना आप कर सकते हैं।

संस्कृति और संस्कार वहीं तक मायने रखने चाहिए जहाँ तक जीवन की हानि न हो।और संस्कृति को सबके नजरिए से देखा जाना चाहिए केवल अभिजात्य वर्ग की दृष्टि से नहीं। इस संदर्भ में अमृतलाल नागर अपने उपन्यास 'नाच्यौ बहुत गोपाल' में लिखते हैं––"संस्कृति को केवल अभिजात्य दृष्टि से देखना खाड़ी में समुद्र को देखने के समान ही है। खाड़ी मेंजन–संस्कृति के महासागर का अगाध–असीम सौन्दर्य भला क्यों कर दिखलाई दे सकता है।"[1]

निर्गुन एक ब्राह्मण परिवार में पली–बढ़ी लड़की थी जिनका लालन–पालन नाना–नानी के घरमें हुआ था। नाना–नानी बड़े संस्कारों से पाला था।नाना–नानी अपने अंतिम दिनों में निर्गुन को अपन पिता के हवाले कर दिया। पिता राय साहब पंडित बटुक प्रसाद के यहाँ काम करते थे। इनके पिता घर की मालकिन की सेवा में हमेशा तत्पर रहते थे। निर्गुन पिता के उसी घर में रहने लगी थी। उस घर की स्थिति को समझने के लिए निर्गुन को ज्यादा समय नहीं लगा। उस घरमें सबके रिश्ते किसी न किसी के साथना जायज थे। मंझले बबुआ और मंझली बहू दोनों ही के बारे में बहुत सी बातें पता लगी। उन दोनों का खेल अंग्रेजी था।कोई बाल–बच्चा भी नहीं था।अम्मा के घर में बड़े बेटे यानि छोटे सरकार और छोटी सरकार ही सबसे साफ सुथरे जीवन बिताते थे। इस घर में जोचल रहाथा उसका असर कहीं न कहीं निर्गुन पर भी पड़ा। पंडित बटुक प्रसाद के बेटे बबुआ सरकार ने इसके साथ जबरदस्ती की लेकिन इस जबरदस्ती में कहीं–न–कहीं निर्गुन का मन था। निर्गुन खुद स्वीकारती है कि––"लेकिन अब अपनी पीढ़ी बुद्धि से सोचकर यह जरूर कह सकती हूँ कि अकेले बबुआ सरकार ही मेरे साथ जबरदस्ती करने के कसूरवार नहीं ठहराये जा सकते, कहीं पर मेरा नादान मन भी ललचा हुआ था।अम्मा के घर में जो कुछ देखा था उसने मेरा मन ऐसा ज्वाला मुखी बना दिया था जो ऊपर से तबतक मुँह बंद होकर भी भीतर–ही–भीतर सुलग रहा था।"[2]

अम्मा के घर में वातावरण ही ऐसा बन गया था कि वहाँ से बचना संभव नहीं था।निर्गुन भी इस बात को स्वीकारती हैकि मन मेरा भी ललचा था और निर्गुन का मन एक ऐसा ज्वालामुखी का रूपले रहा था जो कभी भी फट सकता था।

निर्गुन जहाँ रह रही थीउस घर की परिस्थितियों ने ही निर्गुन के कामवासना के तरफ आकर्षित किया।जिस घरमें इस तरह का खेल चल रहा हो उस घर में रहकर कैसे बचा जा सकता है?निर्गुन इस घर के सबके बारे में जान चुकी थी तो भला निर्गुन का मन में हलचलें क्यों न होती?

निर्गुन के अंदर काम की आग अम्मा ने ही लगा दी थी।बबुआ सरकार ने जब निर्गुन का कौ मार्य भंग किया तो निर्गुन को अपनी श्रृंगारिकता में मन भी लगने लगा।निर्गुन को पढ़ाने के लिए अम्मा ने एक मास्टर को बुलाया था।दरअसल निर्गुन को पढ़ाने के लिए कम अपनी ईच्छा की पूर्ति के लिए मास्टर बसन्त लाल को ज्यादा रखा गया था।क्योंकि अम्मामरद के बिना रहन हीं सकती थी। ये बातभी सही है कि निर्गुन को प्रथम प्रेम का जो स्पर्श हुआ था वो बसन्त के साथ में ही।इसी कारण अम्मा ने अपने चारेको खाते किसी और को देखा तो रहा नहीं गया और निर्गुन की शादी एक पचहत्तर साल के बूढ़े से कर दिया।

अम्मा ने अपने पुराने यार मसुरिया दीन से शादी कर के उसके घर भेज दिया।निर्गुन अब बीस साल की भी नहीं थी और उनके बूढ़े पति पचहत्तर साल का था।इन दोनों के बीच में पति–पत्नी का वो रिश्ता कैसे बन सकता था।निर्गुन को उस घर में कैद करके रखा गया था।निर्गुन जवान थी तोकाम की ईच्छा भी होती हीथी जो

उसके पति से पूरा नहीं हो पाता था। इस बात कोम सुरियादीन उसका पति भी जानता था तभी वो चारो तरफ ताला बंद करके निर्गुन को रखा था। निगुनकाम की ज्वालामें जल रही थीतोक्या ये स्वाभाविक नहीं है कि जलते हुए रेगिस्तान में पानी का कोई भी रूप सहारा बन जाए। किसी भी पानी से वो अपना प्यास बुझा ले।निर्गुन उस घरमें काम की आग में भून रही थी, मछली की तरह तड़प रही थी तोक्या ये जरूरी नहीं था कि निर्गुन को किसी पुरूष रूपी नाव पाकर अपने आपको किनारा लगाया जा सके। निर्गुन जब पहली बार सुना किकल से काम करने एक लड़का आएगा।उस केतन–मन मेंहल चलसी मच गयी थी। उन्हीं के शब्दों में देखिए ––"लड़का आएगा। यह वाक्य मृगतृष्णा बनकर निर्गुन के मन कोप्या से हिरण की तरह कल्पनाओं के रेगिस्तान में कुलांचे भरवाने लगा। 'पुरूष' शब्द या आकृति का स्मरण मात्र हीउसे वहतीव्र अनुभूति प्रदान करता था जो महाप्रभु श्री कृष्ण चैतन्य और भगवती मीरा को श्याम नाम से होती थी।अंतर केवल इतना ही था कि उस कामन कृष्ण मय नहीं पुरूषमय हो गया था।छोट`बहाने से बहलने वाली भूखी युवती के मन में भोग `हुए अनेक क्षणो का सुखद स्वाद कण–कण में घुल–घुलकर क्रमशः उसकी काया में अकड़न भरने लगी।"[3]

मोहना की माँ ने जब से उसे बताया था किकल से उसका काम करने मोहन यानी पुरूष आएगा तब से निर्गुन के मनमें लाखों कल्पनाएँ भरने लगी।उपरोक्त वाक्य से साफ पता चलता है कि 'पुरूष' का नाम सुनते ही पुरूष मय हो गया। जैसे भूखे को बहुत दिनों के बाद खाना का नाम बतादो।उसका मन विचलित हो जाता है।ठीक उसी प्रकार निर्गुन का भी हुआ।जैसे कोई कृष्ण भक्ति में कृष्णमय हो जाता है।उठते–जागते हर समय कृष्ण–कृष्ण जपते रहते हैं उसी प्रकार इस निर्गुन का भी हुआ लेकिन कृष्ण के जगह पर पुरूष मय बनकर।पुरूष का नाम सुनते ही निर्गुन ने बबुआ सरकार के साथ या बसन्तलाल के साथ जो सुखद अनुभव मिला था सब एक तरफ से जाग गया।

निर्गुन की यह पुरूष की ईच्छा ने ही निर्गुन को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया।इसका कारण केवल निर्गुन को नहीं ठहराया जा सकता।वातावरण और परिस्थिति का भी बहुत बड़ा हाथहै। एक जवान स्त्री या पुरूष को भी इस तरह से बंद रखना, उसकी काम–ईच्छा को दबाकर रखना घात क साबित होताही है।निर्गुन भी उसी परिस्थिति की मारी हुई लड़की थी।निर्गुन ने इसी कामा वेग के चलते मोहना के साथ भागी थी।मोहना के साथ भागने पर निर्गुन अपने को मेहत रानी तक बना लेती है।गाली सुनती है, क्या–क्या दुःख न झेलती है? कभी कभी उसे इस हालत के लिए वह अपने कोको सती भी है। लेकिन इस बात को भी नहीं भुलना चाहिए कि निर्गुन जिस मनः स्थिति में उस समय थी उसी मनः स्थिति के हिसाब से सोचना ज्यादा उचित होगा। परमानंद श्री वास्तव कहतेहैं कि––"वह जिस विकल काम शक्ति में मेहतर युवक मोहना के साथ भागती है और जिस त्रासद स्थितियों में अपने को डाल देती है वह एक चिनगारी से बचकर अपने को जंगल की आग में डाल देने जैसी है।"[4]

यह बात बिलकुल सही है कि वे अपने कोका माशक्ति के मुसीब तों मेंडाल लेती है लेकिन क्या निर्गुन के पास और कोई विकल्प था? क्या वे अपनी मर्जी से इस परिस्थिति का कारण बनी थी? क्या मोहना मेहतर की जगह पर कोई औरभी होता तो क्या उसे वह स्वीकार नहीं करती? क्या उस समय अपने को संभाल सकती थी? निर्गुन की इस परिस्थिति ने उसे मोहना के साथ भागने को मजबूर किया। मुझे लगता है कि इस सबके पीछे समाज भी जिम्मेदारी थी कि ऐसी परिस्थिति पैदा न होपाए।समाज भी कहीं न कहीं इसका दोषी है।हम जीवन के मूल प्रश्नों को ही भूल गये हैं।मैंने पहले भी बताया है कि जैसे भूखे पेट रहने पर हर वक्त खाने का ही स्मरण होता रहता है।उसी प्रकार काम की भूख भी है। हमें जब काम की भूख लगती है तोहम आगे क्या होगा? यह नहीं सोच पाते। यही तो निर्गुन ने भी किया तो गलत किया?इसी संदर्भ में डॉ0 गणेश पवार लिखते हैं कि––"जहाँ संस्कार की कमियाँ जलती होंऔर काम–ज्वार में तपती स्त्री को ठंडे वृद्ध से भोगबनाने की लालसा रखा जाए तो ऐसे समय में स्त्री क्या कर सकती है।"[5]

निर्गुन ने इस काम शक्ति के लिए बहुत कुछ भोगा भी है।मेहतर जाति को अब तक दूर से ही देखा था। मेहतर जाति के रीति–रिवाज, उनके रहन–सहन सब कुछ निर्गुन को अपनाना पड़ा। सूअर का मांस तक खाना पड़ा। एक ब्राह्मण स्त्री जो अभी तक मांस को छुआ तक नहीं था जो बादमें उसको खाना पड़ा।निर्गुन मोहन के साथ उस कामावेग में भाग तो आयी लेकिन वह इतनी सारी समस्याओं कोन हींभांप पायी।मोहना की मामी ने भी निर्गुन को बहुत परेशान किया। इस सबको झेलते हुए भी निर्गुन आगे बढ़ती गयी।मोहन निर्गुन की एक खासबात ये है कि निर्गुनियाँ ने कभी भी अपनी कामावेग को छिपाया नहीं हाँ वे अपने अंदर के कामावेग के बारे में खुलकरबात करती है।

निर्गुन मोहना के साथ भागने के बाद पछता भी रही थी लेकिन तभी तक जब तक उसे मोहना से प्यार नहीं हुआ था। निर्गुनियाँ कहती है कि एक औरत को किसी भी हाल में अपने पुरूष को काम–सुख देना ही पड़ता है चाहे परिस्थिति जैसी भी रही हो।कभी–कभी भूखी रहने के बावजूद भी मोहना को वह सुख देनाा निर्गुन को अखड़ता था।निर्गुन सोचती है कि मैंने जिस सुख के लिए अपना सब कुछ जाति, धर्म, नाम सब कुछ गवाँ दिया वो भी अब मुझे नरक जैसा लगता है।

एक औरत की यहीं विडंबना है कि वह कहीं की नहीं रह पाती। निर्गुन जिस सुख को पाना चाहती थी वह सुख तो मिल गया लेकिन दूसरा दुख को लेकर।निर्गुन की कामा शक्ति ने ही एक ब्राह्मण से मेहतरानी का रास्ता तय कराया।इसमें कोई दो राय नहीं है कि निर्गुन मोहना को अपने इशारे पर नचाना चाहती थी वो पहले सोची होगी कि मै ब्राह्मण की पुत्री जैसे कहूँगी मोहना

मेहतर करेगा।लेकिन वो बात निभन हीं सका। इस बात के लिए भी निर्गुनको दुःख है।लेकिन वो भारत देश की पुरूष वादी विचार को भूल गयी।अपने देश में पुरूष कितना भी नकारा हो, बुद्धि हीन हो फिरभी अपनी स्त्री को अपने इशारों पर ही नचाता है।

सच पूछा जाए तो निर्गुन का संस्कारी मन एक पुरूष को भजना चाहता है लेकिन का मी मन अनेक पुरूष की कल्पना करता है।निर्गुन मोहना के साथ भागने के बाद इसी को भेजना चाहता था लेकिन मोहना के डाकू बन जाने के बाद उसके चले जाने के बाद उसका मन डोल गया। निर्गुन बसन्त इंस्पेक्टर जो पूर्व में उसका प्रेमीही था उसके साथ संबंध मनाने से भी हिचक नहीं रही थी।निर्गुन को हर हालत में जीने के लिए एक पुरूष का रक्षक की जरूरत थी उसे किसी जाति धर्म से मतलब नहीं था। वो हिन्दू–मुसलमान, क्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण, चमार कोई भी हो उसके काया सुख कोपाने के लिए कोई भी मिले क्या फर्क पड़ता है।निर्गुन को किसी भी रूप में नारी काया के सशक्त पुरूष चाहिए था। वो सुख–सम्मान से जीने की सुविधा चाहिए था।जाति, वर्ग और वर्णनहीं।निर्गुन किसी के साथभी अपनी नारी काया संरक्षित रखना चाहती थी।

निर्गुन की इस बात से मुँह नही ंमोड़ा जा सकता है कि निर्गुन के मन में भी अलग–अलग पुरूषों को भोगने की इच्छा दबी थी।निर्गुन अपने को एक पुरूष से संरक्षित करना चाहती थी। यह क्रम उसके जीवन में शुरू से अंत तक देखा जा सकताहै।निर्गुन का मन एण्डरसन के प्रति भीलो भाया था लेकिन उस समय तक निर्गुन मोहना की बच्चे की माँ बन चुकी थी।निर्गुन को औफर भी मिला था अमेरिका चलने की और शादी करने की भी। एण्डरसन साहबइन पर बड़े आसक्त थे।

वस्तुतः शारीरिक सुख के कारण अपने आपको मोहना के हवा ले तो कर देती है लेकिन कुछ दिनों के बाद उसका परिणाम भी देखने को मिलता है। निर्गुन ने जिस क्षणिक सुख के कारण अपना सब कुछ बिगाड़ लेती है। वो क्षणिक सुख उसे अंतिम–अंतिम तक पीछा नहीं छोड़ता।निर्गुन अपने आपको बचाने का काफी प्रयास करती है लेकिन वो छुटकारा नहीं पा सकी। जिसका मवासना ने उसको पूरी तरह से बर्बाद कर दिया जिससे वो दूरभाग जाना चाहती थी लेकिन भाग नहीं पाती। मधुरेश सही ही कहते है कि शरीर सुख के क्षणिक आवेश में मोहना को अपनातो लेती है, लेकिन उसके मानसिक संघर्ष का एक लम्बा सिलसिला वस्तुतः आगे चलकर ही शुरू हो जाता है।"[6]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि काम भी जीवन का महत्वपूर्ण अंग है जिसे भूलाकर जीवन की कल्पना नहीं किया जा सकता।आज भी समाज में नैतिकता की आड़ में काम को धिक्कारा जाता है जो गलत है।काम भी हमारे लिए पेट की भूख की तरह ही है जिसे नजर अंदाज करके सुखी नहीं हुआ जासकता।नागरजी ने ये उपन्यास काम की महत्ता को भी बताने का प्रयास किया है।

संदर्भसूची:

1. नागर अमृतलाल, नाच्यौ बहुत गोपाल, राजपाल एंडसंस, नई दिल्ली, संस्करण 2013, 1978, पृ0 09
2. वही, पृ0 46
3. वही, पृ0 58
4. श्री वास्तव परमानंद, उपन्यास का पुनर्जन्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृति (2015), 1995, पृ0 73
5. पवार डॉ0 गणेश, अमृतलाल नागर के कथा साहित्य का विवेचन, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण प्रथम, 2007, पृ0 82
6. मधुरेश, अमृतलालनागर : व्यक्तित्व और रचना–संसार, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, संस्करण प्रथम, 2016, पृ0 87

सम्पर्कसूत्र

राम ईश्वर कुमार

सहायक प्राध्यापक (गेस्ट फैकल्टी) गोस्सनर कॉलेज, राँची

सी0ओ0 श्री नरेन्द्र कुमार यादव

विजय पथ, पण्डरा, पशुआहार के पीछे

रातुरोड, पोस्ट–हेहल, राँची– 834005

मो0 नं0 – 9955394950

Email - res3192@gmail.com

35

भारत चीन सीमा विवादः –तिब्बत अध्याय

Dr. Bharat Ratnam

सारांश

सीमाविवादः–ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-भारत ने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की वहीं चीन में 1 अक्टूबर 1949 में साम्यवाद सीापित हुआ।भारत ने नवोदित चीन कोपूर्ण मान्यता प्रदान की व अपनी ओर से मित्रता व सहयोग की उत्कट इच्छा को अभिव्यक्त किया।भारत पहला गैर साम्यवादी राष्ट्र था जिसने चीन को मान्यता प्रदान की थी।साम्यवादी चीन अपने शैशवकाल में गैर साम्यवादी देशों के प्रति बहुत कठोर था।वहभारत की गुटनिरपेक्ष नीति का विरोधी था।साम्यवाद सीापना पर भारतीय साम्यवादीदल द्वारा भेजे गये शुभ संदेश के जवाब में माओत्सेतुंग ने जवाब दिया कि–

''मैं मजबूती से यह विश्वास करता हूँ कि भारत साम्यवादी दल के प्रयास व भारतीय समाजवादियों की कोशिशों से जल्द ही भारत पश्चिमी साम्राज्यवाद व बुर्जु आनीतियों के जुए को उतार देगा और चीन की तरह एक दिन समाजवादी व जनवादी राष्ट्र के रूप में उभरेगा। उस दिन से मानव इतिहास से साम्राज्यवाद व प्रतिक्रिया वादी युग का अन्त होगा।''

चीन के कठोर रवैये के जवाब में भारत ने कठोरता की बजाय एक शांतिपूर्ण व सरल सिद्धान्त को अपनाया। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के इस कथन में यह पूर्ण रूप से झलकता है कि–

''हमें चीन के प्रति अपनी नीति को सोच–समझकर तथा 2000 मील की उसके साथ निकटता को सोचकर तय करना है। हमें यहभी ध्यान रखना है कि उसके साथ पूर्व में क्या सम्बन्ध थे, जिससे कि हम शांति व मित्रता के साथ रह सकें।''

भारत ने चीनको 30 दिसम्बर 1949 को मान्यतादी।भारत के इस कदम की अमरीका आदि देशों द्वारा कड़ी आलोचना की गयी। परन्तु भारत चीन से मित्रता के सन्दर्भ में तनि कभी विचलित नहीं हुआ।भारत के प्रति चीन का व्यवहार 1952 तक नकारात्मक, कठोर एवं उपेक्षा का रहा, जबकि भारत की नीति हमेशा उसके पक्ष में रही।भारत ने पग–पग पर चीन का एक अच्छेमित्र की तरह साथ दिया। 1950–51 में कोरिया युद्ध प्रकरण में अमरीकी नाराजगी को झेलते हुए भारत ने चीन का पक्ष लिया। कोरिया युद्ध विराम में भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा शान्ति सेना को कोरिया में 38^{0} अक्षांश को पार करने के निर्देश देने के समय भारत ने ही इसका कड़ा विरोध किया था एवं इसे खतरनाक पश्चिमी नीति कहा था।नवम्बर 1950 में जब चीन से संयुक्त राष्ट्र की सेनाओं को पीछे हटा दिया था तब 1 फरवरी 1951 को भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा चीन को आक्रामक घोषित करने का विरोध किया।साम्यवादी शासन सीापित होने के पश्चात् चीन ने देश की सीमाओं के विस्तार का निर्णय लिया जिसके चलते अल्पसंख्यक समुदाय को आतंकित किया जाने लगा। चीन तिब्बत को अधिकार में लेने के लिए विभिन्न योजनाएँ बनाने लगा, जबकि तिब्बत चीन का भाग नहीं था।

तिब्बत समस्या व समाधान :–तिब्बत अपने पूर्व इतिहास में एक स्वतंत्र राज्य था।बाद में 1720 ए.डी. से 1792 ए.डी. में वहाँ चीन के माँचूसाम्राज्य का अधिकार रहा। इस काल के बाद भी वहाँ पर माँचू साम्राज्य का प्रभाव देखा जाता रहा, परन्तु इस प्रभाव के रहते भी तिब्बत एक स्वतन्त्र देश की तरह व्यवहार करता था।उसकी अपनी फौज व विदेश सम्बन्ध थे।तिब्बत में भारत को भी कुछ विशेषसुविधाएँ प्राप्त थी।अंग्रेजी हुकूमत काल में अंग्रेजों ने भारत चीन व तिब्बत में सीमा निर्धारण करने के लिए सन् 1914 में एक सम्मेलन आयोजित किया जिसमें ब्रिटिश विदेशी सचिव सरहेनरी मैकमोहन ने रेखा सुझाइ 'जिस पर तिब्बत व भारत ने अपनी सहमति दी व चीन ने सहमति नहीं दी।भारत इसी रेखा जिसे वर्तमान में कैक मोहन रेखा कहते हैं, को अपनी सीमा मानता रहा। 1949 में चीनी साम्यवादी शासन ने तिब्बत पर अपना अधिकार जताया। 7 अक्टूबर 1950 को Peoples Liberation Army ने बिना किसी पूर्व सूचना व चेतावनी के तिब्बत में प्रवेश किया।PLA की 18वीं व 62वीं यूनिट के 40,000 सैनिक ''तिब्बत की जनता को साम्राज्यवाद से मुक्त कराने'' के लिए तिब्ब में प्रवेश करगये। 25 अक्टूबर 1950 को पीकिंग ने घोषणा की, **''चीन जनवादी सेना की यूनिटों को 30 लाख तिब्बतियों को पश्चिमी साम्राज्यवाद से स्वतन्त्र कराने व चीन की पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए आदेश दिया जा चुका है।''**

इस घोषणा के बाद भारत ने अपना रुख स्पष्ट करते हुए कहाकि,**''तिब्बत समस्या का हल शान्तिपूर्ण होना चाहिए।''**जवाब में चीन ने कहा कि, **''तिब्बत समस्या उसकी घरेलू समस्या है क्यों कि तिब्बत उसका अभिन्न अंग है तथा इस पर कोई बाहरी हस्तक्षेपबर्दास्त नहीं किया जाएगा।''**तिब्बत घटना ने भारत की सीमा पर प्रश्न चिह्न ला खड़ा किया।प्रधानमंत्री नेहरू ने स्पष्टीकरण देते हुए संसद में कहा कि, **''मैकमोहन रेखा भारत की उत्तर पश्चिम में सीमा रेखा है, जिसे 1914 में निश्चित किया गया था।नक्शा या बगैर नक्शे किसी को भी इस रेखा को पार नहीं करने दिया जाएगा।''**

भारत ने चीन के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को बनाये रखने के

Dr. Bharat Samrat
Asst. Professor (vsy)
Govt. Girls College
Behror (Alwar) Rajsthan
Pin-301701
Mob.9414466238.

लिए तिब्बत आक्रमण के प्रति उदासीनता बरतते हुए अत्यधिक सहनशीलता का परिचय दिया।चीन ने मई 1951 में दलाईलामा के एक प्रतिनिध को 17 सूत्री समझौते पर हस्ताक्षर के लिए बाध्य किया। इस समझौते के तहत तिब्बत चीन का एक क्षेत्र होगया। इस तरह तिब्बत को अवास्तविक स्वायत्तता प्रदान की गई। सितम्बर 1952 मेंभारत व चीन के मध्य एक समन्वयात्मक समझौता हुआ।उसके बाद भारतीय मिशन कोल्हा सामेंमहा वाणिज्यिक दूतावास का दर्जा दे दिया गया। इस तरह तिब्बत आक्रमण की घटना की चीन व भारत द्वारा भुला दिया गया। 26 जनवरी 1951 को बीजिंग में भारतीय दूतावास में भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर माओ ने भारत चीन मित्रता को नया आयाम प्रदान किया।

इन सम्बन्धों की छाया में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू एवं चीन के प्रधानमंत्री चाउ–एन–लाई के मध्य 29 अप्रैल 1954 को एक 8 वर्षीय व्यापार एवं परस्पर सम्पर्क सन्धि पर समझौता हुआ। इस समझौते में चीन एवंभारत ने पाँच सिद्धान्तों को मानने का संकल्प किया जिसे पंचशील सिद्धान्त कहा जाता है।चीन ने भारत की प्रभुसत्ता एवं सीमाओं के प्रति सम्मान प्रकट करने का वचन दिया। भारत द्वारा तिब्बत पर चीन की प्रभुसत्ता स्वीकार कर लेने से भी दोनों देशों के मध्य निकटता आयी।

जून 1954 में चीन के प्रधानमंत्री चाऊ–एन–लाई ने भारत की यात्रा की यहाँ पर उनका जोरदार स्वागत किया गया तथा दोनों नेताओं ने पंचशील सिद्धान्त के प्रति अपनी आस्था प्रकट की।भारतीय इतिहास में चीन भारत सम्बन्ध के इस काल को प्रमोद काल कहा जाता है।

- P.C. Chakravarti, "India China Relations' (Mukhopadhyaya publishers, Calcutta, 1961.) p-12.
- Government of India, "Lok Sabha Debates" (Vol - 2, 1953) Cols 2231-2240.
- Kanti Bajpai, Amitabh Mattoo "The peacock and Dragan" (Har- Anand Publications) 2000, P. 432
- Ibid, p. - 432
- M.L. Sali. Op. cit. p- 74
- Ibid- p. 74
- Subramaniam Swamy "India's China Perspective" (Konark publishers-2001) p-43
- C.V. Ranganathan and Vinod C. Khanna "India and China (the way ahead after "Mao's India war") Har Anand pub. - 2000, p- 30.
- Subramaniam Swamy, op. cit. p- 45

36

पानीपत नगर में ठोस अपशिष्ट के कारणों एवंप्रभावों का एक अध्ययन

डॉ.संदीप कुमार यादव, नीलम कुमारी

सारांश

आज प्रदूषण का हाहाकार विश्व के प्रत्येक कोने में मचा हुआ है, तथा समस्या मानव तथा अन्य संजीव प्रजातियों के अस्तित्व के लिए एक खतरा बन चुकी है। प्रदूषण का मूल कारण मानव है। जैसे जैसे मानव जनसंख्या में वृद्धि हो रही है उसी के समान्तर प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ राष्ट्रों के बीच विकास एवं तकनीकी शहंशाह बनने की होड में मानव ने जान बुझकर प्रकृति एवं प्रकृति प्रदन्त उत्पादो का इस प्रकार दोहन किया है कि आज बहुत से प्राकृतिक संसाधन केवल अपनी अन्तिम सांसे गिन रहे है। इतना ही नहीं इस अतिदोहन के फलस्वरूप जैवमण्डल के जैविक तथा अजैविक घटको के मध्य का सन्तुलन इस तरह असन्तुलित हुआ है कि जिसके दुष्परिणाम के प्रभाव पर्यावरण एवं जीवों के साथ स्वयं मानव के अस्तित्व के शत्रु बन चुकेहै।

कुंजी शब्द :

प्रदूषण, प्रजातियों, तकनीकी, जनसंख्या वृद्धि, प्रकृति, जैव मण्डल, शत्रु ।

प्रस्तावनाः

पर्यावरण संरक्षण से जुड़े मुद्दो पर जब भी बात की जाती है, तो सर्वाधिक चर्चा वायु.प्रदूषण और जल प्रदूषण की होती है। इसमे संदेह नही किया औद्योगि कवि कास और इसके साथ हमारी जीवन शैली मे आए अभूत पूर्व परिवर्तन ने पर्यावरण और प्रकृति के मूलस्वरूप को बदल दिया है। इस बदलाव के दुष्परिणा महमलगभग प्रतिदिन झेल रहे है।ग्लोबलवार्मिंग, ओजोनपरत मे छिद्र, अम्लीय वर्षा, औद्योगिक गतिविधियों की निरंतर, अनियमित और अनियंत्रित वृद्धि ने पर्यावरण के समक्ष एक गंभीर संकट खड़ाकर दिया है। जिस पर गंभीरता पूर्वक चिंतन किया जा रहा है और अब तक पर्यावरण को जो क्षति पहुंच चुकी है, उसकी भरपाई के तरीको पर भी विचार किया जा रहा है।

लेकिन वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण के अलावा 21वीं सदी के आरंभ मे पर्यावरण के सामने एक और गंभीर चुनौती आ खड़ी हुई है और वो चुनौती है, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की। ये भी सच है कि पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य परपड़ रहे इसके दुष्परिणामों को देखते हुए भी इसकेप्रति अबतकवांछित जागरूकता या इसके निपटान के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता का अभाव साफ तौर पर देखा जा सकता है।ठोस अपशिष्ट पर विस्तृत चर्चा करने के पूर्व वास्तव में ठोस अपशिष्ट क्याहै ये जानलेना जरूरी है।

ठोस अपशिष्ट :–किसी भी कार्य के संपादन के पश्चात् बचा हुआ ठोस पदार्थ, जिसका तुरंत या भविष्य में कोई सार्थक उपयोग नहीं रह जाता या किसी प्रकार से वह अनुपयोगी रहता है, ठोस अपशिष्ट कहलाता है। ये ठोस अपशिष्ट मात्रा और आकार में अधिक होने के कारण फेंके जाने पर भूमि के बड़े भाग का उपयोग कर लेतेहै। इस कारण भूमि का वह हिस्सा उपयोग के योग्य नहीं रह जाता।इसके अलावा अपशिष्ट के क्षय होने से बदबू उत्पन्न होती है और आसपास का वातावरण दुर्गम मय हो जाता है। विभिन्न कीटो, जीवाणु और वायरस आदि के पनपने से अनेक बीमारियां उत्पन्न होने और फैलने की संभावना बनी रहती है। यही नहीं अपशिष्ट एवं इन से उत्पन्न होने वालाली चेट सतह एवं भूमिगत जल को प्रदूषित भी करता है।

औद्योगिकी करण और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से प्रवास के कारण नगरीय केन्द्रो की जनसंख्या बढ़ती जार ही है। नगरीय जनसंख्या वृद्धि विश्व का एक परिदृष्य हो पिछले 200 वर्षो मे नगरीय जनसंख्या मे 100 गुणा वृद्धि हुई है।जनसंख्या वृद्धि के कारण नगरों में पेय जल, आवास, चिकित्सा, परिवहन, पर्यावरणीय समस्याएं, सीवेज और स्वच्छता इत्यादि के कारण नगरीय क्षेत्रो की भूमि पर दबाव पड़ा है।स्वच्छता नगरीय करण से जुडी समस्याओं में से एक है।ठोस अपशिष्ट के रूप मे कचरा, या तरल अवस्था मे अपशिष्ट मानव और औद्योगिक इकाईयो के द्वारा उत्पन्न होता है। हानिकार करा सायनिक अवशेष और गैर अवकमित अपशिष्ट औद्योगिक इकाइयों द्वारा उत्पन्न होते है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 57 प्रतिशत भूमि नगरपालिका के ठोस अपशिष्टो से भरी हुई है।जिसमे से 16 प्रतिशत भस्म हो गया तथा 27 प्रतिशतपुनः नवीनीकरण या कम्पोस्ट किया गया है। यू.के. औरअन्य यूरोपीय देशों में नगर निगम के ठोस अपशिष्ट की पुनरावृत्ति को अपनाया गयाहै या ठोस अपशिष्टो को कम करने का कहागया है।जापान ने अपना दृष्टिकोण स्थानांतरित कर दिया है और भस्म के पारम्परिकतरी को और जमीन के गढढ़ो को भरने के लिए ठोस अपशिष्टो का नवीनीकरण और पुनः चक्रण की विधियों का, बढ़ावा दिया है।

अध्ययन की समस्या :–

हमारे देश में ठोस अपशिष्ट के डंपिंग सीानों में कमी है अपशिष्ट हरजगह मौजूद है चाहे वह नगर, कस्बा, मंदिर या मस्जिद में हो यह समस्या पिछले दो–तीन दशकों से लगातार बढ़ रही है।जिससे स्वास्थ्य के मुद्दों एवं पर्यावरण में गिरावट आई है आज हम घरेलू व औद्योगिक और कृषि अपशिष्ट सहित कई प्रकार के अपशिष्ट के शिकार हैं। प्रतिवर्ष देश में ठोस अपशिष्ट या कूड़े का टनो की मात्रा में उत्पादन होता है और इसकी केवल मात्रा 1: का पुनः नवीनीकरण होता

है। शेष कचरे की मात्रा या तो सड़कों में या खेतों में या फिर बरसात के मौसम में नालियों में जमा हो जाती है कुछ नदियों के माध्यम से महासागरों तक पहुंच जाती है।भारत के अन्य नगरों की तरह ही पानीपत में गर्मी ने तो ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या से निपटने की तकनीक है और यही निष्पादित ठोस अपशिष्ट से निपटने के लिए कोई लैंडफिल क्षेत्र है।अपशिष्ट के सही निपटान के अभाव में वातावरण खराब हो जाता है लेकिन आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए कई विकसित देशों ने न केवल अपशिष्ट प्रबंधन के द्वारा प्रदूषण को कम किया बल्कि इसे ऊर्जा के स्रोतों के रूप में भी अपनाया है अपशिष्ट के रूप में फेंके जाने वाली कई चीजों का पुनः उपयोग करना संभव है संसाधनों की बर्बादी उन के पुनर्चक्रण से रोकी जा सकती है और पर्यावरण को संरक्षित किया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

शोध का सामान्य उद्देश्य पोस्ट अपशिष्ट के प्रबंधन की वर्तमान स्थिति की पहचान करना और नगरनिगम की मदद से ठोस अपशिष्ट के लिए सबसे उपयुक्त स्थान खोजने के लिए इसक निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

(क) अध्ययन में अपशिष्ट उत्पादन की प्रकृति और मात्रा और उसके प्रकार का मूल्यांकन करना ।

(ख) अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली की जांच करना।

(ग) अध्ययन क्षेत्र में अपशिष्ट उत्पादन और प्रबंधन के प्रभावों का विश्लेषण करना।

(घ) अध्ययन क्षेत्र में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की स्थिति में सुधार के लिए सुझाव देना।

अध्ययन का महत्व–

किसी नगर में अच्छा जीवन इस बात पर निर्भर करता है कि उसका पर्यावरण कैसा है।वहां साफ–सफाई कैसी है और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन किस तरह का है।वर्तमान में बड़े नगरो में कचरा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन बड़ी चुनौती है लेकिन इसे सही कर लिया जाए तो पर्यावरण व स्वास्थ्य की दृष्टि से सही हो सकता है विकसित और विकासशील देशों में पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण अपशिष्ट है।विकास की बढ़ती तीव्रता अपशिष्ट उत्पादन का एक प्रमुख कारणहै, इसका कारण नगरीकरण और समृद्धि है। जितना अधिक आर्थिक रूप से संपन्न देश या नगर होगा उतना ही अधिक अपशिष्ट उत्सर्जित होगा।गरीब और समृद्धि व दक्षता और अक्षमता से भी जोड़कर देखा जा सकता है। इसका अभिप्राय यह है कि जहां आबादी में सुविधाओं के लिए आकांक्षाएं अधिक है वहां अपशिष्ट की मात्रा में वृद्धि होगी। आजभारत और चीन दुनिया की महत्वपूर्ण दुनिया के प्रमुख उदाहरण हैं दोनों आर्थिक विकास में प्रगति कर रहे हैं इस प्रक्रिया मेंवे अपशिष्ट के ढेर का भी उत्पादन कर रहे हैं।इसके अन्य कारणों में बदलती जीवन शैली अपशिष्ट प्रबंधन के विकल्पों की कमी और तेजी से खत्म होती नैतिकता शामिल है।

अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तावित शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र पानीपत नगर है। यह भारत के हरियाणा राज्य में स्थित पानीपत जिले का एक नगर है। 1 नवंबर 1989 को तत्कालीन करनाल जिले से पानीपत जिला बनाया गया था। 24 जुलाई 1991 को इसे फिर से करनाल जिले में मिला दिया गया था। 1 जनवरी 1992 को यह फिर से एक अलगजिला बन गया।पानीपत हरियाणा के पूर्वी भाग में ग्रैंड ट्रंक रोड पर स्थित है।पानीपत नगर का भौगोलिक विस्तार 29°09'' 15'' उत्तरी अक्षांश से 29°27' 25'' उत्तरी अक्षांश तथा 76°17' 06'' पूर्वी देशांतर से 76 18''15'' पूर्वी देशांतर है। यह राज्य की राजधानी चंडीगढ़ से लगभग 165 कि.मी. दक्षिण और दिल्ली से लगभग 85 किमी उत्तर में है। पानीपत नगर का कुल क्षेत्रफल 62 वर्ग किलोमीटर है जिसमें 32 नगर पालिका वार्ड में 2,94,292 (2011 की जनगणना) जनसंख्या निवास करती हैं।

मानचित्र 1:अध्ययन क्षेत्र की स्थिति

स्रोत : शोधार्थी द्वारा आर्कजी आईएस की सहायता से निर्मित

ठोस अपशिष्ट के कारण एवं प्रभाव :पानीपत नगर में ठोस अपशिष्ट के कारणों एवं प्रभावों को निम्न बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता हैं :

1. नगर में खाली पड़े प्लॉटः नगर में खाली पड़े प्लॉट भूमि प्रदूषण की सबसे बड़ी समस्या है क्यों कि नगर मेंडंपिंग की व्यवस्था सही न होने से कूड़ा खाली पड़े प्लॉटो में हीडाल दिया जाता हैं जिससे वही स्थान कूड़े कचरे का ढ़ेर बन जाताहैं।

2 . निकासी की व्यवस्था का सही न होना :– यह समस्या सबसे पहले उन कॉलोनियों में होती है जो अभी नई बनी है क्योंकि न तो वहां सड़के पक्की है और न ही नालियां इतनी अच्छी बनी होती है जिससे पानी की निकासी सही हो बरसात में तो इसकी समस्या और बढ़ जाती है।

3. अस्पतालों के अपशिष्ट :–अस्पतालों से निकली हुई सीरिंज, दवाई के रैपर, ग्लुकोज की खाली बोतलें, यूरिन की थैलियां, गन्दें रूई के बन्डल, ऑपरेशन में प्रयोग में ली गई सामग्री इत्यादि। अकसर अस्पतालों के आस–पास ढेरों के रूप में या बिखरी हुई देखने को मिल जातीहै।जब कोई पशु ,गाय, भैंस, सुअर इन ढ़ेरों के पास आकर खाने पीने की चीजें ढूंढने लगते है तो खाने–पीने की वस्तुओं के साथ उनके पेट में दवाईयों के रैपरत था सीरिंज भी उनके पेट में चले जाते है।

4. मानव स्वास्थ्य प्रभाव :–ठोस अपशिष्ट से उत्पन्न वायु प्रदूषण रोगों को जन्म देता है। जैसे– फेफड़ो का कैंसर, अस्थमा, फेफड़ो से सम्बन्धित होने वाले रोग पर्यावरणीय रोग इत्यादि हो जाते है। वायु

में वितरित बहुत सी धातुओं के कण बहुत से रोग उत्पन्न करते है। शीशे के कण विशेष रूप से नाड़ी मंडल में समस्या उत्पन्न करते है। कचरा जब एक जगह इकट्ठा होता है।तो उसमें कई प्रकार के मक्खी–मच्छर एवं चूहो का घर बन जाता है जो विभिन्न रोगोंको जन्मदेता है जैसे–है जा, मलेरिया, डेंगु, प्लेग, निमोनिकप्लेग इत्यादि।

5. जल अवरूध :–ठोस अपशिष्ट को इधर–उधर फेंकने से एवं बर सात में पानी के साथ बहकर नालियों एवं नालों में चला जाता है तथा पानी को बहने से रोक देताहै। जिससे अवरूध की समस्या उत्पन्न हो जाती है और पानी सड़कों पर बहने लगता है।

6. उद्योगों से उत्पन्न प्रदूषण :–उद्योगों से निकला हुआ ठोस अपशिष्ट आस–पास के क्षेत्र मेंडाल दिया जाता है।वह ठोस अपशिष्ट नगरीय जीवन के लिए एक बहुत बड़ी समस्या है उद्योगो से निकलने वाली राख से उड़ने वाले कणमानव शरीर में प्रवेश कर फेफड़े खराब कर देते है।कुछ अपशिष्टों को आस–पास के गांववाले खेतों में डाल देत है जो कि फसलों के लिए हानिकारक है।

7. जातीय प्रदूषण :–जो क्षेत्र मुस्लिम जाति का होता है वहाँ पर पशुओं को काटा जाता है फिर उनके बचे–कुचे यजोकाम नहीं आंतरिक अंगो को फेंक देते है। जिससे मौहल्ले में बदबु फैल जाती है। हिंदू क्षेत्रों में जहां हिन्दू अधिक रहते है,वहां पर टोने–टोट के, पूजन सामग्री इत्यादि को बीच सड़को पर फेंक देना भी भूमि प्रदूषण की समस्या है।

8. सड़को पर उड़ती धूल :–आजकल सड़को पर उड़ती धूल भी नगरीय प्रदूषण की एक बड़ी समस्या है।जब हम अपने वाहन से या पैदल सड़को पर चलते है तो एक प्रकार की परत सी हमारे पूरे शरीर पर जम जाती है।

9.अपशिष्टों की डम्पिंग व्यवस्था का सही न होना :–नगरीय जन जीवन अस्त–व्यस्त होगया है क्योंकि नगर में सड़कों पर जगह–2 कूड़े के ढेर देखने को मिल जातेहै। नगर पालिका के द्वारा भी इसके उचित प्रबन्ध नही किए गए।पानीपत नगर में कुल 32 डम्पिंग है।जबकि इतने बड़े नगर में अधिक डम्पिंग की जरूरत है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि पानीपत नगर में जोभी अपशिष्ट जनित समस्याएँ उत्पन्न हो रही है, उसके पीछे तीव्र जनसंख्या वृद्धि नगरी करण तथा अविवेकपूर्ण विकासात्मक कार्यत था उपभोगवादी प्रवृत्ति रही है।अतः नगर की अपशिष्ट समस्यायें कम करने था पोषणीय विकास, पोषणीय पर्यावरण व पोषणीय समाज की प्राप्ति के लिए हमें बड़े पैमाने पर पयावरणीय शिक्षा के द्वारा जनजाग रूकता फेलानी होगी । जिससे प्रत्येक नागरिक पर्यावरण के महत्व के बारे में समझे तथा उसका संरक्षण करे।

सन्दर्भसूची :–

1. अल्ताफ. एम. ए औरदेशाजो. जे. आर (1996). हाउस होल्ड डिमांड फॉर इंप्रूव्ड सॉलिड पेस्ट मैनेजमेंटः ए केसस्टडी ऑफ गुजरावाला, पाकिस्तान, वर्ल्ड डेवलपमेंट, वॉल्यूम 24, (5). पृष्ठ संख्या 857–868.

2. अलीफी, जेड, ई., एल्हादरी, आर. औरइलाश्री, ए. (2010). लैंडफिल साइटचयन से निपटने के लिए जी–आईएस एमसीडीएम को एकीकृत करना. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंडटेक्नोलॉजी, वॉल्यूम 10, (6), पृष्ठ संख्या 32–42.

3. आलम, आर. चौधरी, एम. ए. एल. हसन, जी. एम. जे. करन जीत, बी. और श्रेष्ठ एल. आर. (2008). जनरेशन, स्टोरेज, कलेक्शन एंडट्रांस पोर्टेशन ऑफम्यु निसिपल सॉलिडवेस्ट–ए केसस्टडी इनसिटी ऑफ काठमांडू कैपिटल ऑफ नेपाल. अपशिष्ट प्रबंधन, वॉल्यूम 28. पृष्ठ संख्या 1088–1097.

4. अग्रवाल, रेखा, (2021). ठोस अपशिष्ट और उनका प्रबंधन, वन संगयान, वॉल्यूम 8, (7), पृष्ठ संख्या 32–34.

5. कैंसरेस, एम. एल., उलिअरटे, एन., मतारा, एन. ए. औरजमोरानो, एम. (2005). सॉलिड इंडस्ट्रियल वेस्ट एंडदेयर मैनेजमेंट इन असेग्रा. अपशिष्ट प्रबंधन, वॉल्यूम 25, पृष्ठ संख्या 1075–1082

6. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड सीपीसीबी, (2004). नगर पालिका ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन पर्यावरण औरवन मंत्रालय, नई दिल्ली, भारत.

7. चौधरी, बी. के. (2007). दिल्ली में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, नगर पालिका निकायों की भूमिका का एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन भारत का राष्ट्रीय भौगोलिक जर्नल, वॉल्यूम 53, पृष्ठ संख्या 73–94,

8. बरूनर, पी. एच. और फेलनर, जे. (2007) विकासशील देशों में कचरे के लिए प्राथमिकता तय करना अपशिष्ट प्रबंधन और अनुसंधान, वॉल्यूम 25, पृष्ठ संख्या 234–240.

8. बनार, एम. (2007) एनालिटिक नेटवर्क प्रोसेस द्वारा म्यूनिसिपल लैंड फिल साइट चुनना. पर्यावरण भूविज्ञान, वॉल्यूम 52, पृष्ठ संख्या 747–751.

10. बनर्जी, जे, भार्गव, आर, गर्ग, पी. के. सिंघलाडी. सी. (2002) जी–आईएस पर्यावरण में अपशिष्ट निपटान साइट चयन. जी–आई एस इंडिया, पृष्ठ संख्या 12–15

11. बेसेंट, और राइन, एस. आर. (2001) रास्टर जी–आईएस का उपयोग करके पशु अपशिष्ट अनुप्रयोग के लिए उपयुक्त साइट का चयन पर्यावरण प्रबंधन, वॉल्यूम 28. (4), पृष्ठ संख्या 417–431.

12. भट्ट, अहमद, रऊफ. और अन्य (2018). नगर पालिका ठोस अपशिष्ट उत्पादन और भारत में इसके प्रबंधन का वर्तमान परिदृष्य विज्ञान और इंजीनियरिंग में उन्नत अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय र्जनल,

वॉल्यूम 7, पृष्ठ संख्या 419–431.
13. मोहन, एस. और सरस्वती, एस. (2002). जी–आईएस का उपयोग करके ठोस अपशिष्ट परिवहन का इष्टतममार्ग. जी–आईएस इंडिया, पृष्ठ संख्या 8–13.
14. रहमान, एम.एम., सुल्तान, के. आर. और होक, एम. ए. (2008). खुलना शहर में जी–आई. एस. दृष्टिकोण का उपयोग करके शहरी ठोस अपशिष्ट निपटान के लिए उपयुक्त सिल. बांग्लादेश–पाकिस्तान विज्ञान अकादमी की कार्यवाही, वॉल्यूम 45, (1), पृष्ठ संख्या 11–22.
15. राठी, एस. (2006). भारत में बेहतर नगर पालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण. अपशिष्ट प्रबंधन, मुंबई, वॉल्यूम 26, पृष्ठ संख्या 1192–1200.
16. सिंह, डी. एन. और सिंह, जे. (2005). ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर अध्ययनः एक समीक्षा एनाल्सनागी, पृष्ठ संख्या 74–90.
17. शेखर, ए. वी., कृष्णास्वामी, के. एन., टिकेकर, वी. जी. (1991). भारत में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए दीर्घ कालिक योजना. अपशिष्ट प्रबंधन और अनुसंधान, वॉल्यूम 9, पृष्ठ संख्या 511–523.

डॉ.संदीप कुमार यादव
एसोसिएट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक

नीलम कुमारी
शोधार्थी
भूगोलविभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक

37

जिन्दगी 50–50 : अभिव्यक्त किन्नर जीवन

प्रीति नागर, डॉ. मिंतु,

सारांश

भगवंत अनमोल का प्रसिद्ध उपन्यास जिन्दगी 50–50 किन्नर विमर्श पर आधारित है।यह वर्गवर्तमान समय में भी समाज में अपनी प्रतिष्ठा पाने के लिए संघर्षरत है।भारतीय समाज में मुख्य रूप से दो ही लिंगो को आधार मिला–एक स्त्री और दूसरा पुरुष। इन्हीं से ही सृष्टि का निर्माण हुआ, लेकिन इनके अतिरिक्त समाज में इन्हें छक्का, हिजडा, शिखंडी, किन्नर, थर्ड जेंडर, तृतीय लिंगी, खोजक आदि नामों से जाना जाता है।यह समाज का ऐसा वर्ग है जिसका जनानंगअ विकसित है अर्थात्जो पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाया हो।यदि हम ऐसे लोगों के मन कोझा कर देखें तो उनके अन्दर बेहद दर्द व पीड़ा भरी पड़ी है। इन्हें समाज से ही नहीं बल्कि स्वयं के परिवार व परिजनों से भी दुर्व्यवहार व जिल्लत का सामना करना पड़ता है और ऐसा इस समुदाय के साथ इसलिए होता है क्योंकि हमारे समाज में तृतीय लिंगी का कोई समुचित स्थान नहीं है।यद्यपि प्राचीन काल में राजा–महाराजा इस समुदाय कोर निवास की रक्षा के लिए सेना में भर्ती अथवा जासूसी आदिकार्यों के लिए नियुक्त करते थे,लेकिन वर्तमान समय में समाज ने इन्हें अपने से बहिष्कृत कर अलगाव की पीड़ा देदी। कालान्तर में यह समुदाय सड़कों व सिग्नमलों पर भीख मांगते, सेक्स वर्कर के रू‍ में कार्य करते, बच्चों के जन्मदिवस और शादी–विवाह मांगलिक कार्यों आदि पर ही नजर आते हैं। आजीविका की कमी के कारण उनकी हालत बद से बदत रहो गयी है।हाल–फिलहाल के वर्षों में कुछ रचनाएं ऐसी आयी हैं जिनका आधार थर्ड जेन्डर है।थर्ड जेन्डर की उपस्थिति साहित्य में उपेक्षित हीर ही है।संख्या की दृष्टि से ये रचना एंकम हैं– नीरजा माधव कृतय मदीप, प्रदीप सौरभ कृत तीसरी ताली, चित्र मुद्गल कृतनाला सोपारा, सुभाष अखिल कृत दरमियान, निर्मला भुराडिया कृतगुलाम मण्डी और महेन्द्र भीष्म अकृत किन्नर कथाव मैं पायल आदि उक्त रचना कारों ने थर्ड जेण्डर को केन्द्र में लाने का आरम्भ तो किया है वरना यह ऐसा वर्गहै जिस पर कोई भी साहित्यकार लिखना तो दूरबात करना भी पसंद नहीं करता है।

भगवंत अनमोल ने इस वर्ग की समस्याओं को समाज के सामने उजागर करने के लिए जिन्दगी 50–50 उपन्यास लिखा।चित्रित उपन्यास के केन्द्र में दो कथाएं सामान्तर चलती हैं।एक उसके पुत्र सूर्या की जिसके माध्यम से वह अपने भाई हर्षा को याद करता है। जिसे समाज उसकी लैंगिक विकलांगता के कारण बर्दाशत नहीं कर पाता है। दूसरी कथा चलती है उसकी प्रेमिका अनाया की, जिसके एकगाल पर जन्म चिन्ह उसके दैहिक सैन्दर्य को विकृत कर देता है। वह अपनी इस कमी के कारण समाज वस हकर्मियों के बीच चर्चा और सहानुभूति की पात्र है।ऐसे लोगों के प्रति सहानुभूति दिखाना भी उन्हें आहत करता है।आलोच्य उपन्यास में लेखक इसी बात को व्यक्त करते हुए लिखता है दृष्सहानुभूति दिखाना बहुत जहरीला साबित होता है, पर अक्सर हम विकलांगोया फिर ऐसे लोगों को सहानुभूति देते हैं और सहायता करते हैं।हमे कभी अलग से उनको यह दिखाकर मदद नहीं करनी चाहिए कि वे विकलांग हैं।इससे उनकी विकलांगता मन में अधिक बढ़ती जाती है।वो खुद को आपसे कमजोर समझने लगते हैं।वैसे भी शारीरिक विकलांगता सेमन की विकलांगता घातक होती है।ऐसे लोगों कोहम मन से विकलांग बनाते जाते हैं।शायद ऐसा ही कुछ इस लड़की के साथ भी होर हाथा।1

समाज में जहाँ विकलांगों के प्रति सहानुभूति है वहीं यह वर्ग उपहास का पात्र है।लोग इनसे बात करना तोदूर उन्हें देखना भी पसंद नहीं करते हैं।यदि यह वर्ग हमें बस, ट्रेनों वचौराहों पर भीख मांगता मिल भी जाता है तो प्रत्येक व्यक्ति इनसे जल्द से जल्द छुटकारा पाना चाहता है।दूसरी तरफ यही समाज किन्नरों को शुभ मानकर अपने मांगलिक कार्यों विवाह समारोह, शिशु समारोह आदि में इन्हें बुलाकर आशीर्वाद दिलाता है।

यहाँ हमें किन्नरों के प्रति समाज के दो रूप देखने को मिलते हैं।वह इस वर्ग को शुभ भी मानता है और इनके प्रति हेय दृष्टि भीर खता है।इस वर्ग को उपेक्षित वहेय दृष्टि से देखना कहीं न कहीं समाज में फैली इनके प्रति मान्यता एंव दृष्टि कोण है जिनसे यह समाज जकड़ा हुआ है।

समाज में इस वर्गके प्रति ऐसी धारणाएँ फेली हुई हैं कि यदि कोई माता–पिता अपनी संतान को अपने पास रखना भी चाहते हैंतो यह समाज उनके साथ ऐसा व्यवहार करता हैकि वह अपने बच्चे को यातो किन्नर समाज को सौंप देते हैं या उसे मार देते हैं।आलोच्य उपन्यास में लेखक ने कस्तूरी किन्नर के माध्यम से प्रस्तुत किया है दृष्परएक बातनो टकरले तिवारी, हिजड़े का बाप हैतू, हिजड़ेका, औरइतना आसान न है समाज में एक हिजड़े का बाप बनकर जीना, वहाँ सुई की नोक पर रहना होता है।इसकी जुबान से तोरी पैर ही नहीं, तोरी शरीर हीनहीं, तोरी आत्मा तक भीतड़ पेगी। यह समाज तुझे जीनेना देगा,तू खुद मर जाएगा या फिर तंग आकर खुद चलते हुए उस बच्चों को हमारे यहां देने आएगा।2 निश्चित ही किन्नरों के प्रति समाज का अत्यंत भयावह रवैया है,जिसे लेखक ने अपने उपन्यास में पूरी शिद्दत के साथ चित्रित किया है।

हर्षा के पिता उसे किन्नर समाज को न सौंपकर अपने पास रखने का फेसला लेते हैं लेकिन जब यह बात मौहल्ले वालों को पता चलती है तो वह अपने–आपको अपमानित महसूस करताहै।सामाजिक प्रताड़ना के भय से अपमानित पिता का मन अपने किन्नर पुत्र को जहर देकर मारने हेतु तत्पर हो जाता है–अब तो बस एक ही रास्ता देखत है,

बस सुसरा का आज का मतमाम कर देवे। नर ही बास, नबाजी बाँसुरी।3

हर्षा के जीवनमें पिता की घृणा, समाज की प्रताड़ना और अकेलापन है।उसका सारा जीवनभय और घबराहट के साथ व्यतीत होता है।वहीं सूर्या भयमुक्त जीवन व्यतीत करता है।हर्षा अनमोल का किन्नर भाई हैऔर सूर्या उसका किन्नर बेटा। भगवंत अनमोल ने अपने छोटे भाई हर्षा को पल–पल पिसते हुए, घर और बाहर प्रताड़ित और अपमानित होते हुए देखा था।वे समाज की इस सच्चाई से पूरी तरह परिचित हैं।जब डॉक्टर ने सूर्या के जन्म के बाद अनमोल को बताया कि आपका बेटा कभी बाप नहीं बन पायेगा, आपके बेटे काशिशन अपरिपक्व है। यह सुनते ही अनमोल का मुख खुलाका खुला रह गया।वह सोचने लगा कि भगवान ने उसके साथ ऐसा अन्याय क्यों किया जो उनके घर किन्नर बच्चा पैदा किया। ऐसे न जाने कितने सवाल लेखक के मनमें उठ रहे थे। ऐसा लगा कि मेरा प्लेन क्रैश हो गया और उस प्लेन क्रैश काशिकार मेरा बेटा हो गया और मैं अभागा बच गया।4

जिस समय एक पिता को मालूम होता है कि उसका बच्चा अलिंगी है,उसके ऊपर सैंकड़ों बिजलियाँ कौंध जाती हैं और उसे अपने सामने केवल अंधेरा ही नजर आता है, लेकिन सूर्या के पिता के माध्यम से रचना कारने किन्नर समाज के प्रति स्वस्थ और सकारात्मक वैचारिकता को दर्शाया है।सूर्या का पिता और परिवार उस पर सर्व स्व न्यौछावर करने को तत्पर हैं।वे उसके जन्मदिन का समारोह पांच सितारा होटल में मनाते हैं।जहां हर्ष अपने स्वभाविक स्त्रैण चरित्र के कारण घृणा का पात्र बनता है वहीं सूर्या उससे मुक्त है। दो पीढ़ियों के विचार में आए बदलाव को लेखक ने बहुत ही मार्मिक औरतर्क संगत ढंग से प्रस्तुत किया है।

एक के पिता उसे जहर देकर मारना चाहते हैं तो दूसरे के पिता उसे इस समाज में रहकर लड़ने, अच्छी शिक्षा देने का स्वयं से वादा करते हैं और उसके जन्मोत्सव की खुशियां मनाते हैं, लेकिन इसी समाज के लोग उनकी खुशियां बर्बादकर ने की कोशिश करते हैं,फब्तियां कसते हुए कहते हैं – बहुत बड़े दिलदार व्यक्ति हो आप अनमोल भाई, ऐसे लड़के के लिए कोई फाइव स्आर क्या घरमें भी नही बुलाता है।तभी पीछे से आवाज आती है, सुना है इनका लड़का हि जड़ा है।यह सुनते ही अनमोल की खुशी गुस्से में तब्दील हो गयी। किसी प्रकार अनमोल अपने गुस्से को काबू मैं करता है,तभी खट्टर साहब की जहर बुझी आवाज गूंजने लगी हां अभीअनमोल भाई पार्टीदे रहे हैं, कुछ सालों बाद उनका बेटा हिजड़ोंकी टोली में शामिल होकर'हाय हाय'करता भीख माँगता नजर आयेगा।5

यह सुनकर अनमोल गुस्से से भर जाता है। वह अन्य की तरह अपने आपको अपमानित महसूस नहीं करता बल्कि इस समाज का सामना करता है आज के बाद आप सभी से अनुरोध है कि मेरे बेटे का एक अंग ढंग से काम नहीं करता।इसका मतलब यह नहीं कि वह जीनेका हकदार नहींहै।दूबे जी भी तोल गड़े हैं, और त्रिवेदी जी का एक कान कटा हुआ है, हां पाण्डेय जी का मुँह टेढ़ा है।सिर्फ एक कमी की वजह से कि किसी का समाज से ऐसे बहिष्कार किया जाने लगे तो हम में से शायद ही कोई बचे समाज में रहने के लिए––––––––––––मेरे छोटे को भी चौन से जीने दीजिए यही गुजारिश है, वर्ना एक दोस्त, पड़ोसी और रिश्तेदार नहीं वर एक बेटे का पिता उभरकर आपका सामना करेगा।6

हर्षा अपने पिता के अत्याचारों से तंग आकर एक दिन घर छोड़कर भाग जाता है और कस्तूरी किन्नर की टोलीमें मिल जाता है।यहां वह हर्षा से हर्षिता बन जाती है।वह अपना शहर छोड़कर बंबई आ जातीहै। उधर अनमोल भी बंबई में ही रहता है।वह कभी–कभी अपने भाई के घर मिलने चली आती है।तभी उसे पता चलता है कि उसक`पिता ने अनमोल की पढ़ाई के लिए जो खेत गिर वींर खाथा उसे छुडाने केलिए उन्हें पाँच लाख की जरूरतहै।अनमोल अपने पिता को इतने पैसे देने में असमर्थ है क्योंकि वह बंबई में चालीस लाख कामकान लेना चाहताहै। हर्षिता को मालूम हैकि यह खेत बाबू जी केलिए कितने महत्वपूर्ण हैं।वह दिन–रात मेहनत करके एक माह में एक लाख रुपये ही जोड़ पायी, जिस से बाबू जी का खेत नहीं बच सकता था, इसलिए उसने भीख मांगने के साथ दै हिक कारोबार भी करना शुरू कर दिया।

वह आठ लाख रुपये एक त्रितकरके खेत छुड़वा लेती है और पिता को सूचना दिलवाई कि उनके पुत्र अनमोलने खेतों का कर्ज चुकाया है।यह सब करके हर्षिता ने अपने संतान होने के कर्तव्य को पूर्ण किया।वहीं सेक्स वर्कर के रूप मेंकाम करने से वह एड्स से पीड़ित हो अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।अनमोल इस सबसे अवगत है इसलिए वह अपने पुत्र सूर्या को पढ़ा–लिखाकर एक अच्छा नागरिक बनाना चाहता है।सूर्या एक प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी खोलना चाहता है।लाइसेंस के लिये वह पुलिस कमिश्नर के पास अप्लिकेशन देता है और अपने सपनेको पूरा करलेता है।आलोच्य उपन्यास में लेखक ने हमारे सामने दो नजरिये रखे हैं।हर्षा के माध्यम से लेखक ने इस वर्गकी अनेक समस्याओं की तरफ ध्यान खींचा है।वे समस्याएं जो इस वर्ग के साथ अनवरत घटती हैं। वहीं दूसरी ओर सूर्या के रूप में इन समस्या ओंसे छुटकारा पाने का रास्ता भी दिखाया है।

आलोच्य उपन्यास में हर्षा और सूर्या दोनों किन्नर हैं। किन्तु दोनों का जीवन एक–सानहीं था।हर्षा के माध्यम से लेखक नेइस वर्ग की अनेक समस्याओं की तरफ ध्यान खींचा है।वे समस्याएँ जोइस वर्ग के साथ अनवरत घटती रहती हैं। हर्षा को अपने पिता का स्नेह नहीं मिलता।जिससे हताश होकर यह किन्नरों की बस्तीमें जाकर उन्हीं की तरह जीवन जीना शुरूकर देता है।वहीं सूर्या को पिता का भरपूर प्यारव सहयोग मिलता है और वह पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है और समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि लेखक आलोच्य उपन्यास में किन्नरों की पीड़ा को बड़ी सहजता से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं।

संदर्भ–

1. भगवंत अनमोल, जिन्दगी 50–50, राजपाल एण्डसंस प्रथम संस्करण 2017, पृ0 15
2. वहीपृ० 35
3. वहीपृ० 37
4. वहीपृ0 28
5 वहीपृ056–58
6. वहीपृ0 60

प्रीति नागर

ग्राम– बादलपुर, पोस्टस– धूम मानिकपुर

तहसील– दादरी, जिला– गौतम बुद्ध नगर 203207 (उ.प्र.)

मो. 8686968697

प्रीति नागर, शोधार्थी, हिंदी

डॉ. मिंतु

शोध निर्देशक, असि. प्रोफेसर हिंदी

कु.मा.राज. महिला स्नाशत. महाविद्यालय, बादलपुर (गौ.बु.नगर)

38

भारतीय चित्रकला में आलेखन की अभिव्यंजना

डॉ0 बीना दीक्षित प्रोफेसर

सारांश

कला का क्षेत्र व्यापक है समग्र सृष्टि उसकी पृष्ठभूमि है कला का न अतीत है न भवष्यि। जो कला वर्तमान में अपनी सत्ता प्रमाणित नहीं कर सकती वह कभी अपना भविष्य नहीं बना सकेगी। भारतीय कला अपनी विशेषता के कारण वश अतीत में मानव मन को अलौकित करती रहती है और भविष्य में भी देश देशान्तरों को आलोक दीप बनकर प्रकाशित करती रहेगी ऐसा हमारा चिन्तन विश्वास है।1

कला का एक कार्य अलंकरण भी होता है। कलाकार सत्य तथा शिव के साथ सुन्दर विचार करता है इसके लिये वह एक तो अलंकरणों का प्रचुर प्रयोग करता है दूसरी वह आकृतियों में भी। थोड़ा बहुत अलंकारिता ले आता है यह उन आकृतियों का सौन्दर्य वर्धन ही करती है जैसे मृग अथवा कमल के समान नेत्र कदली स्तम्भ के समान जंघाये तोते के चोंच के स श्य नासिका। अलंकरण का पहला रूप भारतीय आलेखन में देखा जाता है। अजंता में अनेक प्रकार के आलेखन प्राप्त होते है। मुगलशैली में यह अलंकरण चित्रों के हाशियों में भी मिलता है पत्रावली अजंता और बाघ की ऐसी विशेषता है जिनकी समानता संसार में नहीं है।2

भारतीय कला की अपनी कुछ मौलिकता है उसका प्रधान भूत विशेषता भावाभिव्यंजन की है आकृति प्रतिकृति और अभिव्यक्ति के प्राधान्य से।कला की पूर्णता के लिये लोक जीवन को ग्रहण करने के लिये मनुष्य ने प्रकृति को भी अपनी कला का श्रृंगार बनाया वृक्ष लता, पत्र, पुष्प, फूल, वनस्पति, पशु–पक्षी, मुकुटों और पोशाकों आदि पर भारतीय कलाकार ने पत्र और पुष्प के बहुविध आलेखन द्वारा अलंकारिक अलंकरण में सफलता प्राप्त की है।अस्तु चित्रकला में भी आदियुग से उसे अस्तित्व का होना व उसमें आलंकारिकता व लयात्मकता का होना स्वाभाविक है। क्योंकि कला का प्राण ही जीवन से सम्बन्ध चित्र है जिसमें किसी भी चित्र को आकर्षक बनाना ही कलात्मकता हैं। जिसमें आलेखन एक प्रेरक बिन्दु रही है जिसके विभिन्न लयात्मकता से पूर्ण चित्रों का अंकन सृजन काल से वर्तमान युग तक होता आ रहा है। काल गत भिन्नता से हम मुकर नहीं सकते।वैदिक युग से लेकर अलंकारिक आलेखनों से युक्त बर्तन, औजारों, वस्त्राभूषण नारी भंगिमाये पशु–पक्षियों का अंकन मुगल काल तक में नायक एवं नायिका का अंकन भी लयात्मकता व अलंकारिकता से पूर्ण है।3

मध्यकाल की अप्रभंश परम्परा में चित्रित होने वाली नारी को ईरानी प्रभाव ने विस्तृत प्रेरणा दी और उसके संसर्ग में आकर चित्रकला के नारी चित्रांकनों में लय, कमनीयता और माधुर्य लिये हुए चित्रित किया है।

अलंकरण से आकर्षण प्राप्त होता है, अतः कला का कार्य अलंकरण करना भी है। भारतीय कलाकार सत्य तथा शिव के साथ सुन्दर की कल्पना भी करता है अतएव सुन्दर ती आदर्श रूप के लिए व अलंकरणों की अपनी रचनाओं में प्रयोग करता है और आकृतियें की रूप रंग का वर्धन होता है, जैसे चन्े के समान मुख, खंजन अथवा कमल के समान जैन, कदली–स्तम्भों के समान जंघाऐं, शुंक–चंचु के समान नासिका।

भारतीय आलेखनों में अलंकरण का उत्कृष्ट रूप दिखाई पड़ता है। अजंता मे छतों के अलंकरणों, राजपूत तथा मुगल चित्रों के हासियों मे पुष्प, पक्षियों, मानवाकृतियों, पशुओं तथा प्रतीक चिह्न आदि को अति आलंकारिक रूपों में प्रस्तुत किया गया है। अजंता तथा बाघ की चित्रांवलियाँ संसार की आलंकारिकता का उत्तम उदाहरण है।

भारतीय चित्रकला में मनुष्य ने जिस समय प्रकृति की गोद में नेत्रोन्मीलन किया उस समय से ही उसने निर्माण के तारतम्य से अपने जीवन को सुखी तथा समृद्ध बनाने की चेष्टा की और इस निर्माण के कार्य के फलस्वरूप उसने ऐसी कृतियों का सृजन किया जो उसके जीवन को सुखद और सुचारू बना सकें। इसी समय से मनुष्य की ललित भावना भी जाग उठी और उसने अपनी मूक भावनाओं को अनपढ़ पत्थरों के यंत्रों तथा तूलिका से बनी टेढ़ी–मेढ़ी रेखा–कृतियों के रूप मे गुफाओं और च7ानों की भित्तियों पर अंकित कर दिया।4

पूर्व पाषाण युग में भारत के आदि युगीन मानव का इतिहास है जब वे कन्दमूल फल तथा जानवरों का शिकार कर मांस भक्षण कर अपना पेट पालते थे। अपने रिक्त समय में चाक से बर्तन निर्माण तथा पाषाण खण्ड़ों से निर्मित प्राकृतिक गुहा एवं कन्दराओं में चित्रांकन बडे लयात्मकता तथा पशु विहंगों का अंकन भी अलंकारिकता पूर्ण करता था।

इनके चित्रों के विषय में अधिकतर शिकार प्रधान ही है। जिसमें जंगली भैसों का शिकार भालुओं के आखेट अधिक है। बारासिंगा, हाथी, खरगोश आदि के आखेट के चित्रांकन अत्यन्त अलंकारिक हैं। चित्रों में जैसे पुरुषों का सामूहिक नृत्य अंकन अलंकार रूप में हुआ हैं वैसे ही स्त्रियों का भी चित्रण अलंकारिकता पूर्ण है। कहीं–कहीं दो पुरूषों के बीच नारी को नृत्य करती चित्रित किया गया है।

घरेलू जीवन के अनेक चित्र भी अलंकारित्तापूर्ण है। यहीं पर एक

स्त्री कन्द कूटती हुई अलंकारिक रूप में चित्रित है और दूसरी धान दरती हुयी नारी चित्र भी अलंकारिक पूर्ण चित्रित दिखाया है। छपरिया के भीतर स्त्रियाँ बैठी है। स्त्री पुरुष झुन्ड में मिलकार जोड़े बनाकर नाच रहे है। आदमी ढोल या टुहरी नाद बजा रहे है। इस प्रकार के अनेक चित्र यहाँ के शिलाखण्डों पर चित्रित है।5

ईसवीं पूर्व लगभग चार हजार वर्ष पूर्व का मानव समाज का उनके रहन सहन, रीति रिवाज, खानपान, वस्त्राभूषण आदि का अंकन अलंकारिक पूर्ण है। इस सभ्यता के सृजन हार मानव मुर्दो को गाड़ते थे और उनके साथ गाड़े जाने वाले पात्रों तथा दैनिक जीवन के उपयोगी वस्तुओं के संग्रह हेतु निर्मित पात्रों को मनमोहक आलेखनों से अलंकृत करते थे।

लोक जीवन का स चा रूप प्रस्तुत करने वाले मृण पात्र व खिलौने पशु–पक्षियों के आकार वाले वाद्य यंत्र बड़े ही सुन्दर व लयात्मकता पूर्ण हैं।वहाँ के चित्रों में प्राप्त पात्र ही आते है। जिन पर सरल व अलंकारिक आकृतियों से युक्त पेड़ पौधे, फूल, पत्तियाँ तथा उड़ते हुए पक्षियों एवं पशुओं का अंकन किया गया है। उछलती हुई मछलियों और पशुओं का अंकन भी सौन्दर्य व अलंकारिकता पूर्ण हैं इन चित्रों में आलेखनों की अधिकता है जो ज्यामितीय आकारों पर दर्शाया हैं इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आलेखन जिनमें वनस्पतियों के साथ–साथ पक्षियों के चित्र अलंकारिकता पूर्ण है।6

प्रारम्भ में मनुष्य वन में निवास करते थे। उन्होनें अपनी बुद्धि के द्वारा प्राकृतिक रहस्यों को समझकर शक्ति को विकसित कर अलंकारिक आलेखनों के द्वारा चित्रण किया। उस आदिम युग में भी मानव के अन्दर चित्रण करने की प्रवृत्ति विद्यमान थी।उस समय के पुरुष व स्त्री दोनों आभूषण पहनते थे। मनोरंजन के लिये मिटटी के बर्तनों तथा ताबीजों का प्रयोग भी अलंकारिक रूप में होता था। नृत्यरता स्त्री की एक मूर्ति तामृ–मूर्ति मिली जिसमें लयात्मकता लिये चित्रित थी। इसके अतिरिक्त वहाँ अनेक मिटटी की मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई जिनमें अलंकारिक आलेखनों से युक्त चित्रण किया गया है।बाघ की गुफा चित्रों का उल्लेख भारतीय भिंत्रिचित्रों की परम्परा में बहुतायत देखने को मिलता है जो भारतीय चित्रकला में अलंकारिक आलेखनों से परिपूर्ण मानी जाती है।अजंता के चित्रों में अलंकारिक आलेखनों की भरमार रही है। सहस्रो वर्षों की परम्परा एवं दीर्घजीवी सौन्दर्य अभिरूचि की ही देन ष्टिगोचर होती है। अजंता की प्रथम गुफा बिहार–गुफा में भिक्षुओं के रहने के लिये कोठरियाँ भी अलंकारिक रूप में बनायी जाती थी।7

भारतीय चित्रकला का ऐतिहासिक रूप अजंता की गुफाओं से प्राप्त होता है। यहाँ की नवीं तथा दसवीं गुफा की चित्रकला ईसापूर्व की मानी जाती हैं। यहाँ विहार और चौत्यों की उन्नीस गुफायें निर्मित हुई है जिनकी छतों एवं स्तम्भों को चित्रण के अनुकूल बनाकर उनपर तत्कालीन महाकाव्यों के पात्रों का चित्रण भी अलंकारिक रूप में किया गया है। जिसके नायक गौतम बुद्ध थे। उनके समस्त जीवन का तथा तत्कालीन महत्वपूर्ण लौकिक घटनाओं का यहाँ चित्रण लयात्मकता के साथ किया है। इन्हीं चित्रों के साथ स्पष्ट करने वाले चित्र भी अलंकारिक रूप में चित्रित किये गये है।अजंता के सृ श ही भारतीय चित्रकला में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में बाघ बादामी और सित्तनवासल आदि की गुफाओं के चित्र है अजंता के भित्रिचित्रों के कौशल पूर्ण चित्र को देखकर आज भी प्रेक्षक अवाक रह जाते है।8

भारतीय चित्रकला को जीवित रखने का श्रेय जैन व गुजरात शैली को भी है। इस युग में केवल पुस्तकें ही ष्टान्त चित्रों की प्राप्त मूर्तियों कला तो समाप्त सी हो जाती थी। इस समय तीन शैलियों पाल, जैन व गुजरात ही मुख्य थी।राजपूत चित्रकला का जन्म अजंता की दीवारों पर बने चित्रों से हुआ। अजंता के पश्चात हिन्दू चित्रकला लुप्त सी हो गयी थी। 16 वीं शताब्दी में राजस्थानी और उत्तरी चित्रकला का जन्म होने लगा। क्योंकि मुगल शासकों के दरबारी संरक्षण में हिन्दू चित्रकारों की कृतियाँ भी अलंकारिक आलेखनों से चित्रित की गयी थी। राजस्थानी शैली के चित्रों में स्त्रियों मानवाकृतियों, पक्षियों, महाभारत, हरिवंश आदि के साथ–साथ महान कवियों व भक्तों के पदों के रूप में लयात्मकता लिये चित्रित किये गये थे।मध्य कालीनव राजस्थान शैली का अजंता अलंकारिक व कलात्मक महत्व हां इस समय भगवत पुराण, रामायण की लोक कथाओं तथा राग–रागनियों का चित्रण भी अलंकारिकता पूर्ण हैं बूंदी का भी अपना अलंकारिक चित्रण भी महत्वपूर्ण हैं बूंदी कोटा शैली के मुख्य विषय राग रागनियों ऋतु मास एवं कृष्णलीला आदि भी चित्र अलंकारिकता पूर्ण है।भारत में 15 वीं शताब्दी का विशेषमहत्व हैं इस समय भारतीय चित्रकला हिन्दू राजाओं के नेतृत्व में लौकिक रूप प्रस्तुत करने में संलग्न थी। परन्तु मुस्लिम सल्तनतोंद्वारा एक नयी परम्परा स्थापित की गयी। बाबर व हुमायूँ का जीवन संघर्ष में बीता, इसलिए बाबर द्वारा स्थापित शैली का विकास अकबर के काल में ही हुआ क्योंकि उसे कला एवं संगीत में विशेष रूचि थी। उससे नये–नये ढंग से कमर बंद, जरी, बेलबूटे, दरियाँ आदि निकाले थे। उकसी फारसी चाँदनी तथा किनारी आज भी प्रसिद्ध है। यह सोने के आभूषणों के नये–नये नमूने निकाला करती थी।9

स्त्रियों को जिन आभूषणों से युक्त दिखाया है उनमें विशेष रूप से माथे के आभूषण टीका चन्दक या झूमर, कान के आभूषण झुमका, कर्णफूल, कून्दे, बाली या झाले व अन्य नाक के बुलाक या बेसर

लोग, नथ गले के आभूषण–कण्ठा, गुलबन्द, चम्पाकली, लॉकेट, ताबीज, हाथ के आभूषण बाजूबन्द कलाई हस्तबन्द पहुँची कंगन व कढ़र व अन्य उंगलियों के कमर पैरों के आभूषण में नुपूर कढ़ा पायजेब, बिछुआ। इन सभी आभूषणों में रत्न जड़ित मोतियों आदि से अलंकृत किया है।10

17 वीं शती में एक महिला अपने बालों को सुखा रही है उसने पैरों में नूपूर पहन रखे है। आतिशबाजी छोड़ती नादिरा बानू के पैरों में भी सुन्दर मोती लगी पायजेब का चित्रण भी अलंकारिकता पूर्ण है। कशमीर शैली की हिमा छादित पर्वत श्रृंखलाओं रंग बिरंगे पेड़ो, नदियों व झीलों आदि के श्य भी अलंकारिक व कलात्मक पूर्ण अंकन हुआ है19 वीं शती के प्रारम्भ में लखनऊ चित्रशैली रूमी कागज के नाम से विख्यात हुई। अंग्रेजी सत्ता जाने से चित्रों के मुख्य विषय धार्मिक, कथायें अंग्रेजी के दबदबे वाले श्य नृत्यांगना व कामुक्त श्य की अलंकारिक व लयात्मकता पूर्ण चित्रित थे।भारतीय चित्रकला को पुर्नजीवित देने के लिये आर्ट स्कूल ई वी हैवल अवनीन्त नाथ टैगौर आनन्द कुमार, रामानन्द चटर्जी रविशंकर रावत अवनीन्त नाथ ठाकुर राजारवि वर्मा आदि ने नवीन कला आन्दोलन का सूत्रपात आलेखन के रूप में किया। रवीन्द नाथ ठाकुर के यथार्थ पर आधारित काल्पनिक चित्र तथा अमृता शेरगिल की तकनीकि नवलता अलंकारिक आलेखनों व लयात्कता आदि उनकी विलक्षण प्रतिमा के जवलन्त प्रमाण है।11

संदर्भ सूचीः

1 वाचस्पति गैरोला, ''भारतीय चित्रकला' पृ0सं0 8 प्रकाशक–मिश्रा प्रकाशन इलाहाबाद 1963

2 डा. गिर्राज किशोर अग्रवाल, ''कला और कलम'', पृ0सं0 7 प्रकाशक अशोक प्रकाशन मंदिर अलीगढ़

3 दिनेश चन्े गुप्ता, उत्तर मध्यकालीन भारतीय चित्रकला में नारी के विभिन्न रूपों का अंकन, पृ0 सं0 1,2,3 प्रकाशित सन् 1981

4 डा0 अविनाश बहादुर वर्मा, भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृ० सं0 7, 10

5 दिनेश चन्े गुप्त, उत्तर मध्यकालीन भारतीय चित्रकला में नारी के विभिन्न रूपों का अंकन, पृ0सं0 36, 37, 38, 39 प्रकाशत सन् 1981

6 दिनेश चन्े गुप्त, उत्तर मध्यकालीन भारतीय चित्रकला में नारी के विभिन्न रूपों का अंकन, पृ0सं0 40 प्रकाशत सन् 1981

7 भारतीय चित्रण सृजना– प्रक्रिया परम्परा– '' अजन्ता चित्रण पर आधारित एक अध्ययन पृ० 1,2,3,4

8 ''भारतीय चित्रण सृजना प्रक्रिया– एक अध्ययन'' अजंता चित्रण पर आधारित एक अध्ययन पृ0सं0 4,

9 ''भारतीय चित्रण सृजना प्रक्रिया– एक परम्परा'' अजंता चित्रण पर आधारित अध्ययन पृष्ठ 5,6

10 ''भारतीय चित्रण सृजना प्रक्रिया– एक परम्परा'' अजंता चित्रण पर आधारित पृष्ठ सं0 1,2,3,4

11 ''भारतीय चित्रण सृजना प्रक्रिया–एक परम्परा'' अजंता चित्रण पर आधारित अध्ययन पृ० सं० 11,12 12 श्रीमती अनीता अग्रवाल, ''भारतीय चित्रकला में लिपि अंकन–एक अध्ययन'' शोध प्रबन्ध 1994, पृष्ठ सं0 1,2,3

डॉ0 बीना दीक्षित प्रोफेसर

ललित कलाविभाग

ओम स्टर्लिंग यूनिवर्सिटी सिार, हरियाणा

39

Impact of Yoga Practice on Alcohol Dependent Patients

Mr. Vikas Kumar, Dr. Shalini Kumari

Key words: Yoga, Aasana, Pranayam, Alcohol Dependent, Alcohol Craving

***Abstract*:** Yoga may play very important role in adjustment in everyday life or in motivate our self and maintain own psychological wellbeing. Purpose of present research is to examine the study of the effectiveness of yoga practices on the intensity of craving in alcohol dependent patients. 30 samples were selected and divided equally in control group and experimental groups. Alcohol Craving Questionnaire and The Clinical Institute Withdrawal Assessment for patients in Alcohol Withdrawal (CIWA-R) were used for this study. A module comprised of different asanas, pranayamas, sathkarm, pratyahara technique of yoga nidra and meditation was made and applied over the patients of experimental group. Patients of control group received only pharmacological treatments, while patients of experimental group received yoga practices along with regular pharmacological treatment. Positive improvement was observed in both the groups related to craving, dependence, withdrawal, the improvement in experimental group is relatively better in all these measured domains.

Introduction

Yoga is well known today. It is a science of right living, as such is intended to be incorporated in daily life. It works on all aspects of the person: the physical, vital, mental, emotional, psychic and spiritual (Satyananda, 2006).The word yoga means 'unity' or 'oneness' and is derived from the Sanskrit word 'yuj' which means 'to join'. This unity or joining is described in spiritual terms as the union of the individual consciousness with universal consciousness. On a more practical level yoga is a means of balancing and harmonising the body, mind and the emotions (Satyananda, 2006).

A very precise and holistic definition of yoga is given by Swami Niranjananda Saraswati of Bihar School of Yoga as "Yoga is an ancient system of philosophy, lifestyle and techniques, that evolve the whole person, the physical, the vitality, the mind, emotions, wisdom, ethics and a higher quality of relationships and the realization of the spiritual reality of each of us."

Meaningful co-operation at the Centre (Sharma & Shukla, 1988) was also extended. In a 3-week study of hospitalized alcohol-dependent patients, those treated with Sudarshan Kriya Yoga plus standard treatment had greater reductions in depression, anxiety, and Cortisol levels than did patients given standard treatment and rehabilitation Vedamurthachar et al. (2002). In a randomized study of 61 patients at a methadone maintenance program, traditional group therapy and Hatha yoga (asana, pranayama, and relaxation) were equally effective in significance reducing drug use and criminal activity. (Shaffer et al.1997).

Methodology:

Objectives of the Study: To study the effectiveness of yoga practices on the intensity of craving in alcohol dependent patient.

Hypotheses

There will be no significant effect of yoga practices on the intensity of craving of alcohol dependent patients.

Sampling method

Samples were selected using the purposive sampling method.

Sample of the study

30 samples were selected and divided equally in control group and experimental group.

Tools:

a) Socio demographic data sheet:

A semi structured Performa used for recording details like age, sex, marital status, education, occupation of the subject. The diagnosis and the drug status are also recorded.

b) Alcohol Craving Questionnaire (ACQ):

The Alcohol Craving Questionnaire (ACQ-NOW: Singleton et al., 1995) contains 47-items developed to assess the multidimensional aspects of craving for alcohol among current users.

c)The Clinical Institute Withdrawal Assessment for patients in Alcohol Withdrawal (CIWA-R):

For the 30 signs and symptoms, the scale has been carefully refined to a list of 10 signs and symptoms in the CIWA- R. It is thus easy to use and has been shown to be feasible to use in a variety of clinical settings.

Procedure:

The experimental group will be having 12 yoga practice sessions each of 30 minutes, three times a week and over a one month period. The descriptions of main practices included in the sessions are as following:

Tadasana, Tiryak Tadasana, Kati Chakrasana, Shashankasana, Nadi Sodhan Pranayama, Yoga Nidra, Ajapa Japa Meditation, Kunjal Kriya

Result of the study:

Table-1

Showing socio-demographic characteristics of sample (categorical variable) in experimental and control groups

Sl. No	Variable		Group		df	χ^2	p
			Expt (N=15) n/n%	Cont (N=15) n/n%			
1	SEX	MALE	15	15	NA	NA	NA
		FEMALE	00	00			
2	MARITAL STATUS	UNMARRIED	5(33.3%)	6(40.0%)	1	.144	.705
		MARRIED	10(66.7%)	9(60.0%)			
3	RELIGION	HINDU	9(60.0%)	10(66.7%)	1	.144	.705
		NON HINDU	6(40.0%)	5(33.3%)			
4	OCCUPATION	UNEMPLOYED	8(53.3%)	6(40.0%)	1	.536	.464
		EMPLOYED	7(46.7%)	9(60.0%)			
5	HABITAT	RURAL	6(40.0%)	7(46.7%)	1	.136	.713
		URBAN	9(60.0%)	8(53.3%)			
6	FAMILY TYPE	NUCLEAR	13(86.7%)	15(100%)	1	2.143	.143
		JOINT	2(13.3%)	0(00%0			

*p≤.05, ** p≤.01, ***p≤.001

Table-1 elucidates the socio-demographic profile of the sample in experimental and control groups with respect to the categorical variables (sex, marital status, religion, occupation, habitat and family type). Chi- Square test was applied. From the table it is evident that there is no significant difference among the groups with respect to these variables and hence the groups are considered to be matched with respect to these variables.

Table-2

Showing difference in scores of the pre and post assessment with respect to applied scales in experimental group.

Sl. no	Variable	Pre-Intervention Mean ± SD (N=15)	Post-Intervention Mean ± SD (N=15)	df	t	p
1	ALCOHOL CRAVING QUESTIONNAIR(URGE AND INTENTION TO DRINK ALCOHOL)	- -	2.35±.767	14	12.395	.001***
2	ALCOHOL CRAVING QUESTIONNAIRE(POSITIVE AND NEGATIVE REINFORCEMENT)	4.71±.930	2.69±.984	14	8.533	.001***
3	CLINICAL ININSTITUTE WITHDRAWAL ASSESSMENT FOR ALCOHOL	13.00±4.810	7.000±3.273	14	7.746	.001***

*p≤.05, ** p≤.01,***p≤.001

Table-2 elucidates the difference in scores of the pre and post assessment with respect to the applied scales in the experimental group, student t-test has been used. As the table shows that the, pre and post scores are significantly different from each other on all the applied scales at .001 level of significance The findings indicated that experimental group showed better improvement. In the study conducted by Nespor **Karel (1994**) by using yoga practices from Satyananda System of yoga (which is the same system used by us in the present study) showed significant decrease in the intensity of craving of alcohol dependent patients as a result of the detoxifying properties of yoga and also its considerable impact on the para-sympathetic nervous system. In the study done by **Peuerstein, 2003** yoga as a mode of therapy found useful in various kinds of psychological and somatic dysfunctions which include substance dependence. Several other studies are also reported, where craving to take substance has been decreased due to continuous yoga practices (**Sharma & Shukla, 1998).**

Table-3

Showing difference in scores of the pre and post assessment with respect to applied scales in control group.

Sl. No	Variable	Pre-Intervention Mean ± SD (N=15)	Post Intervention Mean ± SD (N=15)	df	t	p
1	ROTTER,S LOCUS OF CONTROL SCALE	10.53±5.097	8.99±3.634	14	2.682	.06
2	ALCOHOL CRAVING QUESTIONNAIR(URGE AND INTENTION TO DRINK ALCOHOL)	4.54±.837	3.67±.794	14	4.112	.001***
3	ALCOHOL CRAVING QUESTIONNAIRE(POSITIVE AND NEGATIVE REINFORCEMENT)	4.806±.871	3.74±.718	14	5.01	.001***
4	CLINICAL ININSTITUTE WITHDRAWAL ASSESSMENT FOR ALCOHOL	14.266±3.844	11.06±2.548	14	5.305	.001***

*p≤.05, ** p≤.01,***p≤.001

Table-3 elucidates the difference in scores of the pre and post assessment with respect to the applied scales in the control group. Student t-test has been used. As the table shows the, pre and post scores are significantly different from each other on Alcohol Craving Questionnaire(R) (Both Subscales), Clinical Institute Withdrawal Assessment for Alcohol(R), Leeds Dependence Questionnaire scales a .001 level of significance.

Table-4

Table showing mean differences of pre and post measurements on the applied scales in experimental and control group separately.

Sl. No.	VARIABLE	EXPERIMENTAL (YOGA INTERVENTION)	CONTROL (WITHOUT YOGA INTERVENTION)
1*	Alcohol craving questionnaire(urge and intention to drink alcohol)	2.287	0.867
2*	Alcohol craving questionnaire(positive and negative reinforcement)	2.018	1.058
3*	Clinical in institute withdrawal assessment for alcohol	6.000	3.200

*p≤.05, ** p≤.01,***p≤.001

*--Significant difference also observed between experimental and control groups in post assessment.

Table 4 elucidates the difference of pre and post assessment on the applied scales in the experimental and control groups. Values are the

difference between the means of pre and post measurements calculated during the application of t-test in the table no 2 and 3. Table indicates that in all the domains the experimental group shows more positive improvement than the control group.

Table-5

Showing difference between experimental and control group on the different applied scales in pre assessment.

Sl. no	Variable	Group	Mean rank	U	Z	p
		CONTROL	16.83			
1	ALCOHOL CRAVING QUESTIONNAIR(URGE AND INTENTION TO DRINK ALCOHOL)	EXPERIMENTAL	16.10	103.50	-0.374	.713
		CONTROL	14.90			
2	ALCOHOL CRAVING QUESTIONNAIRE(POSITIVE AND NEGATIVE REINFORCEMENT)	EXPERIMENTAL	15.37	110.50	-0.083	.935
		CONTROL	15.63			
3	CLINICAL ININSTITUTE WITHDRAWAL ASSESSMENT FOR ALCOHOL	EXPERIMENTAL	14.43	96.50	-0.666	.512

*p≤.05, ** p≤.01,***p≤.001

Table 5 elucidates that the score in pre-assessment of all the applied scales are not significantly different from each other in experimental and control group. Mann-Whitney test has been applied. Which indicates that experimental and control groups are matched with each other in pre assessment condition with respect to the applied scales.

Table-6

Showing difference between experimental and control group on different applied scales in post assessment.

Sl. no	Variable	Group	Mean rank	U	Z	p
1	ALCOHOL CRAVING QUESTIONNAIR(URGE AND INTENTION TO DRINK ALCOHOL)	EXPERIMENTAL	9.80	27.00	-3.549	.001***
		CONTROL	21.20			
2	ALCOHOL CRAVING QUESTIONNAIRE(POSITIVE AND NEGATIVE REINFORCEMENT)	EXPERIMENTAL	11.23	48.50	-2.659	.007**
		CONTROL	19.77			
3	CLINICAL ININSTITUTE WITHDRAWAL ASSESSMENT FOR ALCOHOL	EXPERIMENTAL	10.63	39.50	-3.042	.002**
		CONTROL	20.37			

*p≤.05, ** p≤.01,***p≤.001

Table 6 elucidates that in post measurement the experimental and control group are significantly different from each other at .001 level of significance on the applied scales of Alcohol Craving Questionnaire(R). Findings indicate the effectiveness of the Yoga intervention in experimental group on the mentioned scales, due to which the post measurement scores become significantly different from the pre measurement scores.

Conclusion:

- Though significant positive improvement was observed in both the groups related to craving, dependence, withdrawal, the improvement in experimental group is relatively better in all these measured domains.
- Intensity of craving was comparatively more decreased in the yoga intervention group than the control group.
- The level of dependence was lower in the experimental group after the intervention than the control group.
- Members of experimental group were moved to better stage of motivation for quitting alcohol intake than the control group.

Reference :

Karel, S (1994) Retreating into the self with yoga. *International Association of Yoga Therapists* [Online Version].

Peuerstin, G (2003). Om yoga: A guide to daily practice. San Francisco, CA: Chronicle Books.

Ryff, C. (1989). Happiness is everything, or is it? Explorations on the meaning of psychological well-being. *Journal of Personality and Social Psychology, 57,* 1069–1081.

Saraswati, Satyananda (2006), Asana Pranayama Mudra Bandha, 3rd revised edition, Yoga Publication Trust, Munger, Bihar.

Shaffer, H.J., LaSalvia, T.A., Stein, J.P. (1997) Original research: comparing hath yoga with dynamic group psychotherapy for enhancing methadone maintenance treatment: a randomized trial. *Alternative Therapies Health Medicine,* 3, 57-67.

Sharma, K., Shukla, V. (1988) Rehabilitation of drug-addicted persons: the experience of Nav-Chetna Center in India; downloaded from http://www.unodc.org/unodc/bulletin/bulletin_1988-01 01_1_page005.html on the 16th of October 2006; Sharma/Shukla 1988.

Sharma, K., Shukla, V. (1988) Rehabilitation of drug-addicted persons: the experience of Nav-Chetna Center in India;downloaded from http://www. unodc.org/unodc/bulletin/bulletin_1988-01 01_1_page005.html on the 16th of October 2006; Sharma/Shukla 1988.

Vedamurthacchar, A., Janakiramaiah, N., Jayaram Hedge, M. et al. (2002) Effect of Sudarshan Kriya on Alcohol Dependent Patients. Science of Breath International Symposium on sudarshan Kriya, Pranayama and Consciousness. New Delhi. All India Institute of Medical Sciences.

Vikas Kumar

Flat no-2/A, Sakar Orchid Gren Apartment

Vijay Singh Yadav Path, Near Tribhuwan School

Saguna Khagaul Road, Patna, (Bihar)

Pin- 801105

Dr. Shalini Kumari

40

SIGNIFICANCE OF LIFE SKILLS EDUCATION IN OVERALL DEVELOPEMNT OF ADOLESCENTS

Shakuntala Devi

Abstract: Adolescence is a period when the intellectual, physical and all the capabilities are very high but their antisocial activities and behavior are deteriorating all their capabilities and they are becoming a burden to the society. Unemployment, lack of job security, etc. are some of the major concerns for the educated. This new challenge requires immediate and effective responses from a socially responsible system of education. Imparting life skill training through inculcating life skill education will help our adolescents to overcome such difficulties in life. Life skill education can serve as a remedy for the problems as it helps the adolescents to lead a better life. Therefore, life skill education is a need of the society and every education system should impart life skill education as a part of its curriculum as it is capable of producing positive health behavior, positive interpersonal relationships and wellbeing of individuals. The present paper focuses on the various life skills given by WHO, importance of life skills education and the benefits of imparting life skill education in our curriculum i.e. developing social, emotional & thinking skills in students, as they are the important building blocks for a dynamic citizen, who can cope up with future challenges, and survive well.

Keywords: *Adolescent, Life Skills Education*

INTRODUCTION

Adolescence is a period when the intellectual, physical, social, emotional and all the capabilities are very high, but, unfortunately, most of the adolescents are unable to utilize their potential to maximum due to various reasons. They face many emerging issues such as global warming, famines, poverty, suicide, population explosion as well as other issues like alcoholism, drug abuse, sexual abuse, smoking, juvenile delinquency, anti-social acts, etc. that have an adverse effect on them and others too, to a large extent. The cut-throat competition, unemployment, lack of job security, etc. are some of the major concerns for the educated and as a result, they are caught in the mad race. This new challenge requires immediate and effective responses from a socially responsible system of education. 'Education' is important, but education to support and live life better is more important. It has been felt that life skills education bridges the gap between basic functioning and capabilities. It strengthens the ability of an individual to meet the needs and demands of the present society and helps in dealing with the above issues in a manner to get desired behavior practical. Imparting life skill training through inculcating life skill education will help youth to overcome such difficulties in life.

Human beings tend to learn skills for life from a very young age and keep evolving with passage of time, learning to deal with the complexities of life. Compilation of life skills education with school education would change the views of students about their life. They can help the child to build a good personality and strengthen their knowledge in all settings. Life skills education can be a remedial measure for eradicating the problems such as academic backwardness, communication, behavioral and emotional problems. In everyday **life**, the development of **life skills** helps **students** to: Find new ways of thinking and problem solving. Recognise the impact of their actions and teaches them to take responsibility for what they do rather than blame others.

Life skills is a term used to describe a set of basic skills acquired through learning and/or direct life experience that enable individuals and groups to effectively handle issues and problems commonly encountered in daily life. According to WHO (1997), "the abilities for adaptive and positive that enable individual to deal effectively with the demands and challenges" are called life skills. "Life-skills based education is -behavior change or behavior development approach - designed to address a balance of three areas i.e., knowledge, attitude, and skills" UNICEF (2001).

In a constantly changing environment, having life skills is an essential part of being able to meet the challenges of everyday life. The dramatic changes in global economies over the past five years have been matched with the transformation in technology and these are all impacting on education, the workplace and our home life. To cope with the increasing pace and change of modern life, students need new life skills such as the ability to deal with stress and frustration. Today's students will have many new jobs over the course of their lives, with associated pressures and the need for flexibility.

In everyday life, the development of life skills helps students to:

- Find new ways of thinking and problem solving
- Recognise the impact of their actions and teaches them to take responsibility for what they do rather than blame others
- Build confidence both in spoken skills and for group collaboration and cooperation
- Analyse options, make decisions and understand why they

make certain choices outside the classroom

➢Develop a greater sense of self-awareness and appreciation for others

Life skills include group of skills and abilities which help individual's far efficient resistance and also in attending to life situations and conflictions. These skills enable the individual to act adaptive and right in connection with environment and provide self-esteem. According to WHO ten skills which help in promoting health and well being of children and adolescents are:

Decision making - The process of assessing an issue by considering all possible/available options and the effects those different decisions might have on them.

Problem solving: - Having made the decisions about each of the options, choosing the one which suits the best, following it through even in the face impediments and going through the process again till a positive outcome of the problem is achieved.

Creative thinking: - It is the ability to look beyond our direct experience and address issues. It helps us to look beyond our direct experience, and even if no problem is identified, or no decision is to be made, creative thinking can help us to respond adaptively and with flexibility to the situations of our daily lives.

Critical thinking: - It is an ability to analyze information and experiences in an objective manner. Critical thinking can contribute to health by helping us to recognize and assess the factors that influence attitudes and behavior, such as values, peer pressure, and the media.

Effective communication: - Effective communication means that we are able to express ourselves, both verbally and non-verbally, in ways that are appropriate to our cultures and situations.

Interpersonal relationships: - Interpersonal relationship skills help us to relate in positive ways with the people we interact with. This means being able to make and keep friendly relationships, which can be of great importance to our mental and social well-being.

Self-awareness:- Self awareness includes our recognition of ourselves, our strengths and weaknesses, desires and dislikes. Developing self-awareness can help us to recognize when we are stressed or feel under pressure.

Empathy: - Empathy is the ability to imagine what life is like for another person, even in a situation that we may not be familiar with. Empathy can help us to understand and accept others who may be very different from ourselves, which can improve social interactions, for example, in situations of ethnic or cultural diversity.

Coping with emotions: - Coping with emotions involves recognizing emotions in ourselves and others, being aware of how emotions influence behavior, and being able to respond to emotions appropriately.

Coping with stress: - Coping with stress is recognizing the sources of stress in our lives, recognizing how this affects us, and acting in ways that help to control our levels of stress.

Adolescence is a period when the intellectual, physical and all the capabilities are very high but their antisocial activities and behavior are deteriorating all their capabilities and they are becoming a burden to the society. Imparting life skill training through inculcating life skill education will help our adolescents to overcome such difficulties in life. Therefore, life skill education is a need of the society and every education system should impart life skill education as a part of its curriculum as it is capable of producing positive health behavior, positive interpersonal relationships and wellbeing of individuals.

Imparting 'Life Skills Education' In Classroom

Imparting life skills education to the students, can be helpful as it specifically addresses the needs of children, helps in motivating, providing practical, cognitive, emotional, social and self-management skills for life adjustments. Life skill education can serve as a remedy for the problems as it helps the adolescents to lead a better life. Different activities that can be used to enhance Life Skills in Students are as follows:

Classroom Discussions: An activity, providing opportunities for students to learn and practice turning to one another in solving problems. Enables students to deepen their understanding of the topic and personalize their connection to it. Develops skills, in listening, assertiveness, and empathy.

Brainstorming: It allows students to generate ideas quickly and spontaneously. Helps students use their imagination and think out of the box. Good discussion starter because the class can creatively generate ideas. It is essential to evaluate the pros and cons of each idea or rank ideas according to certain criteria.

Role Plays: Along with being a fun activity and involves whole class, to be active and participative, it also provides an excellent strategy for practicing skills; experiencing how one might handle a potential situation in real life; increasing empathy for others and their point of view; and increasing insight into own feelings.

Groups: Groups are helpful when the time is limited as it maximizes student input. Allows students interactions, allows to, know, one another better which in a way enhances team building and team work.

Educational Games and Simulations: It promotes fun, active

learning, and rich discussion as participants work hard to prove their points or earn points. They require the combined use of knowledge, attitudes, and skills and allow students to test out assumptions and abilities in a relatively safe environment.

Analysis of Situation and Case Studies: It gives a chance, to analyze, explore, challenges, dilemmas and safely test solutions for; providing opportunities for working together in groups, sharing idea, new learning and gives insight and promotes sometimes to see things differently.

Story-Telling: Can help students think about local problems and develop critical thinking skills, creative skills to write stories, or interact to tell stories. 'Story- Telling' lends itself to draw analogies or make comparisons, help discover healthy solutions. It also enhances attention, concentration, listening skills and develops patience and endurance.

Debates: Provides opportunity to address a particular issue in depth and creatively. Health issues lend themselves well: students can debate, for instance, whether smoking should be ban in public places in a community. It allows students to defend a position that may mean a lot to them. It offers a chance to practice higher thinking skills

Conclusion

Like Skills Education is very important from primary to higher education, especially in the stage of adolescence. Lack of life skills will lead to problems in the individual's life. Life skills plays a vital role in building personality and facing the life. Identifying the children with lack of skills and conducting intervention in those areas will bring significant changes in one's life. Adolescence is a period when the intellectual, physical, social, emotional and all the capabilities are very high, but, unfortunately, most of the adolescents are unable to utilize their potential to maximum due to various reasons. They face many emerging issues such as global warming, famines, poverty, suicide, population explosion as well as other issues like alcoholism, drug abuse, sexual abuse, smoking, juvenile delinquency, anti- social acts, etc. that have an adverse effect on them and others too, to a large extent. This new challenge requires immediate and effective responses from a socially responsible system of education. It has been felt that life skills education bridges the gap between basic functioning and capabilities. It strengthens the ability of an individual to meet the needs and demands of the present society and helps in dealing with the above issues in a manner to get desired behavior practical. Imparting life skill training through inculcating life skill education will help youth to overcome such difficulties in life. In the light of above discussion, it could be concluded, that, Life skill education has its importance and significance in overall development of students.

References

Pillai, R. (2012). The importance of life skills education for children and adolescents. Mind the young minds. Retrieved from https://sites.google.com/site/ mindtheyoungminds/ souvenir-cum-scientific- update

Puspakumara, J. (2011). Effectiveness of life-skills training program in preventing common issues among adolescents: a community based quasi experimental study (ALST). Presentation, Dept. of Psychiatry Faculty of Medicine & Allied Sciences Rajarata University of Sri Lanka.

Ravindra, et.al. (2017). Significance of Life Skills Education. Contemporary Issues in Education Research - First Quarter 2017, 10(1).

Vranda, M., & Rao, M. (2011). Life Skills Education for Young Adolescents and Indian Experience. Journal of The Indian Academy of Applied Psychology, 37 (Special Issue), 9-15. Retrieved from http://repository.um. edu.my/ 18138/1/jiaap% 20halim%20santosh%202011. pdf

Yadav P, Iqbal N (2009). Impact of Life Skill Training on Self-esteem, Adjustment and Empathy among Adolescents. Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, (35) Special Issue, 61-70. Retrieved from http://medind.nic.in/jak/ t09/s1/jakt09s1p61.pdf

Yankey T, Biswas U.N (2012). Life Skills Training as an Effective Intervention Strategy to Reduce Stress among Tibetan Refugee Adolescents. Journal of Refugee Studies. 25(4). doi:10.1093/jrs/fer056

Shakuntala Devi
Research Scholar,
Dept. of Education, M.D.U.,
Rohtak

41

Accelerating Digital Transformation with Reference to Banking Sector in India

Ms Gargi Sharma

Abstract-

Introduction- Digital transformation is incorporating an organization's products, services and strategies with computer based technologies. Organizations engage in digital transformation in order to engage their employees in a better way and to serve their customers with better products and services. In India still banking sector resist the introduction of complete digital transformation. Banks should take in to consideration some factors for successful implementation of digital banking. Government is also taking initiatives for digital transformation of our banking industry.

Purpose- The main purpose of this study is to show why digital transformation is needed in banking sector. The researches presents some important measures for making digital transformation successful in Indian banking sector.

Research Methodology- For current study, the researcher has gone through various online-research papers, annual reports on banking sector, report of RBI, Economic survey 2022-23 and other online information given on internet. This paper has been written after proper analysis of collected secondary data. Hence only secondary data has been used for this research work.

Conclusion- After interpretation and analysis of collected data, researcher found that our banking sector has not transformed completely in digital banking. Still there are some banks which are not taking it on serious note. Government of India has announced various initiatives to support banking sector for digital transformation in coming time. There is need for digital transformation of banking industry to survive in this global world.

Value of current study- The researcher has gone through 15-20 papers on this topic but not a single researcher talked about the measures for successful transformation of banking sector into digital banking. Here researcher tries to present those measures.

Keywords- Banking sector, Digital Banking, Transformation

Introduction-

Digital transformation is incorporating an organization's products, services and strategies with computer based technologies. Organizations engage in digital transformation in order to engage their employees in a better way and to serve their customers with better products and services

The digitization of society initiated in the late 20th century. And in first two decades of 21st century digitization grew rapidly.

Digital Transformation in Banking Sector - Digital transformation in banking is the integration of digital technologies into operations and culture of traditional banking. A digital integration in all the areas of bank, proper use of operations by availing new technologies and a value delivery to the customers is the main significance of digital transformation in banking sector. If this change is executed in a proper manner and right direction, then it can make banking sector more active in facing completion in this digital world with crowded market.

Most of the times it has been found that banking sector resists change in the working of business. It is mostly resist digitization. In the past customers generally use banking services by visiting branches personally, whether it was a big amount transaction or small amount. But, in recent times there has been a shift in client prospects and behavior, with more and more people carrying out their banking transactions online or through mobile apps. As a result, banks have had to acclimatize or risk being left before.

This process of digital transformation in banking has been ongoing for several years now, and it shows no signs of decelerating down. Banks have to modernize their systems and processes constantly in order to meet with the latest technology trends. In addition, they're under pressure to give a flawless experience to clients across all channels, whether that's in-person, online, or through a mobile app. The good news is that, despite the challenges, banks are beginning to embrace digital transformation and are reaping the benefits in terms of increased client satisfaction and loyalty.

According to an analysis by IBEF (INDIA BRAND EQUITY FOUNDATION)- Compared to the world's developed nations, 40% of the world's total digital transactions happen in India.

GOVERNMENT INITIATIVES IN UNION BUDGET 2023-24 (Source- IBEF REPORT)

According to the Union Budget 2023- 24, the RBI has decided to digitalize Kisan Credit Card (KCC). It is expected that there would be an increase in credit flow in rural area.

As per the Union Budget 2023- 24, digital banking, digital payments and fintech inventions have grown at a rapid pace in the country. Taking forward this movement, and to mark 75 years of our independence, it's proposed to set up 75

Digital Banking Units in 75 districts of the country by Scheduled Commercial Banks.

The government has also proposed to launch in market, a digital rupee (CBDC) which is going to be issued by RBI through block chain and other technologies.

The government also proposed to bring all the 150,000 post offices under the digital banking core business to enable financial addition.

Proper spending on infrastructure, fast execution of government projects and continuity of reforms are expected to give motivation to grow in the banking sector. India's banking sector is strengthened for robust growth as fast growing businesses are going to banks for their credit requirements. The advance technology has brought around mobile and internet banking services to the fore. The banking sector is working hard for delivering upgraded services to their customers and improving their technological structure to give good experience to their customers and to become more competent in digital market.

In recent times India has experienced a rise in fintech and microfinancing. India's digital lending was atUS$ 75 billion in FY18 and is expected to reachUS$ 1 trillion by FY23 as fivefold growth in digital lending noted.

(References: Media Reports, Press releases, Reserve Bank of India, Press Information Bureau, www.pmjdy.gov.in, Union Budget 2023-24, Economic Survey 2022-23)

Objectives

1. To explore various categories of digital transformation in Banking sector.

2. To create awareness about measures to make digital transformation successful for banks in India.

3. To create awareness in banking sector and bank customers about need of digital transformation.

Research Methodology

Type of Data- Secondary

Sources of Data-Various online-research papers, annual reports on banking sector, report of RBI, Economic survey 2022-23 and other online information given on internet.

Categories of Digital Transformation in Banking Sector

1. Neobank

These banks offer online services. These are not fully licensed. These are backed by some financial institutions. These are 100% mobile startups. This allows them to offer their customers more affordable rates and freights, as well as more convenience and elasticity.Compared to traditional banks, neobanks have a narrower range of services. though, this is changing as many Neobanks acquire bank licenses of their own. Fully licensed Neo banks are known by the name of New Banks also.These banks provide all kinds of banking services like traditional banks but the manner of their conduction is different, as these are completely digital. The example of these kind of banks are-Revolut, Monzo, N26 etc. In addition, numerous Neobanks partner with subsisting banks for bank- certified operations, which gives their customers access to a wider range of services.Paytm, Google pay are very popular Neobank

According to the Economic Survey 2022-23, (Source- IBEF Report) Over the last few years, the number of neo banking platforms and global investments in the neo-banking segment has also risen consistently.

2. Challenger Bank

Challenger banks are a type of fiscal institution that has come in response to the challenges posed by traditional banks. Unlike traditional banks, challenger banks are generally more user-friendly and cost-effective, with a focus on underserved parts by big financial institutions. The term "Challenger bank" began in the United Kingdom, where a number of these institutions have been established in recent times. Challenger banks have gained reputation in other countries as well, as they offer an alternate to traditional banking that's more acclimatized to current requirements. While challenger banks are still a somewhat new miracle, they're speedily making their mark on the banking industry and are poised to turn a major force in the times tocome.

3. Non-Bank

There has been a recent rise in the number of nonbank fiscal institutions, which give fiscal services like as loans and mortgages. But they cannot accept deposits from public. These institutions are not regulated by any banking regulatory agency. They do not have bank license. These institutions are capable to fill a need for streamlined fiscal services that traditional banks can notmeet.In addition, these nonbanks are much more flexible than banks and can offer more personalized services. As a result, they've become a popular choice for numerous consumers. But consumers should do proper search for a trust worthy Non-Bank institution.

Measures to Make Digital Transformation Successful In Banking Sector

1. Customer-First Approach

For delivering satisfactory services to customers, the proper analysis of customers' expectations is essential so that product or services can be provided accordingly. Presently every single customer wants delivery of banking services on continuous basis without any delay. They want

personalized experience in online-service. They want security and transparency in their relations with banks. Current time is calling for adopting 'Customer First' approach for achieving goals of more profit with customer satisfaction. Present time's customer wants everything in their hands. Hence, banks have to work fast for digital transformation.

2. Upgrading Skills of Employees

According to the World Economic Forum's report, more than 55% banking sector workforce needs upgradation of their skills to meet the needs of digital market. This upgradation drive is going to consume a lot of funds for making necessary improvements in the banking industry. It is going to change the organizational culture of banking industry. But changes are must to survive in this competitive digital world. Because a single mistake will kick you out of the ground. Investment of funds should be made with proper planning by team of an expert.

3. Introduction of New Technologies

Technology has been changing on a very fast speed. Those who want to run with the technology should introduce it timely otherwise there will be no use of any efforts in future. We have to run with technological changes so that we can compete it properly. Every new technology becomes outdated after few months with the introduction of upgraded technology. For example use of mobile in place of computer because we have internet in our mobile every time, firstly 2G, then 3G, then 4G and now 5G is replacing 4G. Now customers are aware of every new product in the market. So to sell your product to customers it is very important to make yourself attractive and valuable so that customers will use your services.

4. Modernization of Banks' infrastructure

The underlying infrastructure has a crucial role in facilitating the information flow that is key to the success of digital operations. So, it's important to modernize internal infrastructure to support digital platforms. A micro-service architecture breaks up an application into small, independent services that can be developed, deployed, and scaled independently. This approach can be helpful in reducing development costs and time.

In addition, APIs (Application Programming Interface) with the use of some codes, facilitates communication between bank and client services and also keep the integration secure between both bank's system as well as customer's system. DevOps is a set of practices that automates and accelerates the software development process with the increase in business transactions. It keeps the banking system active with changing circumstances. Overall, with the modernization of traditional infrastructure and adopting these approaches, organizations can make their digital transformation journey smoother and more successful.

5. Understanding different Operating Models

Today customers want an experience that has both the convenience and digital speedbut with the personal look and feel of the product. This can be possible with the transformation of businesses into these different operating models:

- Digitize front-end only- This is the simplest approach towards adopting digitization. In this banks have to focus on modification of front-end only. Eg- Fixing modern websites and app so that customers start perceiving that their banks have started adopting digital transformation of banking system.
- Digital as New Line of Business: Under this the business is divided in to different digital division and each division focuses on specific digital activities.
- Digital Native: Under this type of set-up own technology stack is used by organizations to focus on customers directly.

Each model has its own pros and cons. But for digital transformation it is very essential for banking sector to understand these models and other emerging models clearly. So that they can do business flexibly and can retain their existing customers and attract new customers.

6. <u>Completely Digital-Environment for Employees</u>

It is the time to make sure that banks are able to create an environment of innovation and experiment with new ideas for their employees. It is a very critical matter for banking sector as encouraging employees to learn new technologies is must for long time survival of business. Now there is need of experts at the working place to train the bank team in the right direction. And for employing these technologies as well as experts a lot fund is required. So banks should make sure that they have enough funds to take steps in direction of digitalization. If banks fulfil all these requirements, then their success is not so far in this digital journey

7. <u>Making Improvements in continuity</u>

To make continuous improvements in the business system the key factor is seamless innovation which should follow agile principles for delivery. Agile principles focus on changing market trends and needs of customers. After understanding the customer and market needs properly, new and improved products are delivered to the customers. Doing research, testing and innovating new products according to demand of ever changing digital world should

be the main motive of banking business to remain in this digital race in the long run. Customer satisfaction is possible only with proper interpretation of their needs.

Why Digital Transformation is needed for Banking Sector?

- Digital transformation has changed the old operational methods of banking. The method to serve customers has also changed. If we see current scenario, there is possibility of more changes in future banking.
- If we talk about traditional banking, it is almost faded away from the scene. Traditional banking methods use to consume a lot of time and cost in hiring employees. Now there is an urgent need to bring a change to fasten and ease the banking tasks.
- Pandemic time has played an unforgettable role in the growth of internet banking especially mobile banking. Because of lockdown and health issues, people started using mobile banking for every single transaction. Mobile banking worked as a God gift for people during that time.
- If we talk about our coming generations, they are faster than us in adopting digital banking. They are going to become a part of already existed digital world. They are unaware of traditional banking methods. They know only digital banking. Hence, they want digital banking services. Future generation is going to live with digital world from their infancy stage till their old stage.
- People need banking services according to changing world market trend. Private banks and foreign banks have taken this transformation on serious note. But public sector banks are still lagging behind.
- Banks that undertake digital transformation can expect reduced cost and increased profit in future.

Hence, for making this movement successful it is very much necessary for the banks to upgrade their technologies according to digital world in which they are existing. In coming time, digitalization will be one of the important key factor to earn good profits for the organization. Banking sector has to work on this concept seriously so that they can satisfy the needs of their customers in faster and improved way.

Conclusion

- In last five years we can see digital transformation of banking sector in India.
- After reviewing some research papers and online information, researcher found that the public sector banks are far behind private sector banks in digital transformation.
- Neo banks are performing better than digital banks. Neo banks are easily approachable by users.
- With the use of suitable measures, the movement of digital transformation of banking sector can be made successful.
- Banks as well as bank customers have to understand the need and importance of digital transformation of banking services.
- As per Union Budget 2022-23 and 2023-24, various initiatives have been taken by Government of India for digital banking in India. It is the time to make use of all these initiatives by banking sector.

References

1. Alt, R., Beck, R., & Smits, T. M. (2018). Fintech and Transformation of the Financial Industry. In Electronic Markets 2018. Springer Publications. . doi:10.1007t2525-018-0310-9
2. Alvermann, D. E. and Sanders, R. K. (2019), Adolescent literacy in a digital world. The international encyclopedia of media literacy, 1–6. https://doi.org/10.1002/9781118978238.ieml0005 Google Scholar
3. Saxena, A. (2021). Future of Work: NEO Banks set to take Fintech to the next level,saysRajorpay Founder. Retrievedfromhttps://yourstory.com/2021/03/future-of-work-neobanking-india-razorpayshashank-kumar-fintech
4. Digital India https://digitalindia.gov.in/
5. www.pmjdy.gov.in
6. Economic Survey 2022-23 report
7. https://sdk.finance/what-is-digital-banking/
8. https://www.worldbank.org/en/publication/gfdr/gfdr-2016/background/nonbank-financialinstitution
9. https://www.veritis.com/blog/8-factors-that-drive-digital-transformation-in-banking-industry/
10. https://www.tibco.com/reference-center/how-to-successfully-implement-digital-transformation-in-banking
11. https://iide.co/blog/digital-transformation-banking-sector/

Ms Gargi Sharma
Assistant Professor
DAV Centenary College, Faridabad
Email-gargi.sharma84@gmail.com

42

The First Fundamental Source of Law And Order of The World: The Vedas

P.L. Gautam

- Abstract
- Period of Vedas: comparative study to determine the time of Vedas.
- The concept of Rit or cosmic laws.
- Conceptualization of Rit into law of the world.
- Theory of yajna (or yajan).
- The ideology of equality and social harmony.
- Conclusion.

Abstract :

The term Veda is from the Sanskrit root vid,' ,means to know, sacred writing or knowledge. Religion of Rig Vedic time was worship of forces of nature, though Varun controlling forces of nature, by the power of Rit or moral order. On the basis of available sources everyone would accept it that, law of Universe is based on Rit, mentioned in the Rig Veda. Origin of law considered as tradition of Shruti, which signifies what is heard. Vedas are most ancient scripture of the world, these books refers law and order. In the whole world first time Rig Veda announced that – theft, robbery, misbehaviour with women, to make dirty water, air etc are – sin' 'or in legal term – offence. Law of every country of the world accept it that theft, robbery etc against law. Second concept of Rig Veda is sacrifice for other or contributes extra material in others, called – Danna.' 'Without Danna' poor would be more poor. So contribution of some material in – ***have not*** is necessary duty of mankind to maintain law and order of the world. Sacrifice is a law of life. If ***haves*** do not sacrifice, their would be anarchy. Both of these concepts are following almost all countries of the world. These are basics concepts, to those following all countries. This is theme of this article.

The Vedas are the corpus of four Samihitas, the Rigveda and three Vedas namely: Yajurveda, Atharveda and Samaveda which are the oldest books in the world known as Samihitas. They are divided into two classes, called sruti and smriti. The works indicated by the term sruti are the four Vedas and Samitas meaning collection of hymns 'or' mantras' and the Brahmans of the Vedas, with their Aranyakas for hermits and their Upanishads. Samhita literally means to put together a collection and a methodically rules based combination of text of verses. Samihita refers to the most ancient layer of text in the Vedas consisting of mantras, hymns, prayers and benedictions written in Sanskrit. These Samihitas were collected by different ancient Indian scholars called Rishis.

Period of Vedas

1. German Indologist Herman Jacobi (1850-1937) said Rigveda was assembled between 4500 B.C. to 2500 B.C[1]
2. On the basis of astrological calculation, Bal Gangadhar Tilak, an eminent Indian scholar and freedom fighter believed that Aryan culture emerged around 6000 B.C. and during this period Vedas were compiled by Scholars or Rishis.[2]
3. The prominent German scholor Maxmueller (1823-1900A.D.) estimates that the hymns of Rigveda were already much, as we now have them about 1500 BC.[3] He wrote, there is nothing more primitive, more ancient than the hymns of the Rigveda, whether in India or in the whole Aryan world. Being Aryan in language and thought the Rigveda is most ancient of four books'.
4. While German Scholar of Sanskrit literature Winternitz [4] (1863-1937) was of the opinion that, probably 3000 B.C. was the time of the composition of Rigveda.
5. Macdonell is content to say that the 'vedic period perhaps begins as early as 1500 B.C., that the kernel of vedic tradition, as represented by the Rigveda, has come down to us, with a high degree of fixity and remarkable care for verbal integrity from a period which can scarcely be less remote than 1000 B.C., and that the samhita text must have been, as we have it about 600 B.C.[5]

The Boghazkoi inscription found in Asia Minor is of 1380 B.C., records a treaty between a Hittite and Mitanni King which refers to the worship of Varuna, Mitra, Indra and Nasatyas etc. Reference of these gods reflects that those Kings had faith and the text was similar to an oath in the name of these gods.[6]

In accordance with the inscriptions, we can say that, Vedas were formed before 1380 B.C. The reason being the fact that the reference of these gods is found in Vedas only. And at the time, Asian people's faith in these gods was very well established.

Some authors of language science believe that, when Vedas were being assembled, the work of Iranian book Avesta was also in process and Vedic god Veruna was called in the name of Ahura Mazda in Avasta. Professor Keith[7] wrote that, Varuna bears the epithet Asura, which serves to show his parallelism with Ahura Mazda, the highest of Iranian gods, nor can there be any reason to doubt that in the indo-Iranian period he acquired his moral elevation and preeminence.' Dr. Maurice

Bloomfield who compiled the huge concordance of the Vedas which was published in 1906. He says, 'Any how we must not be beguiled by that kind of conservatism which merely salves the conscience into thinking that there is better proof for any later date such as 1500, 1200 or 1000 BC. rather than the earlier date of 2000 BC. Once more frankly, we do not know.[8] Finally we can thus assert that Vedas were created around 2000 BC.

The Concept of Rit or cosmic law

The teachings of Vedas are very significant for human society. These sacred books not only had prayers of ancient Indian gods but were also the first source of law & order. The Foundation of this concept is called Rit (Ritam Satyam dhamma) or cosmic law. Rit is eternal truth (Satyam) and following these laws of nature is a Vedic Dharma. Rit means what is established and the right way or on that route which we have to go. Second meaning represent the concept of Rit as per Maxmueller. Hiriyana,[9] An Indian philosopher wrote that, 'day to day functions of nature which we see during the day and night is a part of Rit. So Rit stands for phenomena of infallible order and it is also the moral order in which gods and men are to conduct themselves. The Tenth Part of Rigveda (Purusasukta) says that space, earth, moon, sun, Indra, Agni are all created by god[10]. God is also the creator of Rit and the truth (Ritam Chh Satya)[11]

We see every day that, Nature follows the rules of Rit and these rules should not be disobeyed.

In its cosmic aspect, it is due to Rit; the Sky and earth are firm, the sun rises; Water flows and cows yield milk. In other words, everything is what it is and how it is due to the working of Rit. It is the law that, regulates the Universe. These cosmic laws of necessity (Rit) are in Vedas as a subject contained in the book of nature.

Yajurveda[12], states that we get true knowledge of these cosmic laws from seven forces of nature namely: the sun, moon, firmament, water, clouds, fire and earth, which are all beneficial to mankind.

The great importance given to Rit in Vedas can be, appreciated from the description of these laws in Rigveda[13], it says : 'Ritim Satyam Vijnani, meaning of this statement is; 'absolute truth' and the 'Rit is the only true knowledge.' Rigveda annouced that any forces of nature (or gods), does not follow rules of Rit or cosmic laws then that, Deity would be penalized by Varuna. Varuna called a protector of Rit or "Ritsy Gopa" [14].

In few hymns, Indra is also mentioned as protector of Rit. Bloomfield referred to Rit as "one of the most important religious conceptions of Rigveda". Further note that, from the point of view of the history of religious ideas, we may rather consider it the beginning of the history of Hindu religion and its conception[15].

Conceptualization of Rit into law of the world

The concept of Rit is the doctrine of Dharma, (duty) and karma (accumulated effects of good and bad actions). Rit is the physical order of the universe, the order of sacrifice and the moral law of the world, because of Rit the sun and moon pursue their daily journeys across the sky and the seasons proceed in the regular cycle.

Varuna the sovereign guardian of Rit, assisted by Mitra, the god of honour. The performance of sacrifices by the gods is necessary for the continuance of the process Violation (anrita) of the established order of universe. Like this incorrect or improper behaviour by the mankind even if unintentional constitute called 'sin';

Thus, the rules of Varuna are not only essential for nature but these provisions of Rit are also necessary for human society.

Society is regulated by moral laws, if any member of society does not follow their own rules there will be anarchy in that society. Gods (or deities) follow their own rules, likewise mankind should follow their moral rules or laws. Theft, robbery, violence, misbehaviour with women all are against morality. Any act against nature like, to pollute water, air or earth, destroying greenery etc. against the system of Rit. In this way, any action against moral rules of society, as we said is called sin. And in view of present government so called sin or action against laws become an offence.

There is prayer in Rigveda[16] , "O merciful God be kind to us we violate your laws knowingly and unknowingly day after day. These laws are inviolable, immutable and eternal[17].

According to Rit, the laws of nature are the supreme for the universe. Similarly in any society laws are bigger than any person or leader might is right is not a acceptable order of Rit, in this system weaks are equally protected. Theft, robbery, violence etc. were considered as sin. Simultaneously, these provisions are offence as per law. It indicates that the fundamental base of modern law was Rit and that concept of Rit was first of all announced in Rigveda.

Theory of yajna (or Yajna)

Another major concept of thought is yaja (yajna) or sacrifices. This is also very important concept of Vedas . This view of thinking is also essential to maintain law and order of society.

1. Arthur Berriedale Kieth[18] (1879-1944) was scholar of Sanskrit and indologist, says that, the gods are willing to

grant boons if they are worshipped, and the overwhelming mass of the evidence shows that the ordinary vedic sacrifice was an offering made to win the divine favour, though thanks offering may well have been known.

2. V.M. Apte[19] (Indian historian) wrote that "It is hardly any wonder that humanized gods of the Rigveda should share some human weaknesses and be susceptible to flattery and gifts". The concept of these scholars are based on general meaning of word Yaja.

Word Yaja has a very deep meaning. The law of sacrifice is the law of life for all jivas . In the earlier stage of their growth they are forcibly sacrificed, and so progress in voluntarily, without their own consent or even knowledge, their forms being violently wrenched away from them, and they propelled into new Jivas, little more developed. Thus the Jivas of the mineral kingdom are prepared to pass on into the vegetable, by the breaking up of their vegetable, bodies for the support of animal life. The Jivas of the animal kingdom are prepared to pass on into the human ---- and of certain types of men[20]. As per Panini (Sanskrit Grammarian of ancient India – 7th and 5th centuries BCE.), Yaja means prayer of god and donation (or Dana). "Dev pooja sangtikarnaDaanshu." Yajna is not merely a general ritual but it is a complete way of a life. The spirit of rising over and above self-interest to make a voluntary sacrifice for good of the human. God has graced mankind with elements of life; sun, water, light, heat, earth which are building, blocks of all human needs. Yaja is performed not only to show gratitude but also as a mode of appreciation of world life & develop respect toward it.

In the Opinion of Panini, Yaja is said to be the combination of three things: "Dev pooja, Sangti-Karan, and Dana. Dev Pooja or worship of God through yajna. Here Yaja means not only to put barley sesame (like mustard), rice and other articles in a fire but it is like the action of mankind to keep the atmosphere clean, namely, water air, space and save greenery for the betterment of humanity. Second, Sangti Karan (or companionship) is to have the company of virtuous people to make friendship and love them and remove all enmity. Third, Dana or charity means to sacrifice for the good of others without self-interest. Without sacrifice or dana social harmony of the world cannot be maintained. Have-nots need some help or sacrifices of others to maintain social balances.

Ideology of equality and social harmony : Socialism in India is at least 4000 years older than Karl Marx. During Vedic time due to unequal distribution of wealth, the ancient, Indian economists have suggested two remedies: one is the spiritualization of the group of capitalists to make them voluntarily donate their surplus wealth for the good of those who need it. Dana was one of the forms of this concept. The second is the taking by force for the surplus wealth of selfish capitalists for fair distribution among the needy. Dana or giving to needy persons aimed at public benefit sometimes called Utsarga (or sacrifice for others). Rigveda relates it to Satya" (truth) and in another hymn points to the guilt one feels from not giving to those in need, it uses da, the root of word Dana in its hymn to refer to the act of giving to those in distress[21]. The last hymn of Rigveda emphasizes the distribution of wealth to the poor. RC Majumdar (1884-1980) Indian historian wrote that. " The last hymn of Rigveda contains a passionate appeal to the rich to feed the hungry and share their wealth with the poor. It is a remarkable hymn that recalls to our mind the modern conception of socialistic or welfare state [22].

Conclusion

The contribution of Vedas has been immense to the world over the ages, They define Rit or cosmic law. Rit denotes the first fundamental source of law and order of mankind. Vedas not only defined the system of nature and relation with the Rit that shows in their day-to-day pattern. But also declared mankind's relation with this system of Rit, humanity had to follow their own moral rules and laws like nature.

When all over the world "might is right" was the only law at the time, Vedas announced that there should be laws and regulations for mankind. If any power of nature disobeys the rules of cosmic law (or system of Rit), Those would be penalized by Varuna. Varuna is not only watching the system of nature but also of mankind and that human being should follow their own moral law and rules.

Vedas are the source of Indian literature, art, music, science, philosophy, culture, tradition etc. Maxmueller said that "If I am asked which nation was advanced in the ancient world in respect of education and culture then I would say it was India".

The Vedas have given to the world, Values of traditions, nonviolence, the importance of truth, religious tolerance, equality, unity and integrity of mankind. The greatest scholar of America Mark Twain (Samuel Langhorne Clemens, 1835 to 1910) writes that India is the cradle of the human race, the birthplace of human speech the mother of history and the great mother of tradition. Our most valuable and most instructive materials in the history of man are treasured up in India only.

Conclusively, we can say. "The contribution of Vedas are not limited to cosmic law or Rit but they also teach us humanity. They have given a roadmap for human beings not to fight for land or wealth but to fight for rights and values, not to conquer each other but to conquer oneself, not

to discriminate against any religion, race or belief but to respect all mankind, not to destroy but to build not to hate anyone but love everyone, not to isolate oneself but to integrate everyone into one humankind.

References:

1. Jacobi Herman on the antiquity of Vedic Culture: The Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, July 1909, Cambridge University Press.
2. Bal Gangadhar Tilak, The Arctic home in the Vedas, 1903, Tilak Bros. Gaikwada Poona city, chapter III to IX.
3. Maxmueller, origin and development of Religion: Friedrich Max Mueller and the sacred books of the East. (1879-1910) ; India , Sanskrit literature, pp. 8, 47-50.
4. Winternitz, A History of Indian Literature, published by the University of Calcutta, 1927, Part I, P 258.
5. Macdonell, Sanskrit literature, PP 8, 47-50.
6. Leonard W. King Boghazkoi inscription K, Hittite text in the cuneiform character tablets in the British Museum London 1920. Published in Classical weekly, The Hittite tablet from Boghazkoi, April 20, 1925 P. 171-175, The Johns Hop Kins University press.
7. Keith & The Cambridge history of India, Vol I, P. 92.
8. Bloomfield religion of the veda p.19.
9. Hiriyana, Outline of Indian philosophy P. 31.
10. Rigveda 10/20/12-14.
11. Rigveda 10/190/1.
12. Yajurveda 26/1.
13. Rigveda 1/75/5
14. Rigveda 5/63/1
15. Bloomfield, The Vedas, Vedic Hindu scripture, 1908, 12-13.
16. Rigveda, 1/25/1.
17. Rigveda, 1/12/7.
18. Keith B. The Cambridge History of India, Vol I, P.95.
19. Apte VM, the Vedic age P. 380.
20. Hindu Religion and ethics 1916, P.57.
21. Rigveda, 10/117.
22. Majumdar RC, Ancient India, P.53.

P.L. Gautam

{AUTHOR}

'Pracheen Bharat ka Ithihas Evam Sanskrit' (IAS/PCS)

G.K. Publication, New Delhi

'Adhunik Bharat ka Ithihas Evam Virasat' (IAS/PCS)

Atlantic Publishers, New Delhi

'Shravya Ka Affair' Diamond Pocket Books, New Delhi

Email: - plgautam20@yahoo.in

Mobile No.: +91-9772037903

Sh. P.L. Gautam
5-A-krishana Nagar
Police links Road
KOTA Rajasthan
Pin -324001
Mob. 9772037903

43

Title:Custodial Violence in India: A Critical Examination through the Lens of Human Rights

Dr. Pawan Kumar, Ms. Samriti

Abstract

Custodial violence remains a pervasive issue in India, representing a blatant violation of human rights and a threat to the principles of justice and accountability. This research paper aims to comprehensively analyze the prevalence, underlying causes, and implications of custodial violence in India, with a specific focus on its direct contravention of human rights principles.

The study employs a multi-faceted approach, integrating qualitative and quantitative methods to present a thorough assessment of the problem. Extensive literature reviews, official reports, and case studies on instances of custodial violence are analyzed to unveil the patterns and systemic factors that perpetuate this disturbing phenomenon. The research examines custodial violence not only as an isolated act but as a manifestation of deeper institutional flaws within the Indian criminal justice system.Drawing on international human rights standards, the paper evaluates the rights most frequently violated during custodial violence, including the right to life, liberty, and security of person, the prohibition of torture and cruel, inhuman, or degrading treatment, and the right to a fair trial. By highlighting these violations, the research underscores the urgent need for comprehensive legal reforms and the strengthening of law enforcement oversight mechanisms.

Introduction:

Custodial violence, a disturbing and deeply concerning phenomenon, refers to the abuse, torture, or even death of individuals while in the custody of law enforcement authorities. In the Indian context, custodial violence poses a significant challenge to the nation's commitment to upholding human rights, equality, and justice for all its citizens. Despite constitutional safeguards and international human rights norms, instances of custodial violence continue to emerge, casting a shadow on the credibility and accountability of law enforcement agencies.From 2013–14 to 2021–22, the NHRC reported a total of 1235 cases against deaths in police custody and 15,458 cases against deaths in judicial custody.

Custodial violence occurs within police stations, jails, detention centers, and other places of custody, where individuals are held during the investigation or criminal justice process. The abuse can take various forms, including physical violence, psychological torment, sexual assault, and other forms of cruel, inhumane, and degrading treatment. The victims of custodial violence often include marginalized and vulnerable sections of society, such as minorities, socio-economically disadvantaged groups, and political dissidents.

The factors contributing to custodial violence in India are complex and multifaceted. A lack of effective oversight and accountability mechanisms within law enforcement agencies often leads to a culture of impunity, where perpetrators escape punishment for their actions. Inadequate training, resource constraints, and outdated investigative practices may further exacerbate the likelihood of abuses in custody. Additionally, the influence of political pressure, corruption, and societal biases can hinder impartial investigations and the prosecution of those responsible.

The impact of custodial violence extends far beyond its immediate victims. Survivors often suffer from severe physical and psychological trauma, with long-lasting consequences on their well-being and ability to reintegrate into society. Moreover, custodial violence erodes public trust in law enforcement institutions and undermines the fundamental tenets of a just and equitable society. The fear of being subjected to custodial violence also hampers individuals' willingness to cooperate with authorities, leading to potential miscarriages of justice.

Constitutional provisions regarding custodial violence in India:

In India, the Constitution provides several key provisions and safeguards aimed at preventing custodial violence and protecting the rights of individuals in custody. Some of the essential constitutional provisions regarding custodial violence are as follows:

1.Article 20(3) - Protection against Self-Incrimination:

Article 20(3) of the Indian Constitution guarantees that no person accused of an offense shall be compelled to be a witness against themselves. This provision prohibits the use of torture, physical or psychological, to extract confessions from individuals in custody. It upholds the principle that a person cannot be forced to incriminate themselves and reinforces the protection of their right to remain silent.

2. Article 21 - Right to Life and Personal Liberty:

Article 21 enshrines the fundamental right to life and personal liberty. It asserts that no person shall be deprived of their life or personal liberty except according to the procedure established by law. The Supreme Court of India has interpreted this article expansively to include the right to live with dignity, free from

any form of torture or inhumane treatment, including custodial violence.

3. Article 22 - Safeguards against Arrest and Detention:

Article 22 of the Indian Constitution provides certain safeguards for individuals arrested or detained under ordinary circumstances. This article includes the right to be informed of the grounds of arrest, the right to legal representation, and the right to be produced before a magistrate within 24 hours of arrest. These provisions aim to prevent illegal detention and ensure the protection of individuals' rights during custody.

4. Article 39A - Equal Justice and Free Legal Aid:

Article 39A directs the State to ensure that the operation of the legal system promotes justice on the basis of equal opportunity and provides free legal aid to those who cannot afford legal representation. This provision ensures that individuals in custody have access to legal assistance and representation to safeguard their rights and interests.

5. Article 51A - Fundamental Duties:

Though not a fundamental right, Article 51A of the Constitution outlines certain fundamental duties of citizens. It includes a duty to abide by the Constitution and respect its ideals, which encompasses the duty to uphold human rights and respect the dignity of all individuals, including those in custody.

National framework on custodial violence:

In the landmark case of **D.K. Basu v. State of West Bengal (1997)**, the Supreme Court of India issued crucial guidelines to prevent custodial violence and protect the rights of individuals in custody. These guidelines are aimed at ensuring the humane treatment of detainees and preventing the abuse of power by law enforcement agencies. The Court emphasized the need for strict adherence to these guidelines to safeguard the fundamental rights of individuals in custody.

The key guidelines are as follows:

1. Identification of Police Personnel: The police officers carrying out the arrest or interrogation must wear visible and clear identification, including their name tags and designation, to make them accountable for their actions.

2. Memo of Arrest: A memo of arrest must be prepared at the time of arrest, containing the details of the arrestee, the arresting officers, and the grounds for arrest. This memo must be attested by at least one witness, preferably a family member or a respectable person from the locality.

3. Information to Family Members: The person being arrested must be informed of their right to have a relative or friend informed about their arrest and their location. The police must also inform a family member or friend about the arrestee's custody and location without delay.

4. Medical Examination: The arrested person must be subjected to a medical examination by a qualified doctor within 48 hours of arrest. The examination should be documented, and any pre-existing injuries or signs of ill-treatment must be recorded.

5. Right to Legal Representation: The arrestee has the right to consult and be defended by a legal practitioner of their choice. The police must inform the arrestee of this right and facilitate legal representation if requested.

6. Avoiding Undue Restraints: Handcuffing should only be used when there is a clear risk of escape or violence. The decision to use restraints must be based on a written order explaining the reasons for such action.

7. Notification to Magistrate: The arrested person must be produced before the nearest magistrate within 24 hours of arrest, excluding the time necessary for the journey. The magistrate must be informed about the arrestee's well-being, and any allegations of ill-treatment must be communicated.

8. Entry in Custodial Register: An entry must be made in the custodial register maintained at the place of detention, providing the details of the arrest, the name of the arresting officer, and the time and place of arrest.

9. Strict Compliance: These guidelines must be displayed prominently in all police stations, and law enforcement personnel must strictly adhere to them. Failure to comply may lead to disciplinary action against the errant officers.

The guidelines laid down in the D.K. Basu case have significantly contributed to promoting transparency, accountability, and respect for human rights within the Indian law enforcement system. They serve as a crucial safeguard against custodial violence and uphold the dignity and rights of individuals in custody.

Guidelines of National Human Rights Commission on custodial violence in India:

Some of the key guidelines of the NHRC on custodial violence in India are as follows:

1.Sensitization and Training: Law enforcement personnel must undergo regular and comprehensive training on human rights, including the prohibition of custodial violence. Sensitization programs should be conducted to create awareness about the rights and dignity of detainees.

2.Surveillance and Monitoring: Regular monitoring and surprise inspections of police stations, prisons, and other detention facilities should be carried out by independent authorities to detect and prevent custodial violence.

3.Custodial Deaths: Immediate reporting and thorough

investigation of all custodial deaths must be ensured, with a focus on establishing the cause of death and identifying any instances of foul play or negligence.

4.Medical Examination: Detainees must undergo a thorough medical examination upon admission to custody, and periodic medical check-ups should be provided during the detention period.

5.Legal Aid: Detainees must be informed of their right to legal representation, and legal aid should be made available to those who cannot afford a lawyer.

6.Video Recording: Video recording of interrogations and other significant events during custody may be implemented to enhance transparency and deter any potential custodial violence.

7.Compensation and Rehabilitation: Victims of custodial violence and their families should be provided with adequate compensation and rehabilitation measures.

8.Protection of Whistleblowers: Mechanisms should be in place to protect whistleblowers who report instances of custodial violence.

9.Awareness Programs: Public awareness campaigns about the rights of individuals in custody and the consequences of custodial violence should be conducted regularly.

It is essential to note that the NHRC continues to work actively to combat custodial violence and regularly updates its guidelines and recommendations based on emerging human rights issues and challenges. As guidelines and policies are subject to change and evolve, it is advisable to refer to the NHRC's official website or publications for the most current and comprehensive guidelines on custodial violence in India.

Conclusion:

Custodial violence in India remains a deeply troubling issue that poses a significant challenge to the protection and promotion of human rights in the country. The perpetuation of this abhorrent practice not only violates the fundamental rights enshrined in the Indian Constitution but also undermines the nation's commitment to upholding the principles of justice, equality, and human dignity. The prevalence of custodial violence is a reflection of systemic failures within law enforcement agencies and the criminal justice system. The lack of effective oversight, inadequate training, and a culture of impunity allow custodial violence to persist, leaving victims and their families to suffer the consequences of physical and psychological trauma.

To combat custodial violence effectively, it is imperative for the Indian government, law enforcement agencies, and civil society to work in tandem. Strengthening institutional mechanisms for oversight and accountability, enhancing training programs for law enforcement personnel, and promoting a rights-based approach to policing are essential steps in the right direction. Moreover, the society at large must be made aware of the gravity of custodial violence and the significance of respecting human rights, regardless of an individual's alleged offense. Empowering citizens with knowledge about their rights and responsibilities can create a more vigilant and accountable society that demands justice and transparency.

As India continues to strive for progress and development, the eradication of custodial violence is not only a legal and moral imperative but also a litmus test for the nation's commitment to human rights. By upholding the principles of justice, fairness, and compassion, India can create a safer and more equitable society, where the rights and dignity of all individuals, even those in custody, are respected and protected. Only through collective action and a steadfast commitment to Human Rights can India emerge as a shining example of justice and compassion for the world to follow.

References:

1. Aston J, 'International legal framework in prohibition of torture and custodial violence' (2020) torture behind bars.
2. Constitutional Law, 1950.
3. D.K. Basu v. State of West Bengal, 1997(1) SCC 416.
4. Manmeetsingh, “custodial violence in India”, Legal service India.com.
5. National Human Right Commission Report.
6. P. Asifa and Siddique N.A. (2021), historical perspective of custodial tortures in India, journal of emerging technologies and innovative research, volume 8, Issue 8.
7. Sai Krishna Muthyanolla, Data: no conviction of police personnel for human rights violations since 2018.

Dr. Pawan kumar

Assistant professor of law

BPS Women University Sonepat Haryana

Ms. Samriti

Research scholar

BPS Women University Sonepat Haryana

Samriti.mann121@gmail.com

9312636784

HNo. 111 Iradat Nagar Delhi 110082

44

STABILTY OF FLUID FLOWS

Dr. Sandeep Kumar Singh

Abstract

A System must be considered as unstable even if only one special mode of disturbance with respect to which it is unstable and a system can not be considered stable unless it is stable with respect to every possible disturbance to which it can be subjected. In other words, stability must implty that there exists no mode of disturbance for which it is unstable. In the space of goeverning parameters the locus which separates the stable and unstable states is called the state of marginal stability. The determination of this locus is one of the prime objects in any investigation related to hydrodynamic stability.

Introduction

The stability theory thus seems as a conformation of the theoreticians with the disturbances, irregularities and imperfections which are always present in the experiment. In appearance, the stability problem describes the phenomenon which may be realized in the physical world. However, this appereance is sone what misleading and in an attempt to imagine an experiment that would correspond strictly to a problem of stability one faces some conceptual difficulties. The basic solution (equilibrium state) whose stability is being studied, has no other a priori significance than that of a theoretical abstraction it represent a possible functioning of the physical system in an idealized world. In studying the stability of the solution in question, we admit, in fact, that the condition for its validity cannot entirely be realized in an experimental investigation.

Given a physical problem, an equivalent mathematical model is constructed which is generally described by a set of equations and boundary conditions. We solve this mathematical model and obtain a solution. We call this solution as theoretical solution say S_T. Then, we consider a solution S_T+S_P such that the magnitude of S_P is small as compared to that of S_t i.e. a solution in the neighbourhood of the theoretical solution S_T, S_P and S_T+S_P are respectively called the perturbation and the perturbed solution. It is important to note that these perturbations are generally introduced through assumptions and approramations while constructing an mathematical model equibalent to the given physical situation in an arbitrary number of ways. If this perturbed solution approaches to the theoretical solution as the time passces, the system is said to be stable on the other hand, if the perturbed solution goes on departing from the basic solution, the system is said to be unstable. We always try to discard an unstable solution, asthese type of solutions have no chance of survival in any physical situation. Thus in a stability problem, we are commonly concerned with a hydrodynamic system with a given set of parameters, (R_1, R_2, R_3……R_j) which, in accordance with the equations governing it is in a stationary state i.e. in a state in which none of the variables describing it is function of time and we study the reaction of this system to perturbations which are taken to be arbitrary functions of space variables. Specially, we ask, if the system is disturbed, will the disturbance gradually die down, or will the disturbance grow in amplitude in such a way the system progressively departs from the initial state and never reverts to it. The mathematical treatment of the problem of stability generally proceeds. We start form an initial flow which represents a stationary state of the system. By supposing that the various physical variable describing the flow suffer small increments we first obtain the equation govering these increments. In obtaining these equations form the relevant equations of motion. We neglect all products and powers (higher than the first) of the increments and retain only terms which are linear in them. The theory derived on the basis of such linearized equations is called the linear theory of stability in contrast to the non-linear theories which attempt to allow for finite amplitudes of the perturbations. In this process the perturbations are resolved into dynamically independent wave like components satisfying the linearized equations and boundary conditions of the problem. The assumption that the disturbance can be represented by wave components serves to separate the variables and to reduce linearized equation of motion from partial to ordinary differential equations. The final process consists in solving the set of coupled, homogeneous, ordinary, linear differential equations governing the amplitude of disturbances, subject to appropriate boundary conditions of the problem under investigation. The stability or instability is ultimately represented by a characteristic equation. Which is the function of wave frequency, wave number and certain physically significant parameters involved in the system.

REFERENCES

1- Banerjee M.B. (1987) "A Modified instability criterion for heterogeneous shear flows"

2- Chandrashekhar S. (1961) "Hydrodynamic and Hydromagnetic stability" oxford University Press.

3- Coltagirone, J.P. and (1985) "Solutions and stability

Criteria of natural convective flow in an inclined porous layer." J. Fluid mech., 155,267.
4- Kochar, G.T. (1979) "Stability of fluid flows-some problems" Ph.D. Thesis. IIT Kanpur, India.
5- Miles J.W. (1959) "On the generation of surface wave by Snea flows" Part 3, J. Fluid mech., 7, 583-598.

Dr. Sandeep Kumar Singh
Dept. – Mathematics
S.B.D. (P.G.) College
Dhampur, Bijnor

45

Theme of Familial Relationship in Shashi Deshpande's Novel- The Binding vine.

Dr. Nirmal Boora

Abstract:-

Shashi Deshpande's novels show how an educated woman's ideas of individuality and freedom bring her into confrontation with the family, with the male world and the society in general and how the education, economic independence and motherhood disturb her familial relations. The purpose of this paper is to study Shashi Deshpande's particular treatment of familial relationship in the novel**The Biding Vine** and to show her instinctive understanding and sensitivity in articulating women's feelings. Shashi Deshpande explores the changed consciousness of middle-class educated Indian women and their manifold relationship with family. With the social and cultural change in the post-independence India, the women find themselves at the crossroads. The present study also aims to show that Deshpande is not radical feminist in her treatment of familial relationship. While depicting the issue like Indian women's individuality and freedom, Deshpande avoids the western notion of women's freedom in terms of separation from her husband and family. Thus, the study of Deshpande's treatment of familial relationship makes it clear that she advocates for an ideal family set up where both men and women avail equal opportunities and privileges, where cooperation, compromises and companionship prevail.

Keywords:- Familial, patriarchy, Empowerment, Traditional.

Familial Relationships in Shashi Deshpande's Novel – <u>The Binding Vine</u>.

"Marriage is the destiny traditionally offered to women by society. It is still true that mostly women are married or have been or plan to be, or suffer from not being", says Simon De Beauvoir. In the Indian context, marriage is the most important event in the life of a women. Deshpande's novels present marriage, the promised end in traditional society, as another enclosure that restrict the movement towards autonomy and self-realisation. Marriage leads to women's subjugation, exploitation and oppression.

The novel, **The Binding Vine**, presents the binding vine of relations through which persons are bound with each other. The novel shows the reality of familial relationships that are always built at some cost. Related through marriage and other forms of kinship, women are bound by a deep awareness of the presence and pressure of their social world. It presents predominantly the women's world and the social reality experienced by the women. It does not mean that men are entirely absent but they make their presence felt merely by the power they exercise over the women, especially over their wives and daughters.

The novel begins with painful experience of Urmila or Urmi, the protagonist, who has recently lost her daughter in an accident. The pain of the loss of child makes her extremely sensitive and seems to motivate her to reach out to other women around her who have their own tragic tales to tell. In suffering, a unique sense of fellowship is forged not only with the living persons but also with the dead. Mira's poems and diaries engage Urmi's attention and she establishes a communion with her dead mother-in-law, Mira. She reconstructs the tragic tale of a sensitive woman who suffered and wrote poems "in the solitude of an unhappy marriage, who died giving birth to her son at twenty-two".

The tragic tale of Mira deconstructs the myth that a woman is secure within marriage and husband is a "sheltering tree." Mira represents the mute suffering of many unfortunate woman who are forced into loveless marriage. Her husband was the first man who "saw" her at a wedding and fell in love with her. He induced a friend to suggest his name to Mira's parents for Mira. At last, they got married against Mira's will. This shows his obsession for her.

In the patriarchal setup, a women is born to marry and thereafter to please her husband and family at the cost if her own happiness and freedom. Mira is one such woman. She was used as a toy by her husband. Her feelings "run all through her writing – a strong clear thread of an intense dislike of the sexual act with her husband, a physical repulsion from the man she married. " (63) At last, she died while giving birth to her first child. She could not obviously tell anyone that she had developed an intense dislike of sexual act with her husband. As Aruna Sitesh comments:-

> She lived a life which, even if normal to most
> Women of that time (the early 50's), must have
> Seemed terrible to her. Why only of that time?
> Even today with all our education and
> Enlightenment, women are not allowed to nurture
> Such thoughts. Not allowed by women themselves.

Mira's marriage was a physical marriage. She was subjected to rape in marriage. Her husband possessed her

physically and ignored her delicate feelings. That is why, like Deshpande's other women, she also hates the word 'love'. Indu in The Roots and Shadows feels that love is a "big fraud". It is false, "the sexual instinct … that is true."

Mira's experience of marital life makes her feel that love means only one thing. That only thing is only sex. Mira's diary speaks about the relationship she shared with her husband:

…he holds me close, he begins to babble. And so it begins. 'Please', he says, 'Please, I love you'. And over and over again until he has done, 'I love you'. Love! How I hate the word. If this is love it is a terrible thing. (67)

Mira had fear "of the coming of the dark-clouded, engulfing night" (66) because she had to bear her husband's brutality. The above lines reveal the psychological fear and physical suffering of Mira. It is surprise to note that her husband, who was crazy about his wife, could not wait and day after the funeral of Mira, he decided to bring a mother for motherless child or a wife for himself.

In this novel like others, Shashi Deshpande shows how women lose their identities after marriage. They are known as wives or mothers and introduced to others with their husbands' established relationship i.e. 'Kakies', 'Mamies' etc. The marginalization of women takes place in several contexts. In novel after novel women are given new names at the time of marriage. Urmi's mother-in-law, Mira, is rechristened Nirmala when she came to her in-laws' house. She expresses her reaction to this horrible incident in one of her poems:

A glittering ring gliding on the rice
Carefully traced a name 'Nirmala'.
Who is this? None but I,
My name hence, bestowed upon me.
Nirmala, they call, I stand statue-still
Do you build the new without razing the old?
A tablet of rice, a pencil of gold.
Can they make me Nirmala? I am Mira. (101)

Similarly in **That Long Silence**, Jaya's name is changed. 'Jaya', which means victory, is the name given by her father but on the wedding day, Jaya is renamed as "Suhasini' by her husband. 'Suhasini' means a soft smiling, placid motherly woman. She is expected to be such a woman.

The poems of Mira appeal Urmi so much that she decides to publish them. But when Vanna, Urmi's sister-in-law, comes to know about this, she is enraged. She reels that Urmi is traitor who will destroy the honour of the family by publishing the poems. In fact, male dominated society nourishes women in such a way that they start looking at the world and interpreting it from the male point of view.

Urmila is also unhappy with her marital life but her situation is different from that of Mira. She is not dependent upon her husband for survival. She is a self-willed woman. However, she is aware of her bodily hungers and longs for the touch of intimacy. She misses her husband when he is away. The reason of her dissatisfaction is that she wants to enjoy marital life but can not do so because her husband is an officer in the Indian Navy and comes once in a year. In spite of her husband's long absences, she never tries to look at another man. She is a chaste wife. That is why, she does not give any positive response to Dr. Bhaskar when he proposes to her in spite of his knowledge of her marital status.

Urmila and her sister-in-law, Vanna, are good friends but there is temperamental difference between them. Urmila is the voice of resistance to patriarchal ideology. On the other hand, Vanna is a meek and submissive wife. She has no view of her own. What her husband says is right and final. Even when he is away, he has some remote control over her. She does not assert herself in the matters where she should take decisions. She always tries to please her husband, Harish, when he is around. Vanna secretly longs to have a son and soon after the birth of second daughter, she tell Harish about her desire. He decides to have no more children, quotes population figures and wonders at her wish. Surprisingly, she changes her mind very easily:

I'd have loved to have had a son… but he quoted

Population figures at me. And he said, one, surely

I'm not the kind of women who craves for sons,

Am I? And, two, what makes me think that next

One will be a boy? He's right. (81)

Urmi feels irritated at Vanna's submissiveness before her husband, "You let him bulldoze you, you crawl before him…" (81) In fact, Vanna is unable to assert herself before Harish and always tries to cope with everything.

Urmi's acquaintance with Shakutai provides an opportunity to have a glimpse at the lives of women living in slums. She realizes that marriage functions as an institution for the oppression of women whether they belong to the middle-class or the lover-class, whether they are educated or illiterate. Shakutai's husband leaves her with her parents after their marriage and goes to Bombay in search of livelihood.

In patriarchal society women's duty apart

from pleasing men is to bear children. A wife is valuable if she can produce children otherwise, she is of no use to man. Like **Margaret Atwood**, Deshpande shows that women's sole function is to produce children. Margaret's heroine in Surfacing is treated as an incubator. She Says that during her pregnancy, her husband " measured everything he would let me eat, he was feeding it on me, he wanted a replica of himself; after it was born I was of no more use. "He cares for her not out of love but he does so for a reploca of his own. It shows that women are treated mere as machines to give birth to healthy children and satisfy male lust. Childlessness proves fatal to a woman. Shakutai's sister, Sulu, suffers because she can not be an incubator. She is a good natured wife and takes interest in housekeeping and decoration but her husband never appreciates her. There is a constant hidden fear lurking in her heart that he would throw her out for not having any child.

Sulu's husband is a lecherous man who wants to marry sulu's niece whom she has always treated as her own daughter. He keeps saying. "Get me Kalpana… and you can stay on here, I don't mind." (193) It is significant to note that poor Sulu is compelled by her husband to make such a proposal; 'If Kalpu marries him, she can be mistress of the house. She doesn't have to do anything, I'll do all the work. (193) Even, Kalpana's mother finds nothing wrong in such a proposal. But Kalpana rejects the offer because she wants to marry a young boy whom she loves. Sulu's husband feels spurned and satisfied his impulse to possess Kalpana by molesting her. Sulu, an innocent wife, fails to understand when he washes his clothes himself, "… the first time he'd ever done such a thing". (191) When she comes to know about that, she is so shocked that she commits suicide after finishing cooking and giving breakfast to her husband. Krishana Mohan Pandey rightly says that her suicide symbolizes the anguish of the weakened soul of the typical traditional women.

The novel probes the universally relevant issues of familial relationships and explores the realities of women's lives. Like other novels, it depicts **tension between mothers and daughters**. This novel provides us with several instances. **There are five pairs of mother-daughter namely Inni-Urmi, Mira's mother-Mira, Shakutai-Kalpana, Akka-Vanna and Vanna-Mandira** and the relationship between them is based on some sort of dissention. Urmi's displeasure with her mother is rooted in her separation from the latter at an early age. Urmi has misconstructed the idea that her mother deliberately sent her child to her mother-in-law for her convenience. Urmi is not in mood or position to find out the real cause of her displacement. She blames her mother for casting her away. Actually, early marriage led Inni to earl motherhood, and being too young herself, she was unable to take care of her child properly. While trying to vindicate herself, she explains to her daughter.

I was frightened of you Urmi… was too young. I
Was not prepared to have a child. And you were
Not easy, you used to cry all the time. I didn't
Know how to soothe you… Then he decided he
would take you to his mother. He didn't say
anything to me, he just took you away… I begged
him, Urmi, I cried…. Nothing could make him
change his mind. (199-200)

Inni's helplessness and inner suffering reveal the wide spread subjection of women to men. Women do not have freedom or right to live as they wish to. Their lives are bound by male will, desire and physical strength.

Mira's relations with her mother are also estranged. Mira holds her mother responsible for her unhappy lot in her married life. A college-going teenager, Mira, was forced into marriage. Nobody bothered about her emotions. Her unwillingness was taken as mere childish resistance. What she had desired at this juncture was the support of her mother who could have refused the early marriage for her daughter. But she said, "Nothing is an my hands." Her silence pushed Mira to her marariage to a man whom she could not love for he hardly understood her feelings. Normally, one shares one's sorrow with near and dear ones, particularly with mother, to unburden the heart and overcome grief. But Mira was not willing to share her feeling with her mother. Mira's hatred toward her mother is expressed in her poem, "To make myself in your image/was never the goal I sought." (124)

Vanna's relations with her daughter are disturbed because of her career. She is a social worker and has to stay out of home quite often as part of her duty. Her daughter Mandira feels neglected in the absence of her mother. She dislikes being left to the care of maid servant. Mandira wants to have live and care of her mother, "I don't want Hirabai, I want my mother". (72)

Similarly, Vanna have grudge against her daughter's feeling. She thinks That Mandira hurts her deliberately. Mandira fails to understand her mother's compulsions in negotiating between family and profession

and Vanna is equally unable to feel a child's need of affection. The confused Vanna blames her mother, "It's all Akka's fault. It's she who filled me up with ideas of a career", (75) As Shubha Dwivedi comments, "In Indian context the domestic division of labour remains gender specific." That is why, the lop-sided division of familial responsibilities leads women to a constant state of stress.

There is also a conflict between Shakutai and her daughter, Kalpana. Shakuai is a typical protective mother but Kalpana has her own dreams. Her ideas of life are different from those of her mother. Kalpana does not understand Shakutai's situation whose husband deserts her for another woman. Kalpana accuses, "You drove him away ... You're always angry, always quarrelling, that's why he's gone." (93) Shakutai is angry with Kalpana because of her stubbornness and indifferent attitude towards her. She calls Kalpana "Self-willed" as she refuses to be guided by the dictates of her mother.

Is is ironical that Shakutai holds her daughter responsible for being raped. The reality is that Kalpana because a victim of her own uncle's lust.

She's shame us. We can never wipe off this blot.
And Prakash blames me what could I do? She
Was so self-willed. Cover yourself decently, I kept
Telling her, men are like animals. But she went
Her way ... It's all her fault ... (147)

Thus, Shakutai realized that Kalpana's bold independence is the real reason for her tragedy. The only conclusion the Shakutai is able to arrive at is, "Women must know fear." (148)

Even after the nightmarish married life, Shakutai is worried about Kalpana's marriage. She requests the doctor not to inform police, "Don't tell anyone ... who'll marry the girl. We are decent people, Doctor". (88) Indian women, as A. G. Khan points out:

...expect their daughter to be bound by tradition
And play the conventional role of daughter-in-law,
Of wife and mother, what ever may be their
Situation. Willingly or unwillingly, mothers force
Their daughters into traps, which they had been
Caught in all their lives with the secret hope that
Their daughter' fate would be better than their Own.

In this novel, Deshpande shows female bonding or solidarity except estranged mother-daughter relationship. The basis for their bonding is, as A. G. Khan point out, "shared oppression and victimization." Urmi, a grieving mother, is bound by the vine of sympathy not only with her mother-in-law but also with shakutai and Kalpana. Urmi when it is published in local newspaper, undertakes to drive out the clouds of misunderstanding from the mind of Shakutai, she tries to convince her that Kalpana is not at fault but the man, who raped her, is wrong, "she was hurt, she was injured, wronged by a man; she didn't do anything wrong. Why can't you see that?' Are you blind? It is not her fault, no, not her fault at all". (147)

Urmi has a very good relationship with her husband's half-sister, Vanna. She runs to Vanna's aid whenever she needs and looks after her children in her absence. Vanna, too stands by her when her father died, when her son was being born, and "through those dark days after Anu's death." (172) As a good friend, Urmi wants Vanna to assert some amount of authority in her family andawares her for her submissiveness. Urmi's feeling towards her mother-in-law reverse the popular image of animosity between this relationship established through marriage. She has sympathy with her mother in law, Mira, and wants to draw society's attention to the tragedy of Mira by publishing her poems. She explains to Vanna that she cannot put Mira's poem under the carpet for the fear of exposure:

They never had a chance. It's not fair, not fair
At all. And we can't go o pushing it – what
Happened to them – under the carpet for ever
Because we're afraid of disgrace. (174)

Thus, she wants to break the silence that had become the hallmark of feminine existence. She realises her responsibility towards her own caste-the woman. She is resolute to help less fortunate ones. In her relationship with other woman, Urmila is able to forge the binding vine of love and sympathy which functions as a strategy of empowerment.

References:

1. Krishna Mohan Pandey, "Dimensional Depth of Female Consciousness: A study of The Binding Vine". Women in the novels of Shashi Deshpande, ed.Suman Bala (New Delhi: Khosla, 2001), p. 118.
2. G. Khan, "Shashi Deshpande's Heroines: Prisoners by choice?", The fiction of Shashi Deshpande, en. R. S. Pathak (New Delhi: Creative), N. Pag.
3. Shubha Dwivedi, "To Be of Not to Be": The question of professional women in Shashi Deshpande's The Dark Holds No Terrors, Roots and Shadows and Small remedies", Indian Writing in English: A Critical Study, ed. K.A. Aggrawal (New Delhi: Atlantic, 2003), p. 231.
4. G Khan, "The Binding Vine: Multi-storied misunderstanding", Writing Difference: The Novels of Shashi Deshpande, ed. Chanchala K Naik (New Delhi: Pencraft, 2005), p. 165

Dr. Nirmal Boora
Associate Professor in English
Govt. College, Hisar
Mail ID:- nirmalbooraaugust20@gmail.com

46

The Study of Impact of Graduate Incentive Scheme for Girls in Higher Education in Bihar : A Case Study of Naubatpur Block Patna Disctrict

Ankit Kumar

Abstact

The Kanya Utthan Yojana of Bihar is one of ambitious schemes of state government which provides cash transfer to girl after passing 10th, 12th and Graduation exam and also providing free education to girls upto post graduation level. The study reveals that the Graduate Incentive Scheme (Snatak Protshahan Yojana) under Balika Utthan Yojana has increased the girl enrolment in Bihar in Undergraduate and Post-Graduate courses and empowers the girls with better education. The study compares the girl enrolment at undergraduate level of Bihar with neighbour states UP, Jharkhand and Orissa and finds that the scheme has high positive impact on girl enrolment in higher education in Bihar. The survey based study reflects that high percentage of girls are aware regarding the scheme and the incentive amount is mostly utilised for getting their higher education and job preparation and less for family work and consumption purposes.

1.Introduction

Education is an important parameter of human development. There is a wide interstate and gender based differences in literacy rate in India. While Kerala is having highest literacy rate, it is lowest in Bihar. Government of Bihar has introduced various welfare schemes in recent years to empower women with education and health. It includes free girls education upto graduate level , women reservation in Panchayat and local bodies and one-third horizontal reservation of women is all state government jobs and admission in higher education of the state. Kanya Utthan Yojana is one of the dedicated schemes for girls to empower women with increasing in their gross enrolment ratio in primary, secondary and higher education in state through providing cash incentives at each steps of their education upto Post-Graduate level. Although the female literacy rate growth is positive in Bihar, there is wide gap is found between rural and urban female literacy rate and male and female literacy rate in state. In the last seven years the number of women enrolling themselves for Higher Education in India has significant raised as revealed by the India Survey of Higher Education (Guin Ghosh R, 2020). Since female education also influences maternal and child health and birth rate, Government of Bihar has taken various policy initiatives in recent years to mainstream and empower them.

Kanya Utthan Yojana (Girl Empowerment Scheme) is launched by Bihar Government in 2018 to empower the girls socially and economically with appropriate incentives from birth to graduate levels. The objective of the scheme is to increase girl registration, stop girl foeticide, increase girls enrolment in school and colleges and empower the girls educationally, socially and economically, The scheme is giving Rs 2000 at the time of birth of a girl child and Rs 1000 at the time of her registration. The scheme is also giving Rs 300 to purchase of sanitary pad to girls under Kishori Swasthaya Yojana, Rs 3000 to purchase of bicycle after reaching high school. On clearance of Intermediate exam (12th), girls are getting Rs 10000/- and after passing graduation girls are getting Rs 25000/- under Snatak Protshahan Yojana. This amount has been increased to Rs 50000/- from 2021. The scheme is applicable for girls of family of having upto two girls child. The recent data reflects that the no. of beneficiaries in graduate incentive scheme for girls is 313582 and amount disbursed is 1.93 Crores (Welfare Dept, Govt of Bihar) and disbursement of current year is undergoing. The girls has responded well with scheme and girls enrolment in undergraduate level has risen significantly in both regular and distance courses after implementation of the scheme.

The objective of the study to see the awareness and impact of Graduate Incentive Scheme for Girls in Bihar on girls enrolment in higher education in Bihar. The study compares the higher education enrolment in Bihar with neighbor states Jharkhand, Uttar Pradesh, Orissa and national average. The study has chosen Naubatpur Block of Patna District for the survey based study regarding awareness and impact of the scheme on girls enrolment in this areas.

The descriptive research methods are involved to analyse and interpret the results. The sample is collected from both primary and secondary sources. The secondary data is accessed from Ministry of Education, Government of India and Department of Education, Government of Bihar and primary data is collected from girls of age group 15-23 years in the selected areas of study. The Simple Random Sampling Methods are used to collect the samples from Naubatpur Blocks of Patna Disticts. The questionnaire based survey is conducted among girls in selected areas. The physical and telephonic interview is also conducted with teachers and parents in selected areas to analyse the same.

1. Girls Enrolment in Higher Education in Bihar

Women empowerment requires state interventions for empowering them in the shape of financial support, providing infrastructure, morale boosting, opportunities for adequate

active participation in social domain and political institutions (Sinha Anjani K). It is found that sufficient no. of female teachers, higher state domestic product and available of college is having positive impact on female participation in higher education of the state (Ghosh S & A Kundu , 2021).The Gender report card 2019 of Bihar reflects that the girl enrolment in primary, secondary and higher education has risen significantly after government initiatives through several schemes such as the Mukhya Mantri Balika Cycle Yojana, Mukhya Mantri Akshar Aanchal Yojana and the Mukhya Mantri Kanya Uthan Yojana. (Govt. of Bihar,2020). Kanya Utthan Yojana which loosely translates to Girls Uplfifting Scheme is transforming a large generation of Bihar by providing universal access of basic services of Bihar though direct cash transfer scheme for girls (UNICEF, 2019).The female literacy rate is correlated with heath parameters. Thus female literacy is very important parameters for policy makers(Sharma K ,2018).

Bihar is having total literary rate of 69.83% where male is having 70.32% and female is having 53.57% respectively. In Rural Bihar, the male and femaly literary is 57.1% and 29.6% respectively and in urban Bihar, the male and female literacy is 79.9% and 62.6% respectively. Recent years, the state has improved both male and female literacy. Rohtas District (73.37%) has highest literacy followed by Patna District and Bhojpur District and Sitamarhi (51.08%) has lowest literacy followed by Purnea and Katihar district. The state has shown upward trends in female literacy since 1951. (Source: Wikipedia)

The AIHSE reports of Ministry of Education , Govt of India gives an overall trends of higher education in India and Bihar state. The study reveals that the trends is very positive in state in recent years in enrolment in higher education in Bihar in both male and female categories, but female enrolment rate is higher than male enrolment. The enrolment in undergraduate and post graduate courses in Bihar in 2022-21 is 2053007 and 183619 respectively, out of which the girls enrolment is 911387 and 84462, which is very high and it has increased after 2018, the launch of Graduate Incentive Scheme for Girls in the state.

Graph: Trends in Girls enrolment in undergraduate and post graduate courses in Bihar(Source: AISHE Reports)

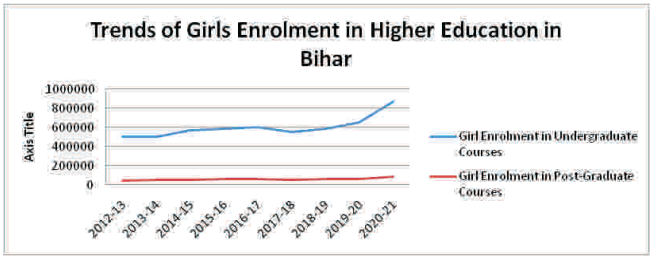

The trends of girls enrolment in Bihar reflects that it has risen significantly after 2018, launch of Graduate Incentive Scheme for Girls in state. While comparing the undergraduate enrolment in regular and non-regular (distance) course, the AISHE reports reflects that the growth of same is high after 2018 in both regular and distance courses but for post graduation it is very high in distance courses, which requires policy attention.

3. **Undergraduate Girls Enrolment: Bihar and its Neighbour States**

Graph: Growth Rate of Girls Undegraduate Enrolment in Bihar with others(Source: AISHE Reports)

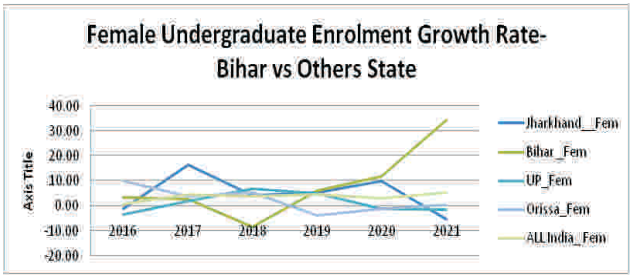

Graph: Undergraduate Girls Enrolment Growth Rate- Bihar vs All India(Source: AISHE Reports)

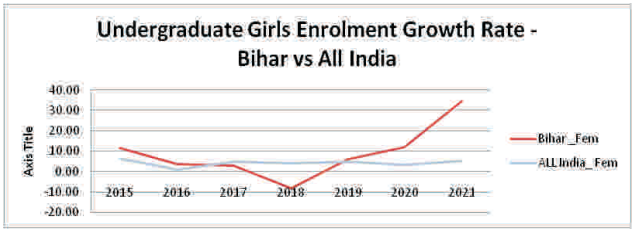

While comparing the girls enrolment in undergraduate courses in Bihar with neighbour states Jharkhand, Uttar Pradesh, Orissa and National Average, it has increased at very high rate in recent two years after implementation of Kanya Utthan Yojana and Graduate Incentive Scheme for girls in Bihar. The mean difference between these states from 2019 onwards reflects that the scheme has benefitted Bihar State with increase in girls' enrolment in undergraduate courses. If we consider the control group as Jharkhand State, considering similarity in many parameters, it shows that the scheme has impacted well in girls enrolment in undergraduate courses in Bihar.

Graph: Comparing the Girls enrolment Growth in Undergraduate Courses in Bihar and States Jharkhand, UP and Orissa and ALL India (Before 2019 and After 2019) (Source: AISHE Reports)

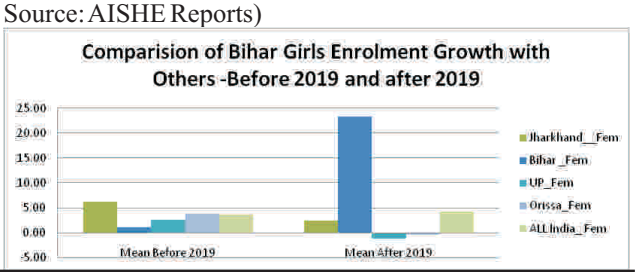

The male and female undergraduate enrolment growth rate of Bihar is also analysed and differences in mean growth after 2019 is positive but not too much. The graph reflects that the state has benefited much on higher education enrolment with Graduate Incentive Scheme for Girls and it will impact also on state fertility rate and on human development of the state in long run.

4.Graduate Incenntive Schemes for Girls in the Case Area:

Patna District is second highest literacy rate district of Bihar. The Naubatpur Block is nearby semi urban block of Patna District, consists population of OBC, SC and Others. The block has two degree colleges. The study involves survey of girls of nearby village between 15-23 years regarding their awareness of Graduate Incentive Schemes for girls of state and about their enrolment in undergraduate courses. The study has survey in only four villages of the block and collects sample of 125 including all social groups.

	Girls Enrolled in College	Awared	Not Awared	**Girls Not Enrolled in College**	Awared	Not Awared
General	32	32	0	0	0	0
OBC	54	51	3	3	0	3
SC	28	28	3	8	0	8
ST	0	0	0	0	0	0
Total=	114	111	0	11	0	11

The study reveals that the awareness is high among general and OBC category girl students and who are aware are already enrolled in courses. The awareness is not good among SC girl students. Since there is no population of ST in this area, there is no any sample taken from ST group.

Table: Awareness and now awared category wise

Category	Awared %	Not awared %
General	100	0
OBC	89.47	10.53
SC	69.44	30.56
ST	NA	NA

The study also reveals that the high percentage of girls not enrolled in undergraduate are very poor and they drop the education at below 10th level. Thus there is socio-economic impact on awareness. The General Category and OBC girls are more aware regarding the scheme and benefiting the same and it is low among SC girls.

The study also reveals that the most of the girls wants to utilise this fund for their higher education (39%) and job preparation (27%) and less for consumption and household purposes (21%) and others (13%). Thus the scheme are empowering the girls with higher education and better career prospects and combined utilisation for education and career purposes is 66% which is quite high.

Chart: Fund Utilisation of Graduate Incentive Schemes for Girls

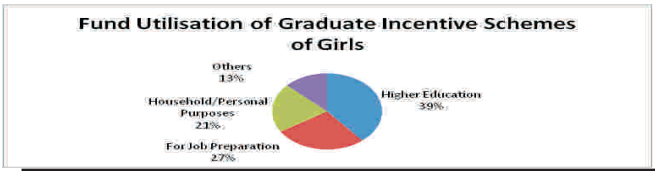

The interview with college teachers reflects that the attendance of students in regular courses in colleges is very low and most students enrolled are admitted only to get degree and not getting quality education, which needs to be properly addressed by policy makers. The many faculty posts in undergraduate and post graduate colleges is vacant, which needs to be addressed, otherwise the objective to empower girls will not fulfilled.

4. Result and Discussion:

Thus study reveals that there is good awareness regarding the Graduate Incentive Scheme for Girls (Snatak Protshahan Yojana) among girls in Bihar and most girls are taking benefit of this. The Graduate Incentive Scheme has positive impact on girls enrolment in higher education in Bihar. While comparing to nearby states Orissa, Jharkhand, Uttar Pradesh, the girls enrolment in undergraduate courses in the state has increased at very high rate after implementation of Graduate Incentive Scheme for Girls in Bihar. The awareness of the scheme is high among General and OBC girls and low among SC/ST girls. The cash incentive received is going to be utilised by girls majorly for productive purposes. Although the enrolment in higher education has been increased, the low attendance of the students in colleges and inadequate faculty is one of the big policy challenges of the state, which needs to be addressed by policy makers.

5. Conclusions:

The study reveals that the Kanya Utthan Yojana has impacted well in increasing the girl enrolment in higher education in Bihar. Girls are more aware about the scheme in the state and they are utilising incentive fund for their further education and for preparation for jobs. The awareness about the scheme and undergraduate enrolment is low among SC and weaker sections girls compared to General and OBC girls. The state has shown sharp growth of enrolment of girls in higher education after 2019 in both regular and distance courses after launch of Graduate Incentive Schemes for Girls in Bihar. The Post Graduate Enrolment is Bihar is high in distance mode compare to regular mode which is due to lack of Post Graduate Colleges in Bihar. The low attendance of students in colleges and inadequate no. of teachers is one of big hurdles in higher education in the state, which requires policy attention.

6. References:

1.Bhattacharjee K (2015),” Women's Education in Rural Bihar: Issues and Challenges”, Conference Paper-2015, https://www.researchgate.net/publication/318080118

2.Ghara T (2016),” Status of Women in Higher Education”, Journal of Education and Practice www.iiste.org ISSN

2222-1735 (Paper) ISSN 2222-288X (Online) Vol.7, No.34, 2016, www.iiste.org

3.Ghosh S, Kundu A (2021),” Women's Participation in Higher Education in India: An Analysis Across Major States”, Indian Journal of Human Development 1–20 ,DOI: 10.1177/09737030211030048 journals.sagepub. com/ home/jhd

4.Government of India(2021),” All India Survey on Higher Education 2020-21”, Ministry of Education, Govt. of India.

5.Govt. of Bihar (2020),” Women and Girls in Bihar Taking Stock, Looking Ahead – Gender Report Card 2019”, Mahila Vikash Nigam Bihar, Ministry of Public Welfare Dept, Govt. of Bihar

6.Guin Ghosh R (2020),” Higher Education and Women's Contribution to Regional Development”, International Journal of Creative Research Thoughts” | Volume 8, Issue 5 May 2020 | ISSN: 2320-2882

7.Sharma K (2018),”Women in Indian Higher Education System”, International Journal of Humanities and Social Sciences. ISSN 2250-3226 Volume 8, Number 1 (2018), pp. 41-45 ,http://www.ripublication.com

8.Sinha Anjani K (2020),” State Interventions For Women Empowerment in Bihar : An Assessment”,Bihar Journal of Public Administration, ISSN: 0974-2735 , Vol. XVII No. 1, June 2020, pp- 155-156

9.UNICEF(2019), “Gender Equality Global Anuual Results Report 2018”, www.unicef.org

10.Wikipedia (2023), “ Literacy in Bihar” www.en.wiki pedia. org/wiki/ Literacy_in_Bihar

11.www.ekalyan.bih.nic.in

Newspapers

12.https://economictimes. indiatimes.com/ news/politics-and-nation/nitish-launches-mukhyamantri- kanya-utthan-yojana-post-muzaffapur-sex-scandal/articleshow/65278216.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst

13.https://www.financialexpress.com/education-2/bihar-has-lowest-literacy-rate-followed-by-arunachal-pradesh-and-rajasthan-moe/3008376/

Ankit Kumar

Assistant Professor, Department of Economics, MD College Naubatpur (Patna), Patliputra University , Patna

Mob: 9304144056, Email: ankitrintu84@gmail.com

Address: B202, Kailash Apartment, Arya Samaj Road, RPS More Patna 801504

47

THE FOREIGN RELATIONS OF INDIA WITH COUNTRIES THAT WERE SEEN AS HOSTILE

Shivank

Abstract

Characteristically, foreign policy is the most germane base for any country to ensure its development and functioning with respect to the international world. As, quoted by George Modelski, "Foreign policy is the system of activities evolved by communities for changing the behaviour of other states and for adjusting their own activities to the international environment."[1] The above statement reflects a momentous nature of the foreign policy which is an organized system of activities, that has definite objectives and prodigious principles; creating a balance between the domestic and the international globe in order to achieve the national interest expeditiously.[2] In a nutshell, foreign policy is a multidisciplinary subject in which we take all the aspects like politics, economics, history, law, and sociology and meta-discipline and interaction. It is an aggravated version of domestic law that is governed as per international relations.[3]

KEYWORDS- foreign policy, foreign relations, diplomatic relations, international relations

Background

After the independence, India adhered to the policy of NAM (Non-Aligned Movement) whose aim was jotted down in the Havana Declaration of 1979 that was to ensure "national independence, sovereignty, territorial integrity and security of non-aligned countries" and also with their earth-shaking struggle against imperialism, colonialism, neo-colonialism, racism and other indifferences. Since J.L Nehru was among the founding members, the principles of NAM were largely leaned towards Panchsheel principles like respect for the charter, respect for sovereignty, serene settlement of all conflicts, promotion of defence, respect for rights, non-interference in internal affairs etc.[4] However, calling a spade a spade, this stand of India can be thoroughly traced at the time of independence where it had languid attitude towards foreign-defence policy and the domestic-foreign policy. This was because of a deleterious problem at that time which was terrorism sponsored by Pakistan.[5] In the long run, there were many caustic consequences of it like forced conversion, migration, riots between Hindus and Muslims that created a massacre of around 2 million people and displacement of about 18 million persons.[6]

The Inadvertent Shift

After the end of brutal Sino-Indian war in 1962, there was a predicament for the morale of Afro-Asian block and even to J.L Nehru's stand. He was castigated for his loose foreign policy and his decision of Panchsheel agreement in 1954 that proved to be erroneous. The decade of 1960's was also very disruptive as there was a spilt in Congress in 1969 and Communist Party of India (into CPI and CPI-M). India began to move on a pro-communist path after abolishing privy purse and nationalising private banks. Even USSR helped India to setup many iron and steel plants thereafter. The tussle between USSR and China in 1969 further brought India and USSR closer. The ideology of Chankaya of Rajmandala (enemy's enemy is a friend) was veracity here but; as ill luck would have it, Henry Kissinger did a secret visit to China and USA began to develop relations with China. This increased hither and thither in Pakistan. Moreso, it created a heavy migration of refugees from eastern Pakistan into the India. Indira's Gandhi bold decision of 1971 Indo-Soviet friendship treaty for 20 years became very leveraging for India which proved to be very golden stroke after the 1974 nuclear explosion test in Pokhran making a complete shift of our foreign policy.[7] Furthermore, the 42nd Amendment Act,1976 added new words- Socialist, Secular and Unity and Integrity and add to this, it gave more primacy towards Directive Principles over Fundamental Rights. This marked the beginning of a shift of our capitalistic attitude.[8] Interestingly enough, the palpable shift in 1991 introducing the LPG (Liberalisation, Privatisation and Globalisation) policy marked the beginning of a new change of our foreign policy with respect to international world wherein we had to trade a lot.[9]

Relations With Usa

Talking about the pre-independence period, India was a distant country from USA in which India was only seen as a copious reservoir of manpower and occupying a presumptuous position to Britian. Indian leaders like J.L Nehru wanted to achieve independence before fighting against Nazis and in fact, on 15 February, 1942, Japan captured Singapore exacerbating the situation for Britishers. The USA President Franklin Roosevelt wanted to have diplomatic relations with India during this period but after the Japanese threat, Roosevelt administration was not much inclined in India.[10] Later after the independence, the Kashmir issue and perturbation by USSR in the Asian Policy, economic aid was given to India by the USA, under the Kennedy administration, for the first two years of India's Third Five Year plan. J.L Nehru wrote two secret letters to Kennedy for direct interference in 1962 war but before he could have anything, China announced unilateral cease fire on

22 November. However, this started a building block of India-USA relations.[11] Currently, the U.S.-India strategic partnership can be founded on shared values like commitment to democracy and upholding the rules-based on international system. Both the countries have goals of promoting global security, stability, and economy by trade, investment, and good connection. Two bilateral meetings and a Quad Summit have also been held between both countries to safeguard sovereignty, integrity, democracy and the Indo-Pacific region. The USA is India's largest trading partner with a bilateral trade of $157 billion supporting over 70,000 American jobs.[12] Currently, following exercises are being held between the two- Yudhabhayas &Vajraprahar, Malabar, RED FLAG 16-1, Exercise COPE India 23.[13]

Relations With Russia

It can be easily avered that India's relations with Russia are quite stable and dazzling. At first Stalin had a suspicion that India was a puppet of imperial powers. Consequently, Moscow was successful in overthrowing CPI and therefore, the IB (Intelligence Branch) of the Government of India saw CPI and related authorities in Moscow as unscrupulous. Simultaneously, the Soviet intelligence KGB (Komitet Gosudarstvennoy Bezopasnosti) was also successful in annoying the Indian embassy in Moscow by the brazen powers of money and sex.[14] Currently, after the signing of "Declaration on the India-Russia Strategic Partnership" in October 2000, India-Russia ties have acquired a new form with marvellous levels of cooperation in almost all areas that included politics, security, defence, trade and economy, science, space and technology, and culture. So far, 19 annuals summits have been held. Intensifying the trade and economic relations has been identified as main motif by the leaders on both the sides. There are revised targets of increasing bilateral investment to US $ 50 billion and bilateral trade to US $ 30 billion by 2025. [15] The exercises are Indra (Army), Indra Navy, Indra (Air Force)[16]

Relations With China

Historically, the two most populous countries of world have maintained a kind of affable behaviour and antipathy towards them. Many Chinese monks such as Fa-Hsein, Yuang Chwang, and T-Sins came to Buddhist sites in India. Even Indian scholars such as Dharmarakshaka, Kumarajiva, Guna-varma, and Dharmagupta visited China to translate Buddhist writings into the Chinese language. After the invasion of Islamic rulers, Buddhism seemed to disappear from India. Eventually, relations with China were severed, which became more stern during the early part of the twentieth century. India struggled a lot to stop China's struggle against foreign domination. When Japan captured Shanghai and Manchuria and invaded Jehol (1931–33), many leaders from India chided Japanese imperialism and expressed sympathy with China. Remarkably, both the countries have several areas of conflict like J&K and boundary disputes in Northeast and North too. There is lack of diplomacy and strict protocols by China also. Even after signing the border agreement in 1963, China still continues to operate in POK. It also an active participator in Nuclear Supplier Group and also opposes the Asian Development Bank.[17] However, due to globalisation both the countries have shown an impeccable growth. In 2017 and 2018, the bilateral trade has registered robust growth. In 2019, India was the 12th largest trading partner of China. Due to COVID, the overall trade declined by 13.1% in Jan-Sept 2020 (USD 60.5 billion) as compared to the same period in 2019 (USD 69.7 billion). India and China have established more than 30 dialogues with mechanisms at various levels, covering bilateral politics, economic, cultural, people-to-people, matters as well as dialogues related to regions and international world.[18] Hand-In-Hand is the exercise between the two countries. [19]

Relations With Pakistan

Justifiably, there has been rampant conflicts between the two countries due to the non-democratic rule in Pakistan. Multitudinous difficulties come in solving the J&K issue. Pakistan attacked India on 20-21 October, 1947; ignoring the power of India. Even M.A Jinnah was inclined to have a large-scale military action in Kashmir. All these instances were the result of policy of divide-and-rule by British. This even could have given British a good gain by sale of arms.[20] Currently, India has repeatedly called upon Pakistan to bring criminals of Mumbai terror attacks for justice expeditiously. However, there has been no progress in the ongoing trial of Mumbai terror attacks case in Pakistan even after all the evidence has been shared with Pakistan side. After the cross-border terror attack in Pulwama on 15 February 2019, India withdrew most favoured nation s tatus to Pakistan. India also increased customs duty on exports from Pakistan to 200% on 16 February 2019. Subsequently, Pakistan suspended bilateral trade with India on 7 August 2019. [21]

Relations With United Kingdom

There appears to be no hard conflict between the two countries however, the main conflict was not the war but the transfer of power. On 20 February 1947, PM Atlee told House of Commons to transfer power to India and hinted the idea of partition.[22] Edwina Mountbatten was interested in the transfer of power and accomplishing it by 15 August 1947 because he wanted to return England and occupy the post of First Sea Lord of the Royal Navy. Lucidly, he had no interest

in chaos and bloodshed that India would suffer thereafter.[23] There was also great influence of Mountbatten on J.L Nehru which could be easily seen in May 1947. Mountbatten, J.L Nehru and Krishna Menon had gathered at viceroy's lodge in Mashobra near Shimla. All of them planned the model of partition. J.L Nehru promised Menon the post of High Commissionership of UK after independence. J.L Nehru not only agreed for partition but also forgot the goal of Congress of complete independence and dominion status within Commonwealth. The exhortation of J.L Nehru was easy since he was in the company of Mountbatten.[24] Currently, the British and Indian Prime Ministers have made commitment to strengthen work between the UK and India over the next decade. Both the countries, their economies, their people are getting closer. This has made a thrust to cooperation. The two leaders have agreed on a '2030 Roadmap' which will provide a framework for UK-India relations on various aspects like health, climate, trade, education, science and technology and defence. There is also a vision of Free Trade Agreement with a view of doubling UK-India trade (around 34 billion pounds) over the next decade. [25] The exercises are Ajeya Warrior, Konkan and Indradhanush-IV.[26]

CONCLUSION

Conclusively, as per the aforestated analysis, it can be firmly explicated that the India has emerged a new boisterous power in this multipolar world. We have some minor conflicts but they will end eventually. In the sum and substance, under PM Modi's leadership, we have aggrandized a lot in terms of diplomacy which will give fruits to our upcoming generations by and by.

References:

1. Reetika Sharma, Ramvir Goria, Vivek Mishra, *India and The Dynamic Of World Politics*, P-1.5 (Pearson, Delhi)

2. As per Charles O. Lerche and Abdul Aziz, it is term that has a long purpose by which the state, the nation and the government see themselves as doing work.; Mahendra Kumar, *Theoretical Aspects of International Politics*, P-236 (Shiva Lal Agarwala & Co, Agra, 7th edn.)

3.https://www.oxfordreference.com/display /10.1093/oi/ authority. 20110803100007834 https://academic.oup.com/ edited-volume/28220/chapter-abstract/ 213236891? redirected From=fulltext (Last visited on 26 August, 2023)

4.https://www.drishtiias.com/to-the-points/Paper2/non-aligned-movement-nam (Last visited on 26 August, 2023)

5. Madhav Godbole, *The Holocaust of Indian Partition: An Inquest*, PP-428, 469–71(New Delhi: Rupa, 2006)

6. *Ibid,* PP- 425-27

7. *Supra* note 1 at PP-1.15-1.17

8. AP Bhardwaj, *Legal Awareness and Legal Reasoning*, P-1.38 (Pearson, Delhi, 9th edn.,2022)

9.https://aees.gov.in/htmldocs/downloads/econtent_aug2020/20200905-XII-Economic-Reforms-2%20of%202-Handout.pdf (Last visited on 22 August,2023)

10. Carina Van De Wetering, *Changing US Foreign Policy Toward India*, P-32 (Palgrave Macmillan, New York)

11. *Ibid,* P-40

12. https://www.state.gov/u-s-relations-with-india/ (Last visited on 22 August 2023)

13. https://www.studyiq.com/articles/list-of-military-exercises-of-india/ (Last visited on 23 August 2023)

14. Christopher Andrew and Vasili Mitrokhin, *The Mitrokhin Archive II: The KGB and the World*, PP-312-13; B.N. Mullik, *My Years with Nehru: The Chinese Betrayal* PP-110,60-61

15.https://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/India_Russia_Bilateral_Brief_sep_2019.pdf (Last visited 27 August, 2023)

16. *Supra* note 13

17. Geeta Kochmar, *China's Foreign Relations and Security Dimensions*, PP-22-25 (Routledge Taylor Abd Francis Group, New York, 1st edn., 2018.)

18. https://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/ind-china-new.pdf (Last visited on 28 August, 2023)

19. *Supra* note 13

20. Jayanta Kumar Ray, *India's Foreign Relations*, 1947-2007, PP-113-117 (Routledge Taylor Abd Francis Group, New York, 1st edn., 2011.)

21.https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Bilateral_Brief_pakistan.pdf (Last visited on 20 August, 2023)

22. The Indian Annual Register: January–June 1947, P-174 (Delhi: Gyan, 2000), Winston Churchill's statement.

23. *Supra* note 20 at P-53

24. Stanley Wolpert, *Nehru: A Tryst with Destiny*, PP-393,381-82.

25.https://www.gov.uk/government/news/uk-and-india-announce-new-era-in-bilateral-relationship (Last visited on 18 August, 2023)

26. *Supra* note 13

Shivank

B.A.LL.B (Hons.) 3nd Semester/2nd YEAR

Home Address: H.No.3538, Sector 13, Huda, Bhiwani (127021)

Working Address: INSTITUTE OF LAW, KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA(136119), HARAYANA

Ph. No.- +91 82229 98890

sharmashivank60@gmail.com

48

India - a rising power in the changing global order

Manjari

Abstract

In contemporary discourse, soft power is often seen as a pivotal element in a nation's comprehensive advancement and progress. The ability to enhance a community's dedication, determination, and grant a nation greater authority over its global engagements is evident. India has successfully attained diplomatic triumphs and furthered its national goals by effectively utilising its distinctive cultural diplomacy assets, including the diaspora, yoga, Buddhism, and economic assistance. The Ministry of External Affairs (MEA) in India has made the decision to endorse the implementation of a "soft power matrix" as a means of evaluating the effectiveness of the nation's soft power initiatives.India demonstrates a keen understanding of the importance of cultural engagement and should strive to undertake further endeavours in order to enhance the global attractiveness of its culture. India aspires to establish a liberal, nonviolent, and reasonably inclusive democratic system, characterised by a non-threatening approach to world leadership. India's appeal to the global population is underscored by the soft power assets emanating from notable figures like Mahatma Gandhi and Rabindranath Tagore, as well as many artistic, literary, musical, and dance forms. Additionally, India's software industry and Ayurveda contribute to its overall attractiveness on the world stage. The Indian culture is widely recognised for its fundamental principles of respect, peace, and fraternity, which have been exemplified by prominent figures such as Ashoka, Buddha, and Gandhi.

The significance, relevance, and influence of soft power cannot be disregarded. One notable benefit of employing 'soft power' is its inherent cost-effectiveness. By employing the concept of 'soft power,' a nation can achieve its objectives without having to make concessions, but rather by exerting influence in a subtle and non-coercive manner. The founding founders and writers of the Constitution deserve due honour. The framers of the Constitution ensured that no loopholes were present within its provisions. A responsible legislative body was established to enact laws and new policies, alongside an executive body tasked with implementing the numerous policies enacted by the legislature. Additionally, an independent court was established to protect the Constitution and uphold the fundamental rights of all residents. The realm of global power politics necessitates the participation of nations that possess a capacity for strategic thinking and assertive action. India, with its several features, is a member of a group that has been actively endeavouring to enhance its capacity for accomplishing tasks. The research emphasises the several strategies implemented by the Government of India in order to enhance its worldwide standing, with a particular focus on using soft power.

Keywords: *M.K. Gandhi, Soft Power, Cultural Diplomacy, Education Diplomacy, Health Diplomacy, Peace and Humanitarian Assistance, Sports Diplomacy.*

Indroduction:

According to the Oxford Dictionary, the term Leader (noun) refers to an individual who guides and directs a collective of others, particularly as the principal figure of a nation, an institution, or a similar entity.

A global leader can be defined as an individual who holds authority over a collective, nation, or similar entity, and is widely acknowledged as possessing significance and influence throughout all regions of the globe.

It is evident that a global leader possesses specific attributes that have the potential to elevate his nation to the status of a superpower. Likewise, the nations possessing the most power in the globe are also the ones that constantly exert influence over policymakers and mould global economic trends. The diplomatic policy and military budgets of these nations are subject to continuous pursuit and comparison. These nations has significant worldwide impact.

What is the concept of 'influence'? The concept of "influence" refers to the capacity to mould events, acquire leverage for negotiations, and, in its most crude form, encompasses the ability to employ incentives to mould the behaviour of others. "Influential powers" refer to governments that have significant importance in terms of the welfare and security of other nations, hence establishing a vested interest for countries in their overall well-being. According to Zeeshan (2021), the concept of "influence" can be attributed to regional and global powers when they possess the ability to rally states towards a specific course of action, either in response to a shared threat or in pursuit of a shared objective.

The extant body of literature offers few insights into the defining traits of a superpower or a global leader. This research aims to delineate some indications and qualities that contribute to the development of a global leader.

“Soft power has always been a key element of leadership. The power to attract—to get others to want what you want, to frame

the issues, to set the agenda—has its roots in thousands of years of human experience. Skillful leaders have always understood that attractiveness stems from credibility and legitimacy. Power has never flowed solely from the barrel of a gun; even the most brutal dictators have relied on attraction as well as fear"(Nye Jr. 2004)

"Superpower is a state with a dominant position by its ability to influence on a global scale. It's a combination of economic, military, cultural, technological, diplomatic and political spheres". (Thomas2020).

Australian scholar and leading exponent of the English school of international relations, Bull in 1977 , pointed out, great powers are identified by 'comparability of status', 'rank in military strength', and the ability and recognition to 'play a part in determining issues that affect the peace and security of the international system as whole'. As Waltz in 1981 noted, a "state becomes a great power not by military or economic capability alone but by combining political, social, economic, military, and geographic assets in more effective ways than other states can".

Based on the aforementioned definitions, it can be observed that within the group of countries mentioned, namely the United States, Russia, China, India, and Japan, there exists a notable presence of robust military capabilities. This consortium of nations possesses the capacity to exert its hegemonic might and exert its influence on a global scale. The dominant source of their influence is predominantly in the realms of economics and military capabilities.

On one side, it can be observed that there are three dominant states that can be characterised as hegemonic powers, namely Russia, China, and the United States. The three notable economic giants, namely the United States, China, and Japan, are all self-reliant in terms of armaments and serve as producers of advanced technologies. However, India is an exception to this trend (Karnad, 2018).

On the contrary, there exist three states with civilizational backgrounds, namely India, China, and Turkey, that are currently gaining prominence as global powers. These governments exhibit significant attributes of superpowers and are increasingly exerting their influence on the international stage. The source of their influence frequently stems from the augmentation of economic significance and occasionally the acquisition of resources.

Regional superpowers possess the capability to exert significant power and influence over other nations within their respective continent or region. Their scope of effect tends to be regional rather than worldwide. For instance, the countries of the United Kingdom, Germany, and France exert significant influence within the European region. Similarly, the United Arab Emirates, Saudi Arabia, and Iran hold considerable sway in the Middle East. Additionally, South Africa and Nigeria are influential nations within the African continent.

While a precise definition may be lacking, a global leader can be broadly characterised as an individual who assumes a significant role in international affairs, endeavours to uphold peace and harmony, and offers assistance in mitigating global challenges such as climate change, food insecurity, hunger, poverty, and the like. In summary, the aforementioned definition implies that leadership entails the act of forging ahead or demonstrating the path to be followed. Leadership is facilitating a collective effort towards the attainment of a shared objective. There exist multiple categories and degrees of leadership, yet they all share a fundamental characteristic: a connection with those who follow. Hence, the concepts of leadership and power are intricately connected.

The concept of differentiating between hard power and soft power was initially proposed by Nye in 1990, within the pages of his book entitled "Bound to Lead: Changing Nature of American Power". The topic was further elaborated upon in subsequent series of writings authored by the individual, specifically in the years 1990, 2002, 2004, 2007, and 2008. Broadly speaking, the author characterises power as the capacity to influence others in order to achieve desired outcomes. Additionally, they delineate command or hard power as a form of coercive authority that is exerted through the use of threats. Hard power is a concept that encompasses military intervention, coercive diplomacy, and economic sanctions (Wilson, 2008). It is characterised by the utilisation of physical power resources, such as armed troops or economic capabilities (Gallarotti, 2011).

The imposition of UN economic sanctions on Iraq in 1991 subsequent to the initial Gulf War serves as an illustration of the utilisation of hard power. According to Nye (2012), the concept of hard power can be understood as a form of coercion or force, whereas soft power can be seen as a persuasive or attractive influence.

The concept of hard power is predicated around the utilisation of incentives, commonly referred to as "carrots," or threats, colloquially known as "sticks." According to the given definition, a country is deemed powerful in the realm of international politics when it possesses attributes such as a substantial population, expansive territory, abundant natural resources, robust economic prowess, formidable military capabilities, and enduring social stability.

Nevertheless, there are instances where individuals can achieve results without encountering tangible risks or receiving rewards. The concept of "the second face of power" has been used to describe the indirect approach to achieving one's desired outcomes. A nation has the potential to achieve desired outcomes in global politics by virtue of other nations admiring its principles, seeking to replicate its actions, and aspiring to attain a similar level of prosperity and openness. The concept of soft power is the ability to influence others to align their desired results with one's own, without resorting to coercion but rather through co-opting individuals.

In a globalised society characterised by interdependence, the escalating costs of conventional power supplies have led to the emergence of technology, education, and economic growth as crucial determinants of a nation's power (Nye, 1990).

The ability to exert influence over the desires of others, so aligning their interests with one's own, allows an individual or entity to attain their desired objective without resorting to coercion or inducement. This can be achieved through using many resources, including a nation's cultural heritage, political principles, and international relations, while also establishing legitimacy on a global scale and aligning with widely recognised channels of communication. Consequently, this engenders admiration from other nations and fosters aspirations to emulate its achievements, thereby augmenting its influence. According to Shetty and Sahgal (2019),

Jaishankar (2020) posited that India is poised to leverage its capabilities within the international system to promote global welfare. He emphasised India's role as a net security provider and a facilitator of connectivity. Furthermore, he highlighted India's resolute approach in addressing challenges such as terrorism, while upholding its values and practises. Additionally, Jaishankaremphasised India's commitment to tackling global concerns like climate change and water scarcity. This study highlights the rise of India as a global power, focusing on several factors, with particular emphasis on the significant role played by soft power. During the 20th century, the international community widely regarded the United States, Russia, Japan, and certain European nations as prominent global powers.

It is often asserted that the passage of time has the capacity to bring about transformation in all aspects of existence. While it may be considered a trite statement, it is undeniably an apt depiction of the developments that have transpired on the international stage in recent decades. Initially, we are embarking upon a novel epoch. The period of Western dominance in world history is reaching its conclusion. Furthermore, there is a notable resurgence of China and India as the foremost global economies. According to Maddison's (2001) documentation, it is evident that China and India had the position of being the world's largest economies from 1 to 1820 AD. This historical fact highlights the natural occurrence of their economic prominence during that time period. Furthermore, it can be argued that the global landscape has become increasingly interconnected. According to Kofi Annan, it might be argued that we currently reside in a globalised society.

The significant advancements in science and technology, along with substantial economic and social progress observed in numerous countries globally, particularly in Asian societies, suggest that the twenty-first century will exhibit substantial divergence from the preceding nineteenth and twentieth centuries.

The current state of affairs suggests that life and its various aspects have remarkably returned to their original starting point. In recent years, India has risen as a significant power in the Asian region, alongside China. According to the Bloomberg Report (2022), Britain has lately fallen behind India and now ranks as the sixth largest economy globally. India lags behind the United States, China, Japan, and Germany in terms of its current standing. A decade ago, India held the 11th position in terms of its ranking among the top economies, whereas the United Kingdom occupied the 5th position.

However, in alignment with the paper's purpose, the primary emphasis will be placed on the diverse diplomatic strategies implemented by the Government of India within the realm of soft power.

India possesses a population of 1.38 billion individuals, rendering it the youngest population globally with an average age of 28.4 years. According to the World Population Prospects 2022 by the United Nations (Patra, 2022), India is projected to become the most populous country in the world by 2023, with an estimated population of 1.43 billion. An analysis of the proportion of India's working-age population (defined as those aged 15-64 years) in relation to its overall population, in contrast to other countries such as China, Brazil, USA, and Japan, reveals that India has a favourable position. The working-age populations (WAP) of the aforementioned countries have already commenced a downward trend, however India's WAP ratio is projected to continue increasing until 2045, potentially surpassing that of China by 2030.

India has the opportunity and difficulty of maximising the benefits derived from its demographic dividend.

Presently, India holds the position of the third largest economy globally, when considering purchasing power parity (PPP). This is determined by its contribution of 7 percent in the global Gross Domestic Product (GDP), following China with 18 percent and the United States with 16 percent. It is projected that India's gross domestic product (GDP) measured at market exchange rates will attain the value of US$ 5 trillion by the year 2027.

By the specified year, it is projected that India's Gross Domestic Product (GDP) in terms of purchasing power parity will surpass US$ 16 trillion, indicating a notable increase from the US$ 10 trillion recorded in 2021. According to the OECD's predictions for 2021, it is projected that the Indian economy will surpass that of the United States by the year 2048. This would result in India being the world's largest economy, surpassing China.

The Indian economy holds a prominent position in the global market for the production of diverse agricultural commodities. In the year 2021, India has attained the position of being the foremost global exporter of rice, surpassing the combined exports of the second and third leading countries in this regard. India possesses a very expansive manufacturing infrastructure compared to other emerging countries. This infrastructure encompasses a diverse range of industries, including the production and exportation of tractors and two-wheelers, making India the leading global producer and exporter in these sectors. Furthermore, India ranks among the top 10 nations in terms of exporting smartphones, vehicles, and spacecraft. India has emerged as a global frontrunner in various sectors, such as shipping people and information technology (IT). Regarding information technology, India has gained recognition as the global hub for back-office operations. (Patra 2022),

According to Dr. VinaySahasrabuddhe, President of the Indian Council for Cultural Relations (ICCR), the civilizational connection of India was not established through warfare or colonisation, but rather through the exchange of ideas, traditions, and culture that occurred alongside the trade of various goods. This statement was made by Dr. Sahasrabuddhe during his address at Namaste 2020. The Global Utsava of Indian Soft Power refers to an international event that showcases and celebrates the cultural and intellectual influence of India on a global scale. India is widely acknowledged on a global scale as a nation that does not engage in aggressive behaviour. Its overarching perspective is characterised by inclusivity, and its worldview is rooted in the concept of VasudhaivaKutumbakam, which emphasises the unity of the world as a one family. The philosophy in question is characterised by a diversity of lifestyles, while also emphasising the importance of a coherent and shared identity, as well as the harmonious relationship between humans and nature. Indian civilizational thinking is founded around the principle of harmonious coexistence with the natural world, rather than a mindset of domination or conquest. The practise of soft power is deeply ingrained in India's fundamental identity, which has existed for thousands of years, despite the word being relatively recent in the context of foreign policy and cultural discussions.

In addition to its rich cultural and civilizational legacy, India has garnered recognition for its active engagement in tackling global concerns and its prominent position in different development-related efforts. India's foreign participation is driven by its security and strategic concerns, while also being rooted in the principles of inclusion, plurality, and welfare for all. The establishment of the International Solar Alliance exemplified India's dedication to addressing environmental threats through collaborative efforts on a global scale. In a similar vein, India provides humanitarian assistance to smaller mainland and island economies during times of tragedy, and its contributions to the United Nations Peacekeeping forces rank among the most substantial globally. India's contribution to the global pharmaceutical and wellness sector is exemplified by its active participation in bilateral and international forums aimed at combating COVID-19. This includes the provision of hydro-chloroquine to countries worldwide and the allocation of resources towards research and development for vaccine development (Gupta, 2020).

The soft power index for nations is developed by the research organisation Brand Finance, which assesses seven distinct 'pillars' that contribute to the impression of a nation's brand as either favourable or unfavourable. The pillar of research investigates multiple facets within the domains of Business & Trade, Governance, International Relations, Culture & Heritage, Media & Communication, Education & Science, and People & Values.

The notion of soft power has been subjected to a comprehensive examination by a diverse array of scholars, journalists, research institutions, political figures, diplomats, and consulting firms. Various stakeholders, including world leaders, global corporate entities, civil society organisations, entrepreneurs, academics, journalists, and intellectuals, continuously engage in efforts to comprehend the multifaceted nature of power.

The soft power of India can be metaphorically likened to a

river emanating from the Himalayas. The subject in question exhibits a tendency to be understated on certain occasions, while predominantly maintaining a mild demeanour. However, it possesses the ability to demonstrate strength when circumstances necessitate, and conducts itself with grace and refinement in the face of the challenges presented by the passage of time. India's impressive achievement of attaining the 29th position in the Global Soft Power Index highlights the nation's substantial influence and appeal. This accomplishment can be likened to a serene and tranquil lake, characterised by its expansive breadth and peaceful demeanour. India subtly wields its soft power, yet holds a prominent position in various domains: India is renowned for its status as the largest democracy globally, as well as its rich cultural and linguistic diversity. The moral philosophy of non-violence, famously advocated by Mahatma Gandhi, holds significant importance in the country. Additionally, India is recognised for its substantial contributions to the global exportation of Yoga and Spiritualism, as well as its esteemed Classical Music and Dance traditions. Furthermore, India attracts millions of visitors annually seeking its holistic healthcare practises. The nation's cuisine, characterised by its delectable and adaptable nature, has gained widespread popularity worldwide, particularly in the form of curries. Lastly, India's vibrant film industry, Bollywood, has achieved global recognition.

India has emerged as the leading global hub for information technology, establishing itself as a formidable force in the field of science and technology. Indian information technology (IT) corporations have emerged as leaders in the global effort to facilitate digitization during the ongoing pandemic. India utilises its finite resources to extend assistance to other nations in the realm of healthcare, encompassing both tangible contributions such as vaccinations, as well as intangible contributions in the form of healthcare experts, thereby exerting both hard and soft power.(Francis 2022).

India has managed to maintain a state of equilibrium in the highly divided realm of global geopolitics, primarily due to its reliance on international resources. As a result, it has garnered a commendable grade of 4.2 for its positive diplomatic ties with other nations.

This nation places great value on fostering innovation while concurrently advancing state-of-the-art blockchain technology. India has not yet had the opportunity to present itself on an international platform. It is possible that it may not be necessary. (Global Soft Power Index, 2022)

Conclusion:

Power can be defined as more than just the capacity or authority to govern individuals or objects. It encompasses the possession of sway over others and the capability to take action or generate an impact. In essence, soft power refers to the capacity to persuade governments rather than compel them, or more precisely, the art of eliciting a desire for one's objectives. This is accomplished by the demonstration of shared values and standards. The ability of a nation to garner support from others can be attributed to various factors, including its cultural, economic, and political dimensions, as well as its foreign policy, quality of life, strong academic institutions, and adherence to the rule of law.

The initial ten-year period of the twenty-first century witnessed the emergence of assertions regarding the ascent of India as a potential global superpower.

The assertions regarding the twenty-first century being India's century were not solely grounded in the substantial economic expansion witnessed by the nation during the period following the liberalisation reforms of 1991, along with the corresponding enhancement of military infrastructure. These claims were also supported by India's possession of the largest operational democracy, a significant and influential diaspora numbering in the millions, the pervasive influence of Bollywood both domestically and internationally, and the remarkable religious and linguistic diversity exhibited within the country. India has demonstrated its ability to effectively respond to large-scale disasters, such as the 2004 tsunami, and has also showcased its capacity for executing extensive civil evacuations, as seen in Operation Rahat. These efforts have contributed to India's ongoing efforts to enhance its soft power capabilities and assert its national influence in the region.

India's soft power encompasses a wide range of elements, including but not limited to films and Bollywood, yoga, ayurveda, political plurality, religious diversity, and receptiveness to global influences. The global dissemination of cultural products, such as Bollywood, has played a significant role in increasing global awareness of Indian culture and challenging prevailing stereotypes. Additionally, India's enduring democratic and pluralistic political system has served as a source of inspiration for foreign societies, contributing to its soft power influence.

The soft power of India has experienced growth due to its economic liberalisation, notable achievements, and rapid military expansion. The augmentation of India's economic and military capabilities has bolstered its assurance in projecting its soft power.

Based on the preceding discourse, it can be deduced that

India is poised to become a prominent global leader in the 21st century owing to its comprehensive progress.

REFERENCES:

Bloomberg. (2022). UK Slips Behind India to Become World's Sixth Biggest Economy https://www.bloomberg.com/news/articles/2022-09-02/uk-slips-behind-india-to-becomeworld-s-sixth-biggest-economy (accessed on September 12, 2022)

Francis, A. (2022). India: Flowing Soft Power while Remaining Neutral, https://brandfinance.com/insights/2022-gsps-india, accessed on September 22, 2022.

Gallarotti, G. (2011). Soft Power: what it is, it's importance, and the conditions for its effective use. Journal of Political Power, 4(1), pp. 25-47.

Global Soft Power Index (2022), brand finance.com, accessed on September 23, 2022.

Gupta, A. (2020). Celebrating Indian Soft Power, https://uscpublicdiplomacy.org/blog/ celebrating-indian-soft-power, accessed on October 6, 2022.

Jaishankar, S. (2020). The India Way, Strategies for an uncertain world, Harper Collins India.

Karnad,B. (2018). Staggering Forward, NarendraModi and India's Global Ambition, Penguine Random House India.

Maddison, A. (2001). The World Economy: A Millennial Perspective, Development Centre Of The Organisation For Economic Co–Operation And Development.

Nye (Jr,), J.S. (2004). The benefits of soft power, HBR.

Nye, J.S. (1990). Bound to Lead: Changing Nature of American Power. New York: Basic Book.

Nye, J.S. (2012). Obama and smart power.In M. Cox & D. Stokes (Eds), US foreign policy. New York, NY: OUP.

Patra, M.D. (2022). Deputy Governor, Reserve Bank of India in an event to celebrate *Azadi Ka Amrit Mahotsav* organised by Reserve Bank of India, Bhubaneswar on August 13, 2022.

Shetty, S and Sahgal, T.(2019). India's Soft Power: Challenges and Opportunities Rajiv Gandhi Institute for Contemporary Studies, pp. 1-27.

Zeeshan, M. (2021). Flying Blind India's Quest For Global Leadership, Penguin. Random House.

Manjari
Assistant Professor
D.A.V. PG College
Karnal,
India

Financing Pattern of Micro Small And Medium Enterprises In India

Ajay Kumar

Abstract

Substance

This article has defined the updated definition of micro small and medium enterprises (MSME's) and its internal and external financing sources, the importance of (MSME's).The need and objective of this study,and to know what is the role of micro small and medium enterprises (MSME's) in growth of Indian economy in present scenario and its contribution in Indian grass domestic product (GDP).

Introduction

Several changes have occurred in the global economy since the 1990's. Economies have become more interdependent and markets have become more open and competitive. The new policy framework that has emerged at the beginning of 21st century is more outward oriented less protective and more flexible in terms of strategies. India's economic policies are in the process of being restructured, Through the second generation reforms to adjust to these emerging changes. The main emphasis of future policy will be to continue to promote the growth of the MSMEs sector through focused intervention. The future of MSMEs is major policy concern of the present time. Given their strategic importance of resources efficiency, capacity for employment generation, reducing regional imbalances raising exports, and improving technological innovation and entrepreneurial skills,

The small scale sector has played a very significant role in the socio-economic development of India. Planners recognized the importance of this sector soon after independence and accordingly the sector was given a strategic position in the countries industrial policy. A concerted effort has been made to support and promote of MSMEs,in the context of globalized competitive world by implementation of MSME act 2006, which was enacted on June 16 2006 in accordance with MSME act 2006 MSMEs are classified into two classes.

a) MANUFACTURING ENTERPRISES: The enterprises engaged in manufacturing or production of goods, pertaining to any industry specified in first schedule to the industries development and regulation act.1951. the manufacturing enterprises are defined in terms of investment in plant and machinery.

b) SERVICE ENTERPRISES: The enterprises engaged in providing or rendering services and are defined in terms of investment in equipment.

UPDATED MSME DEFINITION

MANUFACTURING SECTOR

TYPE OF ENTERPRISES	INVESTMENT	TURNOVER(ANNUAL)
MICRO	Rs.1crore	Rs.5crore
SMALL	Rs.10crore	Rs.50crore
MEDIUM	Rs.20crore	Rs.100crore

(Source- the new MSME definition 13th may 2020)

The small scale industries at a distinct disadvantage compared to large scale industries in many areas this gives rise to several problems, Many of the problems arise because of the smallness in size of the unitthat prevent them from taking advantages of economies of large scale production one of the major problems faced by the MSMEs is lack of finance which affects the growth of MSMEs.

FINANCING PATTERN:

Finance is a key input of production distribution and development, it is therefore rightly described as the "life blood" of industry and is a pre-requisite for accelerating the process of industrial development. The sources of finance to the micro small and medium enterprises may broadly be classified as internal sources and external, Entrepreneur's own investments and funds generated out of the retained earnings of the business are the example of internal sources.

The external sources are financing for MSMEs in India are divided into non institutional and institutional sources, non-institutional source of finance include borrowing from friends, relatives, indigenous bankers, money lenders, etc. Institutional sources include borrowing from commercial banks, financial institutions, etc.

There are many ways to raise finance for the MSMEs which includes personal savings and assets loans, life insurance policies, trade credit, government schemes, venture capital, angel funds, debt financing, etc.

In present time micro small and medium enterprises are an integral part of Indian economy and contribute significantly to gross domestic product (GDP)almost to the tune of USD one trillion,they generate 20-25 percent of the total employment in the nation and lead to overall economic development.

The union budget 2023 is well balanced and has focused on inclusive development and enabling phenomenal growth in the entrepreneurship eco-system of the nation, it allowed for employment generation and the strengthening of local economies. The government in the budget has measures aimed at providing support and encouragement to the MSMEsector.

FINTECHS & NBFCs: SIMPLIFYING BORROWING FOR TODAY'S MSMEs

Fintechs have revolutionized the lending process for micro small and medium enterprises (MSMEs) by leveraging technology, these companies are able to offer simple, easy to use services and highly competitive interest rates. This combined with the lower overhead costs associated with online financing makes fintechs an attractive option for MSMEs looking to access capital quickly. What's more in comparison to traditional banks and lenders, fintechs are also much faster in processing loan applications.

Traditional lenders often lack of the flexibility and speed needed by MSMEs, moreover many fintechs provide funding to businesses that lack sufficient credit history and which can be difficult to come by in these situations. Additionally fintechs also provide specialized business loans tailored to specific industries, such as real estate, technology and health care.

In the lending fintech environment,there are distinct type of players such as payment aggregators, surrogate players and lending tech players, however there are some challenges associated with all these models.

PAYMENTS DATA BASED LENDING AND THE CHALLENGES ASSOCIATED WITH COLLECTIONS:

Payment aggregators are third party services that act as a bridge between buyers and sellers in the financial technology space. In the simplest term, they gather payment information from buyers and connect them to the seller's payment processor or merchant account. In this model, merchants are aggregated across spectrums, right from a fish vendor on the street to a Ferrari showroom.

1) While payment aggregators have merchant transaction data, through which they offer credit to merchants, the data is never exhaustive and or exclusive, the same data is reflected in the bank statements of merchants and can easily be tampered with, as well.

2) The number of daily transactions are not reflective of a merchant's true business potential as cash and multiple payment services are quite often a norm.

3) For payment aggregators it's hard to create one coherent policy that could service a roadside vender to a large format retail score.

4) Since large sums of money is already spent to acquit these merchants, some of the companies have tried to retrofit credit products in this space but it increases the risk beyond acceptable and profitable limits.

5) Substantial number of acquired merchants for this segment are the long tail merchants who are roadside venders or small stores, based on their transaction history and without complete credit assessment it is also hard to give them a credit which can create meaningful impact to their business.

LENDING: FIRST APPROACH FOR THE WIN

Despite numerous advances in the fintech sector, the lending first approach remains unbeatable. This approach to financing involves lending decisions based on factors such as credit score, banking, GST, business performance, physical stock, transaction flow data, savings, network diversity and geographical patterns. By focusing on these factors, lenders can reduce the risk of default and ensure that borrowers are able to meet their obligations, this allows fintechs to provide reliable and safe financing options to MSMEs providing them with the capital they need to succeed in the global market.

CONTRIBUTION OF MSME TO GDP:

MSMEs are the backbone of Indian economy, accounting for a large portion of employment, production and exports in most countries. In fact 33% of India's GDP comes from the MSME industry – this sector is also responsible for the generation of over 120 million jobs across various industries, all of which contributes to wealth creation. It is therefore essential to ensure that these businesses have access to the financing and resources they need to grow and succeed. However formal sources of credit only reach about 39% of MSMEs, according to government data. This gap is caused not only by lack of credit supply. But also because of absence of easily available and accessible collateral free sources of credit.

With traditional banks becoming increasingly risk-averse fintechs are uniquely positioned to fill the role by providing the funds and financial services MSMEs need to stay competitive and remain profitable moreover, the use of technology can also help MSMEs reduce costs and make their operations more efficient.

As per the information received from ministry of statistics and programme implementation the share of MSMEs gross value added (GVA) in all India gross domestic product (GDP)is as follows:

Year	2018-19	2019-20	2020-21
Share of MSME GVA in all India GDP (in %)	30.50	30.50	26.83

As per the information received from the directorate general of commercial intelligence & statistics, the share of export of specified MSME-related products in all India export is as follows:

Description	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23(up to august 2022)
Share of export of MSME related product in all India export (in %)	49.77	49.35	45.03	42.67

As per Udyam registration portal, the total number of persons employed in MSMEs which are incorporated during the last three years and the current year is as follows.

Year	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23 (up to 07/12/2022)
All India	65,64,458	1,12,27,745	1,30,19,919	84,23,452

Need of The Study

Micro small and medium enterprises (MSMEs) is one of the fastest growing industrial sector in the world economy. Micro small and medium enterprises are

socially and economically important since they represent percentage of all enterprises provide self-employment there by creating entrepreneurship and innovation.

All kinds of business required sufficient amount of funds to fulfill its fixed and working capital requirement while go through literature find various financial problems in different perspective are faced by the micro small and medium enterprises (MSMEs) around the whole world. So the present studytries to identify the financial concern of MSMEs in the context of India,

OBJECTIVES:

Following are the main objective of the study:

1) To identify the newest definition of micro small and medium enterprises (MSMEs).
2) To identify the various sources of finance available for small and medium enterprises (MSMEs).
3) To identify the various barriers faced by micro small and medium enterprises (MSMEs) in raising finance.
4) To study the pattern of investment in micro small and medium enterprises (MSMEs).
5) To analyze the factors affecting investment decisions in micro small and medium enterprises (MSMEs).
6) To study lending risk to these sectors faced by financial institutions.
7) To study opportunities for banks and other financial institutions in these sector.
8) To identify the current contribution in GDP of micro small and medium enterprises (MSMEs).
9) To identify the contribution in employment generation of micro small and medium enterprises (MSMEs).
10) To identify the MSMEs export contribution in Indian economy.

LIMITATIONS OF THE STUDY:

1) Limitation of accessibility of information due to its confidential nature.
2) The study look into present scenario of MSMEs but does not look deeply into the state wise developments.

MAJOR FINDING OF THE STUDY:

This article describes internal and external financing sources of MSMEs and identify the contribution of MSMEs in exports, employment generation and GDP growth and analyze which factors are affect the investment decision in MSMEs, and analyze the opportunity of banks and other financial institutions in these sectors. This article describes newest definition of MSMEs;

REFERENCES:

1)Narendra Singh, Advanced Financial Management, Himalaya publishing House, Lucknow, First Edition - 2007,Page 12-41.

2)Edward Shapiro University of Toledo, Macroeconomic Analysis - Fifth Edition, Galgotia Publications Pvt.Ltd. 5 Ansari Road Durgaganj, New Delhi 110002 Page 364-365 Pub. 2009.

3)Prof.S.A. Sherlbhar, Global Marketing Management, Himalaya publishing house Mumbai & Delhi Page 555-570.

4)Rajan Saxsena, Marketing Management, Taba Macgrow, Hill Publishing Company Ltd. New Delhi Page 492-499 Pub. 2008.

5)Nash Edward, Database Marketing: The ultimate narrative Tool,New York Mcgrow Hill 1992 sixth Rebirth - 2008.

6) I.M. Pandey, Financial Management Ninth Edition, Vihar Publishing House Pvt. Ltd.2009, P. 3-4.

7). Latest Statical Data Used In This Article On The Basis of Government Data.

Name: Ajay Kumar

Address: Village & post:-lauwar, Tehshil:-Patti, DISTRICT-pratapgarh (U.P.)

Pin Code:-230134

Mob.no.91-8765901355

EMAIL: vermaajay102000@gmail.com

GALSWORTHY'S CONTRIBUTION TO MODERN BRITISH DRAMA

Sahil Patil

Abstract

John Galsworthy was an English novelist and playwright. He is best known for his trilogy of novels collectively called *The Forsyte Saga*, and two later trilogies, *A Modern Comedy* and *End of the Chapter*. He won the Nobel Prize in Literature in 1932.

As a matter of fact, as a dramatist Galsworthy belongs to the realist tradition of Jones and Pinero. He says himself in a magazine article "Some Platitudes concerning Drama": "Every grouping of life and character has its inherent moral; and the business of the dramatist is so to pose the group as to bring that moral poignantly to the light of day," and his plays are all didactic in purpose. Galsworthy was a social reformer, objectively and impartially posing a problem, showing always both sides of the question, and leaving his audience to think out the answer. Most of his dramas are concerned with social issues. His chief protagonists are usually social, forces in conflict with each other, and the human concern in his drama, though real enough and very true to ordinary life, are studied more as products of these forces than as individuals who are of interest for their own sake.

John Galsworthy has a two-fold distinction in the history of contemporary literature as a ***novelist*** and a ***playwright***. But both the kinds are in reality the twin manifestations of the same genius, varying only in their form and technique. The materials of both are the same spectacle of life, the same social milieu. The art applied in both is the "naturalistic (or realistic) art" In his essay on Some Platitudes Concerning Drama Galsworthy has described his art thus: "Naturalistic art is like steady lamp, held up from time to time, in whole light things will be seen to a space; clearly and in due proportion, freed from the mists of prejudice or partisanship." In other words, every artist must hold the mirror up to nature. He must adorn nothing, distort nothing but present the white light of truth. Again he had said, as to the purpose of art, that "every grouping of life and character has its inherent moral; and the business of the dramatist is so to pose the group as to build the moral poignantly to the light of day" That is, his art is didactic.

In the drama, too, Galsworthy adopts the same naturalistic technique in the tradition of Jones and Pinero. He was, too, a great an artist to deal with problems from the stand-point of a partisan and to offer any solution of his own. He dissects them with an impartial and detached attitude, presents both sides of the cases without passion or prejudice. The solution of the problem is not 'obtruded' but only hinted at. In this respect Galsworthy differs from Shaw, who is primarily a propagandist. As Chesterton has observed - "Shaw cannot really divide his mind and let the two parts speak independently. If we want to see a fair artistic balance between two opposite views, we must go to Ibsen or Galsworthy:" Shaw writes as if firing a machine gun at his readers; Galsworthy, as if speaking with an equal in a cultivated prose style. "He looked upon the masses of humanity as mostly victims of their own ignorance and folly and was content to reflect a social problem which we must somehow endure, because there is not solution. It must however be noted that Shaw and Galsworthy are different in their artistic forms. Galsworthy is a tragedian, while Shaw is a comedian. Galsworthy creates tragic pity out of the clinical presentation of the problems of modern men and women. Shaw is serious in his social and philosophical themes, but he presents them in a light-hearted manner with humour, wit and fun. Shaw is a great humorist and his art lies in presenting the ugly facts of life in the sugar-coated pills of laughter and fun. He is a greater thinker than Galsworthy, and he is again a greater joker. Shaw is a more powerful personality and influence in the twentieth century English literature.

John Galsworthy as a dramatic craftsman is superior to all other contemporaries and is a contrast to Shaw. Shaw's dramas are really, dialogues in which revolutionary views are developed. The plot is usually sacrificed and is of little importance. Shaw is a comedian while Galsworthy is a tragic artist. Shaw develops his theme through discussions and dialogues. Characters are confronted and clash of ideas is shown through brilliant conversations. But in construction of plots Galsworthy shows a good deal of technical skill. His plots are not over elaborate or complex. His selection of incidents and the arrangement of the feelings are governed by the central purpose of the presentation of a view of life. All unnecessary details are eliminated. The action progresses steadily to a climax. The element of conflict is there. There is no dull moment in the course of the action. Some of the scenes of his plays are very vivid and unforgettable. In this way, without any hesitation, we can say that John Galsworthy has a prominent place in the area of literature.

Introduction

Galsworthy has made a signal contribution to modern British drama. He has written about 30 plays, and they all deal with the problems faced by the average man of today. He presents all

aspects of a problem realistically and impartially. He makes us think. He offers no solutions and most of his plays end on a question mark.

His Lively Naturalism in Life

Galsworthy is naturalistic in his dramatic material as well as his technique. He presents life as he sees it around him truthfully and objectively. He has no mysticism, symbolism or romanticism. He does not present larger-than-life heroes who stand on stilts. He shows the tragic waste in the lives of common people like us. The dialogue is life-like. The stage directions are short and revealing. At the same time, Galsworthy is not photographic in his realism. His plays are the best example of art seen through a temperament.

His Economy and Self-restraint

Economy and self-restraint are the main characteristics of his art. He is serious and prosaic because he deals with commonplace characters and everyday life. He does not interest himself in the soul and the entire personality of his characters. He paints them objectively as he observed them in real life. He practices strict economy in his material as well as in his language. He does not allow himself any poetic fights and he strictly avoids any display of sentiment. He works within the narrow limits of reason and realism .His economy and restraint, subtle suggestions and unspoken thoughts are more effective than the loud expressions of other dramatists.

Art and Morality in his creations

The modern dramatist is pulled in two different directions. On the one side there are the demands of art and on the other there are the demands of life. Should he work on the basis of 'art for art's sake' or on the principle of 'art for the sake of life'? Should he, like Oscar Wild, aim only at entertainment or should he preach openly like Shaw? Galsworthy believes in the purity of art and he does not preach openly. At the same time he wants social systems to be reformed and conflicts to be ended so that human suffering can be reduced. His plays are artistically conceived but his remedy for evils is ethical. He makes up realize that all conflicts can be ended if there is imaginative approach to problems and human understanding of the other person's point of view. The artistic mode and creative feeling are so beautifully blended with a distinct moral purpose in Galsworthy's work that it will be difficult to find any other author who can so successfully ride these two horses together and maintain a nice balance.

Social Forces in Dramas

He has brought one innovation in the English tragedy. He introduces in his Dramatis Personae a new powerful character. This is society with its impersonal laws and conventions and its cruel inhuman administration. This takes the place of the gods of classical tragedy and brings the characters to their doom. There man was powerless against the mighty gods. Here also when the individual comes into conflict with the powerful social forces he is brutally crushed down and his life is completely wasted. This tragedy of 'waste' is Galsworthy's contribution to world drama.

Tragic Atmosphere

Another innovation of his is the tragic atmosphere that pervades his plays and does not end even when the curtain falls. The plays ends but the tension continues in the minds of the audience and the readers. The author's triumph lies in suggesting the tragedy that is likely to happen after the last scene is over. In *Justice* we are painfully aware of the miserable life that awaits Ruth Honeywill. In *Strife* when the curtain falls we find the two principal men completely broken. We can imagine how tragic their subsequent life is likely to be. The wife of Roberts has died and he has no "home" now. In *The Silver Box* we can imagine what suffering awaits Mrs. Jones and her poor children after the play is over. The curtain falls but the tragic atmosphere dominates our minds.

His Exquisite Literary Excellence

Society and its laws and conventions and the fashions and manners of the people have changed considerably since Galsworthy's days. Many of the problems dealt with by him do not agitate people's minds now as they did in his days. Yet his plays continue to be popular on the stage and among readers. That is a sure sign of his literary excellence and super craftsmanship.

Conclusion

To sum up we can say that Galsworthy has brought about a beautiful synthesis of art and morality, of drama for entertainment and drama for instructions. He is not so bright, witty and brilliant as Shaw but he has a greater balance, restraint and artistic power. His tragedies showing the waste of precious human lives move us immensely. Galsworthy has, therefore, secured an honorable niche for himself in modern English drama.

References

1.https://en.wikipedia.org/wiki/John_Galsworthy#:~:text=John%20Galsworthy%20OM%20(%2F%CB%88%C9%A1,Prize%20in%20Literature%20in%201932.

2. https://www.englishliterature.info/2021/08/john-galsworthy-novelist-dramatist.html

3.Arihant UGC net/jrf/set English paper 2 book by Mridula Sharma, Ajeet Singh Jadaun, Tanveen Kaur, Dr. Chakreswari Dixit, Chhavi Kumar, Arihant Publication Limited, Edition 2022, Chapter 4, Victorian Age to Modern Age Drama,(page no. 79)

4. English Literature Its History And Its Significance by William J. Long, Edition 1995, Kalyani Publishers, chapter 12 Twentieth-Century Literature (page no. 579-582)
5.Upkar UGC NET/JRF/SET English Literature By Hira Lal Choudhary, Edition 2022, Upkar Prakashan, Chapter 1 Drama (page no. 60)

Sahil Patil
Father's Name Arvind Kumar Patil
Address Vidya Nagar, Mehem Road,
Dr. Kajal wali gali near
Ravinder Shop, Bhiwani,
Haryana,pin code=127021
Mob No. 8901027630

51

AN EXPLORATORY STUDY OF CONSUMER BEHAVIOR IN INDIAN PERSPECTIVE

Ajay Kumar

SUBSTANCE

This article has defined the meaning and definition of consumer behavior, type of consumers, and their buying motives. An exploratory study, the factors affecting consumer behavior, and consumers buying or decision making process, the differences between consumer buying behavior and organizational buying behavior.

MEANING AND DEFINITION OF CONSUMER BEHAVIOR:-

Consumer behavior is the study of individuals, groups, organizations and all the activities associated with the purchase, use and disposal of goods and services. Consumer behavior consists, consumer's emotions, attitudes and performances affect their buying behavior.

The study of consumer's behavior formally investigates individual qualities, such as demographics, personality, lifestyles and behavioral variables in an attempt to understand people's wants and consumption patterns.

In other word consumer behavior includes, all acts of individuals directly involve in obtaining and using goods and services, including the sequence of decision making process, that precede and determine these acts. In the simple word, it consist of both physical as well as mental activities involved in the buying process of decision making.

SOME IMPORTANT DEFINITIONS GIVEN BY THE AUTHORS

"The process whereby individuals decide whether, what, when, where, how and from whom to purchase goods and services".

-by: Professor Walter C.G. and Professor Paul G.W.

"The mental and emotional processes and the physical activities of people, who purchase and consume goods and services to satisfy particular needs and wants.

-by: professor Bearden and Associates.

"Consumer behavior is all the physiological, social and physical behavior of potential customers as they become aware, evaluate, purchase, consume and tell others about the products or services.

-by: Frederick F. Webster.

TYPE OF CONSUMERS:

1)END OR FINAL CONSUMERS:

The final consumers is one who buys the goods and services for final consumption for himself or his relatives, friends and others, who has bondage with him.

2)INTERMEDIATE OR BUSINESS CONSUMERS:

An individuals and organizations who buy the goods and services not for final use but for making those inputs may be in the form of pure raw materials, semi-finished products to be used in making other final products, these are called as business consumers.

BUYING MOTIVES OF CONSUMER:

There are mostly two buying motives of consumers-

I. EMOTIONAL PRODUCT MOTIVES:

A consumer to buy a certain product without evaluating ups and down points of product careful reasoning or logical analysis is missing behind such purchases, That's known as emotional product motive.

II.EMOTIONAL PATRONAGE MOTIVES:

A buyer to buy from specific shop without any logical reason behind that action, but if the buyer selects the shop due to some specific reason like the wide selection range of the shop, goodwill of the shop, better after sale service etc.

THE BUYING PROCESS:

The basic steps involved in buying processes are the following:

1. NEED RECOGNITION:

The starting point of the buying process is a desire, need recognition is the awareness of the want or a desire or a consumption problem without whose satisfaction the consumer feels restless and tension charged, he feels that a desire are arisen which has to be satisfied, needs or wants arise either due to internal stimulus or external stimulus.

2.INFORMATION SEARCH:

Once a need can activated a search for need satisfying solutions, the search for information will begin. But where do buyers look for information when making purchases.

In the case of routine repurchase of a familiar product, probably very little information is sought about the product. But where there is a greater element of uncertainty, buyers will seek out information about alternative ways in which they can satisfy their needs, especially where a high level of risk is involved.

3.EVALUATION:

It is consumer's huge interest in the product or service covers the way for evaluation. This stage is the stage of mental trail of the product or service. In evaluation stage, the consumer assigns relative values or weightages to different products or services based on accumulated information and judges the relative worth of alternative products or services from the

angle of want satisfying potential.

4. PURCHASE DECISION:

It is the positive intention of the consumer that leads to a purchase decision, decision to purchase indicates consumer commitment for a product or service. Practically, it is the last stage in the buying process because, it complete exchange process.

5. POST PURCHASE REACTION:

Post purchase reaction stands for the behavior of a consumer after a commitment to product has been made. This post purchase experience may be a set of positive or negative feeling or satisfaction will result in repeat sales or at least recommending the products or services to other on the other hand, dissatisfaction or negative feelings creating anxiety and doubts.

FACTORS AFFECTING THE CONSUMER BEHAVIOR:

The determinants of consumer behavior can be divided into three groups namely economic, psychological and sociological.

a) ECONOMIC FACTORS:

Consumer buying habits mostly depend on the economic situation of a market or a company. When a nation's economy is strong, it leads to a greater money supply in the market, then higher purchasing power of consumer. Whereas a week economy reflects a struggling market that is impacted by unemployment and lower purchasing power.

Some of the important economic factors are as follows:

1) Personal income.
2) Family income.
3) Consumer credit.
4) Consumer liquid assets.
5) Consumer income.
6) Consumer's living standard.

b) PSYCHOLOGICAL FACTORS:

Human psychology plays a major role in understanding consumer behavior. That is difficult to measure, but psychological factors are powerful enough to influence a buying decision. Some of the important psychological factors are as follows:

1) Motivation.
2) Perception.
3) Learning.
4) Attitude.
5) Personality.

c) SOCIOLOGICAL FACTORS:

Human are social being, and the society or the people they live around affect their buying behavior. Human being try to copy other humans and nurture, a desire to be society accepted. Hence their buying behavior is affected by other people around them. These factors are considered as social factors. Some of the important social factors are as follows:

1) Family.
2) Reference groups.
3) Opinion leaders.
4) Social class and caste.

DIFFERENCE BETWEEN CONSUMER BUYING BEHAVIOR AND ORGANIZATIONAL BUYING BEHAVIOR:

BASIS	CONSUMER BUYING BEHAVIOR	ORGANIZATIONAL BUYING BEHAVIOR
1) Purpose of buying	The individual consumers buy goods and services for ultimate use or satisfy their need.	The organizations buy goods and services for their business needs. The buying purpose of them it to earn profit by using and selling the goods and services.
2) Quantity	Although consumers buy various kinds of goods remains small. The buy only the necessary quantity of goods, which they need for regular use.	Organizational buying is done in large quantities.
3) Market knowledge	Most of the consumers may not have adequate knowledge and information about market situation, available goods and services.	Organizational purchase criteria are specifically defined. Organizational buyers have full knowledge of market and suppliers.
4) Type of goods	Consumer buy many goods to use to satisfy personal or family needs.	Organizational buyers buy limited goods to use to conduct business.
5) Buying process	The consumers buying process is very simple, no need to fulfill any formality, there is also no need to maintain extensive contact with sellers.	Buyers and sellers in the organizational market must make extensive contact.

NEEDS OF THE STUDY:

Understanding consumer behavior in the Indian market is a crucial aspect of modern business. From making purchasing decisions to affect others, it is the study of factors that play a role in the choices, actions and attitudes of buyers. By analyzing the behavior companies can better understand their customers and make strategic business decisions that lead to increased sales and profits.

Consumer behavior research helps companies to identify customer's needs, preferences and motivations that drive their purchasing decisions.

OBJECTIVES:

Following are the main objectives of the study:

1) To identify the meaning and definitions of consumer behavior.
2) To study the types of consumer in India.
3) To identify the buying motives of consumers.
4) To know the buying process of consumers.
5) To identify the factors, who has affected the consumer's behavior?
6) To identify the differences between consumer's buying behavior and organizational buying behavior.

REFERENCES:

1)Prof. Vijay Prakash Anand, Marketing Management an

Indian perspective, Biztantra Ideas for Tomorrow, First Edition- 2012, Page: 99-112.
2) C.N. Sontakki, Neeti Gupta, and Anuj Gupta, Marketing Management, Kalyani Publishers Rajinder Nagar Ludhiana 141008, Second Revised Edition- 2018, Reprint- 2020, Page: 7.1-7.30
3)Adrian Palmer, Introduction to Marketing theory and practice, Third Edition, Printed In Great Britain By AshfordColor Press Ltd, Page: 113-154.
4)Henry Assail, Consumer behavior and Market action, Kent Publishing Co. 1987, Page: 87
5).Dick A.S. And Basu.K. Customer loyalty:Toward an Integrated Conceptual Framework, 1994, Page.99-113.

NAME: Ajay Kumar
ADDRESS: Village and Post - Lauwar, Tehshil – Patti,
District – Pratapgarh (U.P.) 230134.
MOBILE NO.: 91-8765901355
EMAIL: vermaajay102000@gmail.com

52

RUSKIN BOND'S CONTRIBUTION TO CHILDREN'S LITERATURE: A CRITICAL ANALYSIS

Dr. Poonam Mor, Dr. Sonam Kamboj

Abstract:

This study has been undertaken to investigate the significant contribution made by Ruskin Bond, a renowned Indian author to children's literature in India. Over the years, Bond has written dozens of books for children, many of which have become classics of Indian children's literature. His works often feature young protagonists who are dealing with issues such as loneliness, loss, and the search for identity. Through his writing, Bond has given voice to the experiences of children in India, and helped to create a literary tradition that is uniquely Indian. Bond's portrayal of the characters' emotions and the setting is masterful, evoking a sense of longing and melancholy. The story has been widely praised for its lyrical prose and its ability to capture the essence of fleeting moments in life.

Index Terms: Children literature, Inspiration, Blend humor and pathos, Prolific writer

INTRODUCTION

Ruskin Bond is a celebrated Indian author who has made a noteworthy contribution to children's literature worldwide. He has authored numerous books for children, ranging from picture books for toddlers to novels for young adults. Through his works, he has inspired generations of young readers and helped shape the landscape of children's literature in India.

Ruskin Bond was born in Kasauli, Himachal Pradesh, in 1934. His childhood was marked by frequent moves and periods of loneliness, as his parents were divorced and he was often left in the care of relatives. However, it was during these early years that he developed a deep love for nature and storytelling, both of which would feature prominently in his later works. Bond has published over 100 books, including novels, short story collections, and memoirs. His works for adults often explore themes of love, loss, and the complexities of human relationships, while his children's books are characterized by their warmth, humor, and sense of wonder.

Bond's first book, "The Room on the Roof," was published in 1956, when he was just 22 years old. The book tells the story of a teenage boy named Rusty, who is struggling to find his place in the world. The book was an instant success, winning the John Llewellyn Rhys Memorial Prize and cementing Bond's place as a talented young writer.

Over the years, Bond has written dozens of books for children, many of which have become classics of Indian children's literature. His works often feature young protagonists who are dealing with issues such as loneliness, loss, and the search for identity. Through his writing, Bond has given voice to the experiences of children in India, and helped to create a literary tradition that is uniquely Indian.

One of the things that sets Bond apart as a writer for children is his ability to capture the beauty and wonder of the natural world. His stories are filled with vivid descriptions of the Himalayan landscape, the forests of Dehradun, and the rivers and streams that run through India's heartland. Through his writing, Bond has helped to instill a love of nature in generations of young readers, and inspired many to take up environmental causes. According to literary scholar Ritu Gairola Khanduri, Bond's depiction of childhood is deeply influenced by his own experiences growing up in the hills of India. In her essay "Childhood in the Hills," Khanduri notes that Bond's works are characterized by "a sense of nostalgia, of longing for a lost world, and of a desire to recapture the beauty and simplicity of childhood."

Another hallmark of Bond's writing is his ability to blend humor and pathos.Many of his stories are infused with a gentle humor that makes them accessible to readers of all ages. At the same time, his stories often deal with serious issues such as poverty, displacement, and cultural identity. By blending humor and pathos in this way, Bond has created stories that are both entertaining and thought- provoking.

Perhaps one of Bond's most enduring contributions to children's literature in India has been his willingness to take risks and experiment with different forms and styles. In addition to his novels, he has written poetry, short stories, and picture books for children. He has also translated works from Hindi and other Indian languages into English, helping to bring a wider range of voices to the attention of English-speaking readers.

Bond's influence on children's literature in India can be seen in the work of many contemporary writers. His emphasis on nature and the environment, his ability to create relatable young protagonists, and his use of humor and pathos have all become hallmarks of Indian children's literature. In addition, his willingness to take risks and experiment with form has helped to broaden the scope of what is possible in children's literature.

In recognition of his contributions to Indian literature, Ruskin Bond has received numerous awards and honors. These include the Padma Shri in 1999, the Sahitya

Akademi Award in 1992, and the Hans Christian Andersen Award in 2017. However, perhaps his greatest legacy is the countless children who have been inspired by his writing, and who have gone on to become readers and writers themselves.

Furthermore, Ruskin Bond's contribution to promoting children's literature in India cannot be overstated. Through his writing, he has inspired generations of young readers, and helped to shape the landscape of children's literature in India. His emphasis on nature, humor, and relatable protagonists has become a hallmark of Indian children's literature, and his willingness to take risks and experiment with form has helped to expand the possibilities of what can be achieved in the genre. His legacy can be seen in the work of many contemporary writers, as well as in the countless children who have been touched by his stories.

One of the reasons why Bond's works have resonated so deeply with young readers is that they are rooted in his own experiences. As a child, Bond often felt lonely and disconnected from the world around him, and it was through his love of nature and storytelling that he was able to find a sense of purpose and belonging. Many of his stories feature young protagonists who are dealing with similar feelings of isolation and uncertainty, and who find solace and meaning in the natural world.

Bond's stories also often deal with issues that are particularly relevant to children in India. For example, many of his works explore themes of poverty, displacement, and cultural identity. By addressing these issues in his stories, Bond has helped to give voice to the experiences of children who are often marginalized and overlooked.

One of Bond's most famous works for children is "The Blue Umbrella," a novella that tells the story of a young girl named Binya who trades her old leopard- claw necklace for a beautiful blue umbrella. The story explores themes of envy, greed, and the desire for material possessions, as well as the beauty and power of nature. The novella has been adapted into several films, and is considered a classic of Indian children's literature.

Another of Bond's popular works for children is "The Adventures of Rusty," a series of books that follow the adventures of a young boy named Rusty as he navigates the challenges of growing up in India. The series is notable for its blend of humor and pathos, as well as its vivid descriptions of the natural world.

Bond's poetry for children is also widely celebrated. His poems often focus on the beauty of nature, and are characterized by their simple, lyrical language. Many of his poems have been set to music, and are popular with children's choirs and music groups.

He is a renowned Indian author who has captured the hearts of readers both within and outside India with his evocative and nostalgic writing style. He has been called "the Indian William Wordsworth" and "the master storyteller of the hills," and is known for his poignant portrayals of Indian life, culture, and nature. Bond's contributions to children's literature in India have not gone unnoticed. In addition to the awards and honors he has received, he is widely regarded as one of the most important writers for children in India. His books are widely read in schools and libraries across the country, and are beloved by generations of readers.

In recent years, Bond has become an advocate for children's literacy, speaking out on the importance of reading and writing for young people. He has also been involved in a number of initiatives aimed at promoting reading among children in India, including the creation of libraries and the distribution of books to underprivileged children.

In conclusion, Ruskin Bond's contribution to promoting children's literature in India is significant and enduring. Through his writing, he has inspired generations of young readers, and helped to shape the landscape of children's literature in India. His emphasis on nature, humor, and relatable protagonists has become a hallmark of Indian children's literature, and his willingness to take risks and experiment with form has helped to expand the possibilities of what can be achieved in the genre. His legacy can be seen in the work of many contemporary writers, as well as in the countless children who have been touched by his stories.

In addition to his contributions to children's literature, Bond's impact on Indian literature as a whole is also significant. He is considered one of the most important and prolific writers of contemporary Indian literature, and his works have been translated into numerous languages.

Despite his prolific output, Bond is known for his spare, understated prose. His writing is marked by its simplicity and clarity, and his ability to evoke a sense of place and atmosphere is unparalleled. His works often draw on his experiences growing up in India and his deep connection to the natural world.

Throughout his career, Bond has received numerous awards and honors for his contributions to literature. These include the Sahitya Akademi Award, India's highest literary honor, as well as the Padma Shri and Padma Bhushan, two of India's most prestigious civilian awards. In 2017, he was awarded the Lifetime Achievement Award at the Times of India Literature Festival.

Despite his many accolades, Bond remains a humble and down-to-earth writer. He continues to write prolifically and remains deeply committed to promoting reading and literacy among young people.

In recent years, Bond has also become an advocate for environmental conservation. He has spoken out on the importance of protecting India's natural resources and has used his writing to raise awareness about the impacts of climate change.

Conclusion

In conclusion, Ruskin Bond's contribution to contemporary India is immense and multifaceted. His works have not only transformed the landscape of Indian literature but also shaped the broader cultural and social conversations in the country. Through his powerful and evocative writing, he has brought attention to important issues such as identity, social justice, rural life, and the environment, and his works continue to be relevant and resonant today.

Overall, Ruskin Bond's contributions to Indian literature and children's literature in particular are significant and enduring. His stories have touched the hearts of countless readers, and his legacy will continue to inspire future generations of writers and readers alike.

References:

Bond, Ruskin. The Blue Umbrella. New Delhi: Rupa Publications, 1980 Bond, Ruskin. The Room on the Roof. New Delhi: Penguin Books, 1956.

"Ruskin Bond." Encyclopedia Britannica. Encyclopedia Britannica, Inc., n.d. Web. 15 Feb. 2023. https://www.britannica.com/biography/Ruskin-Bond.

Rai, Amrendra K. "Ruskin Bond's Contribution to Indian English Literature." Research Scholar: An International Refereed e-Journal of Literary Explorations 1.1 (2013): 33-40. Web.

Singh, Rajeshwar. "The Art of Ruskin Bond's Fiction." Indian Literature 37.1 (1994): 123-129. Web.

Dr. Poonam Mor
Assistant Professor (English)
Department of Languages and Haryanvi Culture
COBS&H, CCSHAU, Hisar
Dr. Sonam Kamboj
Assistant Professor (English)
COA, Bawal

The Concept of Philosophy and Spiritualityin A River Sutra by Gita Mehta

Prof (Dr.)Punita jha, Archana

Abstract:

The novel "A River Sutra" by Gita Mehta is an artistic representation of a positive outlook on life. It examines many philosophical stances and issues through a series of interconnected stories that are situated along the banks of Indian River Narmada. The novel interweaves a variety of characters and stories, each of which reflects particular philosophical viewpoints, social customs, and spiritual perspectives. All the stories are set against the backdrop of the Narmada River, where people from various origins come together and communicate, inspiring deep philosophical reflections. A rich tapestry of philosophical perspectives is presented by the interweaving stories of the characters, with the river acting as a metaphor for the flow of life. In this book, Gita Mehta explores the complexities of human existence, the search for truth, and the interplay between individual journeys and universal forces. This book explores the complex philosophical concepts of karma, attachment, detachment, the illusion of reality, cultural pluralism, the quest for meaning, and the cycle of life and death. The narratives showcase the diverse nature of Indian society, prompting readers to reflect on tolerance, empathy, and understanding. The characters' quests for meaning and purpose reflect humanity's innate yearning for understanding and connection to something greater than themselves. The cyclical nature of existence is reflected in the river's perpetual flow, prompting characters to confront their mortality and grapple with concepts of impermanence and reincarnation.

Keywords: philosophical, Karma, tapestry, cultural pluralism, predestination, spiritual, mortality, impermanence, reincarnation.

Introduction

Gita Mehta was born in a politically prominent family in India and grew up amidst a political atmosphere, she is well acquainted with different aspects of politics. She spent her early years in India due to which she has a deep understanding of Indian history, mythology, politics and religion from which she is deeply rooted and all these perspectives are reflected in her major works. Gita Mehta was born in 1943 and brought up in Delhi. Her father Biju Patnaik was a well-known political leader as well as the chief minister of Odisha. Naveen Patnaik is her younger brother, who is the chief minister of Odisha.

Gita Mehta, a journalist with a background in journalism, began her career as a television war columnist for US networks in 1970. She produced documentaries on the Bangladesh revolution Dateline and elections for imperial states. Mehta has written and directed television documentaries for CNBC. She is married to Ajai Singh Sonny Mehta, president of Alfred A. Knopf in New York. Mehta resides in Delhi, New York, and London, but visits India for at least three months each year, viewing these visits as family reunions. Her husband, Ajai Singh Sonny Mehta, was a prominent member of New York's publishing community and their family was well-known in the city's publishing and intellectual communities.

Gita Mehta assured that her books are about the merging of cultures and are smart querying of Indian history and mythology. She is the author novels, Raj (1989), and A River Sutra (1993), one non-fiction book, Karma Cola (1979), and a collection of short essays, Snakes and Ladders (1997). Her most recent book is Eternal Ganesha (2006). In addition to all of these novels, she has authored several magazine for American, European, and Indian journals. Her works have been published in twenty-seven countries and translated into twenty-one different languages.

Gita Mehta published her fiction book A River Sutra (1993), a symbolical and significant novel, which is set along the banks of river Narmada. The story is told by a retired bureaucrat who looks back on his time as a guest house manager and his interactions with visitors. This book addresses a variety of subjects like the human heart, love, the Narmada River, desire, and lust. Mehta's book is a representation of Indian culture, religion, art, music, and spirituality. This book gained immense popularity among readers when compared to her other works. This book is about the tale of numerous personalities, including monk, teacher, executive, courtesans, musicians, and minstrels and their beliefs. All these characters come to the bank of the Narmada River in search of renunciation and enlightenment. All the characters are connected by a sutra or a thread, highlighting Hindu mythology and classical Sanskrit play. The book portrays Indian culture clearly and handles modern India's concerns.

"A River Sutra" is a novel that explores various spiritual philosophies and themes inherent to Indian culture. Key concepts include Hindu philosophy, bhakti and devotion, Advaita Vedanta, asceticism and renunciation, myth and symbolism, the journey of self-discovery, the cyclical nature of life, samsara and nirvana, and mysticism and inner experience. Hindu philosophy, such as karma, dharma, and moksha, are intertwined with the characters' stories and quests for understanding and fulfillment. Bhakti, or devotion to a higher power, is explored through characters who seek solace and meaning through their deep devotion. The river serves as a metaphor for this interconnected oneness, highlighting the unity of all life.

Ascetics and renunciates, who choose to detach themselves from worldly desires and possessions, experience spiritual growth. Ancient Indian myths and legends are interwoven into the characters' narratives, serving as vessels for conveying spiritual truths. The journey of self-discovery mirrors the spiritual journey of self-discovery, as characters confront challenges, face desires, and question their beliefs, leading them closer to understanding their true selves. The cyclical nature of life, echoed in the constant flow of the Narmada River, resonates with the idea of reincarnation and the eternal cycle of birth, death, and rebirth. The contrast between samsara (the cycle of worldly existence) and nirvana (liberation from suffering) is present in the characters' quests to escape the mundane and find transcendence.

Mysticism and inner experience depict moments of heightened awareness and connection with the divine, reflecting the depth of spirituality and the potential for profound transformation. Through its exploration of these spiritual philosophies and themes, "A River Sutra" invites readers to contemplate the complexities of human existence, the pursuit of meaning, and the interconnectedness of all life.

The Narmada River in "A River Sutra" is a central motif and metaphor that connects the novel's themes and characters. It symbolizes the continuity of life and the cycle of birth, death, and rebirth, reflecting the spiritual concept of samsara. The river's twists and turns mirror the unpredictability of human experiences, and its serene environment provides a space for contemplation and connection with the divine. The river's unity with its surroundings mirrors the characters' quests for unity and transcendence. The river's mythological associations, steeped in Hindu mythology and legends, enrich the exploration of spiritual themes. It is considered a sacred river in India, attracting pilgrims and seekers seeking spiritual purification and enlightenment. The characters' journeys to the river mirror the concept of pilgrimages in various spiritual traditions.

Water, especially in the form of a holy river, is often associated with cleansing and renewal, reflecting the idea of shedding impurities and starting a new spiritual path. The river serves as a gateway to wisdom, providing insight that transcends individual lifetimes. Generally, the Narmada River in "A River Sutra" encapsulates the novel's exploration of spirituality, interconnectedness, and the journey of self-discovery.

The Narmada is cited in Puranic scriptures as being among India's holy rivers. The novel references or modifies the following Puranas verses:

“Bathing in the waters of the Jamuna purifies a man in seven days, in the waters of the Saraswati in three, in the waters of the Ganges in one, but the Narmada purifies with a single sight of her waters. Salutations to thee, O Narmada”. (River Sutra 163)(1)

The novels' first story begins with a captivating narrative about a Jain monk seeking spiritual liberation through ascetic practices, meditation, and extreme austerity. The monk's journey is marked by inner struggles and doubts, as he grapples with his ego's limitations and distractions during meditation. His intense self-discipline clashes with his human desires and vulnerabilities, leading to moments of doubt and frustration. As the monk becomes increasingly isolated, his well-being and mental state are revealed, revealing the complexity of his spiritual journey. The monk's interactions with the river serve as a source of reflection, reflecting his own mind and the impermanence of life. The story merges with other characters' stories, showcasing the interconnectedness of their journeys. The monk's experiences of self-doubt and the need for balance between rigorous practice and human vulnerability contribute to the exploration of spiritual growth and the complexity of the human condition. The monk's story serves as a reminder that the spiritual path is not a linear journey but a multifaceted exploration of the self.

The second tale The Teachers' story is about Master Mohan. The friendship that develops between Tariq Mia, a Muslim scholar, and the Hindu narrator in this tale symbolizes religious tolerance. The narrator is referred to as "little brother" by Tariq Mia with affection. His knowledge of and singing of Narmada-

related songs, in addition to Sufi love ballads praising Allah, demonstrates his conviction in the river's purity and his respect for Hinduism. The narrator hears Dr. Mitra explain to them the importance of customs, beliefs, rituals, and faith. Amarkantak Temple on the bank of the Narmada is where religious suicides are committed by those seeking liberation. “from the cycles of birth and rebirth” (River Sutra 152).(2)

Even foreigners get familiar with the intellectual and spiritual importance of the holy and eternal river Narmada and the Hindu religion's tenets. All religious discourses are equal, and it's possible that all religions share a common goal: the purity of the human soul. The river Narmada symbolizes a variety of religions and emphasizes the universal fact that all people of all faiths and sects are equal.

In the third tale, "The Executive's Story," a young executive named Nitin Bose is described as working for a tea company in Calcutta. His subconscious is deeply ingrained with tales of serpent women as sorceresses and enchantresses. Surprisingly, he unexpectedly falls deeply in love with the wife of a coolie while believing she is a snake woman. The snake woman calms Nitin Bose's racing thoughts with her passionate love. He needs help because he has a mental disease and wants to find a cure. According to Hindu myth, the Narmada River can neutralize a negative impact. The river has such a therapeutic effect. He approached the river bank and bowed.

The fourth narrative, "The Courtesan's Story," is an account of the courtesan's mother and herself. The courtesan describes how she struggled to shield her daughter from the rising terrible circumstances surrounding her. The tribal myth is also described in the tale. The Narmada River and the deep, gloomy forest serve as a bridge between the tribal and bandit worlds in myth. The myth holds that the warrior had a passionate love affair with a Narmada Valley woman. He somehow puts up with her animosity and takes her jabs. She finally understands that he is telling the truth when he approaches her one night. She also develops feelings for him. She then marries Rahul Singh in the Supaneshwara temple. She happily residing with him for some days. The courtesans' daughter commits suicide in the Narmada when her husband died during a police attack, and even her mother is unperturbed when her daughter flees from her because the Narmada compassionately welcomes all kinds of creatures in her holy water:

“Turtles and river dolphins find refuge in your water Alighting herons play upon your tranquil surface. Fish and crocodiles are gathered in your embrace. O holy Narmada”. (River Sutra 279)(3)

Therefore, it makes perfect sense that the river Narmada would be sought for as the final "home" when all other options had failed. In order to avoid the dreadful humiliation of being recaptured, by the police, the girl reaches out toward the water. She finds it terrifying to imagine the life of the woman who is both a courtesan and a bandit's wife and is imprisoned on suspicion of aiding her husband's criminal activities. She then looks to the Narmada as her sole means of escape. Her mother also seems to be “happy her daughter had died in the Narmada because she would be purified of all her sins” (River Sutra 190) (4). The girl falls into the all-encompassing Narmada with no wish to survive and commits suicide.

In the fifth tale, "The Musician's Story," the daughter of the musician tells the main narrator about the initial stages of music. In the narrative of the musician, the author gives a thorough explanation of music. The narrative establishes that music is a universal art form and tells Shiva's musical legends. Her father, a music instructor, strikes a deal with a young student. The girl keeps a condition to her father that she would study music if the other young man had to marry her. The young musician later rejects her due to her looks, failing to see the lovely heart and tremendously talented musician inside of her. She can't accept criticism; hence, she doesn't like music. She started to find the song's to be "hateful. Her father brings her to the Narmada River's banks, but he is unable to console her by explaining that beauty is a fleeting experience and that it is arbitrary. To become Ragini to each raga, and hence the bride of music rather than a musician, she must fully devote herself to the music. She changes her irrational affection into love for the divine music in "The Musician's Story."

The sixth or the last tale "The Minstrel's Story" is about a Naga Baba's spiritual affection for a brothel girl. The spiritual love of a Naga Baba for a brothel girl is the subject of "The Minstrel's Story." She starts out as merely an abused, exploited child without even a name. The young person gains legendary status because he was not known to anyone. Her father just referred to her as "misfortune." Moreover, the stigma is placed on the child, not because her mother's death at birth occurred to be an unfortunate coincidence. “The

customers choose the name “Chand”, they said my skin is as “soft” as moonlight” (River Sutra 250) (5)

In order to get her over the Narmada, the Monk first takes her into the jungle far from her home. She starts a new life there and picks up a lot of new lessons along the way. She also gets the name "Uma." She had only received menial treatment from the corrupted society. She now has a new existence and discovers how to live in harmony with the environment and the animals. She is also educated that the Narmada is both her mother and home. Naga Baba eventually departs from the girl and continues his quest for enlightenment, leaving her to her own abilities. He eventually achieves the higher level of enlightenment for which he has been working, and as a result, he is able to appreciate the worth of human life. After a three-year hiatus, the Naga Baba reappears as Prof. Shankar. He returns with nothing magical or spiritual, just a simple proclamation: “I love this river” (River Sutra 263) (6).

He respects it because of its ability to endure and the experiences that different human lives along its banks have had over a hundred thousand years. Uma has absorbed many of the characteristics of this river, including at times having an ageless appearance. Shankar returned to the woman after coming to the realization: – “I am only a man” (River Sutra 281) (7).

Conclusion

Through this book Gita Mehta delves into various spiritual philosophies through its characters and their stories. The novel explores Hinduism, Buddhism, and other spiritual traditions, focusing on the concepts of karma, detachment, Sufi mysticism, seeking enlightenment, nature, transcendence, storytelling, universal connection, self-discovery, and reflection. Hinduism and Karma is prominent, with characters grappling with the law of cause and effect. Buddhist principles of detachment and non-attachment are explored through characters who have renounced worldly life to seek enlightenment. Sufi Mysticism and Devotion are depicted through the character of the dervish, who seeks a direct and personal connection with the divine. Seeking enlightenment is a central theme, with many characters on a quest to transcend the mundane world and attain a higher level of understanding.

"A River Sutra" illustrates the variety of spiritual approaches and ideologies in India through these interrelate stories. The Narmada River serves as the main symbol for everyone's resolution in this novel. Its importance is seen in religious traditions, where it is used as a place for purification, suicide, rebirth, and intense piety. People hold the river in high regard because they view her as a goddess

The river symbolizes a spiritual journey, connecting various landscapes and illustrating the impermanence of life. Storytelling is a central aspect of the novel, allowing characters to share their personal stories and reflections on life's deeper meanings. The novel also highlights the interconnectedness of all beings and the idea that spirituality transcends religious and cultural boundaries. Self- discovery and reflection are key steps in many spiritual paths. Through these philosophies, the novel offers readers a glimpse into different ways of seeking meaning, understanding reality, and finding purpose in life.

REFERENCES

1. A River Sutra. New Delhi: Penguin Books, 1993 (P-163).
2. A River Sutra. New Delhi: Penguin Books, 1993 (P-152).
3. A River Sutra. New Delhi: Penguin Books, 1993 (P- 279).
4. A River Sutra. New Delhi: Penguin Books, 1993 (P-190).
5. A River Sutra. New Delhi: Penguin Books, 1993 (P-250).
6. A River Sutra. New Delhi: Penguin Books, 1993 (P-263)
7. A River Sutra. New Delhi: Penguin Books, 1993 (P-281).
8. http://www. languageinindia. com/dec2017/ manimekalairajgitamehta. pdf

Prof (Dr.)Punita jha

Archana

Mobile No - 9545372569

B-305, Gini Sanskruti Hsg Society,

Near Shriram Chowk Handewadi Road,

Hadapsar, Pune

Maharashtra, Pin- 411028.

54

An Inventory Model For Degrading Goods That Takes Inflation Into Account And Has Demand And Shortages That Are Time- And Price-dependent

Jyoti, Dr. Dhrub Kumar Singh

Abstract: One of the main issues with any inventory system is the fluctuation of demand with time and price. Numerous research document instances when demand fluctuates separately with time and price. A few scholars have thought about how demand, price, and time all interact to affect the best possible solutions. As a result, an appropriate inventory policy is always sought after. In this study, an inventory model with time-dependent demand, constant holding costs, and time-dependent deterioration is presented. This model makes the assumption that shortages are somewhat backlogged. It was created with the goal of minimising total inventory costs while accounting for inflation. An algorithm is suggested for solving the model, and it is shown using the numerical values of the system parameters. Also shown visually are the ideal outcomes. The system parameters are then subjected to sensitivity analysis for various parametric values.

Keywords: time and price dependent demand; deterioration; partial backlogging; maximum life time of item; inflation.

Reference to this paper should be made as follows: Saha, S. and Sen, N. (2019) 'An inventory model for deteriorating items with time and price dependent demand and shortages under the effect of inflation', *Int. J. Mathematics in Operational Research*, Vol. 14, No. 3, pp.377–388.

1 Introduction

Inventory modelling is the skill of designing an ideal policy while taking into account many realistic aspects. Since its introduction, academics have worked to include new variables that have a bearing on how decisions are made. varying models for deteriorating goods have been created over the past few decades by considering varying rates of demand, both with and without allowance for shortages. Several inventory models have been created that take inflation into account in addition to variable rates of demands and other factors. Because of the variety of assumptions used and the study's usefulness in business and industry, inventory modelling has become increasingly popular. Some of the notable contribution were made by Tayal et al. (2015), Alfares and Ghaithan (2016), Mishra (2016) and Sarkar and Majumder (2013) in order to derive inventory policies. Mohan and Venkateswarlu (2014) and Pal et al. (2014) derived an EPQ model for ramp-type demand under inflation. Sen et al. (2017) have considered price sensitive demand under permissible delay in payment. Saha and Sen (2017) have also made an effort to study the effect on optimality when deterioration is taken as probability function.

The review of the literature that has been provided in the following part sheds light on the various inventory management policies that authors have put forth.

2 Survey of literature

Harris began researching inventory-related issues in 1915. Wilson (1934) developed the well-known economic order quantity (EOQ) formula on his own. These models assumed constant demand, although this assumption of a constant demand rate seems irrational. Numerous researchers have taken into account the rate of demand as a variable taking into account the market condition since the development of the EOQ model. Time-varying demand has grown to be one of the numerous variable demand patterns that scholars are most concerned with. In his inventory model, Donaldson (1977) took time-dependent demand into account. Quadratic rate of demand was initially brought to inventory modelling by Khanra and Chaudhuri in 2003. Ghosh and Chaudhuri (2006) developed an expansion of their concept. The integrated vendor-buyer inventory system with a quadratic function of time as the demand rate was researched by Gor et al. (2009). Additionally, Singh and Pattnayak (2013) created an inventory model based on the work of Khanra et al. (2011) that assumed time-varying demand to be a quadratic function of time. A partial backlog inventory model with a quadratic function of time as the rate of demand was created by Begum et al. in 2012. In their analysis, Mohan and Venkateswarlu (2014) took into account Weibull distributed deterioration and a quadratic function of time as the rate of demand. Later, Yadav and Vats (2014) created a system for inventory modelling that uses a time-varying quadratic demand function. In their development model with shortages, Lakshmidevi and Maragatham (2015) added time-dependent deterioration and a quadratic demand rate. Tyagi and Chouhan (2015) discussed an inventory model with time-dependent demand and partial backlogs for items that were beginning to degrade throughout the same year. Gite (2013) provided an inventory model that excluded shortages while having quadratic demand and variable degradation. Venkateswarlu and Mohan (2014) identified the best inventory management strategy when salvage value was present and the demand pattern was assumed to be quadratic. Using inventory models with a quadratic demand function and partial backlog under a partial delay, Sharmila and Uthayakumar's (2015) inquiry Payment made an effort to determine the ideal cycle length to reduce overall cost. For non-instantaneous

deteriorating items over quadratic demand rates with allowable payment delays and variable deterioration, Sharma (2016) suggested an inventory model. In their 2015 study, Sharmila and Uthaya kumar looked into the best solution for an inventory model with deteriorating Weibull distribution and quadratic demand rate.. Shah et al. (2015) developed an inventory model with price sensitive quadratic demand for simultaneous determination of price and inventory replenishment. Manna and Chaudhuri (2014) also used quadratic demand and partial backlogging in their development model. Mishra et al. (2012) proposed inventory model for perishable items with quadratic demand and time dependent deterioration under the effect of inflation and the time value of money. Mishra (2013) also considered quadratic time varying demand in his study on inventory modelling. Inventory model proposed by Khanra et al. (2013) investigates EOQ over a finite time horizon for an item with quadratic time dependent demand considering shortages under permissible delay in payments. Recently, Durai and Chakraborty (2016) proposed an inventory model for deteriorating items with increasing demand with shortages. Giri et al. (2017) developed inventory model for deteriorating items where deterioration rate increases with time and it also depends on date of expiration. In order to assess their newly created model, Rao and Rao (2016) made the assumption that replenishment is random and follows the Weibull distribution. For degrading products, Dutta and Kumar (2015) proposed a partial backlog inventory model with time-varying demand and holding costs while maintaining a constant degradation rate. Tsoularis (2014) took logistic stock-dependent demand rate into consideration.

Researchers have already looked into the effects of inventory inflation and reported their findings. Significant contributions have been made in this regard by Buzacott (1975), Datta and Pal (1991), Jaggi et al. (2006), Bhunia et al. (2015), and Bhunia and Shaikh (2016). The EMQ model was created by Sarkar et al. (2011) for time-varying demand with inflation and time value of money. An inventory model with fuzzy deterioration and the fully backlogged shortage under inflation was developed and solved by Shabani et al. (2014). An inventory model with negative exponential demand, inflation, and allowable payment delays was also presented by Tripathi and Kumar (2014). The inventory model for degrading with multi-variate demand and customer return in the context of inflation was also developed by Singh et al. (2016). Nobody has created an inventory model with a price and time dependent demand with inflation as far as the authors are aware.

In an effort to create an inventory model with price-sensitive demand and partial backlogs for degrading items under the influence of inflation, work by Shah et al. (2012) has served as inspiration.

3 Assumptions and notations

The proposed model is developed basing on the following assumptions and notations.

3.1 Assumptions

1 Demand rate is a function of time and selling price.

2 The time horizon is infinite.

380 S. Saha and N. Sen

3 The deterioration is time dependent.

4 Shortages are allowed and partially backlogged.

5 Holding cost is constant.

6 Lead time is zero.

7 Inflation is time dependent.

8 During the shortage period, the backlogging rate is variable and depends on waiting time.

3.2 Notations

1 A - ordering cost per order.

2 Cp - purchase cost per unit.

3 ?(t) = 1 , 0 ? t ? T ? m, rate of deterioration.

1+ m ? t

4 m - maximum life time of item.

5 h - unit holding cost per unit time.

6 T - cycle length.

7 Sh - back order cost per unit per unit time.

8 S - cost of lost sale per unit.

9 P - selling price where P > C.

10 RB (t) = 1 , back logging rate where ? is back logging parameter and

1 + ?(T ? t) t ? t1 ? t2.

11 D(t, P) = a(1 + bt + ct2) P-?, a > 0 scaling parameter and b, c are rate of change of demand, ? > 1.

12 t1 - time at which inventory level reaches to zero.

13 t2 - time length during which shortages are allowed.

14 I1 - maximum inventory level during [0, T].

15 I2 - maximum inventory level during shortage period.

16 Q0 = (I1 + I2) - order quantity during the cycle length T.

17 IP(t) - positive inventory at any time t.

18 IN(t) - negative inventory at any time t.

19 r(t) = e-rt, inflation rate.

4 Mathematical model formulation and solution

We develop a mathematical model to optimise overall inventory cost while taking inflation into account in this section of the research.

The governing differential equations during the stock period $[0, t_1]$ and shortage period $[t_1, T]$ are:

$$\frac{dI_p(t)}{dt} + ?(t) I_p(t) = -a(1+bt+ct^2) P^{-?}, \quad 0 = t = t_1 \quad (1)$$

$$\frac{dI_N(t)}{dt} = -\frac{1}{1+?(T-t)} a(1+bt+ct^2) P^{-?}, \quad t_1 = t = T. \quad (2)$$

With boundary conditions:

$I_p(t) = I_N(t) = 0$ at $t = t_1$ & $I_p(t) = I_1$ at $t = 0$. (3)

Solution (1) applying boundary condition gives:

$$I_p(t) = \frac{I_1(1+m-t)}{1+m} + \frac{a(1+m-t)}{p^?}\left[\frac{ct^2}{2} + (b+c+cm)t + (1+b+c+2cm+mb+cm^2)\log\left(\frac{1+m-t}{1+m}\right)\right]. \quad (4)$$

Solution of equation (2) with boundary condition is:

$$I_N(t) = \frac{a}{P^?}\left[\frac{c}{2?}(t^2-t_1^2) + \frac{b}{2?}(t-t_1) + \frac{Tc}{?}(t-t_1)\right. \quad (5)$$
$$\left. + \left(\frac{1}{?} + \frac{b}{?^2} + \frac{c}{?^3} + \frac{2cT}{?^2} + \frac{Tb}{?} + \frac{T^2c}{?}\right)\log\left(\frac{1+?T-?t}{1+?T-?t_1}\right)\right].$$

Inventory is in stock during the period $[0, t_1]$. So, inventory holding cost for this period is:

$$HC = \frac{hI_1}{r(1+m)} - \frac{RI_1}{(1+m)^2}\left[1+e^{-rt_1}\{r+rm-1-rt_1\}\right]$$
$$-\frac{hace^{-rt_1}}{P^? r^4}\left[2r(1+m) - 6 + 2r^2t_1(1+m) - 6rt_1 + t_1^2r^3(1+m) - 3t_1^2r^2 - t_1^3r^3\right]$$
$$+\frac{hac}{P^?}\frac{2r(1+m)-6}{r^4} - \frac{(b+c+cm)ha}{P^?}\left[\frac{\{r(1+m)-rt_1-1\}e^{-rt_1}}{r^2} + \frac{1-r(1+m)}{r^2}\right] \quad (6)$$
$$+\frac{(1+b+c+2cm+mb+cm^2)ah}{P^? r^2}\left[(e^{rt_1}-1) + e^{-rt_1 m}\log\left(\frac{1+m}{1+m-t_1}\right) + rt_1\right.$$
$$\left. + \frac{r}{2}(2+2m-t_1)t_1 + \frac{r^3}{424}\{(1+m)^3 - (1+m-t_1)^3\}\right].$$

As there is deterioration of item takes place during the stock period. So, deterioration cost is:

$$DC = C_P\int_0^{t_1}\frac{1}{1+m-t} I_p(t) e^{-rt}\, dt$$
$$= C_P\left[-\frac{I_1}{1+m}(e^{-rt_1}-1)\right] + \frac{C_p a}{P^?}\left[\frac{c}{2}\left\{\frac{2}{r^3} - \frac{(2+2rt_1+t_1^2r^2)}{r^3}e^{-rt_1}\right\}\right. \quad (7)$$
$$+(b+c+cm)\left(\frac{1}{r^2} - \frac{(1+rt_1)e^{-rt_1}}{r^2}\right) + (1+b+c+2cm+mb+cm^2)\left\{ -1 + \left(\frac{m^2}{2} + m + \frac{1}{2} - \frac{t^2}{2}\right) r\right\}\ln\left(\frac{1+m-t_1}{1+m}\right) + \left(\frac{1}{2}mt + \frac{1}{2}tt + \frac{1}{4}t^2\right) r - t\left.\right].$$

Due to shortage and it is partially back logged, then back ordered cost during stock out period is:

$$BC = -S_k\int_{t_1}^{T} I_N(t) e^{-rt}$$
$$= -\frac{S_k a}{P^?}\left[\frac{c(1+rt_1)e^{-rt_1}}{?r^3} + \frac{4c(1+rt)+2r^2(T^2-t_1^2)c}{?r^3}\right] + \left[-\frac{S_k a}{P^?}\left(\frac{1}{?} + \frac{b}{?^2} + \frac{c}{?^3}\right.\right. \quad (8)$$
$$\left. + \frac{2cT}{?^2} + \frac{Tb}{?} + \frac{T^2c}{?}\right)\left(\frac{1}{?} + \frac{(1+2?T)r}{2?^2}\right)\log\left(\frac{1}{1+?T-?t_1}\right) - (T-t_1)$$
$$\left. + \frac{r}{4}\{3T^2\delta - 2\delta Tt_1 + 2(T-t_1) - \delta t_1^2\}\right].$$

Due to certain customers' refusal to wait for the arrival of the next lot during the stock out period, there is a loss in profit. Hence, lost sale cost is computed as:

$$LSC = S\int_{t_1}^{T}\left(1 - \frac{1}{1+?(T-t)}\right) a(1+bt+ct^2) P^{-?} e^{-rt} dt$$
$$= \frac{aP^{-?}?}{(1+?T)}\left[\frac{rc}{5}(T^5-t_1^5) - \frac{(c-rb)}{4}(T^4-t_1^4) - \frac{(b-r)}{3}(T^3-t_1^3) - \frac{1}{2}(T^2-t_1^2)\right]. \quad (9)$$

The maximum back ordered inventory is:

$$I_2 = \int_{t_1}^{T}\frac{a(1+bt+ct^2)P^{-?}}{1+?(T-t)} dt = \left(\frac{aP^{-?}}{?} + \frac{aP^{-?}cT^2}{?} + \frac{aP^{-?}b}{?^2}\right.$$
$$\left. + \frac{aP^{-?}bT}{?} + \frac{2aP^{-?}cT}{?^2} + \frac{aP^{-?}c}{?^3}\right)\ln(1+?T-?t_1) + \frac{aP^{-?}t_1cT}{?} \quad (10)$$
$$+ aP^{-\eta}t_1 b + \frac{1}{2}aP^{-\eta}t_1^2 c + aP^{-\eta}t_1 c + \frac{3}{2}aP^{-\eta}cT^2 - aP^{-\eta}bT - aP^{-\eta}cT\ \delta d$$

Thus the order size during the period $[0, T]$

$Q_0 = I_1 + I_2$. (11)

Purchase cost

$PC = C_p ? Q_0$. (12)

Ordering cost

$$OC = \int_0^T Ae^{?rt} dt. \quad (13)$$

Total average inventory cost is:

TAC = (OC+BC+HC+LSC+PC+DC) T. (14)

5 Solution procedure

It is challenging to solve the objective function analytically in order to obtain the decision variables because of its complexity. The model is therefore solved by creating an algorithm. Below is the established algorithm.

5.1 Algorithm

Set the parameters: A, Cp, S, Sk, a, b, c, h, m, ?, ?.

Set a particular value: (T, P).

Construct the average total cost: TAC.

Evaluate: TAC, for different values of t1.

Evaluate: The optimum value of TAC*, and the corresponding optimum value of t1? .

6 Numerical illustration and graphical representation

Let us take the parametric values of the inventory model for deteriorating items as T = 12 months, m = 14 months, a =

1,000, b = 0.2, c = 0.11, A = $200, I1 = 1,000, CP = $10, S = $7, Sk = $3, h = $2, ? = 0.9,? = 3, r = $0.03, P = 1.2 CP. Then optimal cost and time of occurrence of shortages are $1,612 and 6 months respectively. The following graph shows the convexity of the cost function.

Figure 1 Graphical representation of cost function (see online version for colours)

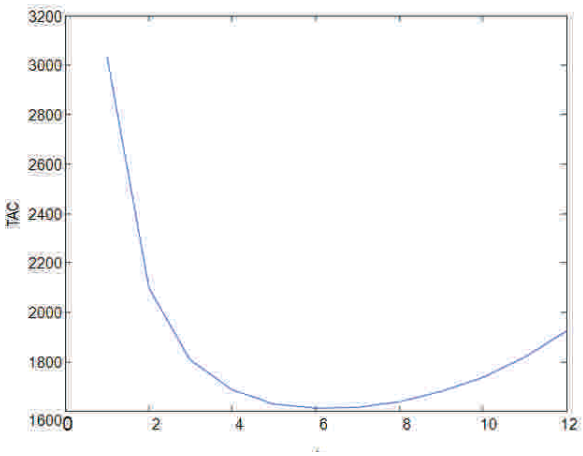

7 Sensitivity analysis

Variations in different parameters are given in the following tables.

Table 1 Sensitivity analysis of η

Changes (in %)		t_1^*	*TAC*
+50%	1.35	..	894
+25%	...	..	1,187
0%	0.9	.	1,612
–25%	0.675	3.5	2,177
–50%	0.4500	1	1,923

Table 2 Sensitivity analysis of δ

Changes (in %)		t_1^*	TAC^*
+50%	4.5	8	1,866
+25%	3.75	8	1,776
0%	3	6	1,612 *
–25%	2.25	1	901
–50%	1.3	----	----

Table 3 Sensitivity analysis of *r*

Changes (in %)	*r*	t_1^*	TAC^*
+50%	...	.	1,205
+25%	0.0375	9	1,374
0%	0.03	6	1,612
–25%	0.0225	.	1,211
–50%	0.015	----	-----

Table 4 Sensitivity analysis of *h*

Changes (in %)	.	t_1^*	TAC^*
+50%	3	1	893.4
+25%	..	4	1,602
0%	2	6	1,612
–25%	1.5	8	1,525
–50%	1	10	1,381

Table 5 Sensitivity analysis of *m*

Changes (in %)	.	t_1^*	TAC^*
+50%	15	6	1,642
+25%	14.5	6	1,626
0%	14	6	1,612
–25%	13.5	6	1,598
–50%	13	6	1,585

Based on the results obtained in Tables 1–5, we discuss the features of sensitivity analysis of different parameters as given below:

• A growing value of mark up, rate of inflation and holding cost, decreases average inventory cost. It is a sign of minimisation of inventory cost which is in favour of retailer.

• Decreasing value of backlogging parameter helps in minimisation of inventory cost.

•It is also observed that time of occurrence of shortages decreases with increase in inventory cost due to decreasing value of mark up.

•It is clear from Table 3 that time of occurrence of shortages increases with minimum inventory cost for increased value of rate of inflation.

•It is interesting to note that there is no effect in time of occurrence of shortages for increased/decreased value of maximum life of the deteriorating item. However, for increased value of maximum life time, there is increase in inventory cost and vice-versa.

8 Conclusions

The rate of demand has a direct impact on both time and price. Demand in this model is a function of time and selling price because the demand rate is proportional to them. Deterioration is treated as time proportional rather than constant when the practical element (maximum life time) is taken into account. As a result, the model is created and solved for the best minimal inventory cost and when shortages will develop. An algorithm is suggested and coded in the window environment of MATLAB as part of the solution to this problem. The industrial sector may find use for this model in determining the best inventory strategy to reduce inventory costs. Such a model hasn't yet been reported in the literature, as far as the author is aware. This model could be expanded by including time-varying holding costs and various sorts of inflation rates. In the event of total backlogging, the model may also be reviewed.

References

Alfares, H.K. and Ghaithan, A.M. (2016) 'Inventory and pricing model with price -dependent demand, time-varying holding cost, and quantity discounts', *Computers & Industrial Engineering*, Vol. 94, pp.170–177.

Begum, R., Sahu, S.K. and Sahoo, R.R. (2012) 'An inventory model for deteriorating items with quadratic demand and partial backlogging', *British Journal of Applied Science & Technology*, Vol. 2, No. 2, pp.112–131.

Bhunia, A.K. and Shaikh, A.A. (2016) 'Investigation of two-warehouse inventory problems in interval environment under inflation via particle swarm optimization', *Mathematical and Computer Modelling of Dynamical Systems*, Vol. 22, No. 2, pp.160–179.

Bhunia, A.K., Shaikh, A.A. and Gupta, R.K. (2015) 'A study on two-warehouse partially backlogged deteriorating inventory models under inflation via particle swarm optimization', *International Journal of Systems Science*, Vol. 46, No. 6,

pp.1036–1050.

Buzacott, J.A. (1975) 'Economic order quantities with inflation', *Journal of the Operational Research Society*, Vol. 26, No. 3, pp.553–558.

Datta, T.K. and Pal, A.K. (1991) 'Effects of inflation and time-value of money on an inventory model with linear time-dependent demand rate and shortages', *European Journal of Operational Research*, Vol. 52, No. 3, pp.326–333.

Donaldson, W.A. (1977) 'Inventory replenishment policy for a linear trend in demand – an analytical solution', *Journal of the Operational Research Society*, Vol. 28, No. 3, pp.663–670.

Durai, N.K. and Chakraborty, T. (2016) 'An EPQ (economic production lot size) model for product life cycle (maturity stage) of deteriorating items with increasing demand rate and shortages', *International Journal of Mathematics in Operations Research*, Vol. 8, No. 3, pp.372–392.

Dutta, D. and Kumar, P. (2015) 'A partial backlogging inventory model for deteriorating items with time-varying demand and holding Cost', *International Journal of Mathematics in Operations Research*, Vol. 4, No. 3, pp.281–296.

Ghosh, S.K. and Chaudhuri, K.S. (2006) 'An EOQ model with a quadratic demand, time-proportional deterioration and shortages in all cycles', *International Journal of Systems Science*, Vol. 37, No. 10, pp.663–672.

Giri, B.C., Pal, H. and Maiti, T. (2017) 'A vendor-buyer supply chain model for time dependent deteriorating items with preservation technology investment', *International Journal of Mathematics in Operations Research*, Vol. 10, No. 4, pp.431–449.

Gite, S.P. (2013) 'An EOQ model for deteriorating items with quadratic time dependent demand rate under permissible delay in payment', *International Journal of Statistika and Mathematika*, Vol. 6, No. 2, pp.51–55.

Jyoti

Research Scholar, Department of Mathematics, School of Science, YBN University, Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Jharkhand Pin-834010., India. *Corresponding author.

Dr.Dhrub Kumar Singh

Assistant Professor & HOD,Department of Mathematics, School of Science, YBN University, Rajaulatu, Namkum,

55

Exploring Patriarchy in Vikram Seth's a Suitable Boy: A Sociological Analysis

Poonam

Abstract

The aim of this paper is to explore the theme of patriarchy as portrayed in Vikram Seth's novel, A Suitable Boy. The novel has been analyzed to examine the concept of patriarchy, which existed long before the current resurgence of women's movements and women's studies courses. Over the past twenty years, the idea has been reexamined to understand the origins and conditions of men's oppression of women. Vikram Seth provides a detailed portrayal of the post-independence condition of women in A Suitable Boy. His female characters are depicted within the context of the family unit, and the novel presents a male-dominated society where family heads such as Mahesh Kapoor and the Nawab Sahib of Baitar idealize a household structure where individuals adhere to the roles assigned to them. The novel also depicts the oppression faced by Muslim women and lower-ranked women, such as Kachheru's wife, due to patriarchal societal constraints. Exploring Patriarchy in Vikram Seth's A Suitable Boy: A Critical Analysis is a suitable title for a paper that aims to examine the theme of patriarchy as portrayed in Vikram Seth's novel, A Suitable Boy. The title accurately conveys the focus and purpose of the paper to analyze how patriarchy is represented in the novel and explore the various aspects of patriarchy depicted in the story. The title highlights the critical approach taken in the analysis, suggesting that the paper aims to delve deep into the concept of patriarchy in the novel and provide a nuanced understanding of the theme. Additionally, the title mentions the author's name, which is significant given Vikram Seth's reputation as a prolific post-independence novelist. Overall, the title provides an appropriate and informative description of the paper's content and focus, helping readers to understand the scope and purpose of the analysis.

Keywords: **M**ale-dominated, Patriarchal societal constraints, Women's studies.

Introduction

Patriarchy is a complex system that operates at various levels of society, including individual, interpersonal, institutional, and cultural levels. Patriarchy is perpetuated through interpersonal relationships and interactions. Men are often socialized to be dominant, assertive, and aggressive, while women are socialized to be submissive, passive, and accommodating. These gender roles create power imbalances in relationships, where men have more authority and control than women. Patriarchy is a pervasive system that operates in various ways and at different levels of society. It reinforces gender inequalities and creates power imbalances between men and women. Challenging and dismantling patriarchy requires addressing it at all levels of society and promoting gender equality and empowerment for all.

Vikram Seth is a globally renowned and prolific post-independence novelist who was born on June 20, 1952 in Kolkata, West Bengal. His parents were Premnath Seth and Leila Seth, who was a trained barrister. Among his works are From Heaven's Lake, a travel book about China, two collections of poetry - The Humble Administrator's Garden and All You Who Sleep Tonight - and two fables. In 1986, Seth wrote The Golden Gate, a novel consisting of 596 sonnets. His magnum opus, A Suitable Boy, was published in 1994 and he amazed the literary world with his novel An Equal Music in 1999. Vikram Seth holds a unique place in literary history, being the first Indian English novelist to write a verse novel entitled The Golden Gate. He won the Sahitya Akademi Award in 1988 for this work. Additionally, he became the first Indian English novelist to receive an advance of two crore rupees for his epoch-making novel, A Suitable Boy.

Vikram Seth's A Suitable Boy portrays the core essence of patriarchy. The novel delves into the societal structure where men hold power and dominance over women. It highlights the male-centric approach of decision-making, with women playing a submissive role. The story depicts the expectations placed on women to conform to traditional gender roles, such as being a dutiful wife and mother, and to prioritize the needs of their husbands over their own. The novel showcases how patriarchal norms restrict women's freedom and limit their opportunities for personal growth and development. It provides a critical insight into the functioning of a patriarchal system, shedding light on the unequal power dynamics between men and women.

In his novel, "A Suitable Boy," Vikram Seth portrays the condition of women in post-independence India. The female characters in the novel are associated with their respective families, and the male heads of these families, such as Mr. Mahesh Kapoor and the Nawab of Baitar, idealize a

domestic space where individuals live within the specific roles assigned to them. Thus, the novel portrays a patriarchal society. The concept of patriarchy has existed for a long time and was not created during the recent resurgence of the women's movement or women's studies courses. Originally, the term referred to the power of the father as the head of the household. However, in post-1960s feminism, the term has been redefined to describe the systematic organization of male supremacy and female subordination. Patriarchy is now defined as a system of male authority that oppresses women through social, political, and economic institutions.

Feminists argue that patriarchy operates concurrently with a system of economic discrimination, regardless of the historical form it takes, whether it is feudal, capitalist, or socialist. The establishment and practice of male dominance over women and children is a historical process that is created by both men and women, with the patriarchal family serving as the basic unit of organization. In this system, the patriarch is considered the head of the household, and he controls productive resources, labor force, and reproductive capacities based on notions of superiority and inferiority, legitimized by differences in gender and generation.

The novel "A Suitable Boy" by Vikram Seth depicts the patriarchy prevalent in Indian society. In the third part of the novel, there is a conversation between Mrs. Rupa Mehra and Mrs. Mahesh Kapoor, where they discuss the concept of patriarchy. The excerpt is provided below.

“Can't we do something about Ramnavami? Won't minister sahib change his mind? Asked old Mrs.Tandon,'uff! What can I say, he's so stubborn', said Mrs. Mahesh Kapoor. 'And nowadays he is under so much pressure that he gets impatient at every little thing I say. I get pains these days, but I hardly worry about him so much.'

She smiled 'I'll tell you frankly'; she continued in her quiet voice, 'I'm afraid to say anything to him.'“Should I speak to minister Shahib (husband of Mrs.Mahesh Kapoor) asked Mrs.Rupha Mehra.”

'No,No,No ' – Said Mrs.Mahesh Kapoor, worried at the thought of these two powerful wills colliding. 'He will only say this and that. Once when I touched upon the subject he even said “if you must have it, go to your great friend the home minister – he will certainly support this kind of mischief.” I was too frightened to say anything after that… (The SB-202-203)

The preceding dialogue described how Mrs. Mahesh Kapoor's status in society is unsatisfactory. Mahesh Kapoor desired his spouse to remain in the private sphere and denied her any space in the public domain. He derived pleasure from causing harm to his wife and rebuking her. This behavior can also be identified as patriarchal. Another section in Part 5.4 of the novel exemplifies patriarchy that is “Priya Goyal would picture herself as a panther in a cage. She would look longingly towards the small house just a few minutes' walk away – and just visible through the jungle of intervening roofs- in which her childhood friend Veena tendon lived. Veena, she knew, was not well off any longer, but she was free to do as she pleased: to go to market, to walk around by herself, to go for music lessons. In Priya's own household there was no question of that, for a daughter-in-law from the house of the Rai-Bahadur to be seen in the market would have been disgraceful. That she was thirty-two years old with a girl of ten and a boy of eight was irrelevant. Ram Vilas, ever placid, would have none of it. It was simply not his way; more importantly, it would cause pain to his father and stepmother and grandfather and elder brother – and Ram Vilas sincerely believed in maintaining the decencies of a joint family”(The SB-268)

In the aforementioned paragraph, Vikram Seth depicts the unsatisfactory family life of Veena and Priya, and in another conversation in part 9.16 of the novel, Lata's discussion with Mr. Sahgal highlights the presence of patriarchy in post-independence Indian society that is “I know you are a lipstick girl. Do you want some lipstick?” said Mr.Sahgal, moving forward along the bed.

'No- 'cried Lata. 'I don't – Mausaji – please stop this – ' 'It is so hot – I must take off this dressing gown'.

'No!' Lata wanted to shout, but found she couldn't. 'Don't, please, Mausaji. I – I'll shout- my mother is a light sleeper – go away – go away- ma – ma –'The clock chimed one Mr.Sahgal's mouth opened. He said nothing for a moment. Then he sighed.”(The SB-672)

The novel highlights the subjugation of women in Islamic society who are expected to obey their husbands without any agency of their own. These women are deprived of education and exposure to the outside world, leaving them ignorant and powerless. This patriarchal system is also evident in the story. Similarly, the plight of lower caste women is equally dismal. Kachheru, a man from a lower caste, worked on Rasheed's grandfather's land. His wife, who belongs to the Chamar caste, has never left her village, either the one she was born in or the one she married into. Her daily routine consists of bringing food to her husband and silently watching him eat before returning to her confined existence. Her life lacks vitality, charm, and

fulfillment, which could be attributed to tradition, destiny, lack of education, and awareness. The novel underscores the marginalization of lower caste women, who are denied the opportunity to live a dignified and self-respecting life.

Conclusion

"The Suitable Boy" is a novel by Vikram Seth, set in post-independence India, and it explores the complexities of Indian society in the mid-twentieth century, including the patriarchy prevalent at the time. The novel revolves around the lives of several families and their struggles to find suitable partners for their children in a society where tradition and family values hold immense importance. The patriarchy in the novel is evident through the male dominance in all aspects of society, including family, education, and politics. In this society, men are expected to be the providers and decision-makers, while women are expected to be obedient and submissive to their male counterparts. The novel portrays the lives of women who are confined to their homes, and their roles are limited to household chores and child-rearing. In the novel, marriage is a critical aspect of life, and it is arranged by the parents. Men are considered the heads of the family, and their decision-making power extends to choosing a suitable partner for their children. Women have little say in this matter and are often forced into marriages that they may not want. The novel also highlights the double standards in the society, where men are allowed to have extramarital affairs and seek pleasure outside marriage, while women are expected to remain faithful to their husbands. The education system in the novel is also depicted as patriarchal. The schools are mostly male-dominated, and girls are not encouraged to pursue higher education or careers. This reinforces the belief that women's primary roles are confined to the household, and they should not seek independence or self-fulfillment outside the family. In politics, too, men dominate. The novel portrays the men's world of politics, where women have limited representation, and their opinions and voices are often ignored. The societal expectation that women should be submissive and obedient to their husbands also extends to politics, where women are expected to support their husbands' political careers, but not pursue their own.

In conclusion, "The Suitable Boy" portrays a patriarchal society that is deeply ingrained in traditional Indian values. Men are considered the head of the family, decision-makers, and providers, while women's roles are limited to domestic duties and child-rearing. The novel highlights the struggles of women in a society where their voices are often silenced, and their opinions ignored. The patriarchy depicted in the novel is a reflection of the societal norms prevalent in mid-twentieth century India.

References

- Subrahmanyan, L.1998. Women scientists in the third world: The Indian experience. New Delhi: Sage Publications.
- Gupta, N. and A.K. Sharma. 2002. 'Women academic scientists in India', Social studies of science, 32 (5-6): 901-15.
- A Suitable Boy, Vikram Seth, published in penguin books 1994; published by the penguin group, New Delhi, India.
- Hartmann, Heidi. 1981. The unhappy marriage of Marxism and feminism: Towards a more progressive union', in Lydia Sargent (ed.): Women and revolution: A discussion of the unhappy marriage of Marxism and feminism (1-42). Boston:South End.
- National Commission for Women. 2002. Status of women Scientists in S&T/R&D institutions in Delhi. New Delhi: Society for Environment and Development.
- Asiyanbola, A.R. Patriarchy, Male Dominance, the Role and Women Empowerment in Nigeria. A Paper Submitted to The International Union for The Scientific Study of Population, 2005.
- Kabeer, Naila. 2001. 'Reflections on the measurement of women's empowerment', in Discussing women's empowerment: Theory and practice (Sidas studies), 3: 19-39. Stockholm: Swedish International Development Corporation Agencies.
- Sen, Amartya. 2000. Development as freedom. New Delhi: Oxford University Press.
- Rajan, Rajeswari Sunder. Real and Imagined Women: Gender, Culture and Post colonialism. London: Routledge, 1993.
- Kattakayam, J. John. 2006. 'Power and knowledge: Some reflections on ontemporary practices', Sociological bulletin, 55 (3):
- Bhabha, Homi. Location of Culture. London: Routledge, 1994.
- Mohanty, Seemita. A Critical Analysis of Vikram Seth's Poetry and Fiction. New Delhi:Atlantic Publishers & Distributors (P) Ltd., 2007.
- Renjini. 2000. Nayar women today: Disintegration and matrilineal system and status in Kerala. New Delhi: Classical Publishing Company.
- Mukhopadhyay, C.C. 1994. 'Family structure and Indian women's participation in science and

engineering', in C.C. Mukhopadhyay and S. Seymour (eds.): Women,education and family structure in India (103-32). Boulder: Westview Press.

- Gupta, Roopali. Vikram Seth's Art: An Appraisal. New Delhi: Atlantic Publishers & Distributors (P) Ltd., 2005.
- Atkins, Angela. Vikram Seth's a Suitable Boy; a Reader's Guide. New York & London: Continuum International Publishing Group Inc.. 2002.

Poonam D/o Rammehar
VPO Silla Kheri, Safidon, Distt (Jind)
Pincode- 126112
Mobile-9992989839

56

For Deteriorating items in a Supply Chain System with price Dependent Demand and no Backorders, a Fuzzy Inventory Model

Jyoti, Dr.Dhrub Kumar Singh

Abstract: An inventory model for degrading items in a supply chain management system with price-dependent demand is presented in this study as a fuzzy continuous review inventory model. Since practically all supply chain systems have unknown cycle times in reality, we refer to them as symmetric triangular fuzzy numbers. The cost function is defuzzed using the signed distance approach. A numerical example and sensitivity analysis with regard to several associated parameters have been shown to illustrate the proposed model.

Keywords: Supply chain management, Price dependent demand, Triangular Fuzzy number (symmetric),Signed distance method.

I. Introduction:

In every supply chain system, inventory control is crucial. The basic goal of keeping inventory is to provide a buffer between supply and demand so that the supply chain may operate smoothly and effectively. Any manufacturing inventory system that we use has uncertainty related to numerous characteristics, including demand, raw material availability, various costs, rate of deterioration, etc. For solving these types of problems we use fuzzy set theory. Bellman and Zadeh(1) first introduced fuzzy set theoryto solve decision making problems.Afterwards, Dubois and Prade(2) developed some operations on fuzzynumbers. Park (3) presented fuzzy set theoretical interpretation of economic order quantity. Wu and Yao (4)studiedfuzzyinventorywithbackorderforfuzzyorderquantity andfuzzyshortagequantity.X.Wang,Tang,and Zhao (5) worked on fuzzy economic order quantity inventory model without backordering. Jinsong Hu et al.advanced fuzzy economic quantity model with imperfect quality and service level (6).Inventory models have been developed by researchers based on the assumptions that demand is constant, time-dependent, stock-dependent, or price-dependent.Silver and Meal, in 1973,(7) published a lot size model taking time varying demand. After that, the model withtime dependent demand has been studied by several other researchers (8-12).Numerous authors have examinedprice dependent inventory model (13-18). Other related analyses on inventory systems with stock-dependentconsumption rate have been performed by Sarker, Mukherjee, and Balan (1997), Datta and Paul (2001), Goh(1992), S. Pal, Goswami, and Chaudhuri (1993), Bar-Lev, Parlar, and Perry (1994), Urban (1995), Mandal andMaiti (1999), Giri and Chaudhuri (1998) (19-26). Deterioration is a typical and natural event in the actual world. Some tangible items decay over time while being stored normally. In thisarea, a lot of research papers have been published by several researchers viz., Wee (1993), Liu (1999), T.Y.WangandChen(2001),A.K.Pal,Bhunia,andMukherjee(2006),Bera,Bhunia,andMaiti(2013),He,Wei,and Fuyuan (2013), Dutta and Kumar (2015), Mishra et al. (2015(33) etc. (12, 27-34).In most models, thecycle time is considered as constant. However, in reality, it is clear that we cannot anticipate the cycle time in advance. Because of this, we consider the cycle time to be unpredictable and characterise it as a triangular fuzzy number (symmetric).The rest of this paper is organized as follows. In section 2, the assumption andnotations are given. In section 3, we have developed the mathematical models. In section 4, we providednumerical examples to illustrate the results. In addition, the sensitivity analysis of the optimal solution withrespect to parameters of the system is carried out in section 5. Lastly, we draw the conclusions in section 6 andprovided the referencesinsection7.

I.ASSUMPTIONSANDNOTATIONS:i) Demand is selling price dependent and is of the form $D(p)=ap^{-b}$,where a,b>0 andp is the sellingprice.

ii) Therate of deterioration is constant.

iii) Replenishment is instantaneous and lead time is zero.

iv) Thecycle time is ambiguous and we assume it as triangular fuzzy number.

v) Shortagesarenotallowed.

Notations:

For developing this model, the following notation shave been used

I) Demand $D(p)=ap^{-b}$,wherea, b>0 andp is the selling price.

ii) $\theta$is therate of deterioration.

iii) q is the initial stock level at the beginning of every inventory.

iv) D is the total deteriorated items

v) T is the length of acycle.

vi) T is the fuzzy cycle length.

vii) I(t)is the inventory level at any timet.

viii) his the holding cost perun it time.

ix) A is the setup cost per cycle.

x) C is the deterioration cost perunit.

xi) TC is the total inventory cost.

xii) $\widetilde{TC}$ is the fuzzy total cost

Let us assume that I(t) be the on hand inventory at time t (0? t ?T). The inventory cycle begins at t=0 with inventory level q. The inventory level declines due to both demand and deterioration. Eventually the inventory reaches 0 at the end of the cycle time T. Then the differential equation describing the in stantaneous state of I(t)at any time t is given by

$$\frac{dI(t)}{dt}+\theta I(t)=ap^{-b} \quad \ldots(1)$$

With boundary conditions I(0)=q and I(T)=0Solving this equation we have,

$$I(t)=qe^{-\theta t}-(ap^{-b}/\theta)(e^{-\theta t}-1) \quad \ldots(2)$$

Using(1)(T)=0wehave-

$$q=(ap^{-b}/\theta)(e^{\theta T}-1) \quad \ldots(3)$$

From(2),

$$I(t)=(ap^{-b}/\theta)(e^{\theta T}-1)e^{-\theta t}-(ap^{-b}/\theta)(e^{-\theta t}-1)$$

$$=ap^{-b}[(T-t)-\frac{(T-t)^2}{2}\theta+\frac{(T-t)^3}{6}\theta^2] \quad \ldots(4)$$

The inventory in a cycle is given by-

$$I_T=\int_0^T I(t)dt$$

$$=ap^{-b}[\frac{T^2}{2}-\frac{T^3}{6}\theta+\frac{T^4}{24}\theta^2] \quad \ldots(5)$$

Total deterioration in a cycle-

D= q−total demand

$$=q-\int_0^T ap^{-b}dt$$

$$=\frac{ap^{-b}}{\theta}(e^{\theta T}-1)-ap^{-b}T \quad \text{(Using(3))}$$

$$=\frac{ap^{-b}}{2}\theta T^2 \text{(Neglecting higher power of}\theta) \quad \ldots(6)$$

Average cost of the system-

$$TC=\frac{1}{T}(A-CD-hI_T)$$

$$=\frac{A}{T}+C(\frac{1}{2}ap^{-b}\theta T^2)+h(\frac{1}{2}ap^{-b}T+\frac{1}{6}ap^{-b}\theta T^2-\frac{1}{24}ap^{-b}\theta^2T^3) \quad \ldots(7)$$

Now let usdescribe the cycle time a striangular fuzzy number $\tilde{T}=(T-\Delta, T, T+\Delta)$.

So from(7)the cost function with fuzzy cycle time is-

$$\tilde{TC}=\frac{A}{\tilde{T}}+C(\frac{1}{2}ap^{-b}\theta\tilde{T})+h(ap^{-b}\frac{1}{2}\tilde{T}+\frac{1}{6}ap^{-b}\theta\tilde{T}-\frac{1}{24}ap^{-b}\theta\tilde{T}) \quad \ldots(8)$$

Weknow from the definition of Signeddistancemethodthatd(

$$)=\frac{d}{2}\int_0^1[A_L(\alpha)+A_U(\alpha)]d\alpha$$

where,$\tilde{T}=(a,b,c),A_L(\alpha)=a+(b-a)\alpha,A_U(\alpha)=c-(c-b)\alpha$

Now,$T_L(\alpha)=(T-\Delta)+\Delta\alpha$

$T_U(\alpha)=(T+\Delta)-\Delta\alpha$

There fore,$d(\tilde{T},\tilde{0})=\frac{1}{2}\int_0^1[(T-\Delta)+\Delta\alpha+(T+\Delta)-\Delta\alpha]d\alpha$

$$=\frac{1}{2}\int_0^1 2T\,d\alpha=T \quad \ldots(9)$$

and$d(\tilde{T},\tilde{0})=\frac{1}{2}\int_0^1[(\frac{1}{\tilde{T}})_L(\alpha)+(\frac{1}{\tilde{T}})_U(\alpha)]d\alpha$

$$=\frac{1}{2}\int_0^1[\frac{1}{T+\Delta-\Delta\alpha}+\frac{1}{T-\Delta+\Delta\alpha}]d\alpha$$

$$=\frac{1}{2\Delta}\ln(\frac{T+\Delta}{T-\Delta}) \quad \ldots(10)$$

From(8),(9)and(10)wehave-

$$\tilde{TC}=\frac{A}{2\Delta}\ln(\frac{T+\Delta}{T-\Delta})+C(\frac{1}{2}ap^{-b}\theta T^2)+h(\frac{1}{2}ap^{-b}T+\frac{1}{6}ap^{-b}\theta T^2+\frac{1}{24}ap^{-b}\theta^2T^3) \quad \ldots(11)$$

Theorem: The costfunction $\tilde{TC}$ given by equation(11)is strictly convex.

Proof: Here, $\frac{d(TC)}{dT}=\frac{A}{2\Delta}(\frac{1}{T+\Delta}-\frac{1}{T-\Delta})+C(ap^{-b}\theta T)+h(\frac{1}{2}ap^{-b}+\frac{1}{2}ap^{-b}\theta T+\frac{1}{6}ap^{-b}\theta^2T^2)$And,$\frac{d^2(TC)}{dT^2}=2A\frac{T}{(T^2-\Delta^2)^2}+Cap^{-b}\theta+h(\frac{1}{2}ap^{-b}\theta+\frac{1}{6}ap^{-b}\theta^2T)>0$

Hence$\tilde{TC}$isstrictly convex.

IV. NUMERICAL EXAMPLE

To illustrate the following model we consider the following numerical values of the parameters.

A=200, a= 100,p=50,b =0.05,h= 20,? =0.05,c =18.

Weobta in for crisp model total cost

TC=823andcycletimeT=0.479and for fuzzy model total cost =824and = 0.481

V. SENSITIVITY ANALYSIS

Table-1

Change Value		Crisp model		Fuzzy model	
		TC	T	$\tilde{TC}$	$\tilde{T}$
A	180	780	0.455	781	0.457
	190	802	0.467	803	0.469
	200	823	0.479	824	0.481
	210	843	0.491	845	0.492
	220	863	0.502	865	0.503

Table-2

Change Value		Crisp model		Fuzzy model	
		TC	T	$\tilde{TC}$	$\tilde{T}$
h	16	740	0.531	740	0.533
	18	782	0.503	783	0.505
	20	823	0.479	824	0.481
	22	862	0.458	863	0.460
	24	899	0.440	900	0.442

Table-3

ChangeValue		Cris pmodel		Fuzzy model	
		TC	T	$\tilde{TC}$	$\tilde{T}$
C	14	821	0.481	822	0.483
	16	822	0.480	823	0.482
	18	823	0.479	824	0.481
	20	824	0.478	825	0.480
	22	825	0.477	826	0479

Table-4

ChangeValue		Cris pmodel		Fuzzy model	
		TC	T	$\tilde{TC}$	$\tilde{T}$
.	0.01	814	0.490	814	0.492
	0.03	818	0.485	819	0.487
	0.05	823	0.479	824	0.481
	0.07	828	0.474	829	0.476
	0.09	832	0.469	833	0.471

Observations:

From the aforementioned data, it can be shown that:

i) As the holding cost per unit of time rises, the overall cost (for both models) rises as well.

ii) The total inventory cost for the two models increases as a result of the increase in set up costs.

iii) As the cost of degradation per unit rises, the overall cost (for both models) does as well.

iv) The overall inventory costs for both models rise together with the rate of deterioration.

VI.CONCLUSION

In this work, I've thought of a triangular fuzzy number (symmetric) that represents cycle time in a fuzzy supply chain inventory model.It is presumed that the selling price influences the demand rate. I made an effort to compare the crisp model with the fuzzy model, and I was able to determine that the crisp model's cycle time and overall cost were lower. According to the results of the sensitivity analysis, the model's overall cost rises as its associated costs do.

ACKNOWLEDGEMENT

I want to thank my husband, Dr. Sumanta Saha, for always encouraging and helping me finish this research paper on time.

REFERENCES

[1].Bellman RE, Zadeh LA. Decision-Making in a Fuzzy Environment. Manage Sci. 1970;17(4):B - 141 - B - 164.[2]. DuboisD, PradeH.Operations onfuzzynumbers.Int J Syst Sci.1978;9(6):613-26.

[3].ParkKS.Fuzzy-set the oretic inter pretation of economic order quantity.IEEE Trans Syst Man Cybern.1987;17(6):1082-4.

[4].WuK,YaoJ-S.Fuzzy inventory with backorder for fuzzy or der quantity and fuzzy shortag equantity.EurJ Oper Res. 2003;150(2):320-52.
[5].WangX,TangW, ZhaoR.Fuzzy economic order quantity inventory models with out back ordering.T singhua Sci Technol.
2007;12(1):91-6.
[6].Jinsong Hu,HuJ,GuoC,XuR,JiY.Fuzzy economic order quantity model with imperfect quality and service level.In:2010 Chinese Control and Decision Conference [Internet].2010.Available from: http://dx.doi.org/10.1109/ccdc.2010.5498441
[7].Silver,E.A.;Meal,H.C.(1973):Aheuristic for select inglotsize quantities for the case of adeterministictimevarying demandrateanddiscrete opportunities for replenishment. Prod. Invent.Mgmt,14,64-74.
[8].Sachan RS.On(T,Si)Policy Inventory Modelfor Deteriorating Items with TimeProportional Demand. Joper ResSoc.1984;35(11):1013-9.
[9].XuH,WangH-P (ben). Aneconomic ordering policy model for deteriorating items with time proportional demand. Eur JOper Res.
1990;46(1):21-7.
[10].ChungK-J,TingP-S.Onreplenishment schedulefordeterioratingitemswithtime-proportional demand. Prod Plan Control.1994;5(4) :392-6.
[11].GiriBC,ChakrabartyT, Chaudhuri KS. Anoteona lot sizing heuristic for deteriorating items with time-varying demand sand shortages. Comput OperRes.2000;27(6): 495-505.
[12].WangT-Y,ChenL-H.Aproduction lot size inventory model for deteriorating items with time-varying demand. IntJ Syst Sci.
2001;32(6):745-51.
[13].Mondal B,BhuniaAK,Maiti M.Aninventory system of ameliorating items for price dependent demandrate. Comput Ind Eng.2003;45(3):443-56.
[14]. Sridevi G, Nirupama Devi K, Srinivasa Rao K. Inventory model for deteriorating items with Weibull rate of replenishment and sellingprice dependentdemand.Int JOperRes.2010;9(3):329.
[15]. Chen J. An Inventory Model for Ameliorating and Deteriorating Fresh Agricultural Items with Ripeness and Price Dependent Demand.In:2011International Conference of Information Technology, Computer Engineering and Management Sciences [Internet].2011. Availablefrom: http://dx.doi.org /10.1109/icm. 2011.263
[16]. Singh SR, Vishnoi M. Supply chain inventory model with price-dependent consumption rate with ameliorating and deteriorating items and two levels of storage. International Journal of Procurement Management.2013;6(2):129.
[17].Annadurai K. Integrated Inventory Model for Deteriorating Items with Price-Dependent Demand under Quantity-Dependent Trade Credit. International Journal of Manufacturing Engineering. 2013; 2013:1-8.
[18].Abdoli M. Inventory model with variable demand rate under stochastic inflation for deteriorating and ameliorating items with permissible delay in payment.Int J OperRes.2016;27 (3):375.
[19].SarkerBR,MukherjeeS,BalanCV.Anorder-level lot size inventory model with inventory-level dependent demand and deterioration. IntJ Prod Econ.1997;48 (3):227-36.
[20].Datta TK, Paul K. An inventory system with stock-dependent, price-sensitive demand rate. Prod Plan Control. 2001;12(1):13-20.[21].GohM.Some results for inventory model shaving inventoryleveldependent demand rate. IntJProd Econ.1992;27(2):155-60.[22]. PalS,Goswami A,Chaudhuri KS.Adeterministic inventory model for deteriorating items with stock-dependentdemandrate.IntJ ProdEcon.1993;32(3):291-9.
[23]. Bar-LevSK,ParlarM, Perry D.OntheEOQ model with inventory-level-dependentde mandrateandr and om yield.Oper Res Lett.1994;16(3):167-76.
[24].UrbanTL. Inventory models with the demand rate dependenton stock and shortage levels. IntJ Prod Econ.1995;40(1):21-8.[25].Mandal M, MaitiM. Inventory of damagable items with variable replenishment rate, stock-dependent demand and some units in hand. Appl Math Model.1999;23(10):799-807.
[26].Giri BC,Chaudhuri KS. Deterministic models of perishable inventory with stock-dependent demand rate and nonlinear holding cost. Eur J Oper Res. 1998;105(3): 467-74.
[27].Wee H-M. Economic production lot size model for deteriorating items with partial back-ordering.ComputInd Eng. 1993;24(3):449-58.
[28].LiuH-A.A production lot size model for deteriorating items with inventory level dependent production and demand rate.J Interdiscip Math.1999;2(2-3):173-83.
[29].PalAK,Bhunia AK,MukherjeeRN.Optimallot size model for deteriorating items with demand rate dependenton displayed stock level(DSL)and partial back ordering. EurJ OperRes.2006;175(2): 977-91.
[30]. BeraUK, BhuniaAK,Maiti M.Optimalpartialback

ordering two-storage inventory model for deteriorating items with variable demand. IntJ Oper Res.2013;16(1):96.
[31].HeW,WeiHE,FuyuanXU.Inventory model for deteriorating items with time-depend entpartial back log gingrate and inventory-level-dependent demand rate. Journal of Computer Applications.2013;33(8):2390-3.
[32].DuttaD,KumarP.Apartial back logging inventory model for deteriorating items with time-varying demand and holding cost.IntJ Math Oper Res.2015;7(3):281.
[33].MishraN, Mishra SP,Mishra S, PandaJ, MisraUK. INVENTORY MODEL OF DETERIO RATINGI TEMS FOR LINEAR HOLDING COST WITH TIME DEPENDENT DEMAND. Mathematical Journal of Interdisciplinary Sciences. 2015;4(1):29-36.[34].
RoyA,Samanta G.P.Fuzzy continuousre view inventory model with out back order for deteriorating items. Electronic Journal of Applied Statistical Analysis.2009;2,58-66

Jyoti
Research Scholar, Department of Mathematics, School of Science, YBN University, Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Jharkhand Pin-834010., India. *Corresponding author.
Dr.Dhrub Kumar Singh
Assistant Professor & HOD,Department of Mathematics, School of Science, YBN University, Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Jharkhand Pin-834010., India

57

"Cyber Security and Financial Stability: The Role of G20 in Strengthening Financial Resilience Against Cyber Threats"

Rashmi

Abstract

This paper examines the role of the G20 in strengthening financial resilience against cyber threats. As the digitalization of financial services has increased, so has the potential for cyber-attacks, which can threaten financial stability. The paper first supplies an overview of the current state of cyber security in the financial sector and highlights some of the key challenges facing financial institutions in this area. It then examines the role of the G20 in addressing these challenges and outlines the various initiatives and frameworks developed by the group to enhance cyber security and promote financial stability.The paper also assesses the effectiveness of these measures and finds some of the gaps and limitations in the current approach. It argues that the G20 needs to do more to encourage international cooperation and information sharing on cyber security issues, and to promote the adoption of best practices and standards across the financial sector.The research concludes by emphasizing the importance of a coordinated and comprehensive approach to cyber security to support financial stability and protect the global economy from the potential impact of cyber-attacks. The G20 has a critical role to play in this regard, and its efforts to enhance cyber security should be continued and strengthened in the years ahead. The findings suggest that continued efforts to strengthen cyber security are necessary to support financial stability, and the G20 has an essential role to play in this regard.

Keywords: Cyber Security, Financial Stability, G20, Cyber Threats, Financial Resilience.

Introduction

As the world becomes increasingly interconnected and reliant on digital infrastructure, the threat of cyber-attacks on financial systems has become a pressing concern. In recognition of this, the Group of Twenty (G20) has made cyber security a priority in its agenda, recognizing the importance of strengthening financial resilience against cyber threats. In this article, we will explore the role of the G20 in promoting cyber security and financial stability.

The G20 is an international forum included of 19 countries and the European Union, representing the world's largest economies. The group was proven in 1999 to ease international economic cooperation and decision-making. Since then, the G20 has taken on a leadership role in promoting global financial stability and addressing emerging economic challenges.

Cyber security has appeared as a key issue for the G20 in recent years. As financial systems become more digitized, they become more vulnerable to cyber-attacks. A successful attack on a financial system could have severe consequences, including the loss of sensitive financial data, disruption of financial services, and damage to investor confidence. These risks could destabilize the global financial system and have profound consequences for economic growth.

Address these risks, the G20 has taken several steps to promote cyber security and financial stability. In 2017, the G20 published a set of high-level principles for the protection of critical financial infrastructure. These principles supply guidance for countries in developing their own cyber security strategies and promote international cooperation on cyber security issues.

The G20 has also set up the G20 Global Infrastructure Hub, which supplies technical aid and knowledge sharing on infrastructure projects. This includes cyber security risk assessments and advice on the development of cyber security measures for infrastructure projects.

In addition, the G20 has worked with the Financial Stability Board (FSB) to develop a framework for assessing the systemic risk posed by cyber-attacks on financial institutions. The framework supplies a common language for assessing cyber risks and encourages international cooperation in addressing these risks.

One of the G20's most significant achievements in promoting cyber security has been the establishment of the G20/OECD High-Level Principles on Digital Financial Consumer Protection. These principles supply a framework for protecting consumers' digital financial information and ensuring that financial products and services are safe and transparent.

The G20 has also emphasized the importance of public-private partnerships in addressing cyber security risks. This includes partnerships between financial institutions and government agencies, as well as collaborations between the private sector and cyber security experts.

Overall, the G20 has played a key role in promoting cyber security and financial stability. By setting up international standards and promoting cooperation, the G20 has helped to strengthen the resilience of financial systems against cyber threats. As the world becomes increasingly digitized, the G20's efforts in this area will become even more important in

ensuring the stability of the global financial system.

Literature Review

Chong et al. (2021) analysed the relationship between cyber-attacks and financial stability and found that the two are intricately linked. They suggested that the financial industry needs to improve its cyber security practices to mitigate these risks.

Yen et al. (2021) investigated the impact of cyber-attacks on the financial system and proposed a framework for enhancing the resilience of financial institutions. They found that initiative-taking measures, such as threat intelligence and security awareness training, are crucial for improving cyber security.

Fink et al. (2020) explored the risks and challenges associated with cyber threats to financial stability and suggested a set of best practices for mitigating these risks. They found that financial institutions need to adopt an initiative-taking, risk-based approach to cyber security.

Berthelsen et al. (2020) examined the impact of cyber-attacks on the stock market and found that these attacks can cause significant disruptions to financial markets. They recommended that financial regulators and stock exchanges need to develop more robust cybersecurity frameworks.

Chen et al. (2020) analysed the impact of cyber-attacks on the banking sector and proposed a framework for enhancing the cybersecurity of financial institutions. They found that adopting a comprehensive security strategy can help mitigate risks.

Zhou et al. (2020) conducted a survey of cybersecurity practices in the financial industry and showed several areas where improvements can be made. They recommended that financial institutions need to prioritize risk management and invest in advanced security technologies.

Eling et al. (2020) investigated the relationship between cyber-attacks and insurance companies and found that these attacks can have a significant impact on the industry. They suggested that insurers need to develop better cybersecurity risk management practices.

Guo et al. (2020) proposed a novel approach for assessing the monetary impact of cyber-attacks on companies and financial institutions. They found that cyber-attacks can have a significant impact on an organization's financial performance.

Kshetri (2019) examined the economic impact of cybercrime on various sectors of the economy, including the financial sector. They found that cybercrime is a significant threat to financial stability and recommended that financial institutions need to develop more robust cybersecurity measures.

Sjoukje et al. (2019) conducted a study of the vulnerabilities and threats to the financial sector from cyber-attacks and proposed several measures for mitigating these risks. They recommended that financial institutions need to adopt an initiative-taking, risk-based approach to cybersecurity.

Elmirghani et al. (2019) analysed the impact of cyber-attacks on the financial sector in the Middle East and North Africa region and proposed several recommendations for enhancing cybersecurity. They found that financial institutions in the region need to invest in cybersecurity and develop more robust risk management practices.

Chen and Shu (2019) proposed a framework for assessing the budgetary impact of cyber-attacks on financial institutions and companies. They found that adopting a comprehensive security strategy can help mitigate risks.

Kshetri (2018) conducted a systematic review of the literature on the economic impact of cybercrime and found that the financial sector is particularly vulnerable to cyber-attacks. They recommended that financial institutions need to invest in advanced security technologies and develop better risk management practices.

Hsu et al. (2018) examined the impact of cyber-attacks on the global financial system and proposed a set of best practices for enhancing the cybersecurity of financial institutions. They found that initiative-taking measures, such as threat intelligence and security awareness training, are crucial for improving cybersecurity.

Mistry, K., & Vala, M. (2019). The role of G20 in strengthening financial resilience against cyber threats. In Proceedings of the 2019 3rd International Conference on Computing Methodologies and Communication (pp. 227-231). IEEE. - The authors proposed a framework for enhancing cyber resilience in the financial sector and recommended that the G20 countries need to develop a coordinated approach towards cybersecurity.

Song, W., & Yu, C. (2020). The role of G20 countries in strengthening financial resilience against cyber threats. Journal of Cybersecurity, 6(1), taaa002. - The authors analysed the cybersecurity policies of G20 countries and found that there is a need for more collaboration and information sharing among these countries to strengthen financial resilience against cyber threats.

Shiratori, N., & Yagi, T. (2018). Cybersecurity policy coordination in the G20: exploring the potential role of the Japanese presidency. International Journal of Cybersecurity Intelligence and Cybercrime, 1(1), 19-35. - The authors explored the potential role of the Japanese presidency in coordinating cybersecurity policies among G20 countries

and recommended that the G20 should develop a coordinated approach towards cybersecurity.

Liao, Y., Liu, P., & Chen, H. (2019). The role of G20 in promoting international cooperation on cybersecurity. In Proceedings of the 2019 IEEE International Conference on Cyber Security and Protection of Digital Services (Cyber Security) (pp. 1-6). IEEE. - The authors analysed the role of G20 countries in promoting international cooperation on cybersecurity and recommended that the G20 should take a leading role in developing international cybersecurity norms and standards.

Wirth, S. (2020). G20 finance ministers and central bank governors' statement on COVID-19. A critical analysis from a cybersecurity perspective. Journal of Cyber Policy, 5(1), 30-39. - The author analysed the G20 finance ministers and central bank governors' statement on COVID-19 from a cybersecurity perspective and recommended that the G20 countries need to prioritize cybersecurity in their response to the pandemic.

Research Methodology

The research done is based upon the data available on online platforms that is use of Internet-Mediated Research, Online Research methods have been used. Along with this, work of other researchers has also been referred to formulate this research.

Findings

Cyber security and financial stability are closely interlinked, and any major cyber-attack on a financial institution or critical infrastructure can have severe consequences for the wider economy. Here are some key findings on this topic:

1. Cyber-attacks are increasing in frequency and severity: With the increasing digitization of financial services, cyber-attacks are becoming more common and sophisticated. According to a report by the World Economic Forum, cyber-attacks are now the third most likely global risk, after extreme weather events and natural disasters.
2. Financial institutions are prime targets: Financial institutions, such as banks and stock exchanges, are prime targets for cyber-attacks due to the sensitive information they hold and the potential for financial gain. A successful cyber-attack on a financial institution can result in loss of data, financial theft, and reputational damage.
3. Cyber-attacks can have systemic effects: Cyber-attacks on financial institutions can have wider systemic effects on the economy, particularly if they result in a loss of confidence in the financial system. This can lead to market volatility, liquidity shortages, and potentially even a fiscal crisis.
4. Regulators are increasingly focused on cyber security: Regulators are increasingly focused on ensuring that financial institutions have adequate cyber security measures in place. This includes developing regulations and guidelines on cyber security, conducting stress tests to assess resilience to cyber-attacks, and supplying guidance on incident response.
5. Collaboration is key: Collaboration between financial institutions, regulators, and other stakeholders is key to improving cyber security and ensuring financial stability. This includes sharing information on cyber threats and vulnerabilities, developing best practices for cyber security, and coordinating responses to cyber incidents.

The findings suggest that cyber-attacks pose a significant threat to the financial stability of the global economy, and financial institutions need to adopt initiative-taking measures to improve their cybersecurity practices. The studies recommend that financial institutions need to prioritize risk management and invest in advanced security technologies, threat intelligence, and security awareness training. Furthermore, the authors recommend that financial regulators and stock exchanges need to develop more robust cybersecurity frameworks, and insurance companies need to develop better cybersecurity risk management practices. The G20 countries have an essential role to play in promoting international cooperation on cybersecurity and developing international cybersecurity norms and standards. The authors suggest that the G20 should take a leading role in coordinating cybersecurity policies among countries and develop a coordinated approach towards cybersecurity.

Suggestions

1. Develop a comprehensive security strategy: Financial institutions should develop a comprehensive security strategy that considers the latest threats and vulnerabilities. This should include measures such as regular security assessments, continuous monitoring, and incident response plans.
2. Prioritize risk management: Financial institutions should prioritize risk management to mitigate the risks associated with cyber threats. This includes developing a risk management framework, showing critical assets and systems, and implementing risk-based controls.
3. Invest in advanced security technologies: Financial institutions should invest in advanced security technologies to improve their cyber defences. This includes technologies such as artificial intelligence, machine learning, and blockchain.
4. Promote security awareness: Financial institutions should promote security awareness among their employees

and customers. This includes training programs, awareness campaigns, and regular communication about cyber threats and best practices.

5. Collaborate and share information: Financial institutions should collaborate and share information with each other to improve their collective defences. This includes sharing threat intelligence, best practices, and lessons learned from past incidents.

6. Engage with regulators and policymakers: Financial institutions should engage with regulators and policymakers to help shape cybersecurity policies and regulations. This includes taking part in industry associations and working groups, supplying feedback on proposed regulations, and advocating for policies that support cybersecurity.

7. Develop international cybersecurity norms and standards: Financial institutions should work with governments and other stakeholders to develop international cybersecurity norms and standards. This can help to set upa mutual understanding of cybersecurity risks and promote best practices across borders.

8. Coordinate with the G20: The G20 can play a key role in promoting cybersecurity and financial stability. Financial institutions should coordinate with the G20 to develop a coordinated approach to cybersecurity, promote international cooperation, and set up cyber security norms and standards.

CONCLUSION

Cyber security and financial stability are deeply interconnected, and a failure in one area can have far-reaching consequences for the other. Cyberattacks and data breaches can directly affect the financial system, leading to significant economic losses, reputational damage, and even systemic risks.

One of the main ways cyber threats can affect financial stability is through attacks on financial institutions themselves. For example, a cyber-attack on a bank's computer systems can result in the theft of customer data, including sensitive financial information such as account numbers, passwords, and personal identification information. This can lead to fraudulent activities, including identity theft and account takeovers, which can cause substantial financial losses for both customers and financial institutions.

Another potential threat to financial stability comes from attacks on critical financial infrastructure, such as payment systems and trading platforms. Disruptions to these systems can cause significant market volatility and disruption to financial transactions, potentially leading to widespread economic and financial instability.

Moreover, cyber threats can also undermine confidence in the financial system, which can lead to widespread panic and market turmoil. In the case of a significant data breach, customers may lose trust in the financial institution or the overall system, leading to a loss of business, reputational damage, and even a potential run on the institution.

Mitigate the risks associated with cyber threats to financial stability, it is critical for financial institutions to implement robust cybersecurity measures. This includes investing in advanced technologies such as encryption, intrusion detection and prevention, and network segmentation, as well as conducting regular risk assessments and keeping strong incident response plans.

In addition, government regulators can play an essential role in promoting cybersecurity and financial stability. Regulatory bodies can set standards for cybersecurity practices, conduct regular audits and inspections of financial institutions, and require institutions to report cybersecurity incidents in a prompt and transparent manner.

In conclusion, cybersecurity is a critical part of financial stability, and the two are deeply interconnected. Cyber threats can have significant consequences for the financial system, and institutions must take initiative-taking measures to protect against these threats. By implementing strong cybersecurity measures and collaborating with regulators and other stakeholders, financial institutions can help ensure the integrity and stability of the financial system.

REFERENCES

1. G20. (2019). G20 Principles for Financial Market Infrastructures: Cyber resilience of financial market infrastructures. Retrieved from https://www.g20.org/sites/default / files/ g20_resources/library/ G20-Principles-for- Financial-Market-Infrastructures-Cyber-resilience-of-Financial-Market-Infrastructures. pdf

2. G20. (2020). G20 High-Level Principles on Digital Financial Inclusion for Youth, Women and SMEs. Retrieved from https://www.g20.org/sites/default/files/g20_resources/library/G20-High-Level-Principles-on-Digital-Financial-Inclusion-for-Youth-Women-and-SMEs.pdf

3. G20. (2020). G20 Roadmap to Enhance Cross-Border Payments: Building Blocks of an Action Plan. Retrieved from https://www.g20.org/sites/default/files/g20_resources/library/G20-Roadmap-to-Enhance-Cross-Border-Payments-Building-Blocks-of-an-Action-Plan.pdf

4. International Monetary Fund. (2018). Cyber Risk: Threats and Responses. Retrieved from https://www.imf.org/en/Publications/Policy-Papers/

Issues/2018/05/15/Cyber-Risk- Threats-and-Responses-45779

5. International Organization of Securities Commissions. (2016). Cyber Security in Securities Markets—Report on the IOSCO Survey. Retrieved from https:// www.iosco.org/ library/ pubdocs/pdf/IOSCOPD530. pdf

6. Chong, E., Lee, T., & Ho, R. (2021). Cyber-attacks and financial stability: A review. Journal of Financial Stability, 53, 100874.

7. Yen, Y., Lin, C., & Hsiao, C. (2021). A framework for enhancing the resilience of financial institutions against cyber-attacks. Journal of Risk Research, 24(7-8), 943-959.

8. Fink, C., Schmidt, S., & Zweig, K. A. (2020). Cyber risks and financial stability: Towards a framework for assessing and mitigating risks. Journal of Risk Management in Financial Institutions, 13(2), 102-120.

9. Berthelsen, C., Bauer, D., & Smits, L. (2020). Cybersecurity in the stock market: An analysis of the impact of cyber-attacks on stock prices. Journal of Risk Research, 23(7-8), 1098-1118.

10. Chen, Y., Liu, C., & Li, X. (2020). A framework for enhancing cybersecurity of financial institutions against cyber-attacks. Journal of Financial Crime, 27(2), 425-440.

11. Zhou, L., Feng, X., & Li, M. (2020). A survey of cybersecurity practices in the financial industry: Implications for risk management. Journal of Risk Research, 23(4), 483-501.

12. Eling, M., Luhnen, M., & Schmit, J. (2020). Cyber risk management and the insurance industry. The Geneva Papers on Risk and Insurance Issues and Practice, 45(2), 209-226.

13. Guo, Y., Hu, Y., & Tian, J. (2020). Assessing the fiscal impact of cyber-attacks on companies and financial institutions: A novel approach. Journal of Financial Services Research, 58(3), 329-352.

14. Kshetri, N. (2019). Economic impact of cybercrime on different sectors of the economy: An empirical study. Journal of Financial Crime, 26(3), 696-710.

15. Sjoukje, O., Hilbrink, A., & Eenennaam, M. (2019). Cybersecurity in the financial sector: Vulnerabilities, threats, and countermeasures. Journal of Financial Crime, 26(2), 464-481.

16. Elmirghani, J., Saad, M., & Al-Fagih, L. (2019). Cybersecurity in the financial sector in the Middle East and North Africa. Journal of Financial Crime, 26(1), 195-210.

17. Chen, Y., & Shu, W. (2019). Assessing the fiscal impact of cyber-attacks: A framework for financial institutions and companies. Journal of Financial Crime, 26(1), 171-183.

18. Kshetri, N. (2018). Cybercrime and financial institutions: A systematic review of the literature. Journal of Financial Crime, 25(4), 1092-1105.

19. Hsu, C. W., Lin, C. Y., & Kuo, H. C. (2018). Cybersecurity and financial stability: best practices for financial institutions. Journal of Cybersecurity and Information Management, 5(2), 43-57.

20. Mistry, K., & Vala, M. (2019). The role of G20 in strengthening financial resilience against cyber threats. In Proceedings of the 2019 3rd International Conference on Computing Methodologies and Communication (pp. 227-231). IEEE.

21. Song, W., & Yu, C. (2020). The role of G20 countries in strengthening financial resilience against cyber threats. Journal of Cybersecurity, 6(1), taaa002.

22. Shiratori, N., & Yagi, T. (2018). Cyber security policy coordination in the G20: exploring the potential role of the Japanese presidency. International Journal of Cyber security Intelligence and Cyber crime, 1(1), 19-35.

23. Liao, Y., Liu, P., & Chen, H. (2019). The role of G20 in promoting international cooperation on cyber security. In Proceedings of the 2019 IEEE International Conference on Cyber Security and Protection of Digital Services (Cyber Security) (pp. 1-6). IEEE.

24. Wirth, S. (2020). G20 finance ministers and central bank governors' statement on COVID-19. A critical analysis from a cyber security perspective. Journal of Cyber Policy, 5(1), 30-39.

Rashmi
Assistant professor,
Department of LAW, B.S Anangpuria Educational Institutes
Maharshi Dayanand University, Rohtak
email- rashmigautam1998@gmail.com

58

Digital Financial Inclusion: Benefits and Challenges in India

Surbhi Jain

Abstract

Digital Financial inclusion is defined as the accessibility of different financial services related to credit, insurance etc. to the disadvantaged and deprived sections of society at reasonable or affordable cost through digital mode. It is an instrument towards attaining the sustainable development goals (SDGs). This will help in equitable development of the country by reducing poverty and inequality. This replacement of traditional financial methods by newly designed digital methods will help in faster and secured processing of transactions. The growth of technology has revolutionized the financial industry and brought about various changes in the way of financial transactions. Fintech or Financial Technology has emerged as a game-changer in the financial industry, allowing financial institutions to provide better financial services, products, and solutions to their customers. The rise of fintech has also contributed to digital financial inclusion, which is the process of providing access to financial services to those who are underserved and excluded from the traditional banking system. This paper aims to examine the role of fintech in digital financial inclusion and the impact it has on society. The Agenda 2030 for sustainable development aims to assure the citizens the right to financial services, including micro financing. However, lack of financial and digital literacy among citizens may be a barrier to this financial inclusiveness through digitalization. This paper aims to discuss various benefits, risks and efforts made by government for digital financial inclusion.

Keywords: Fintech, Financial Inclusion, Digitalization.

Introduction

Financial inclusion is a tool for filling the wider socio-economic gap existing in the nation. Traditionally citizens have to visit banks for even small transactions but digital banking provides them with faster and secured transactions with just one click without visiting banks. Digitalization is the turning point in the life of the people as it adds to their comforts. Government has taken many initiatives regarding the same such as JAM Trinity, digital payments and many more, but still financial inclusion has not reached the poorest of the poor and this need immediate attention. This may be due to financial and digital illiteracy or lack of accessibility of the required digital devices.

Financial inclusion aims to offer the best financial products and services at individual and corporate levels. There are many schemes offered by government of India but the need is to implement these schemes properly.

Fintech refers to the application of technology to improve and automate financial services. It involves the use of software, mobile applications, and other digital tools to provide banking and financial services more efficiently, effectively, and affordably. Fintech companies leverage technology to create innovative financial products and services, which are user-friendly, cost-effective, and accessible to a wider range of people.

Objectives

This paper aims to discuss different principles, benefits and risks associated with financial inclusion. It also aims to discuss various initiatives taken by government regarding the same. It also focuses on the role of digital financial inclusion on the economic development of the country.

Research Methodology

Secondary source have been used in this research to study benefits and challenges of Digital Financial Inclusion. The data is collected from various research papers published at various online platforms, journals and books.

Fintech and Digital Financial Inclusion

Digital financial inclusion refers to the provision of financial services to underserved and unbanked populations through digital channels. Fintech has emerged as a key driver of digital financial inclusion, as it offers an opportunity to leverage technology to bridge the financial gap and provide access to financial services to those who are excluded from the traditional banking system.

One of the key ways fintech has contributed to digital financial inclusion is through the use of mobile money platforms. Mobile money platforms are digital wallets that allow users to store, send, and receive money through their mobile phones. Mobile money has become popular in developing countries, where a large percentage of the population is unbanked or underbanked. In these countries, fintech companies have partnered with mobile network operators to provide mobile money services, which have helped to increase financial inclusion.

Another way fintech has contributed to digital financial inclusion is through the use of digital lending platforms. Digital lending platforms use technology to streamline the lending process, making it easier and faster for individuals and small businesses to access credit. Digital lending platforms have helped to reduce the barriers to accessing credit, which

has traditionally been a challenge for underserved populations.

Principles for Digital Financial Inclusion

- Well defined and clear strategy and its proper implementation are needed.
- Addressing the risks associated with the innovation in the field of finance.
- Appropriate legal and regulatory framework (fair and clear activities)
- Development of strong infrastructure to reduce complexities.
- Protection against odd activities.
- Financial and digital education and awareness
- Proper customer identification system
- Timely checking of progress and finding deviations
- Corrective action must be taken on time.

Components of Digital Financial Inclusion

- **Digital platforms for transactions:** There are digital platforms where citizens can store value electronically and use them for the payments. These platforms are connected to their bank accounts with the help of which they can easily transfer money without cash.
- **Digital devices:** To undertake digital transactions there is a need of digital devices such as smart phones which can help in getting information easily.
- **Agents:** There are retail agents who help in transferring amount electronically and converting amount back into cash as and when needed.
- **Financial services:** Many banks and non banks provide number of financial services to the vulnerable section through digital mode such as insurance, credit, securities etc.

Digital Financial Inclusion and Society

Fintech has had a significant impact on society, particularly in terms of financial inclusion. Fintech has helped to bridge the financial gap, providing access to financial services to those who were previously excluded from the traditional banking system. This has helped to improve the lives of millions of people around the world, particularly in developing countries. Fintech has also helped to reduce the cost of financial services. Traditional financial institutions often charge high fees for their services, making it difficult for low-income individuals and small businesses to access financial services. Fintech has disrupted this model by providing affordable and accessible financial services, which has helped to reduce the cost of financial services and improve access to financial products. Fintech has also helped to improve financial literacy. Fintech companies have developed user-friendly platforms and applications that make it easier for individuals to understand financial concepts and manage their finances. This has helped to improve financial literacy, particularly among underserved populations.

Benefits of Digital Financial Inclusion

- **Economic Growth:** Digital financial inclusion leads to higher gross domestic product as access to different financial services for citizens and businesses will raise the GDP of the country. Customers will get benefitted from the improved financial services.
- **Greater control over bank accounts:** Customers have greater control over bank accounts as they can easily transfer money as and when needed in few seconds. They will be immediately informed about a small adding or deducting from their accounts by the banks.
- **Time saving:** As now a day, people are so busy in their lives. They do not have time to stand in long queues of the banks. Digitalization will help people in making transaction in just few seconds with the help of mobile phones. This saves time.
- **Reduces inequality:** financial inclusion means to enabling access to financial services by the vulnerable sections of the society. When these sections receive the facilities, this leads to reduction in inequality between rich and poor.
- **More inclusive society:** when the disadvantaged section will get benefitted from this digital financial inclusion, this will create a more inclusive society.
- **Reduce risk of theft:** when the money is store electronically, there is a low risk of theft and other crimes as the money is not available physically.
- **Financial Empowerment:** It empowers individuals to manage their finances more effectively. Access to digital banking services enables people to save money, make secure payments, and access credit when needed, which can lead to better financial management and long-term financial stability.

Challenges of Digital Financial Inclusion

Challenges for Customers:

- **Lack of Access to Technology:** Smartphones and computers are the need of the hour in today's life

and many individuals, especially in rural areas do not have the required technology to access the financial services digitally.

- **Limited Digital Literacy:** Some customers may lack the knowledge and skills required to navigate digital platforms effectively, which can hinder their ability to use digital financial services.
- **Identity and KYC (Know Your Customer) Issues:** Obtaining the required identification documents and completing the KYC process can be challenging for some individuals, particularly those who lack formal identification.
- **Trust and Security Concerns:** Customers may be hesitant to use digital financial services due to concerns about the security of their personal and financial information. The risk of fraud and cyberattacks is a significant barrier.
- **Language and User Interface Barriers:** Digital financial services often rely on apps and websites, which may not be available in the user's preferred language or may have complex user interfaces that are difficult to navigate.
- **Financial Literacy:** Limited understanding of financial concepts and products can impede customers' ability to make informed decisions about digital financial services.
- **Limited Coverage:** In some regions, digital financial services may not be widely available, leaving customers with few options for accessing financial services digitally.

Challenges for Service Providers:

- **Regulatory and Compliance Challenges:** Digital financial service providers must comply with various regulations, which can be complex and costly to navigate. Regulations may also vary by jurisdiction.
- **Infrastructure and Connectivity:** To deliver the services effectively and efficiently, a sound infrastructure and connectivity is required. But these services are lacking in some areas which cause difficulty for service providers.
- **Customer Acquisition Costs:** Acquiring new customers in the digital financial space can be expensive, particularly in competitive markets. Marketing and customer onboarding costs can be a significant constraint.
- **Risk Management:** Managing risks associated with fraud, cybersecurity, and credit assessments is critical in digital financial services and requires significant investment in risk management systems and processes.
- **Data Privacy and Security:** Service providers must adhere to strict data privacy and security standards, which can be resource-intensive to implement and maintain.
- **Interoperability:** Lack of interoperability between different digital financial service providers can limit the usefulness of these services, as customers may have accounts with multiple providers.
- **Monetary and Fiscal Policy:** Government policies and monetary regulations can impact the profitability and viability of digital financial services. For example, interest rate caps and transaction fees can affect service provider revenues.
- **Market Competition:** Fierce competition in the digital financial space can put pressure on service providers to innovate and offer competitive products, which can strain resources.

Initiatives taken by Government of India for Digital Financial Inclusion

- **JAM Trinity:** It is the combination of Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana and Aadhar Card, according to which the aadhar cards are connected to the bank accounts of the individuals. This works as a verification process of the individuals.
- **Financial Services in Rural areas:** According to National Mission on Financial Inclusion, government has taken many steps for rural areas such as introduction of kisan credit cards, linking self help groups with banks, installing automated teller machines, etc.
- **Aadhar Enabled Payment System:** the Aadhar based payment system allows individuals to make financial transactions using their aadhar number and biometric authentication. People who don't have bank accounts can easily access financial services through this.
- **MUDRA Yojana:** The Micro Units Development and Refinance Agency is for small and microenterprises to provide financial support and thereby promoting financial inclusion.
- **Digital payments:** To increase the electronic payments and to make a cashless economy, National Payment Corporation of India has introduced Unified Payment Interface (UPI) to

provide secured transaction system to the citizens.

- **Financial Literacy:** To aware and educate citizens about the frauds and digital transactions, Reserve Bank of India has initiated a project. The objective is to provide information regarding general banking process.
- **Schemes:** To strengthen financial inclusion, government has started many schemes such as Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana, Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojana, Atal Pension Yojana, Pradhan Mantri Mudra Yojana and many more.

Conclusion

Fintech has brought about numerous benefits to the financial services industry and society as a whole. However, it also poses several challenges and risks that need to be addressed. Cyber security risks, regulatory compliance, consumer protection, financial stability, and operational risks are some of the major challenges and risks associated with fintech. To mitigate these risks, fintech companies need to prioritize risk management and compliance, while regulatory bodies need to establish clear guidelines and standards that apply to the industry. By addressing these challenges and risks, fintech can continue to bring about innovation and positive change to the financial services industry and society as a whole. Financial inclusion will enable country to grow economically and for successfully implementing this, appropriate strategy or approach is needed. As in India, the population is large and it is difficult to implement financial inclusion due to digital and financial illiteracy. Thus a multidimensional approach is needed so that existing platforms or initiatives are strengthened and new ideas are promoted. As we have discussed government has taken many initiatives for financial inclusion. It has started many schemes but the need is to implement them properly so that people get benefitted from them. It should also take proper steps for reducing the crimes associated with the digital finance as this leads to massive monetary losses. It is true that digital financial inclusion helps in reducing risks of loss and theft imposed by cash transactions but it generates digital loss or theft. In this era of digitalization, people should also become digitalized. This can be done by various awareness programmes to educate citizens. This will help in inclusive development of country which is the need of the hour.

References

- Dr. Susanta Mondal. (2020). Digital Financial Inclusion and Inclusive Development of India. International Journal of Innovative Science and Research Technology.
- Department of Financial Services. Government of India. Financial Inclusion Schemes.
- G20 High-level principles for Financial Inclusion.
- Devendra Prasad Shah. (2020). Role of Financial Inclusion in the Economic Growth of India. International Journal of Creative Research Thoughts.
- Brij Raj & Varun Upadhyay. (2020). Role of FinTech in Accelerating Financial Inclusion in India.
- S.M. Riha Parvin. (2022). A Study on the Prospects and Challenges of Digital Financial Inclusion. International Journal of Case Studies in Business, IT and Education.

Surbhi Jain
Assistant professor,
Department of Economics,
Aggarwal College, Ballabgarh,
Maharshi Dayanand University, Rohtak
E-mail- jsurbhi099@gmail.com